जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट माला--८

बापू-स्मरण

जमनालालजी बजाज की डायरियों एवं पत्र-व्यवहार में से
महात्मा गांधी-संबंधी उल्लेखों का संकलन
तथा बापू के कुछ संस्मरण

●

भूमिका
आचार्य कृपालानी

संपादक
रामकृष्ण बजाज

●

१९६३
मुख्य विक्रेता
सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

निवेदन

जमनालाल सेवा-ट्रस्ट पुस्तकमाला का यह आठवां खण्ड 'बापू-स्मरण' पाठकों के सामने रखते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। वास्तव में यह पुस्तक सेवा-ट्रस्ट-माला के पहले खण्ड 'बापू के पत्र' का दूसरा भाग है।

प्रस्तुत पुस्तक दो हिस्सों में विभक्त है। पहले में पूज्य पिताजी (जमनालालजी) की डायरियों में से तथा परिवार के लोगों और मित्रों को लिखे पत्रों में से बापू (महात्मा गांधी) सम्बन्धी उल्लेखों का संकलन है; तथा दूसरे में बजाज-परिवार के सदस्यों द्वारा लिखे बापूजी के संस्मरणों का संग्रह है।

आज से कोई नौ वर्ष पहले हमने 'पांचवें पुत्र को बापू का आशीर्वाद' नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित किया था, जिसमें महात्माजी तथा पिताजी के पत्र-व्यवहार के अलावा बजाज-परिवार के लोगों के साथ हुआ बापू का पत्र-व्यवहार भी था। उसमें पिताजी की डायरियों तथा पत्रों में से गांधीजी-सम्बन्धी चुने हुए अंश देने की जब व्यवस्था की गई तो यह विचार पूज्य काकासाहब कालेलकर को, जो उस पुस्तक के संपादक थे, बहुत पसंद आया था। उन्होंने इसके सम्बन्ध में अपने निवेदन में लिखा था—

"यह किताब करीब-करीब तैयार हो जाने के वक्त परिशिष्ट २ का तैयार मसाला पढ़ने को मिला। इसमें अधिकांश तो जमनालालजी के जानकीदेवी के नाम लिखे हुए पत्र तथा डायरी में गांधीजी के बारे में जो जिक्र पाये जाते हैं, उनका संग्रह है। सन् १९१७ के प्रारंभ से लेकर श्री जमनालालजी का विकास कैसा होता गया, कौटुम्बिक जीवन को सामाजिक एवं राजकीय जीवन के साथ एकरूप बनाने का उनका सतत प्रयत्न कैसा था, यह सब इस मसाले में इतना स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है कि मानो हम उनकी आत्मकथा ही पढ़ रहे हैं।"

उपर्युक्त परिशिष्ट में जो मसाला दिया गया था, वह बहुत थोड़ा था। लेकिन उससे प्रेरणा पाकर उसे बढ़ाकर इसको एक अलग पुस्तक

रूप में देने का तय किया गया, और प्रस्तुत संग्रह उसी प्रयत्न का फल है।

इसी प्रकार का एक संग्रह 'विनोबा के पत्र' नाम से इसी माला में पहले निकल चुका है। इसके पहले और दूसरे भाग में विनोबाजी के साथ पिताजी तथा बजाज-परिवार के सदस्यों का पत्र-व्यवहार तथा डायरी के अंश दिये गए हैं तथा तीसरे में बजाज-परिवार के सदस्यों के विनोबाजी-संबंधी संस्मरण हैं।

इन सब प्रकाशनों के पीछे यही भावना है कि पिताजी ने एक साधक के रूप में पूज्य बापूजी और विनोबाजी-जैसे महापुरुषों से जो कुछ पाया, उसे सार्वजनिक हित के हेतु प्रकाश में लाया जाय।

जो डायरियां प्राप्त हो सकी हैं, उन्हींमें से उल्लेखों को संग्रह किया गया है। शेष या तो खो गई हैं या नष्ट हो गई हैं।

इस पुस्तक की तैयारी में जिन सज्जनों ने मदद दी है, उनके हम आभारी हैं, विशेष रूप से श्री रतनलाल जोशी के, जिन्होंने डायरीवाले अंशों को देखकर अपने सुझाव दिये।

अंत में पूज्य दादा (आचार्य कृपालानी) को धन्यवाद दिये बिना यह निवेदन समाप्त नहीं कर सकते, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इसकी भूमिका लिखने की कृपा की।

—संपादक

भूमिका

स्वर्गीय सेठ जमनालाल बजाज और उनकी प्रवृत्तियों पर कई पुस्तकों के प्रकाशन के लिए जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट बधाई का पात्र है। जमनालालजी से मेरी पहली मुलाकात सन् १९१८ में कलकत्ता में हुई थी। तब वह युवक ही थे। मैं गांधीजी और उनके सहकर्मियों के साथ कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने वहां गया था। जमनालालजी उदीयमान उद्योगपति के रूप में आगे आ रहे थे और उन्हें ब्रिटिश सरकार से रायबहादुर का खिताब मिला था। उस समय पंडित मदनमोहन मालवीय के प्रति उनकी बहुत आस्था थी। गांधीजी और उनके साथियों को एक धर्मशाला में ठहराया गया था और उसका सारा प्रबन्ध जमनालालजी ने ही किया था। जब जमनालालजी ने गांधीजी को प्रणाम कर उनसे आशीर्वाद मांगा, तो गांधीजी ने उन्हें खिताब के लिए बधाई दी और कहा कि उनकी अपेक्षा है कि उसका इस्तेमाल व्यक्तिगत प्रतिष्ठा व गौरव के लिए न कर राष्ट्र-सेवा के लिए किया जायगा। तब से गांधीजी के साथ जमनालालजी का संपर्क और आत्मीयता निरंतर बढ़ती गई और अंत में वह उनके परिवार के ही एक सदस्य हो गए।

उस समय जमनालालजी एक उद्योगपति के रूप में उभर रहे थे। द्वितीय महायुद्ध के बाद व्यापार व उद्योग के क्षेत्र में काफी तेजी आ रही थी। कई जॉइंट स्टाक कंपनियां कायम हुईं। उनमें से कइयों ने जमनालालजी को संचालक-मंडल में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया। यदि उन्होंने अपना सारा ध्यान केवल व्यापार और उद्योग पर ही केन्द्रित रखा होता तो वह हमारे देश के प्रथम श्रेणी के गिने-चुने उद्योगपतियों में होते। किन्तु गांधीजी के व्यक्तित्व और देशभक्ति की पुकार से प्रभावित होकर वह राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन में शामिल होगए।

सत्याग्रह-आंदोलन के कई कार्यक्रमों में एक था खादी का उपयोग और प्रचार। उस समय कपड़े की मिलों में असाधारण लाभ हो रहा था।

फिर भी इस सिद्धान्त के अनुरूप उन्होने कपडे की मिलो मे किसी भी प्रकार का हिस्सा लेने से इंकार कर दिया। कुछ समय बाद काफी मुनाफे की शर्तों पर उन्हे कपड़े की एक मिल का प्रस्ताव मिला, किन्तु उन्होंने इसी कारण उस प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया।

धीरे-धीरे उनका अधिकाधिक ध्यान स्वतंत्रता-संग्राम की ओर मुड़ता गया। उनके व्यापार की व्यवस्था उनके साझीदार करने लगे। आंदोलन के शुरू में ही उन्हे काग्रेस का कोषाध्यक्ष बनाया गया, अत. इस नाते काग्रेस के लिए धन इकट्ठा करना उनका मुख्य काम रहता था। उन्हे इसका भी ध्यान रखना पडता था कि कांग्रेस के पास जो थोडा-बहुत धन था, वह अवज्ञा-आदोलन के समय ब्रिटिश सरकार के हाथ में न पड जाय। आज लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस समय काग्रेस के पास ३० हजार रुपये की रोकड़ से अधिक जमा रकम कभी नही थी। अधिकांश कार्य लोग अवैतनिक ही किया करते थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान जमनालालजी एक पूजीपति से, गाधीजी की कल्पना के अनुरूप, लोगो के ट्रस्टी बन गये। उनका जीवन सादा था और उन्होने अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी वैसा ही जीवन अपनाने की ट्रेनिग दी। हा, सार्वजनिक कोषो मे वह उदारतापूर्वक दान देते रहे। व्यक्तिगत सहायता मे भी वे उतनी ही उदारता बरतते थे। अतिथि-सत्कार तो उनका अद्वितीय था ही। उन दिनों काग्रेस कार्यकारिणी की बैठके अधिकतर वर्धा मे ही हुआ करती थी, क्योंकि गाधीजी पास ही सेवाग्राम-आश्रम में रहते थे। उस आश्रम की भूमि भी जमनालालजी ने ही प्रदान की थी। कार्यकारिणी समिति के प्रत्येक अधिवेशन में छः-सात दिन तक एक साथ उन्हे सैकड़ो मेहमानों की व्यवस्था करनी पड़ती थी और उस समय तो कार्यकारिणी की बैठके भी बहुत जल्दी-जल्दी हुआ करती थी।

जमनालालजी खरे व्यक्ति थे। निष्पक्षता और न्यायप्रियता की भावना उनमे प्रबल थी। स्वभाव से वह बहुत आशावादी थे और साथ ही बहुत विनोदी भी। मानवीय सहानुभूति उनमें गहरे तक पैठ गई थी। धन और पद के अहंकार से वे मुक्त थे। अपनी राय वह खुले तौर पर देते थे और उसमे किसी प्रकार का भी बंधन उन्हे स्वीकार नही था। हमारे

स्वतंत्रता-संग्राम के वह एक महान् सेनानी थे । जिन्हें भी उनके संपर्क में आने का अवसर मिला, वे जमनालालजी को कभी नहीं भूल सकते ।

प्रस्तुत पुस्तक में जमनालालजी की डायरी व पत्रों के उद्धरण संगृहीत हैं । इन सब उद्धरणों का संबंध गांधीजी से है । इससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है ।

डायरी के उद्धरण संक्षिप्त हैं--दर-असल बहुत ही संक्षिप्त, मानों लेखक ने उन्हें महज नोंध के तौर पर लिख लिया हो, ताकि भविष्य में उन्हें पढ़कर याद ताजा कर ली जाय और उनका उपयोग किया जा सके । इसलिए सामान्य पाठक को शायद इन उद्धरणों का पूरा मतलब और महत्त्व स्पष्ट नहीं हो पायगा । किन्तु जो लोग हमारे राजनैतिक आंदोलन से भली भांति परिचित हैं और उसमें भाग लेनेवाले महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आये हैं, उन्हें इनमें मूल्यवान् सामग्री उपलब्ध होगी ।

पुस्तक के आखिरी हिस्से में जो पत्र दिये गए हैं, उनका महत्व अलग-अलग प्रकार का है । उनसे उस युग पर, तत्कालीन सार्वजनिक व्यक्तित्वों पर और उल्लिखित घटनाओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है । जमनालालजी के जीवन की झलकियां भी पाठकों को इनमें मिलेंगी ।

यह पुस्तक न केवल हमारे स्वतंत्रता-संग्राम और समकालीन जीवन के जिज्ञासुओं के लिए ही उपयोगी सिद्ध होगी, अपितु गांधीजी की विचार-धारा के विद्यार्थियों के लिए भी ।

—जे० बी० कृपालानी

बापू-स्मरण

जमनालाल बजाज की डायरी के
बापू-संबंधी अंश
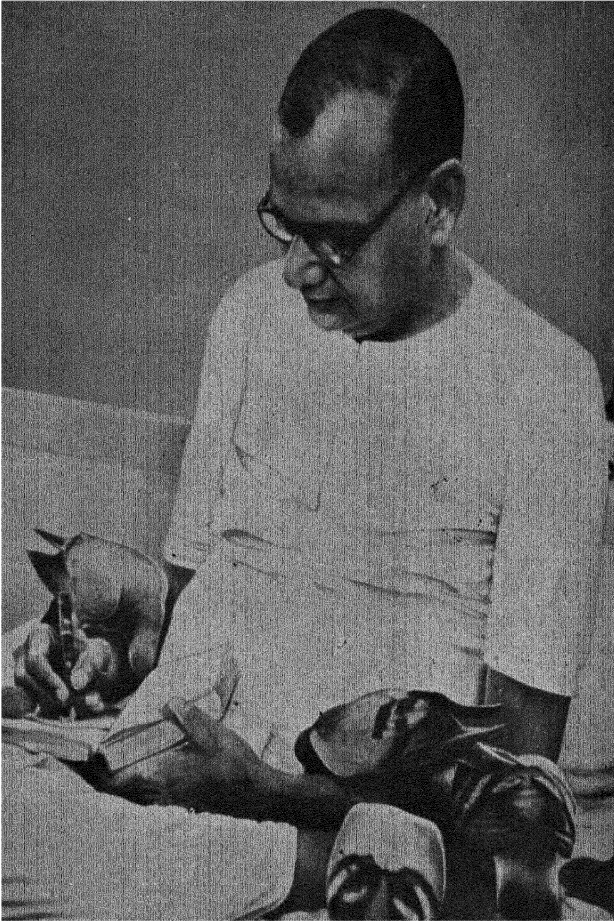
"उन्होंने मेरे सभी कामों को पूरी तरह अपना लिया था"

—मो० क० गांधी

डायरी के अंश

१९२४

२६-१-२४, पूना

पू० महात्माजी के दर्शन किये। वार्तालाप हुआ।

२८-१-२४, बंबई

पूना से ७-४० की एक्सप्रेस से पू० महात्माजी के दर्शन व वार्ता करके रवाना हुआ। रास्ते में मथुरादास त्रिकमदासजी के साथ बातें।

२-२-२४, पूना

ऐंड्रूज के साथ बापूजी से मिला। ऐंड्रूज के लिए खादी की धोती, कुरता व चद्दर ली।

पू० बापूजी से बातें।

५-२-२४, वर्धा

आश्रम के भविष्य के कार्य के बारे में विनोबा से खूब बातें। जाजूजी से भी विचार-विनिमय। कार्य के सम्बन्ध में कुछ निश्चय।

पू० महात्माजी के आज प्रातःकाल छूटने के तार मिले। चित्त में विशेष आनंद नहीं हुआ।

महात्माजी के छूटने के बारे में आम सभा हुई। श्री रबेला ठीक बोले।

१०-२-२४, वर्धा

गांधीजी की पालखी (जुलूस) निकली।

श्री जयदयालजी गोयनका से अलग बातें। उनके प्रश्नों का स्पष्टता से जवाब देने की कोशिश। महात्माजी के व इनके सिद्धान्तों में अंत्यज-संबंधी बड़ा फर्क है; कार्य-पद्धति का भी।

३-४-२४, नासिक

अग्रवाल महासभा में जाना नहीं हो सका। उसके लिए मन में थोड़ा विचार आया; प्रेम-अश्रु भी आये। जाने के लिए पू० महात्माजी की

आज्ञा नहीं मिलने से न जाना ही उचित समझा। महासभा को पत्र लिखवाया।

१८-४-२४, जुहू (बम्बई)

महात्माजी के पास जुहू आया। हाल में यही पर रहने का निश्चय हुआ। बापू से थोड़ी बातें। उनके साथ घूमने गया।

२०-४-२४, जुहू (बम्बई)

बापूजी से बातें। बहुत-सी बातों का खुलासा हुआ। उसे अलग लिखकर रखा।

२१-४-२४, जुहू

बापू का मौन था।

सुबह बापू के साथ प्रार्थना। बापू से कई बातों का खुलासा।

२४-४-२४, जुहू

वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। महात्माजी ने अपने विचार प्रकट किये। खादी-कमेटी की भी बैठक हुई।

५-५-२४, नासिक-त्रिंबक

बापू का पत्र[1] पढ़कर हृदय भर आया। उनका तार आने के कारण रात की गाड़ी से बम्बई गया।

६-५-२४, बम्बई

९ बजे शान्ति आई। कमला व कमलनयन को लेकर बापूजी के पास गया। बापूजी ने कमला से बहुत बातें कीं।

सुन्दरलालजी व भगवानदीनजी के साथ बापू से बातें। खुलासा हुआ।

१५-५-२४, बम्बई

पं० मोतीलाल नेहरू तथा मौ० अबुलकलाम आज़ाद से बातें। बाद में वे पू० बापूजी से मिले। उनसे बातें करके आनन्द आया।

२४-५-२४, बम्बई

बापू का व स्वराज्य-पक्ष का बयान पढ़ा।

पांगरकर से मिले। बातें। उन्होंने महात्माजी के लिए पुस्तकें दीं।

---

[1] देखिये 'बापू के पत्र', पृष्ठ ३२।

२६-६-२४, अहमदाबाद (आश्रम)

स्टेशन से आश्रम गये। बापू से मिलकर चि० शान्ति को वहीं छोड़कर वल्लभभाई के घर आये। भोजन; राजगोपालाचारीजी से बातें। फिर आश्रम गये—वर्किंग कमेटी के लिए। वर्किंग कमेटी का काम २ बजे से ६-३० बजे तक होता रहा। महात्माजी ने अपने चार प्रस्ताव[1] समझाकर बतलाये। खुलासेवार खूब चर्चा हुई। वे चारों प्रस्ताव वर्किंग कमेटी ने थोड़ फर्क से स्वीकार किये।

---

[1]ये प्रस्ताव २२-६-२४ के हिन्दी 'नवजीवन' में निम्न प्रकार प्रकाशित हैं—

१. इस बात पर ध्यान रखते हुए कि स्वराज्य की स्थापना के लिए चरखा और हाथकती-खादी के आवश्यक माने जाने पर भी और महासभा के द्वारा सविनय भंग के लिए पेश-बंदी के तौर पर उनकी स्वीकृति होते हुए भी देश की तमाम महासभा-संस्थाओं के सदस्यों ने चरखा कातने पर अब तक ध्यान नहीं दिया है, यह महासमिति निश्चय करती है कि तमाम प्रतिनिधिक महासभा-संस्थाओं के सदस्यों को चाहिए कि वे, बीमारी अथवा लगातार सफर की हालत को छोड़कर, रोज कम-से-कम आध घण्टा चरखा कातें और कम-से-कम १० नंबर का १० तोला एक-सा और पक्का सूत अखिल भारतीय खादी-मण्डल के मंत्री के पास भेज दें, जोकि हर महीने की १५ ता० तक उन्हें मिल जाय। पहली किश्त १५ अगस्त, १९२४ तक उनके पास पहुंच जाय और उसके बाद हर महीने बराबर भेजते रहें। जो सदस्य नियत तारीख तक नियत तादाद में सूत न भेजेगा, उसका पद खाली समझा जायगा और मामूल के मुआफिक उसकी जगह पर दूसरे सदस्य की तजवीज की जायगी तथा पद-च्युत शख्स अगले साधारण चुनाव तक फिर से चुने जाने का पात्र न समझा जायगा।

२. चूंकि इस बात की शिकायतें पहुंची हैं कि प्रान्तीय मंत्री तथा महासभा के दूसरे पदाधिकारी उन हुक्मों की तामील नहीं करते हैं, जोकि महासभा के बाकायदा अफसरों की तरफ से उनके नाम समय-समय पर भेजे जाते हैं, इसलिए महासमिति निश्चय करती है कि जो पदाधिकारी अपने

२७-६-२४, अहमदाबाद

महात्माजी के प्रस्तावों पर राजगोपालाचारीजी से चर्चा ।

श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन से बातें ।

'ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी' की बैठक ३ बजे के बदले ६ बजे हुई । आपस में चर्चा होती रही। मीटिंग १० बजे तक चलती रही। महात्माजी का प्रस्ताव आर्डर में है या नहीं, इसपर विचार हुआ ।

बाकायदा मुकर्रर अफसरों के हुक्मों की तामील करने में गफलत करेगा, वह अपनी जगह से खारिज समझा जायगा और उसकी जगह पर मामूल के मुआफिक दूसरा शख्स तजवीज किया जायगा; और वह पद-च्युत व्यक्ति अगले साधारण चुनाव तक फिर से चुने जाने का पात्र न समझा जायगा ।

३. महासमिति की राय में यह बात वांछनीय है कि महासभा के निर्वाचक लोग सिर्फ उन्हीं लोगों को पदाधिकारी चुनें, जो महासभा के ध्येय के अनुसार तथा महासभा के विविध असहयोग-प्रस्तावों के अनुसार, जिनमें पंचविध बहिष्कार—अर्थात् मिल-कते कपड़ों, सरकारी अदालतों, स्कूलों, खिताबों और धारा-सभाओं के बहिष्कार—शामिल हैं, खुद चलते हों, और महासमिति यह निश्चय करती है कि जो सभ्य इन पांचों बहिष्कारों को न मानते हों और उनके मुताबिक न चलते हों वे अपनी जगहों से इस्तीफा दे दें, और उन जगहों के लिए नया चुनाव किया जाय—इस्तीफा देनेवाले सज्जन चाहें तो चुनाव के लिए फिर से उम्मीदवार हो सकते हैं ।

४. महासमिति स्वर्गीय गोपीनाथ साहा के द्वारा किये गए श्री डे के खून पर अपना अफसोस जाहिर करती है और मृतात्मा के परिवार के प्रति अपना शोक प्रकट करती है और ऐसे खून जिस देश-प्रेम के कारण होते हैं—फिर वह भ्रान्त ही क्यों न हो—उसका गहरा खयाल रखते हुए भी यह समिति ऐसे तमाम राजनैतिक खूनों की सख्त निन्दा करती है और जोर के साथ अपनी राय जाहिर करती है कि ऐसे तमाम काम महासभा के ध्येय और उसके शान्तिमय असहयोग के प्रस्तावों के खिलाफ हैं और उस सविनय भंग की तैयारी में बाधा डालते हैं जो कि महासमिति की राय में शुद्ध से

२८-६-२४, अहमदाबाद

आश्रम में पूज्य बा ने खाना खिलाया। बापू से बातें। मोटर में उनके साथ मीटिंग के लिए टाउन-हाल आया। रास्ते में बाते होती रही।

२९-६-२४, अहमदाबाद (ऐतिहासिक दिन)

'ऑल इंडिया काग्रेस कमेटी' की कार्रवाई दो बजे तक चलती रही। पू० बापू का भाषण बहुत ही सुन्दर हुआ। मोतीलालजी का भी भाषण

शुद्ध बलिदान को उत्साहित करता है और जो पूर्ण शान्तिमय वायु-मण्डल में ही किया जा सकता है।

उपर्युक्त प्रस्तावों पर महात्माजी ने 'यंग इंडिया' में निम्न वक्तव्य दिया था——

"इस मौके पर तो मै ठीक वही काम करता हुआ दिखाई देता हूं, जिससे मै बचने की इच्छा रखने का दावा करता हूं——अर्थात् महासभा में फूट पैदा करना और देश में चर्चा और विवाद का तूफान खड़ा कर देना। फिर भी पाठकों को यकीन दिलाता हूं कि कम-से-कम, जहांतक मुझसे ताल्लुक है, यह हालत ज्यादा दिनों तक न रहेगी। मेरी एकमात्र चिन्ता और उत्सुकता यह है कि यह अनिश्चितता का वायु-मण्डल स्वच्छ हो जाय। में समझता हूं कि हर शख्स इसमें मेरा साथ देगा। अगर हमें यह जानना हो कि हम कहां हैं, तो कुछ चर्चा करना लाजिमी है। मेरे संबंध में लोग खयाल करते है कि मैं कुछ चमत्कार करके बता दूंगा और देश को उसके मंजिले-मक्सूद पर पहुंचा दूंगा। खुशकिस्मती से मेरे दिल में ऐसा कोई भ्रम नहीं है। हां, मैं एक क्षुद्र सैनिक होने का दावा जरूर करता हूं। और अगर पाठक मेरी बात पर हँसें नहीं तो मै उनसे यह भी कह देना बुरा नहीं समझता कि मैं एक कुशल जनरल भी हो सकता हूं——महज उन्हीं शर्तों पर, जो मामूली हुआ करती हैं। मेरे पास ऐसे सैनिक होने चाहिए, जो आज्ञा-पालन करते हों, जो अपने तईं और अपने जनरल के तईं विश्वास रखते हों और जो खुशी-खुशी कामों को करते हों। मेरी कार्य-विधि हमेशा खुली और निश्चित होती है। कुछ निश्चित शर्तें रहती है। उनकी पूर्ति पर सफलता का निश्चय ही समझिये। पर ऐसी हालत में बेचारा जनरल क्या कर सकता है जब उसके सैनिक उसकी शर्तों

हुआ। उनके स्टेटमेंट का अच्छा असर नहीं हुआ। वह बैठक में से उठकर चले गए।

'ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी' का काम सुबह से १ बजे तक होता रहा। भोजन के बाद अनसूया बहन के यहां वर्किंग कमेटी ३ बजे से ६ बजे तक होती रही। 'ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी' शाम को ७ बजे से फिर शुरू हुई।

को मानते तो हों, पर उन्हें खुद पालते न हों और शायद उनका विश्वास भी उनपर न हो। इन प्रस्तावों की तजवीज इसलिए की गई है कि जिससे सैनिकों की योग्यता की जांच हो जाय। बल्कि इसे दूसरी तरह से कहूं तो ठीक होगा। सैनिकों की हालत तो बड़ी अच्छी है। क्योंकि वे अपना जनरल खुद चुनते हैं। उनके भावी जनरल के लिए उसकी सेवा की शर्तें जान लेना जरूरी है। मेरी हालत वही है, जो १९२० में थी। पर जितने दिन बीते हैं उतना ही मेरा विश्वास बढ़ गया है। अगर मेरी सेवा चाहनेवालों का भी यह हाल है तो वे मेरा तन और मन—सर्वस्व अपना ही समझें। दूसरी किसी तजवीज में मेरा विश्वास नहीं है। इसलिए दूसरी किसी शर्त पर मैं सेवा करने योग्य नहीं हूं। इसलिए नहीं कि मुझे सेवा की इच्छा नहीं है, बल्कि इसलिए कि मैं उसके लिए अ-पात्र हूं। जहां किसी २५ वर्ष के पट्ठे हट्टे-कट्टे नौजवान की जरूरत हो वहां अगर कोई सफेद बालोंवाला ५५ बरस का बूढ़ा, जिसके दांत टूट गए हों, तन्दुरुस्ती अच्छी न हो, दरख्वास्त लेकर हाजिर हो तो कैसे काम चल सकता है?

"इसलिए इन चार प्रस्तावों को जनरल की जगह के लिए मेरी दरख्वास्त ही समझिये। इसमें मेरी योग्यता और मर्यादा दोनों आ जाती हैं। इसमें न तो किसी प्रकार की मनमानी की जाती है और न कोई असंभव बात चाही गई है। अगर सदस्य लोग समझें कि मैं गलती पर हूं और अगर वे अपनेको तथा अपने मुल्क को धोखा न देना चाहते हों, तो उन्हें मेरा ज़रा मुलाहिज़ा न रखना चाहिए। मैं मानता हूं कि कोई शख्स ऐसा नहीं है जिसके बिना देश का काम रुकता हो। हर शख्स अपनी जन्म-भूमि का, उसके द्वारा मानव-जाति का, ऋणी है। और जिस घड़ी वह अपना ऋण चुकाने से मुंह मोड़े, उसी घड़ी उसे खारिज कर देना चाहिए। इसलिए मौजूदा सेवा-कार्यों

बापू वर्किंग कमेटी के मेम्बर हुए। गोपीनाथ साहा के प्रस्ताव पर भाषण। काम खतम होने पर बापू का दुःख से भरा हुआ भाषण हुआ। उनकी व सभी की आंखों मे पानी भर आया।

का भार सौंपते समय किसीकी पिछली सेवाओं पर ध्यान देने की जरूरत नहीं है—फिर वे कितनी ही उज्ज्वल हों। एक शख्स के लिए—नहीं सौ आदमियों के लिए भी, देश-हित का त्याग न होना चाहिए। बल्कि देश-हित पर उसीको या उन्हींको कुरबान कर देना चाहिए—"त्यजेदेकं कुल-स्यार्थे"। मैं महासमिति के सदस्यों से निवेदन करता हूं कि वे एक दृढ़ उद्देश्य को लेकर, बिना पक्षपात और मिथ्या भावुकता एवं भावनाओं के अधीन न होते हुए इस काम को हाथ में लें। मैं आपको जताकर और चेताकर कहता हूं कि मुझ पर अंध श्रद्धा न रखियेगा। किसी बात को इसलिए ठीक न मानियेगा कि मैं उसे ठीक कहता हूं। आपको खुद ही निर्णय करना चाहिए। आपको खुद अपने दिल का और क्षमता का अन्दाज मालूम कर लेना चाहिए। इतने दिनों के समागम से आपको यह तो मालूम हो ही गया होगा कि मैं एक बेढब साथी हूं और एक कड़ा काम लेनेवाला हूं। पर अब वे मुझे और भी ज्यादा सख्त पावेंगे।

"मैंने यह दलील पढ़ी है कि खादी से स्वराज नहीं मिल सकता। यह पुरानी है। अगर हिन्दुस्तान को यूरोप के नफीस कपड़ों की—फिर वे चाहे मैंचेस्टर के बने हों चाहे बंबई की मिलों के—चाह हो तो उसे करोड़ों भाई-बहनों के लिए स्वराज की बात का खयाल ही छोड़ देना चाहिए। अगर हमारा विश्वास चरखे के पैग़ाम पर हो तो हमें खुद चरखा कातना चाहिए; और मैं दावे के साथ कहता हूं कि वे इसे बड़ा उत्साहजनक काम पावेंगे। अगर हम शान्तिमय उपायों से, और इसलिए शान्तिमय भंग के द्वारा, स्वराज लेना चाहते हैं तो हमें शान्तिमय वायु-मण्डल तैयार किये बिना चारा नहीं। अगर हम हजारों की भीड़ में मनमाने व्याख्यान झाड़ने के बदले उनके अन्दर चरखा कातकर उन्हें दिखावें, तो अभीष्ट शान्तिमय वायु-मण्डल तैयार हो जायगा। अगर मुझसे हो सके तो मैं तो महासभा-संस्थाओं के हरेक सदस्य का मुंह बन्द कर दूं—हां, मेरा और शायद शौकतअली

३०-६-२४, अहमदाबाद (आश्रम)

अनसूया बहन के यहां १२ बजे तक वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। वहीं पर भोजन व आराम। तीन बजे से फिर वर्किंग कमेटी शुरू हुई।

१-७-२४, साबरमती-आश्रम

खद्दर-बोर्ड की मीटिंग।

वर्किंग कमेटी का काम शुरू हुआ। बापू ने अपने चारों प्रस्ताव पेश किये। अंत में चौथा स्वीकार हुआ।

मौलाना मुहम्मद अली से बोलचाल हो गई।

२-७-२४, साबरमती-आश्रम

खद्दर-बोर्ड की मीटिंग। आज के प्रस्ताव पर चर्चा। बाद में स्टोर, तथा सेल्समैन का कार्य शुरू करने आदि के संबंध में विचार। प्रार्थना। किशोरलाल भाई के यहां भोजन।

बापू के पत्रों का विवरण

	सन् १९१९	१९२२	१९२४	आज
१. यंग इंडिया	१२००	२४०००	२६००	८०००
२. गुजराती नवजीवन	६०००	३००००	६२००	९५००
३. हिंदी नवजीवन	—	११५००	१२००	३०००

का नहीं—जबतक कि स्वराज न मिल जाय, और उसे चरखे में लगा दूं या किसी कताई के क्षेत्र का काम सौंप दूं। अगर चुपचाप अपना काम करने वाला चरखा हमारे अन्दर श्रद्धा, साहस और आशा पैदा नहीं कर सकता, तो सदस्यों को चाहिए कि वे ऐसा साफ-साफ कह दें।

"दूसरे और तीसरे प्रस्ताव को पहले प्रस्ताव का पूरक समझिये।

"चौथे प्रस्ताव के द्वारा हमारी अहिंसात्मक नीति की जांच होगी। मैं गोपीनाथ साहा-संबंधी प्रस्ताव पर देशबन्धु दास का वक्तव्य पढ़ चुका हूं। पर उससे पिछले सप्ताह में कही मेरी बात पर कुछ असर नहीं होता। जब तक महासभा अपने वर्तमान ध्येय पर कायम है और उसे मानती है, तबतक मेरे तजवीज किये इस प्रस्ताव में समझौते की कोई सूरत नहीं है।"

मोहनदास करमचंद गांधी

३-७-२४, साबरमती-आश्रम

प्रार्थना में बापू ने चौथे नंबर के प्रस्ताव का विवेचन किया। उनके साथ घूमने गया। घूमते समय बातें। बाद में पू० बापूजी से 'गांधी-सेवा-संघ' के बारे में बहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा। श्री राजगोपालाचारी व राजेन्द्रबाबू मौजूद थे। संघ के प्रस्ताव, उद्देश्य-नियम आदि तैयार किये गए। श्री राजगोपालाचारी व महात्माजी को दिखाकर उनकी नकल की गई।

४-७-२४, साबरमती-आश्रम

प्रार्थना के बाद बापू से बातें। बापू ने जो कहा था कि १८ महीनों के बाद उनका शरीर नहीं रहेगा, उसका खुलासा किया। अपनी मानसिक स्थिति के बारे में विचार। बापू से आश्रम के बजट पर चर्चा। खादी-मंडल-संबंधी बातें। चरखा काता।

५-७-२४, आश्रम

प्रार्थना के बाद बापू से ट्रस्ट के बारे में चर्चा। उनके साथ घूमना तथा विचार-विनिमय। कार्य करने का निश्चय।

३१-७-२४, बम्बई

रामनारायणजी के बंगले पर गये। रामनिवास की माताजी ने दस हजार रुपये के वार-बांड 'हिन्दी-प्रचार' या महात्माजी की इच्छा के मुताबिक किसी कार्य में लगाने का स्वीकार किया।

१-८-२४, साबरमती-आश्रम

गुजरात-मेल से अहमदाबाद पहुंचे। बेलगांववाला साथ में थे।

शंकरलालभाई बैंकर के साथ आश्रम तथा खादी-बोर्ड की चर्चा।

बापू से बातें। राष्ट्रीय शिक्षण-परिषद में बापू के साथ गये। बापू का भाषण मनन करने योग्य हुआ।

खादी-बोर्ड की बैठक में गया। बापू के साथ आश्रम-संबंधी बातचीत का खुलासा हुआ। प्रार्थना की।

२-८-२४, साबरमती-आश्रम

सुबह प्रार्थना में। बापू का प्रवचन।

छगनलालभाई के साथ मकान की जगह देखने गये। विद्यालय की प्रार्थना में।

खादी-बोर्ड की बैठक। गुजरात खादी-भंडार बम्बई का, अच्छी स्थिति में जो माल हो, वह खरीद-कीमत पर रेल-खर्च चढ़ाकर २० टके कम से लेने का निश्चय हुआ—बापूजी व वल्लभभाई के साथ। छः महीने के अन्दर रकम देना तय हुआ।

१९-९-२४, वर्धा से दिल्ली

दिन-भर करीब-करीब रेल में ही बीता। रात में ८-३० बजे दिल्ली पहुंचे। सीधे बापूजी के दर्शन करने के लिए मौ० मुहम्मद अली के मकान पर गये।

२३-९-२४, दिल्ली

नेताओं की एकता-कान्फ्रेंस आज के लिए नियत की गई थी। परन्तु कुछ लोगों का आज पहुंचना असम्भव था, इसलिए २६ तारीख के वास्ते कान्फ्रेंस बढ़ा दी गई।

२२-११-२४, बम्बई

खादी-बोर्ड की बैठक हुई। ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की भी बैठक हुई। बी अम्मा के लिए चौपाटी पर जाहिरा सभा हुई। बापूजी बोले। मैं भी बोला।

५-१२-२४, अमृतसर-लाहौर

पू० महात्माजी के साथ अमृतसर गया। अकाली-दमन की जांच का कार्यक्रम निश्चय हुआ। कमेटी में डॉ० किचलू, सी० आर० रेड्डी, ख्वाजा गाजी अब्दुल रहमान और मेरा नाम था।

डायरी के अंश

१९२५

१०-२-२५, साबरमती-आश्रम

सुबह ४ बजे प्रार्थना में। बापू ने कोहाट के बारे में मुसलमानों के द्वेष आदि की चर्चा की और विशेष प्रेम व नम्रता से इनकी सेवा करने का अपना इरादा बतलाया। अंग्रेज-जाति का उदाहरण दिया।

राजकोट के ठाकुरसाहेब का बापू के स्वागत का कार्यक्रम देखने योग्य था। बापूजी के साथ खुलासा बातें हुईं।

१. वर्धा में मारवाड़ी राष्ट्रीय विद्यालय खोलने का विचार उन्होंने पसन्द किया।

२. श्री पुणतांबेकर को ही अधिष्ठाता बनाने की सलाह। वेतन दो सौ रुपये तक; विशेष परिस्थिति समझकर, देना चाहिए, ऐसा उनका मत था।

३. श्री अप्पासाहब को रत्नागिरि में ही प्रयत्न करना चाहिए, ऐसी इच्छा बताई।

४. श्री पुरुषोत्तम सिन्धवालों के बारे में व श्री कृष्णदास के बारे में अपनी पसंदगी बतलाई।

५. राजपूताना-खादी-कार्य के लिए मथुरादास पुरुषोत्तम के बारे में चर्चा; प्रयत्न करने के लिए कहा।

६. बम्बई खादी-भंडार का नाम बदलने का कहा।

७. कमला का विवाह आगामी वर्ष, जब मुहूर्त निकले, करने का कहा।

८. अग्रवाल-माहेश्वरी विवाह हो सके तो ठीक रहे।

११-२-२५, आश्रम

सुबह प्रार्थना में गया। आज का भजन व बापू का प्रवचन सुन्दर था। बापू आज बोरसद की ओर गये। मुझे साथ ले जाना चाहते थे, पर मैं

नहीं गया। चुंगी-चौकी तक पैदल गया, बापू के साथ बातें। नीचे लिखी बातों की जांच करने का कहा—

१. भरूचा के पत्रों का उत्तर। लालजी व शान्ता को पत्र।

२. बालचन्द कोठारी को पुनः पत्र।

३. बम्बई अंत्यज-पत्र की तलाश करके रखना।

४. ठीक हो तो १०००) रु० की मदद करना।

५. जामिया यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ को सहायता।

६. मौ० अबुलकलाम आजाद के खर्चे के बारे में।

७. श्री पुरुषोत्तम सिन्धवालों से बातें व सहायता। पगार ७५), कर्ज की व्यवस्था, काम करें तो।

१२-२-२५, आश्रम

श्री देवदास गांधी से बापू-परिवार के बारे में बातें।

१४-२-२५, आश्रम

पूज्य बापू के साथ बातें। श्री पुणतांबेकर और बापू के साथ खुलासेवार बातें। पुणतांबेकर ने वर्धा मारवाड़ी महाविद्यालय में २०० रु० मासिक पर रहना स्वीकार कर लिया।

२४-२-२५, पालीताना

श्री ठाकुरसाहब नामदार बहादुरसिंहजी (पालीताणा) से मिले। बहुत ही सज्जन पुरुष मालूम हुए। उन्होंने खादी और महात्माजी पर पूरी श्रद्धा दिखाई।

२५-२-२५, आश्रम

वल्लभभाई के पुत्र डाह्याभाई का विवाह यशोदादेवी के साथ हुआ। पू० बापू ने कन्या की प्रतिज्ञा गुजराती में, कन्या के द्वारा, शास्त्र-विधि के अनुसार, कराई। विवाह के कारण प्रार्थना जल्दी हुई। बापूजी ने आश्रम में विवाह करने का कारण समझाया।

४-३-२५, आश्रम

पू० बापू गुजरात-मेल से आये। नवजीवन-कार्यालय में प्रेस तथा पत्रों के संबंध में विचार। बापूजी ने स्वामी आनंद के कहने से हिन्दी 'नवजीवन' चालू रखने को कहा। १।।। बजे आश्रम आया।

आज श्री ग्रेग और दो अमेरिकन महिलाएं घर पर भोजन करने आईं। उनके साथ पांच-सात आदमी और भी थे।

२१-४-२५, आश्रम

सुबह प्रार्थना। पूज्य बापूजी से बातें।

शंकरलालभाई से खादी-कार्य के संबंध में बातें। आंध्र, राजपूताना, उड़ीसा आदि प्रान्तों के काम के बारे में समझाया।

पूज्य बापू से खादी-कार्य के सम्बन्ध में सलाह। शाम को प्रार्थना।

२२-४-२५, साबरमती

सुबह प्रार्थना। पू० बापूजी से बातें।

बा को माता का नाम लेकर दुःख पहुंचाने की जिस व्यक्ति ने कोशिश की, उसके बारे में बापू ने हृदय के भाव बताये। रोमांच हुआ। श्रद्धा बढ़ी।

खादी-बोर्ड की सभा में।

बापू आज तीथल गये, बलसाड़ होकर।

२८-४-२५, बम्बई

पू० महात्माजी से गो-रक्षण-कार्य के संबंध में मिले। रात को माधोबाग में गो-रक्षण के संबंध में आम सभा हुई। पूज्य बापू का भाषण अच्छा था।

२९-४-२५, बम्बई

श्री मथुरादास त्रिकमजी की माता गुजर गईं। पू० महात्माजी के साथ मातमपुरसी के लिए गया।

बापूजी नागपुर-मेल से कलकत्ता गये।

३-६-२५, आबू

आज दो हजार गज सूत कातने का विचार किया था, परन्तु पत्र-व्यवहार में लग जाने से और बापू को भी पत्र लिखवाने में मदद देने से १८०० गज के लगभग कात सका। और कातने का विचार था, पर मित्रों ने आराम लेने का आग्रह किया। कल सुबह जल्दी उठकर २०० गज पूरा करने का तय किया।

१५-७-२५, कलकत्ता

दानीजी के यहां पू० बापूजी से मिला।

श्रीमती वसन्तीदेवी, मोतीलालजी नेहरू, जवाहरलालजी आदि से बात-चीत ।

१९-७-२५, कलकत्ता

महात्माजी बंगाल-प्रांतीय अग्रवाल सभा में २॥ बजे आये। उपस्थिति ठीक थी। सामाजिक सुधार पर महात्माजी का जोरदार तथा विचारणीय व्याख्यान हुआ ।

२०-७-२५, कलकत्ता

महात्माजी के पास रहा ।

डॉ० पी० सी० राय के यहां जवाहरलाल नेहरू के साथ गया। उनके हस्ताक्षर कराये। अखिल भारतीय देशबंधु दास मेमोरियल के संबंध में बातें। उनके प्रेमल अनुभव हुए।

जवाहरलालजी अहमदाबाद गये। पं० मोतीलालजी से खानगी तथा सार्वजनिक बातें ।

२१-७-२५, कलकत्ता (अतराई)

महात्माजी के पास रहा ।

हरीलाल गांधी से थोड़ी बातें ।

५-८-२५, शांतिनिकेतन

श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के यहां प्रार्थना, भजन ।

श्री द्विजेन्द्रनाथ टैगोर (बड़ो दादा) से बातें। पू० बापूजी के प्रति बहुत ही श्रद्धा व भक्ति प्रकट की। उनकी पद्धति से अवश्य सफलता प्राप्त होगी, ऐसा भी कहा।

डायरी के अंश

१९२८

२७-१-२८, साबरमती-आश्रम

निर्मला के साथ रामदास गांधी का विवाह हुआ।

३-२-२८, आश्रम

अहमदाबाद में साइमन-कमीशन के बहिष्कार को लेकर हड़ताल ठीक रही।

५-२-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी को आश्रम-विद्यालय के उत्सव में करीब ६। बजे एकाएक मूर्च्छा आ गई।

८-२-२८, आश्रम

बापूजी से उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में संतोषकारक निर्णय कराया।

१२-२-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी की डॉक्टरों ने जांच की। वजन ९७ पौण्ड। स्वास्थ्य ठीक मालूम हुआ।

२४-४-२८, कलकत्ता

मगनलालभाई (गांधी) का पटना में कल २३ तारीख को स्वर्गवास हो गया। समाचार जानकर दुःख और चिन्ता हुई।

गुजरातियों की तरफ से मगनलालभाई के निमित्त आचार्य राय की प्रमुखता में शोक-सभा हुई।

२५-४-२८, पटना

चि० कृष्णदास के साथ पटना पहुंचा। चि० राधा बहुत व्याकुल हो रही थी। उसे समझाया।

पू० मगनलालभाई के दाह-स्थल पर गया। स्नान, तिलांजलि, प्रदक्षिणा आदि की।

दोपहर की गाड़ी से चि० राधा व कृष्णदास को आश्रम रवाना किया।

२२-५-२८, साबरमती-आश्रम

पू० बापूजी को अपनी मनोदशा, खासकर ब्रह्मचर्य-संबंधी, शुरू से लगाकर आज तक की, जो लिख रखी थी, पढ़कर सुविस्तर सुनाई। उसपर पूज्य बापूजी का कहना था कि जिस प्रकार आश्रम के साथ तुम्हारा संबंध है, उसी प्रकार रखने में तो कोई हर्ज ही नही है।

८-६-२८, बंबई-लोनावला

पूज्य मालवीयजी से बारडोली के संबंध में बातचीत।

२०-६-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी, वल्लभभाई, पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, लालजी-नारायणजी के साथ बारडोली-सम्बन्धी चर्चा में भाग लिया।

१९-७-२८, वर्धा

आज श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर अस्पृश्य लोगों के लिए खोल दिया गया। सुबह से लगाकर रात १० बजे तक मंदिर में जनता का व्यवहार बहुत ही संतोषप्रद व उत्साहजनक रहा।

मंदिर को खोलते समय का पू० विनोबा का भाषण भावपूर्ण और बोध-प्रद था। श्री परांजपेजी का हरि-कीर्तन भी ठीक रहा। परमात्मा की शक्ति में श्रद्धा और विश्वास विशेष बढ़ा।

११-८-२८, बनारस

पूज्य मालवीयजी के हाथ से हिन्दू-विश्वविद्यालय में खादी-भंडार खोला गया।

२२-८-२८, पूना

हिन्दू-सभा की ओर से डॉ० भोपटकर की अध्यक्षता में अस्पृश्यों के लिए श्री लक्ष्मीनारायण-मंदिर खोला गया।

९-११-२८, साबरमती-आश्रम

चर्खा-संघ के विधान में सुधार करने का मसविदा पू० बापूजी को देखने को दिया।

१७-११-२८, वर्धा

वर्धा-स्टेशन पर पू० लालाजी (लाजपतराय) के स्वर्गवास के समाचार मिले। चिंता हुई।

२९-११-२८, वर्धा

पू० गांधीजी ने लालाजी की तेरहवीं के निमित्त आश्रम में विद्यार्थियों के बीच व गांव की जाहिर सभा में भाषण किया। श्री घनश्यामदासजी भी अच्छा बोले।

३१-१२-२८, कलकत्ता

आज रात १ बजे कांग्रेस के खुले अधिवेशन में पू० महात्माजी का एक वर्ष की मोहलतवाला प्रस्ताव पास हुआ।

डायरी के अंश

१९२९

२७-३-२९, दिल्ली

मथुरा से दिल्ली तक पू० महात्माजी के साथ आये। बापू से श्री छगनलालभाई गांधी के बारे में बातें कर लीं। संतोष हुआ। बापू से और भी बातें हुईं।

दिल्ली में वर्किंग कमेटी का कार्य हुआ।

२८-३-२९, दिल्ली

सवेरे वर्किंग कमेटी का काम पंडित मोतीलालजी के यहां हुआ। १०-३० बजे तक।

३-४-२९, साबरमती-आश्रम

२-३० से ५ बजे तक चरखा-संघ की मीटिंग पू० बापूजी के सामने होती रही।

४-४-२९, आश्रम

पू० बापूजी से बातें। पू० मगनलालभाई की लड़की चि० रुक्मिणी का संबंध चि० बनारसीलाल बजाज के साथ करने के बारे में खूब विचार-विनिमय। खुलासे के बाद पू० बापूजी ने व घरवालों ने निश्चय किया।

श्री वल्लभभाई के यहां 'गांधी-सेवा-संघ' की बैठक, वहीं पर भोजन। राजेन्द्रबाबू, राजगोपालाचारीजी, गंगाधरराव आदि के साथ बातें।

६-४-२९, आश्रम

आज आश्रम में राष्ट्रीय दिवस मनाया गया। राजगोपालाचारीजी का अंग्रेजी में सुन्दर भाषण हुआ। अंग्रेजी का हिन्दी में अनुवाद मैंने किया।

७-४-२९, आश्रम

आज शाम की प्रार्थना में 'नवजीवन' में से बापू का लेख 'मेरा दुःख, मेरी शर्म' पढ़कर सुनाया गया। सुनकर हृदय में खूब दुःख हुआ।

आज 'बायकाट-दिन' होने के कारण शहर में नदी-किनारे सभा हुई। मुझे सभापति बनना पड़ा ।

आश्रम में होली मनाई ।

२३-५-२९, बम्बई

चरखा-संघ की मीटिंग सुबह ८ बजे पू० बापूजी के यहां हुई । भोजन के बाद शाम को फिर बापूजी की उपस्थिति में चरखा-संघ की मीटिंग का कार्य हुआ ।

२४-५-२९, बम्बई

शाम को ४-३० बजे कांग्रेस-हाउस में ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई । बापूजी नहीं आये थे । दिन में ११-३० बजे से कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक पू० बापूजी के स्थान पर हुई ।

११-८-२९, बम्बई

पू० महात्माजी आज यहां थे । उनके पास ही ज्यादा रहना हुआ । उनके स्वास्थ्य के संबंध में उनसे थोड़ा लड़ना पड़ा । वह गुजरात मेल से अहमदाबाद गये ।

१७-८-२९, पूना

बम्बई से टेलीफोन आया कि साबरमती से तार द्वारा पू० बापूजी के स्वास्थ्य के नरम होने की खबर मिली है। चिन्ता हुई । रात की गाड़ी से जाने का निश्चय किया ।

१८-८-२९, बम्बई

पूना से सवेरे बम्बई पहुंचा । पू० बापूजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, यह जानकर चिन्ता कम हुई । डॉ० जीवराज मेहता से पू० बापूजी के स्वास्थ्य के संबंध में बातें ।

२०-८-२९, साबरमती-आश्रम

पू० बापूजी की तबीयत देखी । थोड़ी देर बातें भी कीं । वल्लभभाई आये । उनकी पू० बापूजी से बातें । डॉ० देसाई से पू० बापूजी के स्वास्थ्य के संबंध में चर्चा ।

२१-८-२९, आश्रम

जैसा मेरी समझ में आया, वैसा पंजाब का इतिहास पू० बापूजी को बतलाया ।

चरखा-संघ की बैठक में महत्व का काम खतम हुआ।

२३-८-२९, पूना

स्वामी आनन्द ने आज के 'टाइम्स' की खबर पर से मेरा इंटरव्यू लिया। मसविदा बापूजी को देखने के लिए भेजा।

२८-८-२९, साबरमती-आश्रम

पू० बापूजी से स्वास्थ्य, भ्रमण-संबंधी आदि बातें। भोजन के बाद बापूजी से फिर बातें। उन्होंने कहा कि डॉक्टर की सलाह स्वीकार है।

२९-८-२९, आश्रम

भोजन-बाद पू० बापूजी ने दिनभर प्रायः मिल-मालिक व मजदूरों के झगड़े के निपटारे में अपनी शक्ति लगाई।

पू० बापूजी से चि० बनारसी के संबंध आदि की बातें। रात में जवाहरलालजी आदि आये।

३०-८-२९, आश्रम

जवाहरलालजी से करीब एक घंटा पू० बापूजी के भ्रमण-संबंधी बातें। फोटो देखे। जवाहरलालजी व बापूजी की बातें। बापूजी से चर्चा।

२-९-२९, राजकोट

सर प्रभाशंकर पट्टणी से मिलने गया। देशी राज्य प्रजा-परिषद के बारे में दो घंटे से भी ज्यादा बातें।

कठियावाड़ युवक-कान्फ्रेंस में बोलना पड़ा। वहां की कार्रवाई से थोड़ा असंतोष हुआ।

३-९-२९, साबरमती-आश्रम

पू० बापूजी से सर प्रभाशंकर पट्टणी, शुक्ल, सरलादेवी, अम्बालाल तथा कान्फ्रेंस-संबंधी बातें।

४-९-२९, आश्रम

पू० बापूजी ने कहा कि जवाहरलाल से कांग्रेस-सभापति के संबंध में खुलकर चर्चा करना। इसके मुताबिक जवाहरलालजी से खूब बातें हुईं, बाद में पू० बापूजी के साथ भी बातें हुईं।

५-९-२९, साबरमती

पू० बापूजी से जयसुखलालभाई की लड़की उमिया की सगाई के संबंध में बातें। बापूजी ने जल्दी करने को कहा।

देशी रियासतों में रचनात्मक कार्य के साथ-साथ बापूजी की रीति-नीति के अनुसार थोड़ा राजनैतिक कार्य करने के संबंध में चर्चा।

६-९-२९, आश्रम

पू० महात्माजी ने देशी राज्य प्रजा-परिषद का विधान बनाकर दिया। उसपर चर्चा। विधान ठीक मालूम हुआ। आज सुबह रुई धुनकर और पूनी बनाकर श्री मीराबहन को दी। पू० बापूजी के लिए यात्रा की व्यवस्था।

७-९-२९, बम्बई

दादर में उतरकर, माटुंगा में स्नान करके विले-पारले गये। वहां 'भगिनी-समाज' के मकान के शिलारोपण का मुहूर्त था। पू० बापूजी पांच मिनट बोले, पर बड़ा सुन्दर बोले।

लाहौर-ऐक्सप्रेस से पू० बापूजी के साथ भोपाल रवाना।

८-९-२९, भोपाल

भोपाल में डॉ० अन्सारी स्टेशन पर आय। भोपाल के बड़े अफसर भी थे। भीड़ अच्छी थी। महल में ठहरे। यहां सार्वजनिक सभा आदि करने के बारे में जो कई प्रकार की कठिनाइयां थीं, वे दूर हुई।

९-९-२९, भोपाल, (बापू का मौन-दिन)

पू० बापूजी के साथ सुबह पैदल घूमने गया। डॉ० अन्सारी की तथा और सब बातें रास्ते में उन्हे बताई। नवाबसाहब से कोई दो घंटे से ज्यादा मुलाकात हुई। बहुत साफ और दिल खोलकर बातें हुई। यहा खादी-कार्य का भविष्य ठीक मालूम होता है। पू० बापूजी को थैली अर्पण करने की व्यवस्था।

शाम को प्रार्थना की व्यवस्था बाहर की, जिसमें सब शामिल हो सकें।

नवाबसाहब से पू० बापूजी की बहुत देर तक बातचीत होती रही। बाद में जामिया की चर्चा हुई।

१०-९-२९, भोपाल

सुबह पू० बापूजी के साथ सांची व बुद्ध-स्तंभ देखने गए। स्टेट की ओर से व्यवस्था की गई थी। श्री घोपाल ने अच्छी तरह दिखलाया। वहीं पर भोजन किया। बड़ा आनन्द आया।

भोपाल में सार्वजनिक सभा। श्री राजा अवधनारायण (फायनेंस मेम्बर) सभापति थे। सभा बहुत बड़ी हुई। भोपाल में यह पहली आम सभा थी। पू० बापूजी अच्छा बोले।

प्रार्थना के बाद बापूजी से तीसरी बार नवाबसाहब मिले। मोढ़ जाति के लोगों से मिलकर स्टेशन आये। आगरा के लिए रवाना।

११-९-२९, आगरा

पू० बापूजी व बा के साथ मोटर में जमुना के तट पर गये। वहां के मकान में ठहरे। व्यवस्था अच्छी थी। श्री पालीवालजी तथा अन्य कार्यकर्ताओं से बातें।

श्री राजनाथजी कुंजरू के साथ राधास्वामी-संप्रदाय का दयालबाग देखा। बहुत उन्नत संस्था व आदर्श आश्रम मालूम हुआ। डेरी, बोर्डिंग आदि देखे। श्री साहेबजी महाराजजी से बातें।

रात को बड़ी भारी सार्वजनिक सभा हुई।

२-१०-२९, सीकर

शाम को पू० बापूजी की जयन्ती मनाई गई। श्री शंकरलालभाई बैंकर सभापति थे। सभा ठीक हुई। बाद मे श्री शंकरलालभाई से बहुत देर तक बातचीत होती रही।

१७-११-२९, प्रयाग

म्युनिसिपैलिटी व डिस्ट्रिक्ट कौंसिल में पू० बापूजी को मानपत्र दिया गया।

शाम को आम सभा में महात्माजी को कोई तीस हजार की थैली भेंट की गई।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की १ से ३ व ६॥ से ९ बजे तक बैठक हुई।

१८-११-२९, प्रयाग

पूज्य बापूजी के साथ घूमने गये। आज उनका मौन दिन था। मुझे जो कुछ कहना था, कहा।

वर्किंग कमेटी शाम को देर तक चलती रही। लीडर्स सभा। रात को फिर वर्किंग कमेटी बैठी। बाद में लीडर्स सभा। रात में दो बजे तक काम चलता रहा।

१९-११-२९, प्रयाग

पूज्य बापूजी से स्टेशन पर मिले ।

४-१२-२९, साबरमती-आश्रम

पू० महात्माजी से बातें ।

चि० शंकरलाल व उमिया का विवाह ठीक तौर से हो गया ।

१३-१२-२९, वर्धा

पूज्य बापूजी से बातें ।

श्री तिजारे, पटवर्धन, धर्माधिकारी आदि आये । नागपुर-विद्यालय के संबंध में बापू से चर्चा व विचार-विनिमय । उनका निर्णय रहा कि अप्रैल से दो वर्ष तक कुछ शर्तों के साथ दो सौ रुपया सहायता दी जाय ।

१५-१२-२९, वर्धा

पूज्य बापूजी से बातें ।

१६-१२-२९, वर्धा

आज पूज्य बापू के साथ सभी मित्रों ने दोनों समय अपने यहां घर पर भोजन किया ।

मीराबहन व रेजीनॉल्ड रेनाल्ड्स नागपुर से रात को आये ।

२०-१२-२९, वर्धा

पूज्य बापूजी के साथ घूमते हुए आश्रम आया । बापूजी से बातें होती रहीं । बाद में फिर स्वामी आनन्द के साथ पूज्य बापूजी के पास गया । पूज्य बापूजी ने जोर देकर कहा कि इन्हें अस्पृश्यता-कमेटी का मंत्री बनाया जाय । स्वामी आनंद से बहुत देर तक बातें हुईं ।

२१-१२-२९, वर्धा

सुबह पू० बापूजी तथा उनके साथियों के साथ ग्रांड ट्रंक से दिल्ली रवाना । रास्ते में बापूजी से बातें ।

बापूजी मंदिर व खादी-भंडार देखकर गये थे ।

२४-१२-२९, दिल्ली-लाहौर

दिल्ली-स्टेशन पर सरोजनी नायडू से बातें । पू० बापूजी ने वायसराय के साथ जिद करके भूल की, ऐसा उनका मत था ।

२९-१२-२९, लाहौर

विषय-समिति का काम चार बजे दोपहर तक होता रहा। सारी कार्रवाई देखकर विशेष उत्साह व आनन्द नहीं हुआ।

कांग्रेस का अधिवेशन ५। बजे से ७॥ तक हुआ। जवाहरलाल का भाषण साधारण ठीक था। डा० किचलू का भी ठीक था।

३०-१२-२९, लाहौर

विषय-समिति व ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक रात में बहुत देर तक होती रही। विषय-समिति का व्यवहार संतोषकारक नहीं मालूम हुआ।

३१-१२-२९, लाहौर

सर शादीलालजी के लड़के व लड़की खादी पहनकर आये। उन्हें पू० बापूजी, मीराबहन, जवाहरलाल आदि से मिलाने के बाद प्रदर्शनी दिखलाई।

कांग्रेस का काम दोपहर १ बजे से रात के १२। बजे तक होता रहा। रात को १२ बजे महात्माजी का पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास हुआ। १ बजे के अंदाज निवास पर पहुंचे।

डायरी के अंश

१९३०

३-१-३०, लाहौर

पं० जवाहरलालजी से बातें। उन्होंने बताया कि पंजाब-सरकार को बापूजी, मोतीलालजी व उनको (जवाहरलालजी को) गिरफ्तार करने की केन्द्रीय सरकार ने इजाजत नहीं दी।

१२-६-३०, नासिक रोड सेंट्रल जेल

बापूजी की गुजराती पुस्तक 'यरवडाना अनुभव' पढ़ना शुरू किया।

१७-६-३०, सेंट्रल जेल

चरखा काता। पू० बापूजी की 'यरवडा-जेल के अनुभव' नाम की पुस्तक आज पूरी की।

८-७-३०, सेंट्रल जेल,

बापू का लिखा 'सर्वोदय' पढ़ना शुरू किया।

१४-७-३०, सेंट्रल जेल

गांधी-माला में से पू० बापूजी के आफ्रिका-जेल के अनुभव पढ़े। बाद में रिचर्ड ग्रेग की लिखी Economics of Khaddar (खादी का अर्थशास्त्र) पढ़ना शुरू किया।

१५-७-३०, सेंट्रल जेल

'गांधी-शिक्षण' का तेरहवां भाग पढ़ा।

१०-८-३०, सेंट्रल जेल

आज पत्र लिखे। सी-वर्ग में गया। बापूजी की टुकड़ी के लोग मंगल को जानेवाले हैं। उन्हें डिसिप्लिन आदि के बारे में तथा अखबारों में खबर न छापने का महत्व समझाया। उन लोगों ने बड़ा विनोदी कार्यक्रम रखा था।

१२-८-३०, सेंट्रल जेल

आज सुबह सी-वर्ग में से बापूजी के टुकड़ी के ४० सत्याग्रही छूटे। उनका दर्शन किया और उन्हें बिदा किया। उनके स्वागत के लिए गांव में से बाजा वगैरा आया था।

१३-८-३०, सेंट्रल जेल

आज 'टाइम्स' में गांधी कैंप व राष्ट्रीय झंडे के बारे में संपादकीय लेख अच्छा था।

१६-८-३०, सेंट्रल जेल

आश्रम का विद्यार्थी तनसुख आज छूटा। इसके हाथ पू० बापूजी के लिए तकली व जगरामजी अग्रवाल की बनाई सूत की माला भेजी।

पू० बापूजी का गोमतीबहन के नाम का पत्र पढ़ा।

१७-८-३०, नासिक रोड सेंट्रल जेल

आज व्रत रखा। बापूजी की अनुवाद की हुई 'अनासक्तियोग' में से गीता के १८ वें अध्याय का पाठ किया।

१९-९-३०, धुलिया-जेल

देशी तिथि के अनुसार आज बापूजी का जन्मदिन 'चरखा बारस' है। पू० बापूजी को ६१ वर्ष पूरे हुए और ६२वां वर्ष लगा। प्रार्थना की। 'वैष्णव जन' भजन गाया। आज का प्रोग्राम सुबह तीन बजे से शुरू हुआ। साढ़े दस घंटों में २५६० तार, याने ३४१३ गज सूत रात के ११-३० बजे तक खतम किया। बीच में सूत उतारने आदि मे जो समय लगा सो अलग। शाम को प्रार्थना के बाद भजन। जेल के साथियों ने बापूजी-संबंधी लिखे लेख पढ़े और आनन्द मनाया।

२-१०-३०, धुलिया-जेल

अंग्रेजी तिथि से आज पू० बापूजी का जन्म-दिन है। सुबह ५ बजे प्रार्थना करने के बाद गांधी-शिक्षण में से पू० गांधीजी के 'अंगत विचार' में से कुछ अंश पढ़ा। सब साथियों ने एक घंटा कताई की। रात को प्रार्थना के बाद एक घंटे तक बापूजी की जीवनी में से पढ़ा गया।

७-१०-३०, धुलिया-जेल

पू० बापूजी का जानकीदेवी के नाम लिखा छोटा-सा स्नेह-भरा पत्र पढ़कर सुख हुआ।

१६-१०-३०, धुलिया-जेल

श्री नारायणदासभाई का पत्र आया। साथ में 'सर्वधर्म-समभाव' पर ता० २३-९-३० को बापूजी ने यरवडा-जेल से जो विचार लिख भेजे, वह तथा ३०-९ को 'सर्वधर्म-समभाव' नामक लेख के संबंध में जो पत्र भेजा, वह पढ़ा। बड़ा सुख मिला।

२२-१०-३०, धुलिया-जेल

पू० बापूजी की आत्मकथा का पहला खंड पढ़ना शुरू किया। रात में एक घंटा तक पढ़ता रहा।

२७-१०-३०, धुलिया-जेल

दिन में बापूकी आत्म-कथा पढ़ता रहा।

३१-१०-३०, धुलिया-जेल

पू० बापूजी की 'आत्मकथा' का प्रथम खंड पूरा हुआ।

२९-११-३०, धुलिया-जेल

आज बापूजी की 'आत्मकथा' का दूसरा भाग पूरा कर दिया।

१-१२-३०, धुलिया-जेल

आज गीता-जयन्ती होने के कारण पू० बापूजी का लिखा 'अनासक्ति-योग' पूरा पढ़ डाला।

७-१२-३०, धुलिया-जेल

अखबार पढ़े। महादेवभाई को ६ महीने की सख्त कैद व २५०) जुरमाना हुआ, जुरमाना न देने पर डेढ़ महीने की सजा और।

बंबई में ५ ता० को 'गांधी-दिवस' के निमित्त हुई सभा व जुलूस में लाठी-चार्ज व गिरफ्तारी हुई। लाठी-चार्ज में २५० आदमी जख्मी हुए।

डायरी के अंश

१९३२

२-१-३२, बम्बई

श्री राजगोपालाचारीजी से बातें। उनकी पुत्री चि० लक्ष्मी का सम्बन्ध देवदास से आज निश्चित हुआ।

पू० बापूजी से बातें। वर्धा रहने व अस्पृश्यता-आदि के कार्य के बारे में चर्चा।

४-१-३२, बम्बई

सुबह मणिलाल कोठारी ४ बजे के करीब आये। उन्होंने बताया कि पू० बापूजी व वल्लभभाई को सुबह ३-१५ पर गिरफ्तार कर लिया गया। सन् १८२७ के बम्बई रेग्युलेशन सं० ९५ के अनुसार नजरबंद करके दोनों को यरवडा ले गए। मैंने अपनी भी जेल जाने की तैयारी कर ली। कार्यकर्त्ताओं व इष्ट-मित्रों से बातचीत तथा विचार-विनिमय।

१५-१-३२, बम्बई

बिड़ला-हाउस में पू० मालवीयजी के पास ठहरा। पू० मालवीयजी से बातें। वर्किंग कमेटी का हाल पू० बापूजी की मनःस्थिति व उनके वाइसराय से हुए तार-व्यवहार और वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव उनको बताये। उनके विचारों में परिवर्तन हुआ।

पू० मालवीयजी व माडरेट नेताओं की कान्फ्रेंस हुई। सर कावसजी से बोलचाल हो गई। दुःख हुआ।

१०-३-३२, धुलिया-जेल

पू० कस्तूरबा, चि० शान्ति वगैरा मुलाकात को आये। सुपरिंटेंडेंट ने मिलने की परवानगी नहीं दी, इस कारण सुबह मुलाकात नहीं हुई। शाम को शांति मिलने आई।

२-४-३२, धुलिया-जेल

पू० बापूजी का पत्र आज विसापुर होकर यहां आया। पढ़ा। रात में ही पू० बापूजी को पत्र लिखकर रखा।

२८-४-३२, धुलिया-जेल

पू० बापू का दूसरा पत्र आया। उसपर विनोबा से खूब चर्चा हुई। दूध लेने के संबंध में विनोबा का संतोषजनक उत्तर।

३-५-३२, धुलिया-जेल

पू० मालवीयजी आदि छूट गए। गांधीजी के छूटने की मित्रों को आशा होने लगी। सरोजिनीदेवी के छूटने की खबर सुनी। विश्वास नहीं हुआ।

८-५-३२, धुलिया-जेल

बापू के प्रति मीराबहन की सगुण भक्ति है व विनोबा की निर्गुण। मैंने यह विनोबा को बताया, तो उन्होंने यह स्वीकार किया।

१९-५-३२, धुलिया-जेल

रात में नींद देर से आई। टालस्टाय की कहानी व तुलसी-रामायण, कांग्रेस-संगठन, पू० बापू के मंत्री, फादर ऐल्विन व एंड्रूज सरीखे सहायक आदि के विचार आते रहे।

१०-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा के छात्र व मराठी प्रकाशन-विभाग के संचालक भाउ पानसे को बापूजी ने गीता के ध्यान के बारे में पत्र लिखा[1]। उसकी नकल की।

२४-८-३२, धुलिया-जेल

लंदन में बापूजी का जो भाषण रेकार्ड हुआ था, वह सुना। सुन्दर था।

१४-९-३२, धुलिया-जेल

भोजन के बाद आराम के समय मणिभाई कोठारी व गुलजारीलाल नंदा की घबड़ाहटभरी आवाज सुनी। बापू के ता० २० से आमरण उपवास की खबर से गुलजारीलाल एकदम फूट-फूटकर रोने लगे। मेरे मन में थोड़ा विचार आया। बाद में सब मित्रों को समझाया।

---

[1] देखिये 'महादेवभाई की डायरी', भाग १ (नवजीवन प्रकाशन मंदिर द्वारा प्रकाशित)

बापू-होर ११ मार्च, होर-बापू १३ अप्रैल, बापू-मैकडानल्ड १८ अगस्त, मैकडानल्ड-बापू ८ सितंबर और बापू-मैकडानल्ड ९ सितम्बर के तार पढ़े ।

१७-९-३२, धुलिया-जेल

रानडे, देव व चन्द्र राय को अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से व बापू के उपवास के कारण, वर्तमान परिस्थिति में उसका क्या धर्म है, यह समझाकर बताया ।

२०-९-३२ धुलिया-जेल

गांधीजी के उपवास के लिए सब राजनैतिक कैदियों ने बहुत ही शान्ति, गंभीरता व भावना से प्रार्थना की । श्री मणिभाई कोठारी व मुंशीजी के सुन्दर प्रवचन हुए ।

२१-९-३२, धुलिया-जेल

आज बापू के उपवास का दूसरा दिन है ।

२२-९-३२, धुलिया-जेल

बापू के उपवास का आज तीसरा दिन है । बापू के समाचार मालूम हुए । जेलर ने बुलाया । अस्पृश्यों के बारे में जो प्रश्न-उत्तर भेजा, वह बतलाया ।

प्रताप सेठ मिलने आये । महात्माजी का उपवास, मिल-मजदूर तथा स्वास्थ्य आदि के संबंध में बातें । भविष्य के बारे में कहा ।

बापू के उपवास का चौथा दिन ।

२३-९-३२, धुलिया-जेल

हिंगणघाट में एक मंदिर व वर्धा तालुके में तीन मंदिर हरिजनों के लिए खुले ।

२४-९-३२, धुलिया-जेल

बापू के उपवास का पांचवां दिन । 'गांधी-विचार-दोहन' पढ़ा ।

पू० बापू ने यरवडा-जेल से २१ ता० को मेरे व मणिभाई के नाम जो पत्र भेजा था, वह आज मिला । पढ़कर अपनी योग्यता व जवाबदारी का विचार आया । परमात्मा से प्रार्थना । बापू का प्रेम । अस्पृश्यता-संबंधी समझौता जल्दी होने की आशा है, ऐसा समाचार मिला ।

२६-९-३२, धुलिया-जेल

'गांधी-विचार-दोहन' पढ़ा।

बापू की प्रतिज्ञा पूरी हुई। शाम को ५। बजे उपवास पूर्ण हुआ।

वर्धा का राममंदिर हरिजनों के लिए खुलने का तार आया।

प्रधान मंत्री ने पूना-समझौता स्वीकार कर लिया।

बम्बई का १ बजे का तार यहां १-३५ को मिल गया। उपवास-समाप्ति का राजाजी का नीचे लिखे आशय का तार मिला—

'सोमवार सवा पांच बजे बापू ने उपवास समाप्त किया। टैगोर ने प्रार्थना कराई। बा ने फलों का रस दिया।

रूपरानी व कमला नेहरू, आश्रम के बच्चे तथा दूसरे उपस्थित थे।'

२७-९-३२, धुलिया-जेल

बापू की तबीयत के बारे में चिन्ता। कलेक्टर से मैंने कहा कि अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से हरिजनों के लिए मंदिर वगैरा यहां भी खुलने चाहिए। उन्होंने इस सम्बन्ध में उद्योग करने का स्वीकार किया।

बापू का जन्मदिन, देशी तिथि से चरखा-द्वादशी। आज बापू को ६३ वर्ष पूरे हुए और ६४वां वर्ष लगा। चार चरखे व तकलियां अखंड चलीं। मेरे जिम्मे चार घंटे चरखा कातना आया।

पू० बापू को सुबह जो पत्र लिखा था, वह आज शाम को भेज दिया। बापू का स्वास्थ्य सुधर रहा है, यह जानकर सुख मिला।

२९-९-३२, धुलिया-जेल

मणिभाई कोठारी वगैरा ने कहा कि बापू तीन तारीख से पहले छूट जायंगे। स्थिति आशाजनक लगती है।

४। से ५ तक बापू-सप्ताह निमित्त चरखा चलाया।

३०-९-३२, धुलिया-जेल

रामेश्वरदास मिला। जानकी के नाम लिखे बापू के पत्र की नकल बताई। बड़ा सुन्दर पत्र है।

बापू-सप्ताह निमित्त चरखा काता।

२-१०-३२, धुलिया-जेल

अंग्रेजी तारीख के हिसाब से आज बापू का जन्मदिन है।

३-१०-३२, धुलिया-जेल

बापू ने जानकी को जो पत्र लिखा, उसका उर्दू में अनुवाद किया ।

४-१०-३२, धुलिया-जेल

बालकों ने आज गांधी-सप्ताह पूरा किया । भजन, प्रार्थना आदि में शामिल हुआ । प्रसाद बांटा । सीताराम शास्त्री ने बापू के आगामी जन्म-दिन तक १२ मंदिर खुलवाने का संकल्प किया ।

२-११-३२, धुलिया-जेल

यरवदा-मंदिर से मेरे स्वास्थ्य के बारे में पू० बापू का तार आया । उसका जवाब तैयार किया ।

३-११-३२, धुलिया-जेल

मेरे स्वास्थ्य के बारे में कल पू० बापू का जो तार आया था, उसपर सुपरिंटेंडेंट से विस्तृत विचार-विनिमय के बाद उसका जवाब तार से भेज दिया । तार भेजने के बाद डॉ० मोदी की जो राय आई, वह सुपरिंटेंडेंट को बतलाई ।

४-११-३२, धुलिया-जेल

बापूजी को विस्तार से पत्र लिखा । जेलर को पढ़कर सुनाया । उसी समय बापूजी का मेरे नाम का २ ता० का लिखा हुआ पत्र मिला । उस पत्र का भी विस्तृत जवाब दिया । उसकी नकल की । आज बापू के पत्र का ही काम हुआ । इसमें साढ़े पांच घंटे लगे ।

५-११-३२, धुलिया-जेल

उर्दू का अभ्यास किया । बापू को पत्र जो लिखा, उस बारे में सुपरिंटेंडेंट से बातें । उसके व्यवहार से दुःख हुआ । उसका व्यवहार बहुत ही अपमान-जनक लगा ।

आराम के बाद जेलर के कहने से दूसरा पत्र लिखकर और नकल करके दिया । मन में बुरा लगता रहा ।

१४-११-३२, धुलिया-जेल

ता० १० को बापू का जो पत्र आया था, उसका जवाब आज लिखकर इंस्पेक्शन के टाइम पर दिया ।

शाम को पू० बापू का तार आया—कान के बारे में डॉ० मोदी के पास

से जांच कराने के लिए व खांसी के बारे में भी। आपस में विचार करके पू० बापू व आई० जी० पी० को तार भेजने का निश्चय हुआ। वे दोनों तार जेलर के पास भेज दिये गए।

१५-११-३२, धुलिया-जेल

पू० बापू को भेजे जानेवाले पत्र जेलर को बराबर पढ़कर बतला दिये। पू० बापू व आई० जी० पी० के तार के मसविदे में श्री मणिभाई व दूसरे मित्रों की सलाह से थोड़ा फर्क किया। तार दोनों को चले गए। मन हलका हुआ।

२१-११-३२, धुलिया-जेल

पू० बापू को तार भेजा।

शाम को यहां जेल के वातावरण से ऐसा आभास होने लगा कि मुझे शायद पूना भेजें। मन में आनन्द व शान्ति महसूस की।

२६-११-३२, यरवदा-जेल

बारह बजे यरवदा-जेल में पहुंचा। बापू के निकट होने के कारण मन को बड़ा संतोष, शांति और आनन्द मिला। बापू के दर्शन की इच्छा। बापू का पत्र मिला। उत्तर भेजा[1]।

२७-११-३२, यरवदा-मंदिर

मेजर भंडारी व मेहता दोनों मिले। अच्छी तरह से जांच वगैरा की। दूध-मक्खन आदि अधिक लेने का मेजर मेहता ने आग्रह किया। मेजर भंडारी ने दाल खाने को भी कहा। मैंने कहा कि बापू से सलाह करके निश्चय करेंगे।

मन को खूब शांति व प्रसन्नता हो रही है। यहां कुछ महीने रहने से अवश्य लाभ होगा, ऐसा लगता है।

२९-११-३२, यरवदा-मंदिर

आज बापू-दर्शन का दिन है।

सुपरिंटेंडेंट का बुलावा आया। पू० बापूजी वहां पहले से मौजूद थे।

---

[1] एक ही जेल में होते हुए भी जमनालालजी को बापूजी के साथ न नहीं रखा गया था। जेल के अन्दर ही उनका आपस में पत्र-व्यवहार होता था।

प्रयास किया। उनसे स्वास्थ्य, खानपान आदि की चर्चा हुई। मिलने के बारे में लिखा-पढ़ी करनी होगी।

३-१२-३२, यरवदा-मंदिर

आज सुबह मैंने आधा रतल बकरी का व एक रतल भैंस का दूध लिया। सुना कि बापू ने आज दूध नही लिया।

बापूजी के फिर से उपवास करने की उड़ती हुई चर्चा सुनी। मन में थोड़ा विचार होने लगा।

४-१२-३२, यरवदा-मंदिर

बापूजी ने आज उपवास करने का विचार एक बार छोड़ दिया, ऐसा सुना, तथापि अभी फैसला नहीं हुआ। ईश्वर सब ठीक करेगा।

७-१२-३२, यरवदा-मंदिर

मेजर मेहता आये। बापू की राजी-खुशी के समाचार कह गए। मुलाकात आई० जी० पी० से पूछकर देंगे।

बापू का स्वास्थ्य के बारे में व कमल को लंका (सीलोन) भेजने के बारे में पत्र मिला, मैंने उत्तर दिया और कमल को दक्षिण अफ्रीका भेजने की अपनी राय लिखी।

११-१२-३२, यरवदा-जेल

बापू का सुन्दर पत्र मिला[१]। जवाब मेजर भंडारी को पूछकर भेजना है।

१२-१२-३२, यरवदा-मंदिर

सुपरिंटेंडेंट इन्सपेक्शन के लिए आये।

कर्नल डायल व लन्दन के बारे में बापू का पत्र मिला। बापू के पत्र का जवाब आज भेजा।

१४-१२-३२, यरवदा-मंदिर

बापू ने फाउंटेनफेन की स्याही भेजी। बापू का वजन १०३ रतल हो गया, यह जाना।

ब्राउन ब्रेड[२] में जो शक्कर पड़ती है, उसके सम्बन्ध में बापू से चर्चा

[१-२] देखिये 'बापू के पत्र', पत्र-संख्या ९७ और ९८।

करना। दो रतल गेहूं में तीन रतल की तीन रोटी होती हैं, याने २६।। तोले गेहूं दिन-भर में खाया जाता है।

२०-१२-३२, **यरवदा-मंदिर**

मेजर मेहता ने कल 'सी'-वर्ग के लोगों के साथ मिलने-जुलने के बारे में संकोच दिखाया, मेजर भंडारी से उसका खुलासा किया।

गुरुवायूर मंदिर-प्रवेश-संबंधी फाइल बापू भेज देंगे। अस्पृश्यता-निवारण-संबंधी अन्य कागजात भी मैं देख सकता हूं, यह खुलासा हुआ है।

टोस्ट अस्पताल में बनाकर लेने का कहा। स्वदेशी शक्कर की व्यवस्था की चर्चा।

पू० बापू से मुलाकात हुई। आज मालूम हुआ कि बम्बई-सरकार ने मुझे बापू से मुलाकात करने की पूरी छूट दी है। बापू से ब्रेड व शक्कर की चर्चा हुई। गुरुवायूर मंदिर-प्रवेश के बारे में बापू ने कहा कि शायद उपवास न करना पड़े। मुझे फाइल देखने को देंगे। सजा के बारे में बापू से विनोदात्मक चर्चा, कमल की पढ़ाई के संबंध में भी।

२२-१२-३२, **यरवदा-मंदिर**

प्रार्थना के बाद ४।। से ६ बजे तक बापू की अस्पृश्यता-निवारण-संबंधी फाइल पढ़कर वापस भेजी।

मेजर भंडारी से बापू के पास मुझे रहने देने या मुलाकात के समय उन्हें मिलने देने के संबंध में काफी चर्चा हुई।

बापू से तीसरी बार आफिस में सुपरिंटेंडेंट की उपस्थिति में मुलाकात हुई। बातचीत व चर्चा में बापू का समय थोड़ा ज्यादा ले लिया, उसका मन में विचार होता रहा।

२५-१२-३२, **यरवदा-मंदिर**

बापू से १०।। से १२ बजे तक आज चौथी बार मिला। संतोष हुआ। अस्पृश्यता-निवारण की फाइल देखकर तीन बजे वापस की।

२७-१२-३२, **यरवदा-मंदिर**

आज बापू की एक नम्बर की हरिजन-फाइल देखकर वापस भेजी। आज करीब चार घंटे हरिजन-फाइल पढ़ने में लगे।

३०-१२-३२, यरवदा-मंदिर

प्रार्थना-बाद हरिजन-फाइल नं० २ पढ़ी और बाद में वापस भेजी।

बापू को लिखकर गुरुवायूर मत-संग्रह का परिणाम व उस संबंध में बापू का स्टेटमेंट मंगवाया। वह शाम को आया। उसे तीन बार पढ़ा। मन को थोड़ी शान्ति हुई। पर बापू को उपवास के जरिये ही यह शरीर छोड़ने का विचार पैदा हुआ, इस संबंध में विचार चलता रहा।

ईश्वर-इच्छा!

३१-१२-३२, यरवदा-मंदिर

रात को दो बजे बाद नींद नहीं आई। चार बजे से पहले ही प्रार्थना आदि करके, गुरुवायूर-मंदिर-प्रवेश के संबंध में बापू ने उपवास करने का जो स्टेटमेंट दिया, उसकी नकल की। इसमें साढ़ तीन घंटे लगे। फिर बापू को पत्र लिखा।

डायरी के अंश

१९३३

२-१-३३, यरवदा-मंदिर

पू० बापू से करीब डेढ़ घंटा मुलाकात हुई। उनका पत्र मुझे करीब ९॥। बजे मिला। इसलिए पूरी तैयारी नहीं कर पाया।

यहां आने के बाद बापू से चार मुलाकातें पहले हो चुकीं। आज यह पांचवीं थी।

हरिजन-फाइल देखी। शाम की प्रार्थना के बाद भी करीब दो घंटे देखता रहा।

६-१-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक एक घंटा मुलाकात हुई। संतोषजनक बातचीत। मंदिरों की फहरिस्त, हरिजन-फाइल, विनोबा ने नालवाड़ी में आश्रम कायम किया उस बारे में, और आश्रम का कब्जा, बालकोबा की देखरेख, देशपांडे, दास्ताने, वर्धा के मुकद्दमे, वर्धा-जेल, कान व जनेऊ आदि के बारे में बापूजी से चर्चा हुई।

७-१-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-फाइल पढ़ी। बापू के नाम विनोबा ने नालवाड़ी से ३०-१२-३२ को जो पत्र भेजा, वह तथा छोटेलालजी का पत्र पढ़ा। विनोबा का पत्र पढ़कर बड़ा सुख व प्रेम मिला।

९-१-३३, यरवदा-मंदिर

पू० बापू से सातवीं मुलाकात, १२ से १ बजे तक। बिड़ला-कमेटी के विधान के बारे में तथा अन्य बातें। अम्बालाल की मशीन पर, बिजली से, मेजर मेहता ने बापू के हाथ का इलाज किया, वह देखा।

११-१-३३, यरवदा-मंदिर

रात में सुन्दर स्वप्न आया, जैसे आकाशवाणी हुई और प्रत्येक मंदिर

की देवमूर्तियां कहने लगीं कि गांधी का कहना सही है। उसीके अनुसार करो। अस्पृश्यता का भेद निकाल डालो, आदि।

आज सुबह प्रार्थना के बाद व दोपहर को ऑल इंडिया एण्टी-अंटचेबिलिटी लीग, जिसका नाम अब 'सर्वेंट्स ऑफ अंटचेबल्स सोसायटी, दिल्ली' हो गया है, के विधान तथा कार्य-पद्धति आदि के बारे में बापू से विचार-विनिमय। बापू के कहने पर अपने सुझाव उन्हें सविस्तर लिख भेजे।

१३-११-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-फाइल में से श्री रणछोड़भाई पटवारी के ८८ प्रश्न व बापू के उत्तर ध्यान से पढ़े व नोट किये।

बापू से आठवीं मुलाकात, १२ से १ बजे तक। घनश्यामदासजी को विधान के बारे में तथा अन्य सूचना का पत्र भेज दिया।

रणछोड़भाई के प्रश्न २, ३, ९, १८, ३७, ४०, ७४, ७७ के जवाब के बारे में मैंने मेरे अपने विचार उन्हें कहे। पोलक आज बापू से मिलनेवाले थे। रोहित मेहता के बारे में उन्होंने पूछताछ की। मेजर मेहता की परवानगी लेकर रोहित मेहता से मिला। डॉ० माखडेकर के साथ प्रथम बार बीमारों की बैरक आज देखी। रोहित को हिम्मत दी। उन्होंने कहा कि पेरोल के लिए मेजर भंडारी के कहने पर लिखा है।

बापू से मिलने के बाद थोड़ी देर सो गया। बाद में हरिजन की नई फाइल देखना शुरू किया।

१५-१-३३, यरवदा-मंदिर

आज बापू की बकरियां व उनके बच्चों के दर्शन नहीं हुए—सुबह व शाम को भी बापू का नाई गणपत भी नहीं आया।

१६-१-३३, यरवदा-मंदिर

पूज्य बापू से १२। से १॥ बजे तक नवीं मुलाकात। हरिजन-प्रश्न, नगीनदास मास्टर का प्रश्न तथा जेल व मारपीट पर चर्चा आदि। सुपरिंटेंडेंट भंडारी ने विश्वास दिलाया कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा।

जेल में निम्न सुधारों की चर्चा पू० बापू से व जेल-अधिकारियों से करने का विचार —

१. मारपीट बिलकुल बंद होनी चाहिए।

२. सी-वर्ग के कदियों को कोठरियों में बन्द होने के समय म फर्क करना—देरी से बंद करना ।
३. पोस्ट कार्ड की जगह पत्र ।
४. इतवार को तेल, नमक की सुविधा ।
५. जो गुड़ न लें, उन्हें दाल ।
६. सी-वर्गवालों के लिए लिखने के साधन ।
७. रोशनी का इंतजाम ।
८. पेशाब के कुंडे ढंके रहने की व्यवस्था ।
९. साग तथा रोटी में सुधार ।
१०. गेहूं इस वर्ष सस्ता है। बाजरा की जगह दे सकते हैं ।
११. अखबार कम-से-कम साप्ताहिक तो दिया ही जाय ।

१९-१-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से आज दसवी मुलाकात, १२-१० से १॥ तक बातचीत । खास तो सनातनियों से अपील तथा समझौते का खुलासा पढ़ा । संतोष हुआ । ता० १४ के स्टेटमेंट का खुलासा बापू ने समझाया । कमलनयन, नगीनदास मास्टर तथा नवीनचन्द्र के बारे में चर्चा । बरेलीवाला नोटिस इन्हें पसंद है । वाइसराय का जवाब नही आया । विनोबा के तथा मेरे खानपान के बारे में बापू ने दोनों मेजरों से चर्चा की । मैंने उन्हे चिन्ता न रखने को कहा ।

२१-१-३३, यरवदा-मंदिर

जेलर गोखले आये। पूछा कि डॉ० मोदी को बुलाना चाहते हैं क्या ? मैंने कह दिया कि जरूरत होगी तब बापू की सलाह लेकर निश्चय कर लिया जायगा । यहां बुलाने की इच्छा कम है ।

२३-१-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक ग्यारहवी मुलाकात । बापू ने 'आश्रम का इतिहास' लिखा है । वह मुझे पढ़ने को भेजेंगे, ऐसा कहा । महिलाश्रम, वर्धा के बारे में कहा कि विचार करके कहेंगे । डॉ० मोदी को दिखाने के लिए बापू की राय रही कि बम्बई जाना हो सके तो दिखाना चाहिए । वह सुपरिं-टेंडेंट से बात करेंगे । जेल-सुधार के बारे में कुछ चर्चा हुई । इस संबंध के

अपने विचार मैंने बापू के सामने रखे। बापू ने कहा कि इसके लिए कोशिश तो करनी चाहिए, परन्तु अपमान, गाली-गलौज, मारपीट को छोड़कर अन्य बातों के बारे में सीधा विरोध करना ठीक नही है।

बापू के पास से हरिजन-फाइल आई। पढ़ना शुरू किया।

२४-१-३३, यरवदा-मंदिर

जेलर ने बापू का आज की तारीख का स्टेटमेंट[१] लाकर दिया, उसे चार-पांच बार पढ़ा। हृदय में भक्ति, प्रेम व चिन्ता आदि के भाव उत्पन्न हुए।

२५-१-३३, यरवदा-मंदिर

वाइसराय ने डॉ० सुब्बारायन के मद्रास के बिल को मंजूरी नहीं दी। विचार करने पर लगा कि यह एक प्रकार से बहुत ठीक ही हुआ। अब जो प्रचार-कार्य होकर मजूरी मिलेगी, वह ज्यादा असरकारक होगी। ईश्वर सब ठीक करता है।

बापू का स्टेटमेट खूब शाति से ईश्वर-प्रार्थना करके पढ़ा। अभी सुबह ही वापस करना है।

२६-१-३३, यरवदा-मंदिर

पू० बापू से १२ से १ बजे तक बारहवीं मुलाकात हुई। बापू के सिर में दर्द था, इस कारण मिट्टी की पट्टी बांधकर आये थे। खुराक कम कर दी है। २४ ता० से कातना भी शुरू कर दिया है। उन्होंने हाथ के दर्द के बारे में कहा कि इसमें फर्क नहीं पड़ा है। ता० २४ के स्टेटमेंट के संबंध में कहा कि अनशन करने का अभी जल्दी ही याने करीब ६ महीने तो संभव नहीं दीखता।

जयकर, सप्रू, अंबेडकर को बापू ने पत्र-तार आदि अस्पृश्यता-निवारण बिल के बारे में दिये। पू० मालवीयजी का भी सुन्दर तार आया। एंड्रूज के दो तार आये। उन्हें अनशन स्थगित हो जाने के कारण संतोष हुआ। मेरे कान के इलाज के लिए अभी बंबई न जाने का निश्चय हुआ।

---

[१] देखिये 'महादेव भाई की डायरी', भाग ३, पृष्ठ ३९०; नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित।

२८-१-३३, यरवदा-मंदिर

चरखा काता। बापू ने 'गोंड सेवा मंडल' के नियम-वगैरा भेजे थे। उन-पर बापू के लिए विचार करके नोट तैयार किया।

३०-१-३३, यरवदा-मंदिर

पू० बापू से १३वीं मुलाकात—१२। से १ बजे तक। स्वास्थ्य, अस्पृश्यता-निवारण, वेरियर एलविन का आश्रम, जेल-सुधार आदि के बारे में चर्चा। सुपरिंटेंडेंट मेजर भंडारी ने उन्हें जो कहा था, वह उन्होंने बताया। मैंने उसका खुलासा किया। शीघ्र जो सुधार होने चाहिए, वे मैंने पू० बापू व श्री कटेली को नोट करा दिये। उन्होंने कहा कि तेल तो इतवार को मिला करेगा। नमक-मिर्च का अभी तय नहीं हुआ है। अन्य आवश्यकताओं के बारे में भी तय होना बाकी है।

२-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२-१० से १। बजे तक १४वी मुलाकात हुई। विविध वृत्त तथा अन्य पत्रों का खुलासा किया। मुझे किसी प्रकार का विचार व चिंता न करने को कहा। वह जो कुछ भेजें, उन्हें मैं बिना विचार के पढ़ता रहूं। छपी हुई पुस्तकें, पेम्फ्लेट आदि नगीनदासजी या मित्रों को दिखाना चाहूं तो दिखा सकता हूं।

अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से पूना से अंग्रेजी में 'हरिजन' पत्र अगले सप्ताह से निकलना शुरू होगा। दिल्ली से यह पत्र हिन्दी में भी निकलेगा। वियोगी हरि संपादक होंगे।

राजाजी के कार्य का खुलासा। बापू के हाथ के दर्द के लिए डॉ० गिल्डर या डॉ० भरूचा को बुलाने के संबंध में उनसे चर्चा हुई। उन्होंने अभी जरूरत नहीं समझी।

४-२-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-फाइल आई। पढ़ना शुरू की। 'सत्याग्रह-आश्रम का इतिहास' जो बापू ने लिखा है, वह भी आज आया।

६-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक १५वीं मुलाकात। डॉ० अम्बेडकर के विचार, उनका व्यवहार, हिन्दू जाति से लड़ने की उनकी तैयारी आदि के

बारे मे चर्चा। बापू को इससे दुःख तो पहुंचा ही है। मंदिर-प्रवेश का हाल बताया। मेरे स्वास्थ्य-संबंध मे मैंने बापू से प्रार्थना की कि आप मेरे बारे में अधिकारियो से अधिक चर्चा न करे तो मुझे सतोष रहेगा। मं स्वय, अपनी खुराक, जो कुछ ज्यादा मालूम होती है, घटाना चाहता हूं। जेल-सुधार के बारे में बापू ने लिखकर भेजा है।

७-२-३३, यरवदा-मंदिर

सवेरे बापू की बकरियों के दर्शन करके आनन्द हुआ।

बापू ने सवेरे मिलने बुलाया। करीब आधा घंटा स्वास्थ्य के बारे में व जेल की चिन्ता न करने के बारे मे समझाया। अपना उदाहरण देकर कहा। मैंने अपनी अडचने बताई। 'हरिजन' अग्रेजी पत्र का प्रकाशन। पत्र किन-किन को भेजा जाय, इसकी यादी जल्दी में तैयार करके भेजी।

८-२-३३, यरवदा-मंदिर

जेल-सुधार के संबंध में १५ प्रश्न खुलासेवार बापू के लिए लिखकर तैयार करना है।

१०-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १६वी मुलाकात १२। से १-१० तक। 'हरिजन' पत्र, हरिजन दिवस, जेल-सुधार आदि के संबंध में चर्चा। बा को छ महीन की सजा और ५००) जुर्माना। जुर्माना न देने पर डेढ़ महीने की सजा और। 'ए' वर्ग। मीराबेन का स्वास्थ्य बबई में खराब रहता है। इस संबध में बापू ने सरकार को लिखा है। दास्ताने व 'बी'-वर्ग बापू को पसंद नही। चेचक का टीका लगाने के बारे में बापू अधिकारियों से बातें करेगे।

बापूजी ने नया प्रकाशित 'हरिजन' साप्ताहिक पत्र पढ़ने भेजा। प्रेम-पूर्वक उसका स्वागत किया।

१२-२-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-फाइल आई। २॥ बजे कोठरी मे बंद होने बाद उसे देखा। बाद में 'सर्वेंट आफ अटचेबल्स सोसाइटी' का नया विधान, जो बापू ने देखने भेजा था, पढ़ा। चरखा काता।

१३-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२-१० से १ बजे तक १७वी मुलाकात हुई। बापू को मैंने यह सुझाया कि 'हरिजन' में हर हफ्ते एक कालम आमरण अनशन से लगाकर आज तक जो अनुभव उनको हुआ, इस सबंध में वह स्वयं लिखा करे। यह सुझाव उन्हें पसंद आया। 'अस्पृश्यता-निवारण समिति' के विधान के बारे में भी कुछ सुझाव दिये। बापू ने कहा कि लिखकर भेज दो। अबेडकर, राजभोज, रावबहादुर राजा वगैरा के बारे में उनका मत जाना। बापू ने अपने स्वास्थ्य की रिपोर्ट बताई। जानकीदेवी ने ओम् के बारे में बापू को जो कहा, वह उन्होने बताया। ओम् को बारूताई के पास रखने की मैंने सूचना की। बाद में 'आश्रम' या 'शारदा-मदिर' आदि कही का भी सोचा जा सकता है।

सरोजिनी नायडू का आज जन्मदिन है। बापू ने कहा कि वह मिलने आनेवाली थी।

प्रभुदास की सगाई के बारे मे बातें हुई। गोमतीबहन की व्यवस्था सूरत मे करनेवाले हैं।

बापू ने कहा कि विनोबा तीन वर्ष के अन्दर ब्रह्म की प्राप्ति कर लेने वाले हैं।

अप्पासाहब का फैसला हो गया। अब बापू का इस बारे में उपवास करन का अंदेशा नही रहा।

'अस्पृश्यता-निवारण समिति' का विधान तीन बजे ठीक करके वापस भेजा।

१७-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापूजी से १९वी मुलाकात १२-१० से १२-५० तक। वेरियर एलविन ने श्रीमती नाओर जिलेट से ईस्टर के बृहस्पतिवार के दिन करंजिया ग्राम में विवाह करने का निश्चय किया। १२-२-३३ का पत्र वेरियर ने बापू को मुझे दिखाने को लिखा था। बापू ने यह मुझे दिखाया। चिचवड-आश्रम-संबंधी देवधर की योजना बापू ने मुझे विचार करने के लिए दी। बापू को विश्वनाथ के बारे में अपने विचार कहे। नगीनदासजी के मार्फत उनकी मदद लेने का निश्चय। बापू का वजन १०३ रतल हुआ। डॉ० अंबेडकर, मालवीयजी,

राजाजी आदि के बारे में वाइसराय का जवाब आया। उस संबंध में व हरिजन के संबंध में बापू ने संक्षेप में बताया। मीराबहन साबरमती गई। प्यारेलाल नासिक को।

१८-२-३३, यरवदा-मंदिर

वेरियर एलविन के विवाह के संबंध मे बापूजी को लिख भेजा।

१९-२-३३, यरवदा-मंदिर

देवधरजी की चिंचवड-आश्रम की योजना के बारे में बापू को अपने विचार लिखकर भेजे। बापू की बकरियां आज भूलकर इस 'कब्रस्तान वार्ड' में आ गईं। आश्चर्य व आनन्द हुआ।

२०-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १९वी मुलाकात १२-२० से १ तक। वेरियर एलविन के विवाह के बारे में बापू को थोड़ा आश्चर्य व विचार हुआ। देवधर की चिचवड की योजना के बारे में मेरी सूचनाओं पर विचार। स्वामी आनन्द के वजन के बारे में, शिवप्रसाद गुप्त बनारसवालों का स्वास्थ्य व उनकी लड़की के लड़के की अचानक मृत्यु आदि के बारे में चर्चा। मेरे वजन व खुराक के बारे में बापू ने पूछा। मराठी व बंगला 'हरिजन' भी जल्दी शुरू होगा, यह बापू ने बताया।

२२-२-३३, यरवदा-मंदिर

कल रात १० बजे से आज सुबह तक सोने का नाम नही। परमात्मा का खूब चिन्तन व प्रार्थना। मन में हरिजन-कार्य तथा चालू काम की योजना की स्फूर्ति पैदा हुई। चिट्ठी निकाली। बापू को मुलाकात के बारे में ३ बजे रात्रि को पत्र लिखा।

बापू से २०वी मुलाकात १२-१० से १-२० तक। रात में चलते रहे विचारों का हाल कहा व अपना निश्चय बापू को बताया। एक बार तो आज ही जाने का मेरा निश्चय कायम रहा। बाद में सूक्ष्म चर्चा होने के बाद बापू ने श्री कटेली के पास से चिट्ठी उठवाई।[1] जाने के बारे में प्रयत्न न करने की चिट्ठी आई। संतोष हुआ।

---

[1] बंबई जाकर डाक्टर को कान दिखाने के बारे में।

२३-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू ने एलविन को आज सुबह ४-३० बजे, उनके विवाह के संबंध में सुन्दर पत्र लिखकर भेजा। उसपर विचार किया।

२५-२-३३, यरवदा-मंदिर

नागपुर से पूनमचंद रांका की पत्नी का रजिस्टर्ड पत्र मिला। पू० बापूजी को नोट लिखकर भेजा कि वह सिवनी-जेल में पूनमचंदजी को व नागपुर उनकी पत्नी को तार भेजें। बापूजी का जवाब मिला कि उन्होंने तार-वगैरा भेज दिया है। श्री राघवेन्द्रराव को भी लिखा है।

२६-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू ने रामदास गांधी को जेल की स्थिति पर सुन्दर पत्र लिखा। मैंने भी उसे भली प्रकार समझाया। बात उसके गले लगभग उतरी दीखती है।

२७-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से २१वीं मुलाकात १२-३५ से १-३५ तक। 'हरिजन' पत्र की ग्राहक-संख्या छः हजार है। शिवप्रसादजी का स्वास्थ्य, पूनमचद रांका, सिवनी-जेल की स्थिति आदि के सबध में चर्चा। जेल में 'हरिजन' मिलने के बारे में बम्बई-सरकार को पत्र। 'हरिजन' विद्यार्थियों को सरकारी विद्यालय, कालेज आदि में पढ़ने के लिए असहयोगी भी सहायता कर सकते हैं? यह पूछने पर बापू ने कहा कि करना चाहिए। मेरे आहार के बारे में पूछने पर बापू ने कहा कि कांजी व प्याज लेना मेरे लिए उचित है।

जल-सुधार की चर्चा। सुपरिंटेंडेंट मेजर भंडारी के बारे में भी थोड़ी चर्चा हुई। मेरे कान की जांच के लिए मुझे बंबई भेजने के बारे में आई० जी० पी० को लिखा गया है। इसी सप्ताह में शायद जाना पड़े। मथुरादास से बापू मिलेंगे। रामदास के बारे में ठीक चर्चा व विचार।

२८-२-३३, यरवदा-मंदिर

'प्रस्थान' (गुजराती मासिक पत्र) का अस्पृश्यता-अक आज पढ़ा। बापू का लिखा हुआ 'आश्रम-इतिहास' आज वापस भेजा। 'हरिजन-सेवक' भी पढ़कर वापस भेजा।

रामदास की मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। उसे बहुत-सी बातें समझाकर कहीं। उससे संतोष लगा।

२-३-३३, यरवदा-मंदिर

रामदास से बातचीत। उसने बापू को जो पत्र लिखा, वह बतलाया। रामदास के लिए बापू ने गीता में से चालीस श्लोक चुनकर दिये। उसका नाम उन्होंने 'रामगीता' रखा। वे श्लोक रामदास के पास से नोट कर लिये।

३-३-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से बाईसवी मुलाकात, १२-१० से १२-५० बजे तक। चन्द्रशंकर को डॉ० मोदी के लिए लिखा। बापू ने बम्बई-सरकार को मेरे बारे में पत्र भेजा है। मुझे दिखा नही सके, इसका कारण बताया। 'प्रस्थान' के अंकों के बारे में मैंने बापू मे अपने विचार कहे। अंक सुन्दर है।

रामदास के स्वास्थ्य व मुलाकात के बारे में चर्चा।

४-३-३३, यरवदा-मंदिर

राजाजी व देवदास आज बापू को मिलने आये होंगे। हरिजन-फाइल आई—'हरिजन' का चौथा अक आज मिला, पढ़ा।

६-३-३३, यरवदा-मंदिर

पूज्य बापू से तेईसवी मुलाकात करीब ४० मिनट तक हुई। स्वास्थ्य का हाल बताया। बापू ने मेरे बारे में बम्बई-सरकार को पत्र लिखा था, वह मुझे दिखा सकते है या नही, उसपर थोड़ी चर्चा। मैंने कहा कि आपकी दलीलों से मेरा पूरा समाधान नहीं हुआ। राजाजी एक बार तिरचेनगोडु जायंगे। देवदास आश्रम में लक्ष्मी व मारुति राय का विवाह कराने जायगा। शंकरलाल बैंकर वापस जायंगे। 'हरिजन' कैदियों को नहीं मिल सकेगा। सरकार का इन्कार आ गया। विनोबा की मराठी गीताई का यहां प्रचार किया जा सकता है। सुपरिंटेंडेंट भंडारी को मेरी सब सूचनाएं—जेल-सुधार की—स्वदेशी शक्कर के साथ की, कह देने का बापू ने स्वीकार किया। आगामी शुक्रवार को वह जवाब देंगे। रामदास के बारे में भी चर्चा हुई।

७-३-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-फाइल आई। बंगला 'हरिजन' देखा। पुस्तकाकार रूप में निकला। बाहर पृष्ठ पर सुन्दर चित्र है। शीतलाबाबू संपादक हैं। सतीश-बाबू को बापू ने पत्र भेजा।

८-३-३३, यरवदा-मंदिर

आज सतारेवाले परचुरे शास्त्री छूटे। उनका साबरमती-आश्रम में रहने का बापू ने निश्चय किया।

९-३-३३, यरवदा-मंदिर

श्रीराम वाजपेयी-लिखित 'स्काउटिंग और ग्राम-सेवा' नामक पुस्तक पर बापू ने मेरी राय मंगाई थी, वह लिखकर भेजी। 'जन्मजात अस्पृश्यतेचा मृत्युदिन' और रत्नागिरी के बारे में सूचनाएं भेजी।

१०-३-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से चौबीसवी मुलाकात—१२-५ से १२-४५ बजे तक। स्वास्थ्य, पूनमचंद रांका व उनकी भूख-हड़ताल, राजनैतिक कैदियों का एक वर्ग रखना या उन्हें अलग रखना आदि के बारे मे चर्चा। उनकी भूख-हड़ताल ता० ४ या ५ से शुरू हुई है। बापू जाजूजी को आज तार भेजेंगे। शिवप्रसादजी गुप्त का स्वास्थ्य, हरिजन-कार्य आदि के संबंध मे चर्चा। मेजर भंडारी ने जेल-सुधार-संबंधी सूचनाओं का क्या उत्तर दिया, यह पूछा। मीरा, बा, राधा, कुसुम आदि के स्वास्थ्य-समाचार।

११-३-३३, यरवदा-मंदिर

अंग्रेजी 'हरिजन' आया। हरिजन-फाइल भी आई, देखी। वेरियर एलविन के बापू के नाम दो पत्र व बापू ने उनको आज जो जवाब भेजा, वह महत्व का था। घनश्यामदास बिड़ला ने मालवीयजी को ता० २१ को जो पत्र लिखा, वह तथा असेम्बली के मेम्बरों को दिल्ली में जो पार्टी दी गई, उसका हाल तथा बनारस मे भेजा हुआ बापू के नाम का पत्र देखा।

१३-३-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से पच्चीसवी मुलाकात। जाजूजी को, बापू ने पूनमचंदजी के बारे में तार भेजा था। वह तार आई० जी० पी० के पास भेजा गया। जेल-सुधार के बारे मे मेजर भंडारी का खुलासा बापू ने कहा। वेरियर एलविन के पत्र से समाधान। कमल व रामकृष्ण के समाचार। मेरे बंबई भेजने के बारे में, सरकार की नीति, आदि पर चर्चा। बापू ने बताया कि लाला हरकिसनलाल गोबा का लड़का व सनातनधर्म कालेज का एक प्रोफेसर, मुसलमान हुए।

मुसलमान नेता जमा हुए थे। वसंत, पुरुषोत्तम, रघुनाथ अनसारे की चर्चा। बापू ने जानकीदेवी आदि की व डेविड-योजना की भी चर्चा की।

१४-३-३३, यरवदा-मंदिर

आज बापू की बकरियों से खेल खेला। उन्हें रोटी खिलाई, गेहूं उन्होंने नापास किया, बाजरा पास किया। उनके खान-पान व स्नान की व्यवस्था करानी है, बाल भी बढ़ गए हैं।

१५-३-३३, यरवदा-मंदिर

आज बापू को जो नोट भेजा, उसमें डेविड-योजना में जिनकी ओर से मदद मिल सकती है, उनके नाम लिखे। श्री जानकीदेवी अगर बापू की प्रार्थना स्वीकार न करें तो बापू ने उनका 'हुक्का-पाणी' बन्द करने की विनोदी सूचना लिख भेजी।

१७-३-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से छब्बीसवी मुलाकात। बापू का वजन १०५ रतल हुआ। स्वास्थ्य, वल्लभभाई, डेविड-योजना, महाराष्ट्र चरखा-संघ, अनन्तपुर खादी-कार्य, हरिजन उच्च वर्ण के लोग कैसे बनें, नैतिक व व्यावहारिक अड़चनें, इसमे डा० अंबेडकर का विरोध संभव है, आदि मेरी शंकाओं का समाधान। मेरा व डंकन का परिचय। लक्ष्मी का विवाह। १०० हरिजन आये। घनश्यामदास बिड़ला को पत्र, डेविड-योजना—पूनमचंद, शिवप्रसाद गुप्त आदि के हाल बापू ने कहे। रामदास के समाचार, हरिजन-फाइल आना आगे से बंद हो जायगी। सरकार से लिखा-पढ़ी आज ही बापू करेंगे। बापू ने मुझे बंबई जाने के बारे में समझाया। राजनैतिक दिक्कतों का डर।

१८-३-३३, यरवदा-मंदिर

रामदास से उसके मन की अशान्ति के संबंध में ठीक संतोषकारक चर्चा हुई। उसे भी समाधान हुआ मालूम दिया।

२०-३-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से सत्ताईसवी मुलाकात हुई। मेरा स्वास्थ्य व वजन १६७ हुआ, दो रतल बढ़ा। खांसी, सूजन आदि की चर्चा। बापू ने बम्बई-सरकार को हरिजन-फाइल मुझे देखने के लिए भेजते रहने आदि के बारे में लिखा है।

बम्बई जांच कराने के लिए सरकार को रिमाइंडर करने के बारे में बापू लिखें या मैं लिखूं, इसका आज निश्चय करेंगे ।

केशव बापू से मिल गया व हकीकत कही । श्री वल्लभभाई आदि के विचार कहे । बापू ने १४-३-३३ का 'आश्रम-समाचार' देखने को दिया ।

२२-३-३३, यरवदा-मंदिर

इन दिनों हरिजन-फाइल बन्द हो जाने तथा स्वास्थ्य सुस्त रहने के कारण मानसिक दुर्बलता के विचार भी बीच-बीच में मन में आने लगे ।

२४-३-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से २८वी मुलाकात । ईशु-चरित्र, डविड-योजना, नारायणदास व प्रमाबहन को महिला-आश्रम के लिए बापू लिखेंगे, आश्रम के बीमारों की हालत, गुलजारीलाल का स्वास्थ्य ठीक है, हरिजन-बिल, बापू डा० मोदी को पत्र लिखेंगे, आदि चर्चा । बापू ने कहा कि बम्बई में मुझे दूध लेना चाहिए । मैंने गाय की कतल आदि का कारण समझाया । बापू ने उसका समाधान किया । बापू, हो सका तो, शुक्रवार को पत्र भेजा करेंगे । बापू अनुभव करते हैं कि सत्याग्रह शुद्धता से याने सत्य व अहिसा से नही चल रहा है । उनको पांच वर्ष इसी तरह निकल जाते दीखते हैं ।

२५-३-३३, बम्बई (आर्थर रोड जेल)

प्रार्थना के बाद पूज्य बापू, अन्ना दास्ताने, गंगाधरराव देशपांडे, नगीनदासजी को, अधिकारियो के मार्फत जो सूचनाएं भेजनी थी, वे लिखी ।

आज बापू से मुलाकात नही हो पाई । सुपरिंटेंडेंट ने इजाजत नही दी । बुरा लगा । मेजर भंडारी का व्यवहार रूखा रहा ।

१-४-३३, बम्बई (आर्थर रोड जेल)

सुपरिंटेंडेंट आये । मेरे नाम महात्माजी का आज पत्र आया हो, तो देने को उनको कहा ।

उन्होंने हिस्टरी-टिकट देखकर जवाब देने का कहा ।

६-३-३३, बम्बई

जानकीदेवी व सुव्रताबहन रूइया ने बापूजी को 'डेविड-योजना' के लिए पच्चीस सौ रुपये देने का निश्चय किया ।

७-४-३३, बम्बई-पूना

पूना में गोविन्दलालजी के बगले पर सामान रखकर और निवृत्त होकर १२।। बजे बापू से जेल में मिला। जानकी व धन्नू दाणी साथ थे। बड़ा सुख मिला।

बापू ने डेविड-योजना, स्वास्थ्य, मोदी-रिपोर्ट, दंड किसने भरा, भविष्य का कार्य, वर्धा जाना जरूरी है, आदि के बारे में चर्चा की। पूनमचद रांका के बारे में बापू ने कहा कि कल उससेखंडवा मिलना जरूरी है। मेरे कहने पर राघवेन्द्रराव से मिलना भी उन्होंने पसन्द किया, मुझे स्टेटमेंट देने की जरूरत नही। उन्होंने कहा, कम-से-कम एक महीना तो मुझे किसी ठंडी जगह—मसूरी, महाबलेश्वर या पंचगनी वगैरा रहना जरूरी है। मेरे पहनावे[1] के संबंध में जानकीदेवी ने चर्चा की। प्रश्न-उत्तर के बाद मामूली धोती, कुरता, टोपी—अभी यही रखना तय हुआ। बापू ने केशव, राधा, संतोकबहन के हाल कहे। दुःख हुआ।

८-४-३३, पूना-बम्बई

पूज्य बापू से बाते—पूनमचद रांका, राघवेन्द्र राव, हरिजन, मेजर भंडारी व डलहौजी जाने के बारे मे। वसन्त, रामदास, जेल-क्लास व जानकीदेवी की चिन्ता व फिक्र की चर्चा।

२३-४-१९३३, वर्धा (अलमोड़ा जाते हुए रेल में)

लक्ष्मीनारायण-मंदिर तक पैदल। दर्शन किये। रास्ते में देवदास गांधी से बातचीत, खासकर फादर एलविन को नागपुर के विषय में पत्र भेजा, उस सम्बन्ध में।

२७-४-१९३३, शैल आश्रम (अल्मोड़ा)

प्रार्थना। मगनभाई की वार्षिक पुण्यतिथि। विशेष कार्यक्रम—६ बजे

---

[1] जेल से छूटकर आने के बाद जमनालालजी की इच्छा थी कि वह 'सी' वर्ग में जैसी छोटी चड्डी और आधी बांह की कमीज पहनते थे वैसी ही, एकदम सफेद पोशाक सादगी की दृष्टि से बाहर भी पहनी जाय। चड्डी की जगह छोटी घुटनों तक की धोती पहनी जा सकती थी। जानकीदेवी ने इस प्रस्ताव का सख्त विरोध किया और बापूजी के सामने फैसला हुआ।

प्रार्थना, ८ बजे मगनभाई के जीवन संबंध मे पू० बापूजी, विनोबा, काका साहब, महादेवभाई के लेख व प्रभुदास के साथ का पत्र-व्यवहार पढ़ा।

२-५-३३, शैल-आश्रम

चि० रामेश्वर नेवटिया का तार मिला—अस्पृश्यता-निवारण के सिलसिले मे बापू ने ८ ता० से बिना शर्त के अनशन करने का निश्चय किया। बापू को पत्र लिखा।

३-५-३३, शैल-आश्रम

तार व पत्र आये। बापूजी के उपवास का निश्चय मालूम हुआ। बापू का वक्तव्य 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में पढा। अच्छी तरह चिंतन व विचार करने के बाद वक्तव्य सबोको समझाया। यहां से शुक्रवार ता० ५ को जाने का निश्चय किया।

४-५-३३, शैल-आश्रम

बापूजी के पास पूना जाने का निश्चय किया व तैयारी की। पर बापूजी का तार आया। उन्होने मुझे पूना आने को रोका। विचार किया, मन में मंथन रहा। फिर सबोंने मिलकर प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद खूब श्रद्धा-पूर्वक चिट्ठिया डाली, न जाने की चिट्ठी निकली। जाने की तैयारी रद्द करके बापू को तार भेजा।

८-५-३३, शैल-आश्रम

आज ११-३० से १२ बजे भोजन। बाद में २४ घंटे का उपवास करने का निश्चय। प्रार्थना में बापू के उपवास का कारण समझाया और शैल-आश्रम मे रहनेवाले हरिजनो के लिए हम लोग क्या कर सकते है, उसपर विचार किया।

१०-५-३३, शैल-आश्रम

पू० बापू के जेल से छूटने की और पू० बापू व श्री अणे ने मिलकर डेढ़ मास के लिए सत्याग्रह स्थगित कर दिया, इसकी खबर मिली। बापू का व सरकार का स्टेटमेंट पढ़ा। एक प्रकार से खुशी हुई। परन्तु विचार करने से चिंता ही रही। रात को बराबर निद्रा नहीं आई। पूना जाने के विचार चलते रहे।

११-५-३३, शैल-आश्रम

१६ ता० को पूना जाने का विचार किया, पर बाद में श्री जानकीदेवी आदि की सलाह से यह निश्चय किया कि अगर पू० राजगोपालाचारी या देवदास बुलावे तो जाना चाहिए, नही तो ठहरना चाहिए। यह निश्चय करके देवदास को पूना व बंबई तार भेजा। देवदास का तार व पू० बापूजी का पत्र मिला।

१२-५-३३, शैल-आश्रम

देवदास को तार भेजा कि श्री रामस्वामी को बापू से पंद्रह मिनट तक क्यों बात करने दी ? आगे से ऐसी गफलत न करने की गारंटी मांगी।

१४-५-३३, शैल-आश्रम

बीकानेर महाराज, अलवर महाराज, कर्नल ओगल्वी, कव्हेण्ट को खास-कर हरिजन-संबंध में पत्र भेजे। औरों को भी पत्र लिखे।

१५-५-३३, शैल-आश्रम

शाम को शिल्पकार व असली हरिजन (मेहतर) वर्ग में से प्रोसेशन निकला। शिल्पकारों में व मेहतरो में आपस मे अनबन होने के कारण, हालांकि वहां बहुत आदमी जमा थे, सभा शिल्पकारों के यहां न करके हरिजनों में ही करनी पड़ी। प्रोसेशन अच्छा था। रास्ते मे गायन व एक जगह चाय-पानी भी हुआ। श्री मुरलीमनोहरजी के मंदिर में प्रोसेशन पहुंचा। रोशनी आदि की खूब सजावट थी। रानीखेतवाले श्री हरगोविदजी पंत सभापति बने। वह ठीक बोले। श्री बद्रीदत्तजी, श्री गोविन्द सहायजी, श्री जानकीदेवी, व कुछ हरिजनों के भाषण हुए। मेरे हाथ से मंदिर खुलाया गया। मैंने भी भाषण दिया।

२८-५-३३, पूना

पूना पहुंचा। लेडी ठाकरसी के बंगले पर डॉ० अन्सारी, डॉ० बिधान राय, सरोजिनी देवी, राजाजी आदि से मिला। बापू के पास जानबूझकर नहीं गया।

२९-५-३३, पूना

१० बजे पर्णकुटी पहुंचा। ठीक १२ बजे बापू को हाल में लाया गया। खूब शान्ति थी। 'रघुपति राघव राजाराम' की धुन के बाद डॉ० अन्सारी

ने कुरान, क्रिश्चियन मित्रों ने बायबिल, पारसी मित्रों ने मजदा और काकासाहब ने उपनिषद् में से पाठ किया। महादेवभाई ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रिय गायन 'एकला चलो' गाया। बाद में 'वैष्णव जन' गाने के बाद पू० बापू का संदेश पढ़ा गया। उसके बाद बा ने बापू को संतरे का रस दिया।

३१-५-३३, **पूना-बम्बई**

इच्छा के विरुद्ध पू० बापू के दर्शन करने पड़े। महादेवभाई, मथुरादास आदि के आग्रह के कारण। दर्शन से खूब सुख मिला।

३-६-३३, **बम्बई**

बापू ने मुझे पूना बुलाया। पूना से देवदासभाई मुझे लेने आये।

५-६-३३, **पूना**

पू० बापू ने मुझे बम्बई से बुलाया, उसका महादेवभाई ने तात्पर्य समझाया। रामदासभाई से उसके भावी जीवन के बारे में उसके विचार सुने, उसे सलाह दी। पू० बापू की इच्छा होने के कारण अपने स्वास्थ्य के संबंध में चर्चा। प्रभुदास, अल्मोड़ा-आश्रम, देवदास, रामदास आदि के संबंध में भी चर्चा हुई।

१०-६-३३, **पूना**

बापू के पास गया। महादेवभाई ने उनके विचार पढ़कर सुनाये। श्रीनिवास शास्त्री की बातचीत हुई।

१४-६-३३, **पूना**

डॉ० गिल्डर ने पू० बापू के स्वास्थ्य की ठीक जांच की। लक्ष्मी-देवीदास विवाह-संबंध में बापू से विनोद हुआ।

१६-६-३३, **पूना**

जल्दी निवृत्त होकर पर्णकुटी। ७। बजे से देवदास के विवाह की तैयारी। विवाह सानंद सम्पन्न हुआ। बापू ने कुछ कहा। उस समय उन्हें रोमांच हो आया और गद्गद हो गए। बापू के दर्शन करनेवालों की भीड़। पांव छूने की आतुरता। जबरदस्ती करके उन्हें वहां से हटाया। इसपर विचार चलता रहा।

१७-६-३३, **पूना**

बापू को जांचने के लिए मेडिकल बोर्ड बैठा। डॉ० देशमुख, डॉ०

गिल्डर, डॉ० परूलेकर, डॉ० पटेल, डॉ० धारपुटे, डॉ० पाठक ने मिलकर बापू को देखा। बाद में उन्होंने प्रेस को वक्तव्य दिया—कम-से-कम एक मास आराम लेने को कहा। माधवराव अणे, राजाजी तथा मैंने मिलकर सत्याग्रह स्थगित करने के प्रश्न पर चर्चा की। अंत में बापू की स्वीकृति से छः सप्ताह के लिए सत्याग्रह और स्थगित किया गया।

१८-६-३३, पूना-बम्बई

पर्णकुटी मे बापूजी के पास रहा। चि० शान्ता साथ मे थी। बापूजी ने रामदास के बारे मे अपने विचार कहे। मुझे अल्मोड़ा लौट जाने को कहा। मैंने उनसे अपने शरीर की संभाल रखने का वचन लिया। उन्होंने कहा कि कि मुझे तो अभी जीना है।

महादेवभाई देसाई से कुछ नैतिक प्रश्नो पर विस्तार से चर्चा।

२७-६-३३, वर्धा

शाम को आश्रम में प्रार्थना। बापूजी के बारे में कुछ कहा।

आज बापूजी के हाथ का लिखा पत्र आया।

७-७-३३, वर्धा

डॉ० प्रफुल्ल घोष और आनन्द आज मेल से पूना गये। उनके साथ मैंने अपना वक्तव्य लिखकर पूज्य बापूजी व श्री अणे के पास भेजा।

३१-७-३३, अहमदाबाद

पू० बापूजी का मौन था, फिर भी बाते उनसे ठीक हुईं। उन्होंने लिखकर उत्तर दिये। आश्रम गया, वही स्नान, नाश्ता, वर्धा जानेवालों से परिचय, बातचीत। पू० बापूजी ११॥ बजे आश्रम आये। उनसे प्रश्नोत्तर व बातचीत। उनके विचार समझे।

रात के ९॥ बजे तक आश्रम में ही रहे। वही भोजन। रणछोड़भाई के बंगले पर सोने को गये। बापूजी के नजदीक ही सोया। बापू से कुछ बाते और हुईं। रात में नीद नही आई। कई बार उठना पड़ा। रात में १-२० पर पुलिस की चार मोटरें आईं। बापू, बा और महादेवभाई को वहां गिरफ्तार किया। बाकी के लोगों को आश्रम मे गिरफ्तार किया।

१-८-३३, माटुंगा-पूना

गुजरात-मेल से रवाना। बापूजी को भी गुजरात-मेल से ले गए।

शान्ताक्रुज में बापूजी और महादेवभाई को उतार लिया। फिर मोटर से पूना ले गए।

दादर से मैं ८ बजे की गाड़ी से पूना रवाना हुआ। रास्ते में खूब वर्षा हुई। लेडी ठाकरसी व श्री नृसिंह चिंतामणि को लेकर पूना आये। रास्ते में महात्माजी की गिरफ्तारी तथा अन्य सामाजिक व राजनैतिक विचार-विनिमय। बापूजी १२ बजे यरवदा-जेल पहुंचे।

४-८-३३, **पूना**

पू० बापूजी और महादेवभाई को एक-एक वर्ष की सादी सजा आज हुई।

१२-८-३३, **वर्धा**

स्वास्थ्य के कारण कम-से-कम १२ नवंबर तक तो सत्याग्रह में भाग न लेने का मेरा निश्चय हुआ। यह बापूजी, काकासाहब, गंगाधरराव देशपांडे, राजाजी आदि के आग्रह से व विनोबा की राय से करना पड़ा। भविष्य में भी स्वास्थ्य की हालत देखकर इसपर विचार करना होगा।

१७-८-३३, **वर्धा**

जेल में हरिजन-कार्य करने की छूट न मिले तो बापू जेल में आमरण उपवास करेंगे, यह खबर आज अखबारों में पढ़ी।

२०-८-३३, **वर्धा**

सुबह पू० विनोबा से पू० बापू के उपवास के संबंध में विचार-विनिमय।

२३-८-३३, **वर्धा**

वाइसराय को व अखबारों को तार। रात को सार्वजनिक सभा। बापू के अनशन के संबंध में प्रस्ताव।

बापूजी के बिना शर्त छोड़े जाने की संतोषजनक खबरें मिलीं। आश्रम में प्रार्थना। 'निर्बल के बल राम' व 'वैष्णव जन' भजन गाया।

२८-८-३३, **वर्धा**

पूज्य बापूजी के पत्र आये। वह वर्धा आ सकते हों तो आज निमंत्रण भेजा।

१७-९-३३, **चिकलदा**

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्मदिन मनाया। हरिजनों के यहां

सात घर हैं, उनके वहां गये। शाम को सभा की व्यवस्था की। हरिजन व अन्य बालकों को व आये हुए मेहमानों को जलेबी व मूगफली बांटी।

२१-९-३३, वर्धा

श्री एण्ड्रूज का आज टॉउन-हाल में मेरे सभापतित्व में भाषण हुआ। खूब भीड़ थी। महात्माजी का व उनका परिचय कैसे हुआ, आदि बताया। बाद में उनका सुन्दर भाषण हुआ। शाम की प्रार्थना में उन्होंने भजन गाया।

२३-९-३३, वर्धा

आज मेल से पू० बापू, बा, मीराबहन, नागिनी देवी, प्रभावती, चन्द्रशेखर, आनन्दी, नैयर और दो लड़की, चि० गोपी, चम्पाबहन, कमला, सुशील वगैरा आये। बापू को आश्रम में ठहराया। प्रोग्राम निश्चित किया। व्यवस्था की।

२४-९-३३, वर्धा

बापू से साबरमती-आश्रम की जमीन के बारे में बातें हुईं। यह आश्रम केन्द्रीय हरिजन-सेवक संघ को या स्थानिक हरिजन कमेटी को देने के संबंध में विचार। मैंने आखिर में हरिजन-बोर्ड को देना पसंद किया। घनश्यामदास बिड़ला को पत्र लिखा।

२५-९-३३, वर्धा

बापू से बातें। डॉ० खरे व डॉ० सोनक नागपुर से आये। बापू का ब्लड-प्रेशर लिया। छाती व नाड़ी जांची। उन्होंने ४-६ सप्ताह तक पूरा आराम लेने को कहा।

श्री मैथ्यू से बातचीत। उसकी हालत का सार बापू ने कहा। डंकन व मेरी की योजना बताई।

२६-९-३३, वर्धा

आश्रम पहुंचा। बापू स्त्रियों की प्रार्थना में बैठे थे और समझा रहे थे। प्रार्थना के बाद बापू से चि० गोपी बिड़ला के बारे में बातें हुईं। उनकी और मेरी एक ही राय हुई।

१-१०-३३, वर्धा

आज से बापू का मौन शुरू हुआ। घनश्यामदासजी को पत्र लिखा—

आश्रम तथा हरिजन-कार्य, तथा साबरमती-आश्रम हरिजन-सेवक-संघ को देने के सम्बन्ध में ।

२-१०-३३, **वर्धा**

बापू से जेठालालभाई व रविशंकरभाई की मुलाकात कराई ।

आज दिल्ली से घनश्यामदास बिड़ला का सत्याग्रह-आश्रम को हरिजन-संघ की ओर से लेने की स्वीकृति का तार आया ।

३-१०-३३, **वर्धा**

बापू को कन्या-आश्रम के बारे में अपने विचार कहे । बापू ने १२ नवंबर के बजाय १२ जनवरी तक बाहर रहने का अपना कार्यक्रम बनाया । बाद में परिस्थिति देखकर विचार किया जा सकेगा, ऐसा कहा ।

४-१०-३३, **वर्धा**

बापू, काकासाहब, जापानी बौद्ध साधु, गुलजारीलाल नन्दा वगैरा आये । बापू से लक्ष्मीनारायण साहू, गुलजारीलाल नंदा, लेले, सादिकअली, जापानी साधु आदि की मुलाकात हुई ।

५-१०-३३, **वर्धा**

आज प्रह्लाद की सगाई सीतारामजी सेकसरिया की लड़की चि० पन्ना के साथ, पू० बापूजी की उपस्थिति व आशीर्वाद के साथ हुई । सबोंको संतोष हुआ ।

जाजूजी, गुलजारीलाल नंदा, प्रताप सेठ तथा अमेरिकन भाई आदि की बापू से मुलाकात ।

६-१०-३३, **वर्धा**

बापू से कन्या-आश्रम, महिला-आश्रम आदि की बातें । बापू से देवशर्मा-जी की मुलाकात हुई ।

१३-१०-३३, **वर्धा**

बापू से बातें । आज से उनकी ट्रीटमेंट शुरू हुई ।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय, कालेश्वरराव बापीनीडू (इलोरवालों) से महात्माजी से मुलाकात हुई । जेल जाने के संबंध में बापू से चर्चा ।

१४-१०-३३, **वर्धा**

बापू के साथ प्रार्थना ।

बापू से अपनी मनःस्थिति तथा 'मुझे अगर जेल नहीं ही जाना हो तो कांग्रेस वर्किंग कमेटी से इस्तीफा देना ही उचित है', मेरे इस विचार पर चर्चा, मनोरंजन ।

१६-१०-३३, वर्धा

पू० बापू ने वर्किंग कमेटी से मेरे इस्तीफे का मसविदा[1] बनाकर दिया। मैंने काकासाहब, जाजूजी, किशोरलालभाई, आदि से चर्चा की और बाद में अपनी मनःस्थिति बापूजी को लिखकर दे दी ।

१८-१०-३३, वर्धा

प्रार्थना करके उसके बाद जल्दी तैयार होकर आश्रम गया। आज पू० बापूजी की उपस्थिति में चि० प्रभुदास गांधी व अम्बादेवी का विवाह मारवाड़ी बोर्डिंग में हुआ। बापू का उपदेश सुन्दर था।

१९-१०-३३, वर्धा

'गांधी-सेवा-संघ' की सदस्यता से मेरे इस्तीफे का अंतिम फैसला आज बापू के सामने हो गया। अभी तो मुझे ही सभापति रहना पड़ेगा, ऐसा निश्चय हुआ ।

गंगाधरराव देशपांडे व बरेलवी की बापू से बातचीत हुई। नागपुर से एक पादरी बापू से मिलने आये।

२१-१०-३३, वर्धा

बापू की हरिजन-यात्रा का प्रोग्राम बनाना शुरू किया। अभी तो उनका बरार व हिन्दी सी० पी० का भ्रमण निश्चित किया।

२४-१०-३३, वर्धा

बापू से कन्या-आश्रम के संबंध में खुलकर चर्चा हुई ।

डॉ० खरे ने बापू को जांचा। उनका वजन १०७ पौंड हुआ। ब्लड-प्रेशर ९५-१५५ । ६० का फर्क ।

२५-१०-३३, वर्धा

बापू के साथ कन्या-आश्रम तथा महिलाश्रम-संबंधी चर्चा ।

मृदुला, मणिबहन, हरिभाऊ, गुलजारीलाल, गोवर्धनदास, खंडूभाई वगैरा से बापू की मुलाकात।

---

[1] **देखिये 'पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद', पृष्ठ ३७२ ।**

२६-१०-३३, वर्धा

पू० बापू से मृदुला, मणि, शंकर, माखनलालजी आदि की मुलाकात।

२७-१०-३३, वर्धा

बापू से शंकर के बारे में बातचीत। अमेरिकन मिशनरी, जो हाल में बशीम मे रहते हैं, बापू के दर्शन को आये।

२८-१०-३३, वर्धा

आश्रम मे बापू के साथ प्रार्थना। बापू से बातें—काकासाहब, शंकर कालेलकर, स्वामी आनन्द, श्रीलाल से बाते।

२९-१०-३३, वर्धा

आश्रम में प्रार्थना। बापूसे साबरमती-आश्रम के आकड़े का फैसला किया।

३१-१०-३३, वर्धा

नरीमन और बापू की मुलाकात। ११।। से १२।। तक व ३ से ३।। तक।

२-११-३३, वर्धा

एंड्रूज व बापू आज नालवाडी पैदल गये और आये। बापू-एंड्रूज की चर्चा।

बापू व विनोबा की मुलाकात ४ से ५। भाई परमानन्द की ३ से ३-३०।

काकासाहब ने ७ दिन का उपवास बापू के हाजिरी मे पूरा किया।

३-११-३३, वर्धा

बापू से विनोबा की बाते। साबरमती-आश्रम का हिसाब किया।

बापू की मुलाकात ७-२० से ८, विनोबा और सिस्टर मेरी। ११-३० से १२ तक गोपीबहन, जमनाबहन। १२ से १ जीवनदासभाई कलकत्ते-वाले। ३ से ३-३० जमनालाल। ४ से ५ शर्मा सेवादल। ५ से ६ नवजीवन, स्वामी आनंद, जीवनदासभाई, मोहनलाल, रावजीभाई, गोकुलभाई, श्रीकिशोरलालभाई, काकासाहब।

७-११-३३, वर्धा

बापू को सुबह स्त्रियों की प्रार्थना के बाद ७। बजे पहले राम-मंदिर, और उसके बाद लक्ष्मीनारायण मंदिर के दर्शन करवाकर ८ बजे सेलू पहुंचे। वहां बापू ने रामदेवजी का लक्ष्मीनारायण मंदिर हरिजनों के लिए खोला। वातावरण बहुत ही सुन्दर था। मन्दिर खोलने के बाद सभा हुई। व्यवस्था अच्छी थी। वापस १० बजे वर्धा पहुंचे। सेलू-यात्रा सफल हुई।

शाम को वर्धा में ६ से ६-४५ तक सभा। भीड़ ज्यादा थी, पर व्यवस्था ठीक थी।

८-११-३३, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर बापू की नागपुर-यात्रा की तैयारी की। नागपुर से डॉ० खरे, और जबलपुर से ब्यौहार राजेन्द्रसिंह मोटर लेकर आये थे। बापू सुबह ६-१५ बजे रवाना हुए।

११-११-३३, वर्धा

स्टेशन गया। बापू नागपुर-पैसेंजर से गोंदिया से आये। उनकी वर्धा रिफ्रेशमेंट रूम में निवृत्त होने तथा भोजन आदि की व्यवस्था की। बाद में वह देव वकील की गाड़ी से देवली गये। रास्ता खराब था। लोगों का उत्साह यहां भी अच्छा था, परन्तु कुछ सनातनी स्वयंसेवकों ने ज़रा धूमधाम मचाई और थोड़ी गड़बड़ी की। सभा ठीक तौर से हो गई। दो ट्रस्टियों की प्रार्थना से आज मन्दिर बापू ने नहीं खोला। ११ बजे वापस वर्धा पहुंचे।

१२-११-३३, वर्धा

डॉ० अन्सारी ने बापू की तबीयत सब प्रकार से देखी और अपना पूरा सन्तोष व्यक्त किया। पिछले दस वर्ष में उन्होंने बापू का ऐसा स्वास्थ्य पहले नहीं देखा था।

१३-११-३३, वर्धा

बापू की हिंगणघाट-यात्रा की तैयारी।

हिंगणघाट के लिए बराबर दो बजे मोटर से रवाना हुए। हिंगणघाट-वालों ने खूब उत्साह के साथ स्वागत किया। जनता में खूब प्रेम था। वहां से बापू को चांदा रवाना करके मैं वापस वर्धा आया।

१९-११-३३, चिकल्दा

जल्दी उठकर बापू के स्वागत की तैयारी शुरू की। मीराबहन पहले आईं, बापू ज़रा देर से आये। करीब २५ मेहमान होगए। तीन बार रसोई बनी। भोजन देर से हुआ। बापू ने ३-२० पर अपना मौन शुरू किया।

२०-११-३३, चिकल्दा

सुबह जल्दी तैयार होकर बापू के पास गया। उनके साथ करीब एक

घंटा घूमा। बापू ने ३-२० पर अपना मौन छोड़ा। शाम को भी उनके साथ घूमने गया।

२१-११-३३, **चिकल्दा**

३ बजे उठ गया। ४ बजे बापू की प्रार्थना में शामिल हुआ। ठक्कर बापा से बातें। बापू को किले की ओर एक घंटे तक घुमाने ले गए।

बापू के चिकल्दा से रवाना होने की तैयारी। सब अतिथियों को भोजन कराया। बापू १२॥ बजे रवाना हुए। बापू को यह पहाड़ी स्थान पसन्द आया।

२८-११-३३, **चिकल्दा**

पू० बापू का पत्र आया। श्री जवाहरलाल को तार किया, जबलपुर के बारे में।

४-१२-३३, **इटारसी, जबलपुर**

रात में बापू से बातें। जबलपुर में ज़बर्दस्त स्वागत। जवाहरलालजी वगैरा सब प्रोसेशन में गये। भारी तैयारी। एक स्वयंसेवक के पैर में मोटर के बीच में आजाने से चोट लगी। चिंता व दुःख। बड़ी जाहिर सभा में मुझे बोलना पड़ा।

५-१२-३३, **जबलपुर**

प्रार्थना करके व जल्दी निवृत्त होकर पू० बापू के पास गया। थोड़ी बातचीत। परमानंद का स्टेटमेंट सुना। बापू को डॉ० अन्सारी ने जांचा।

८ से ११ व १ से ५ तक इनफार्मल बातचीत होती रही। जवाहरलाल, अन्सारी, मौलाना आजाद, महमूद, नरीमान, बापू, जमनालाल थे। लड़ाई के प्रोग्राम के संबंध में बापू से गरमागरम चर्चा हो गई।

१४-१२-३३, **दिल्ली**

डॉ० अन्सारी के यहां पंडित जवाहरलाल से मिला। उनको लेकर बापू के पास गया। पंडित जवाहरलाल, डॉ० अन्सारी, मौलाना आजाद, डॉ० महमूद, कृपलानी, टंडनजी आदि की बापू के साथ बातचीत। साफ-साफ बातें हुईं, ८ से ११ तक। डेरी व आश्रम की बैठक, बापू से डेरी के संबध में चर्चा वगैरा हुई।

बापूजी शाम को ग्रांड ट्रंक से वर्धा होते हुए आंध्र गये। स्टेशन पर सनातनियों का थोड़ा तमाशा हो गया।

डायरी के अंश

१९३४

११-३-३४, पटना-बनारस

सुबह 'सर्चलाइट' के कार्यालय में गया। राजेन्द्रबाबू के साथ बापू से मुगलसराय में भेंट करने व परिस्थिति समझाने का निश्चय हुआ। मुगलसराय में बापू से मिले। वहां से ९॥ बजे रवाना। भीड़ खूब थी। रास्ते में बातें।

१३-३-३४, पटना

सुबह ६ बजे बापू से नागपुर में विदेशी वस्त्र-बहिष्कार-संबंधी गिरफ्तारियों व उनके बचाव व अपील के बारे में देर तक विचार-विनिमय। बापू ने वर्तमान परिस्थिति में बचाव व अपील की अपेक्षा बिहार के काम की आवश्यकता समझाई।

राजेन्द्रबाबू, ब्रजकिशोरबाबू वगैरा के साथ में बापू से चर्चा।

१६-३-३४, पटना

पू० बापू व राजेन्द्रबाबू चंपारन से आये। शाम को मैदान में प्रार्थना हुई। बापू की बातें सुनीं।

१७-३-३४, पटना

आज रहने का स्थान हरिजन-आफिस को बदलकर बापू के पास पीली कोठी में रहने आये। पू० बापू, राजेन्द्रबाबू के साथ साधारण सभा के प्रस्ताव व मैनेजिंग कमेटी के निर्वाचन के बारे में अच्छी तरह विचार-विनिमय हुआ। करीब ७ घंटे इसी काम में गये।

पू० मालवीयजी व बापू की बातें हुईं।

१८-३-३४, पटना

बापू के पास विधान राय, कलकत्ता के मेयर सन्तोषबाबू, मौलाना आजाद वगैरा आये। दो बजे से राधिका इंस्टीच्यूट में बिहार सैंट्रल रिलीफ कमेटी की सर्वसाधारण सभा हुई। ६। तक चली।

आज की सभा के सभापति बापू बने। पू० मालवीयजी व मेरे आग्रह के कारण बापू को उनकी इच्छा के बिना भी उन्हें सभापति बनना पड़ा। सभा का काम ठीक हुआ। रात को बापू से मिला।

२०-३-३४, पटना

बापू से बातचीत।

गुरुद्वारे में आज गुरु गोविंदसिंह का जन्म-दिन मनाये जाने के कारण बापू के साथ वहां गया। सार्वजनिक सभा सफलतापूर्वक हुई। करीब ३० हज़ार लोग थे। बापू, मालवीयजी और मौ० आज़ाद बोले।

२१-३-३४, पटना

बापू से बातें।

बिहार में जितनी रिलीफ सोसाइटियां सहायता-कार्य के लिए आई हैं, उनके प्रतिनिधियों की बापू के साथ व कमेटी के साथ बातचीत।

महाराजा दरभंगा बापू से मिले।

२२-३-३४, पटना

बापू ने आश्रम-निवासियों को व्यक्तिगत सत्याग्रह का मर्म समझाया और उनको जेल में भेजने से रोकने का कारण समझाया।

बिहार गांधी-सेवा-संघ के कार्यकर्ता बापू से मिले। बापू से विचार-विनिमय।

२३-३-३४, पटना

सुबह ८ बजे से 'बिहार रिलीफ मैनेजिंग कमेटी' का काम शुरू हुआ।

बाहर से आये हुए कार्यकर्ताओं को वापस भेजने के बारे में बापू ने सलाह दी। स्वामी आनन्द, हार्डीकर आदि से उनकी चर्चा। बापू से बिहार के काम की थोड़ी चर्चा।

२४-३-३४, पटना

बापू को सुबह घूमने ले गया। रास्ते में उनसे नागपुर, बहिष्कार, सत्याग्रह आदि की चर्चा हुई। उदाहरणार्थ बापू ने नाथजी व वालजीभाई का उदाहरण दिया। मैंने कहा, वे दोनों आपसे सहमत नहीं हैं। छानबीन हुई। बापू को दुःख भी हुआ।

सुबह, दोपहर व रात में मैनेजिंग कमेटी की बैठक हुई। बापू का

प्रस्ताव व बजट मंजूर हुआ। बापू के लिए स्त्रियों की सभा रखी गई। शाम को बापू पूज्य मालवीयजी के साथ घूमने गये।

२५-३-३४, पटना

बापू से बातें। खादी-योजना, सत्याग्रह आदि के बारे में बापू के विचार स्वामी आनन्द ने लिखकर दिये।

२६-३-३४, पटना

बिहार रिलीफ कमेटी की बैठक सुबह से रात तक होती रही।

बापू ने नागपुर के मामले में स्टेटमेंट बनाकर दिया। रात को मौन छूटने पर उसपर विचार-विनिमय।

२४-४-३४, पटना

मुजफ्फरपुर गया। बापू के साथ पटना लौटा। रास्ते में बापू से इन विषयों पर बातें होती रहीं—जवाहरलालजी के साथ हुई चर्चा, रांची की सभा, स्वराजियों का प्रोग्राम, भजन-आश्रम, रिलीफ-कार्य, डंकन, चिमनलालभाई, शकरीबहन, प्रभावतीबहन आदि।

२७-४-३४, पटना

बापू के साथ आरा, बक्सर, वैद्यनाथ-धाम गया। वैद्यनाथ के सनातनियों का बर्ताव देखकर दुःख हुआ।

रांची में बापूजी का थप्पड़ खाकर (आशीर्वाद पाकर) सीतारामजी के पास ठहरा।

१-५-३४, रांची

सुबह बापू ने ५॥ बजे आश्रम के बारे में तथा अन्य विषयों पर अपने विचार सुनाये। चर्चा तथा विचार-विनिमय। नारायणदासभाई के बारे में बातचीत।

बापू को जवाहरलाल की भेंट का हाल सुनाया। स्वराज्य पार्टी के बारे में बापू से चर्चा हुई। उसमें भाग लिया। खुलासा समझने का प्रयत्न किया।

२-५-३४, रांची

सुबह जल्दी उठा। बापू से कमलनयन, उमा आदि की बातचीत। बापू ने उमा के स्वभाव आदि की चर्चा की। बापू को उमा के बारे में चिन्ता। उससे बातचीत।

३-५-३४, रांची

सुबह जल्दी बापू के पास गया। बापू से स्वराज्य पार्टी के बारे में चर्चा।

बापू निवारणबाबू के पास गये। गांधी-सेवा-संघ की ओर से निवारण-आश्रम का उद्‌घाटन। सार्वजनिक सभा ठीक हुई थी।

१७-५-३४, पटना

बापू के पास गये। राजेन्द्रबाबू के साथ बापू से फैसला।

१८-५-३४, पटना

बापू से बातें। वर्किंग कमेटी ६ बजे से १ बजे बाद में फिर हुई।

शाम को ऑल इंडिया कांग्रस कमेटी की बैठक। बापू के पास गये।

१९-५-३४, पटना

सुबह हरिजन-दौरे के बारे में बातचीत। गांधी-सेवा-संघ व बापू के विचार। वर्किंग कमेटी ३ बजे तक बीच में थोड़ी छुट्टी। मालवीयजी-अन्सारी की लिस्ट में बहुत समय गया।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी तीन बजे से रात के १ बजे तक हुई।

रात में बापूजी व मालवीयजी के साथ पार्लमेंटरी पार्टी की लिस्ट बनाने में भाग लेना पड़ा। रात को सिर्फ दो घंटे सोने को मिला होगा।

२०-५-३४, पटना

बापू से बातें—गांधी-सेवा-संघ, आश्रम के संबंध में। बापू गये।

२७-५-३४, करंजिया

फादर एलविन के साथ करंजिया-आश्रम के बजट पर विचार-विनिमय किया। बापू का पत्र पढ़कर सुनाया। बजट की व्यवस्था।

५-६-३४, वर्धा

बापू का तार आया। वर्धा ९ से १३ तक रहेंगे। पटना जाना स्थगित किया। वर्किंग कमेटी १२ को रखने का तार किया। बापू को भी तार किया।

९-६-३४, वर्धा

बापूजी मेल से आये। आश्रम पैदल गये। रास्ते में बातचीत होती रही। आश्रम गया। बापू के साथ जाजूजी का नोट पढ़ा। बापू ने प्रार्थना में थोड़ा कहा।

१०-६-३४, वर्धा

बापू से बातचीत । बापू नालवाड़ी गये । विनोबा को कन्या-आश्रम में ले आये । बरसात में बापू खूब भीगे ।

१२-६-३४, वर्धा

बापू से ६ से ७। तक बहुत-सी बातचीत । वर्किंग कमेटी के मेम्बर आये । ९ से ११ व २ से ५।। बजे तक काम हुआ ।

१३-६-३४, वर्धा

वर्किंग कमेटी ७ से ११ तक हुई । प्रायः बहुत-सा काम खतम हुआ । पूज्य बापू भी हाजिर थे । बापू से थोड़ी बातें । बापू पैदल स्टेशन के लिए निकले । रास्ते में मोटर मिली । नागपुर-मेल से बंबई गये ।

१७-६-३४, बंबई

बापू के पास मणि-भवन गया । वहां देर तक ठहरकर और बातें करके बिड़ला-हाउस गया । भोजन वगैरा करके । फिर बापू के पास मणि-भवन गया ।

वर्किंग कमेटी का काम हुआ ।

१८-६-३४, बंबई

पूज्य मालवीयजी ने रात में जो कहा, उस बारे में सुबह जल्दी उटकर उनसे बातचीत की । वह काफी दुःखी मालूम हुए । सांत्वना देने का प्रयत्न किया । अपने त्याग-पत्र के बारे में उनका संदेशा पूज्य बापू को कहा । बापू के कहने से डॉ० विधान राय, मौ० अबुलकलाम तथा मालवीयजी से देर तक बातचीत की ।

वर्किंग कमेटी २।। से ५ तक चली ।

रात में बापू मालवीयजी से मिले। वर्किंग कमेटी तथा पार्लमेंटरी बोर्ड के मेम्बर १ बजे तक मालवीयजी के साथ विचार-विनिमय करते रहे । बहुत देर तक बातचीत । आखिर शुभ परिणाम निकला । मौलाना शौकत अली मिलने आये; एक बजे तक रहे ।

१९-६-३४, पूना

सुबह ५ बजे उठकर तथा तैयार होकर पूज्य बापू के साथ पूना रवाना हुए। पूना में भीड़ खूब थी, केलकर वगैरा से मिले ।

बापू के कैम्प में ही भोजन, प्रार्थना, बातचीत। राजगोपालाचारीजी आये।

२०-६-३४, पूना

बापूजी के कैम्प में गया। महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं की सभा हुई। बापूजी ने डेढ़ घंटे तक प्रश्नों के जवाब दिये। बापूजी से देशी रियासतों का डेपुटेशन मिला। श्री केलकर वगैरा भी मिलने आये थे। बापू से बातचीत।

२६-६-३४, पटना

पूना में बापू पर बम फेंका गया, यह खबर 'सर्चलाइट' व बाद में 'इंडियन नेशन' में पढ़ी। चिन्ता व दुःख हुआ। ईश्वर का धन्यवाद किया।

२७-६-३४, पटना

अखबारों में बापू का वक्तव्य पढा। राजेन्द्रबाबू तथा ब्रजमोहनबाबू से बातचीत करके बापू को तार भेजा। भोपटकर को भी तार भेजा व बापू के साथ हुई पूना की दुर्घटना के बारे मे अखबारों में वक्तव्य दिया।

३०-६-३४, पटना

हिन्दू जनता की ओर से मैदान पर सभा हुई। पूना की दुर्घटना से बच जाने पर महात्माजी को बधाई दी गई। दो शास्त्रियों के व्याख्यान अच्छे हुए।

४-७-३४, जीरादेई

सुबह निवृत्त होकर मालवीयजी को दो तार भेजे, बापू-दिवस मनाने के बारे में।

२६-७-३४, कानपुर

खादी-कार्यकर्ताओं की सभा में भाग लिया। प्रश्नोत्तर के बाद बापूजी को २५ मिनट बोलना पड़ा।

बापू के साथ भोजन।

३०-७-३४, बनारस-पटना

सुबह तीन बजे उठे। निवृत्त हुए, बापूजी से वर्धा के बारे में स्टेटमेंट तैयार करवाया।

५-८-३४, वर्धा

पूज्य बापू, बा वगैरा आये। स्टेशन से आश्रम।

बापू का वजन १०० रतल हुआ।

कान के इलाज के लिए बापू ने मुझसे बंबई जाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि तुम नहीं मानोगे तो मैं बंबई चलूंगा। अन्य प्रकार से भी दबाव की बातें हुईं। जाना निश्चित किया।

बापू ने ओम् (उमा) की सगाई की इजाजत दी। बापू से आश्रम-संबंधी बातें।

१२-८-३४, बंबई

कान के इलाज-संबंधी डॉक्टरों की रिपोर्ट बापू को भेजी। डॉ० जीवराज, और डॉ० रजबअली का पत्र जानकी के नाम भेजा। बापू से आपरेशन की इजाजत मांगी।

१३-८-३४, बंबई

शाम को आपरेशन कराने की इजाजत का बापू का तार आया।

१४-८-३४, बंबई

सुबह ६ बजे प्रार्थना की। आज इसी समय वर्धा में बापू का उपवास छूटनेवाला है।

बृहस्पतिवार को सुबह ९ बजे कान का आपरेशन होगा। बापूजी को वर्धा अर्जेंट तार दिया।

६-९-३४, बंबई

आज से बापू व जानकी की इच्छा से बंबई में चावल व दाल खाना बंद किया।

२६-९-३४, बंबई

रामनिवास, पालीरामजी, केशवदेवजी के साथ एफ० ई० दिनशा के पास गया, कपड़े की मिल लेने के लिए। उसे (दिनशा को) साढ़े सात लाख तक का सौदा करने की छूट दी। मन में मंथन चलता रहा। मिल लेने की इच्छा नहीं है, पर जबान देदी, इसका खयाल रहा।

२८-९-३४, बंबई

बापू व ओम् का पत्र, मिल न लेने के बारे में आया। बापू को तार दिया कि न लेने का निश्चय पहले ही कर लिया था।

१३-१०-३४, वर्धा

डॉ० अन्सारी, सरदार, जोहरा, मणि वगैरा की बापू से बातचीत व विनोद। वर्धा तालुका की सभा में बापूजी ने अनेक प्रश्नों के जवाब दिये। मैंने भी खुलासा किया।

१४-१०-३४, वर्धा

बापू के साथ सुबह ६ बजे घूमते समय ट्रस्ट, कन्याश्रम, गांधी-सेवा-संघ की बैठक २७ नवंबर को रखने आदि के संबंध में बातचीत।

१६-१०-३४, वर्धा

बापू से और विनोबा से कन्या-आश्रम तथा महिला-आश्रम की थोड़ी बातें हुईं। बाद में बापू से चर्खा-संघ के बारे में चर्चा हुई।

१७-१०-३४, वर्धा

सुबह बापू व विनोबा से बातें। बापू ने कारेस्पांडेंस स्कूल की रचना समझाई।

१९-१०-३४, वर्धा

सुबह ५ बजे उठे। बापू के साथ पैदल घूमने गये। रास्ते में मदालसा, महिलाश्रम, काकासाहब आदि के संबंध में बातचीत। आज बापू और बहुत से लोग बंबई गये।

३०-१०-३४, वर्धा

स्टेशन गया। बापूजी, खान-बन्धु, प्रफुल्ल घोष वगैरा आये। बापूजी के साथ पैदल आश्रम। बापूजी ने अजमेर की घटना का हाल कहा।

२४-११-३४, वर्धा

बापू के साथ पैदल घूमना।

प्यारेलाल की माता से बातें। बापू ने प्यारेलाल के बारे में बातचीत की। महादेवभाई से बातें। प्रार्थना।

२६-११-३४, वर्धा

सुबह जल्दी उठकर कमलनयन, मदालसा, उमा के साथ आश्रम गया। बापूजी की पार्टी में घूमना हुआ। रामायण सुनी।

२७-११-३४, वर्धा

बापू के पास रहा। घूमते समय गांधी-सेवा-संघ, कांफ्रेंस-संबंधी बातें।

शाम को बापू ने गांधी-सेवा-संघ के बारे में अपने विचार कहे। सभापति व ट्रस्टी के त्यागपत्रों का फैसला। सदस्यों की हाजिरी ठीक मालूम हुई।

२८-११-३४, वर्धा

बापूजी का प्रवचन हुआ। गांधी-सेवा-संघ से मेरा ट्रस्टी व सभापति-पद का त्यागपत्र स्वीकार करने के बारे मे बापू ने सदस्यो व ट्रस्टियों को ठीक तरह से समझाया।

बापू ने सभापति के लिए नाम मांगे। २२ लोगों ने नाम भेजे। विनोबा, काकासाहब व किशोरलालभाई के नाम आये। बापू ने और मैंने किशोरलाल-भाई का निश्चय किया।

गांधी-सेवा-संघ का कार्य प्रायः दिन-भर होता रहा।

२९-११-३४, वर्धा

बापू ने ८ बजे गांधी-सेवा-संघ के सदस्यों की बैठक में सभापति का नाम जाहिर किया। सबोंने स्वीकार किया। इसके बाद बापू के हाथ से किशोरलालभाई को माला पहनवाई और मैंने अपनी जिम्मेदारी उनको सौंप दी। उन्होंने सभापति का काम शुरू किया।

३०-११-३४, वर्धा

बापू ने ग्राम-संगठन के संबंध में सुबह ठीक समझाकर कहा।

गांधी-सेवा-संघ का कार्य, विधान वगैरा तथा सदस्यों से बातचीत का काम होता रहा।

१-१२-३४, वर्धा

कुमारप्पा को लेकर बापू के पास गया। बिहार-रिलीफ के बारे में बातें। उन्हें नोट करवाया।

बिहार-रिलीफ की मैनेजिग कमेटी से मैंने त्यागपत्र दे दिया।

२-१२-३४, वर्धा

बापू से प्रभावती, जयप्रकाश, प्यारेलाल के संबंध में बातें।

गांधी-सेवा-संघ के विधान के बारे में बापू से चर्चा व उनके सुझाव नोट किये।

६-१२-३४, वर्धा

बापू से थोड़ी बातें। रामायण-पाठ में शामिल। शाम को निजी ट्रस्ट

के संबंध में चर्चा हुई। गांधी-सेवा-संघ के विधान पर बापू के साथ विचार-विनिमय ।

८-१२-३४, वर्धा

नागपुर में बैरिस्टर अभयंकर की हालत ठीक नही है। डॉ० सोनक व टिकेकर आये। उन्होंने समाचार कहे। बापू को लेकर नागपुर गया। मोटर में बातें। बापू के जाने से अभयंकर को खुशी व हिम्मत आई।

प्रार्थना भी वही हुई ।

१०-१२-३४, वर्धा

सुबह घूमने आश्रम गया। बापू का मौन था।

शंकरलाल बैंकर ने बहुत जोर देकर ग्राम-उद्योग-मंडल का सभापति बनने के लिए कहा। उन्हें अपनी कठिनाइयां बतलाईं।

कुमारप्पा से बातचीत। बिहार सैंट्रल रिलीफ फंड की हालत कही। ग्राम-उद्योगमंडल के बारे में उन्होंने भी सभापति का भार लेने को कहा।

११-१२-३४, वर्धा

ग्राम-उद्योगमंडल की सभा का कार्य बापू की हाजिरी में शुरू हुआ। मैं देर से पहुंचा। सब मित्रों की एक राय होने व बापू की इच्छा होने पर, उत्साह न होते हुए भी, सभापति की जवाबदारी स्वीकार करनी पड़ी। ईश्वर-इच्छा !

१२-१२-३४, वर्धा

सुबह ४ बजे उठे। लक्ष्मीदासभाई ने घूमते समय कल के मेरे व्यवहार के बारे में कहा। मुझे उनका कहना ठीक लगा। उसके मुताबिक मन में विचार चलता रहा। इस बारे में बापू से थोड़ी बातें कीं।

ग्राम-उद्योगमंडल की बैठक ८ से १० हुई। बापू के वक्तव्य पर चर्चा। मैंने अपनी स्थिति स्पष्ट की। बाद में बापू के पास ग्राम-उद्योगमंडल के बारे में और विचार-विनिमय हुआ।

१३-१२-३४, वर्धा

आज सारा समय ग्राम-उद्योगमंडल के बारे में विचार, चर्चा तथा सभापतित्व करने आदि में गया। बापू के पास भी बहुत समय इसकी ही चर्चा चली।

१४-१२-३४, वर्धा

बापू के साथ सुबह घूमने गया। अपनी मनःस्थिति उनको बताई। ग्राम-उद्योगमंडल के सभापतित्व का भार लेने में निरुत्साह बताया। मेरी मनःस्थिति का खयाल कर बापू ने हुक्म नहीं दिया। उन्हें दुःख हुआ। अंत में जाजूजी सभापति हुए। मन में थोड़ा विचार चलता रहा।

१५-१२-३४, वर्धा

ग्राम-सेवासंघ की सभा सुबह व दोपहर को आश्रम में बापू के पास व शाम को बंगले पर हुई। बहुत समय इसीमें गया।

१७-१२-३४, वर्धा

राघवेन्द्रराव (होम मेम्बर) से मिलना हुआ। ठीक बातें। ग्राम-उद्योग मंडल, खादी-संघ की रजिस्ट्री, फादर एलविन, बापूजी, बार्लिंगे, भावी विचार, आदि।

१८-१२-३४, वर्धा

बापू को, राघवेन्द्रराव से जो बातें हुईं, वे कहीं। अन्य बातें भी हुईं।

१९-१२-३४, वर्धा

बापू से उनके रहने आदि के बारे में बातचीत।

रामायण-पाठ के बाद बापू से जाजूजी, विनोबा व कुमारप्पा के सामने बातें।

मगनलाल गांधी-स्मारक के लिए बगीचा दान में देने का संकल्प किया। इससे मन को संतोष हुआ। बगीचा व खेत देखने गये।

२३-१२-३४, बंबई

सरदार वल्लभभाई से मिलना हुआ। उन्होंने बापू को जो पत्र लिखा, वह बतलाया। उससे तथा उनसे जो बातचीत हुई, उससे दुःख हुआ। साफ-साफ बातें कीं।

डायरी के अंश

१९३५

६-२-३५, बम्बई

बापू को जरूरी व खानगी पत्र लिखा—ग्रामोद्योग-मंडल व ट्रस्टी, मेरी स्थिति व गोला-मिल का सम्बन्ध, प्यारेलाल व पंडितजी, लक्ष्मीदासभाई व ट्रस्टियों का चुनाव, रामेश्वरजी व गंगूबाई, रमीबहन व कामदार, इंडिया बैंक नागपुर-ब्रांच व मेरा सम्बन्ध आदि के बारे में।

११-२-३५, बम्बई

बापू को पत्र लिखा। बापू का बहुत आग्रह होने के कारण ग्रामोद्योग-संघ की सदस्यता का फार्म भरकर भेजना पड़ा।

२०-२-३५, वर्धा

पूज्य बापूजी से बगीचे में मिला। बापू ने प्यारेलाल व पंडितजी का निश्चय बताया। डॉ० जाकिर हुसैन व जामिया का हाल बताया और कहा कि उन्हें रुपये भेज सकें तो भेज दें। रामेश्वरदास व गंगूबाई का हाल कहा।

२२-२-३५, वर्धा

बापूजी से—रामेश्वरजी धुलियावाले व गंगूबाई का फैसला।

बापूजी से २ बजे से ४ बजे तक बातचीत—खासकर व्यापार-सम्बन्ध में। उन्होंने हार्उसिग कम्पनी का काम ठीक बतलाया। मिल का पसन्द नहीं किया। रामेश्वर (नेवटिया) भी साथ था। उससे भी बातें हुईं।

२३-२-३५, वर्धा

बापूजी आज नागपुर गये—खादी-भण्डार के लिए।

२६-२-३५, वर्धा

बापू से देर तक ऊपर घूमते हुए ट्रस्ट, विद्यापीठ, विलेपारले, भगिनी-समाज, जामिया मिलिया, चरखा-संघ आदि के सम्बन्ध में बातें होती रहीं।

२७-२-३५, वर्धा

बापू से बातें—कान के बारे में तथा चरखा, किर्लोस्कर, कामदार, डॉ० महोदय, सादुल्ला खां आदि के बारे में।

२८-२-३५, वर्धा

अभयंकर-स्मारक की बैठक वर्धा में घर पर हुई। व्याख्यान—देशमुख, टिकेकर, पटवर्धन, व बाबासाहब देशमुख। छगनलाल भारुका, खुशालचन्द खजांची, शिवराज चूड़ीवाले आदि से बातचीत व निश्चय। पूज्य बापूजी से बातें। वह अपील करेंगे। तीन ट्रस्टी निश्चित हुए—खरे, टिकेकर और जमनालाल। पचास हजार रुपया जमा करना तय हुआ—अभयंकर-हाल, ग्रामोद्योग की दूकान व पुस्तकालय वगैरा के लिए।

११-३-३५, वर्धा

श्रीनिवास शास्त्री नागपुर से बापू से मिलने आये। उनसे बातें। उन्हें मंदिर में लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बहुत पसन्द आई। आश्रम देखने गये। खादी भी देखी।

१३-३-३५, वर्धा

सवेरे बापू से 'नवजीवन' के बारे में बातें। मोहनलाल भट्ट को उससे हट जाने की सलाह दी।

जीवरामभाई, गोपबन्धु, व किशोरलालभाई ने बापू से उड़ीसा-योजना की चर्चा की और उन्होंने निश्चय किया।

बगीचे में बापू के पास देर तक इन्दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बारे में भी बातचीत हुई।

१४-३-३५, वर्धा

बगीचे में सुबह व दोपहर को ग्रामोद्योग-मण्डल की कार्रवाई। बापू या राजेन्द्रबाबू के इन्दौर जाने के बारे में विचार-विनिमय।

१५-३-३५, वर्धा

बापू से बगीचे की जमीन के बारे में बातें। राजेन्द्रबाबू की घरू स्थिति उन्होंने और मैंने बापू को पूरी समझाई।

१८-३-३५, वर्धा

इन्दौर से हिन्दी साहित्य सम्मेलन के डेपुटेशन में भाई कोतवाल व

तिवारीजी आये। बातें हुईं। पूज्य बापूजी से बातें करके अंत में फैसला हुआ कि वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति बनेंगे। मुझे भी जोर लगाना पड़ा।

८ से ९ तक पूज्य बापूजी से खादी-प्रतिष्ठान वगैरा के बारे में बातचीत हुई।

२१-३-३५, वर्धा

सुबह बापूजी से व राजकुमारी अमृतकुंवर बहन से देर तक बातचीत हुई। बापू से—कृष्णदास, सुचेता, चन्द्रकान्ता तथा अन्य विषयों पर बातचीत। मदालसा को साथ ले आने का निश्चय हुआ।

२६-३-३५, वर्धा

सुचेता मजूमदार बनारस से आई, उससे ठीक बातें। बाद में बापू के साथ खुलासा हुआ। बापू ने लिखकर दिया कि उन्हें संतोष हुआ।

२६-३-३५, वर्धा

सुबह श्री छोटेलालजी वर्मा, डिप्टी कलेक्टर के साथ धर्मशाला, बगीचा, मंदिर वगैरा गये। बापू से मिले। बाद में दोपहर को बापू से फिर मिला और बातें कीं।

७-५-३५, भुवाली

कमलाबहन (नेहरू) के पास गया। स्वरूपरानीजी भी वहां आई थीं। स्वामी रामतीर्थ का जीवन तथा बापू व विनोबा के बारे में ठीक विचार-विनिमय हुआ।

१३-७-३५, वर्धा

सवेरे स्टेशन से बगीचे गये, बापू से बातें—स्वरूपरानी नेहरू, गंगाबेन गिडवानी, मिसेस शास्त्री राजपुर, पं० मदनमोहन मालवीय, सरदार वल्लभभाई आदि के संदेश व हाल कहे। अपने कान के हाल बताये। आगे चलकर टांसिल का आपरेशन कराने की बापू की सलाह हुई।

विनोबा तथा बापू से खादी के नये फेरफार की भी थोड़ी चर्चा की। आश्रम में प्रार्थना में शामिल।

१६-७-३५, वर्धा

बापू से बातें, कमल के सम्बन्ध का हाल कहा। उन्होंने व महादेवभाई

ने कमल को पत्र भेजा कि उन्हें संतोष हुआ। डॉ० चौधरानी के बारे में बातें की।

१९-७-३५, वर्धा

बापूजी के साथ कतवारियों की मजदूरी की ठीक चर्चा हुई। आठ घंटे में आठ आने के बजाय फिलहाल तीन आना देने की योजना पर संतोष-कारक विचार ।

२०-७-३५, वर्धा

नागपुर से श्री गोवर्धनदास छांगाणी व अग्निहोत्री आये। उनके साथ बापूजी से नागपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बारे में बातचीत व विचार-विनिमय।

चरखा-संघ व सतीशबाबू के सम्बन्ध में भी ठीक चर्चा। मैंने अपने विचार कहे।

२१-७-३५, वर्धा

चरखा-संघ से मेरे त्यागपत्र के बारे में बापू से चर्चा व विचार। शंकरलाल बैंकर तो पहले से विरोधी थे ही। बापू से तय हुआ कि सभापति का काम वह करेंगे, मैं केवल सदस्य रहूंगा। वह जो काम लेना चाहेंगे और मैं कर सकूंगा, उतना करूंगा।

२४-७-३५, वर्धा

इन्दौर की एक लाख की थैली, सीकर-आन्दोलन, डेरी वगैरा के बारे में बापू से बातें व प्रोग्राम की चर्चा।

२५-७-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई व मणिबेन मेल से आये। वे बापू के पास जाकर फिर घर आये। सरदार से बातें। बापू के पास २ से ४ तक देशी राज्यों के बारे में चर्चा। राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाई, कृपलानी वगैरा से बातें।

२६-७-३५, वर्धा

बापू के पास १ से २ तक खादी तथा गांधी-आश्रम की चर्चा। २ से ४ तक राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाई, कृपलानी, डॉ० महमूद वगैरा के साथ चर्चा।

२७-७-३५, वर्धा

बापू के पास १।।। से ४ तक विचार-विनिमय हुआ। राजेन्द्रबाबू, सरदार वगैरा भी थे।

३१-७-३५, वर्धा

बापू के निमंत्रण पर वर्किंग कमेटी के सब मेम्बर तथा मेहमानों ने शाम को मगनवाड़ी में भोजन किया।

१-८-३५, वर्धा

पूज्य बापू के पास सरदार वल्लभभाई, राजेन्द्रबाबू, जयरामदास गये। देशी राज्यों के प्रस्ताव में फेरफार करवाया। बापू से अन्य बातें।

२-८-३५, वर्धा

सरोजिनी नायडू तथा अन्य लोग आये। सरोजिनी के साथ बगीचे गये। बापू से बातें। गोविन्दवल्लभ पंत के साथ बापूजी से फलों की कंपनी की योजना पर चर्चा हुई। जाजूजी भी सुबह ८ से ९-१५ तक थे। योजना बापू को पसन्द न होने के कारण स्थगित रखी।

३-८-३५, वर्धा

मज़दूरी के विषय में बापू की खादी-योजना पर ८ से १० तक विचार-विनिमय। राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाई, गंगाधरराव, पट्टाभि, जयरामदास, कृपलानी, जाजूजी, शंकरलाल बैंकर, किशोरलालभाई वगैरा के साथ।

कातनेवालों की मजदूरी और खादी के कार्य की चर्चा बापू के साथ २ से ४ तक फिर चली। सुबहवाले प्रायः सब ही उपस्थित थे।

४-८-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास चर्खा-संघ, मजदूर व कांग्रेस के बारे में विचार-विनिमय। फिर दोपहर को बापू के पास दो से चार तक रहा।

पांचलेगांवकरजी के सांप के प्रयोग। बापू के गले में सांप पहनाया। बाद में खादी-चर्चा हुई।

६-८-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास कई प्रश्नों पर विचार-विनिमय। खासकर इन्दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सीकर का जाट-प्रकरण, कांग्रेस-सभापति, स्टेटमेंट

देने का निर्णय। ओंकारलाल और महिला-विद्यालय, जितेंद्र, बद्रीनारायण, अम्तुलबहन, अनसूया वगैरा के बारे में ठीक खुलासा।

७-८-३५, **वर्धा**

मगनवाड़ी में बापू से बातें—खासकर अनसूया के बारे में।

१०-८-३५, **इन्दौर**

इन्दौर के महाराजा श्री यशवंतरावजी से ११॥ से १२ तक मुलाकात। मणिभाई कोठारी साथ थे। महाराजा बहुत ही सादे व सरल-हृदय सज्जन तथा बापू के प्रति भक्तिवाले मालूम हुए।

२६-८-३५, **देहली**

सुबह तैयार होकर भाई देवदास गांधी व पूज्य बा से मिला। बातचीत। बापू को व राजाजी को तार भेजा।

४-९-३५, **कानपुर-इलाहाबाद**

जवाहरलाल के साथ इलाहाबाद-ऐरोड्रोम से कानपुर तक आये। १ घंटा १० मिनट लगा। उन्होंने अपने विचार बताये। बापू के नाम पत्र लिखा।

जवाहरलालजी की बातचीत के नोट्स :

१. बापू के व मेरे (जवाहरलाल के) विचारों में काफ़ी फ़र्क है।
२. जहांतक एक भी राजनीतिक कैदी जेल में है, वहांतक बापू को कांग्रेस से अलग नहीं होना था।
३. बापू ने सत्याग्रह बन्द किया, यह मैं समझ सका।
४. फ्रीडम ऑफ स्पीच, फ्रीडम ऑफ प्रेस के बारे में, संभव हो तो सबोंको साथ लेकर, इस एक ही बात पर ज़ोरदार देशव्यापी आन्दोलन होना चाहिए।
५. आज की हालत में कौंसिल जाने के मैं विरुद्ध नहीं हूं।
६. आफिस स्वीकार करने के बारे में जहां हमारी मांग हो और हम जो शर्तें दें, वे सरकार मंजूर करे तो आफिस स्वीकार करना ठीक है, अन्यथा हमारी बात व शर्तें सरकार कबूल नहीं करती है, यह कहकर देश में फिर आन्दोलन करें।
७. भूलाभाई को मैंने देखा भी नहीं। जहांतक भाषणों का सम्बन्ध

है, माडरेटों में व उनमें फर्क नहीं दीखता । बुद्धिमान हो सकते हैं ।

८. सोशलिस्ट अच्छे हैं, यह मैं नहीं कहता; परन्तु उन्होंने कुछ विचार तो देश के सामने रखे हैं ।
९. मुझे अंग्रेज ज्यादा पहचानते हैं, मेरी कदर भी ज्यादा करते हैं ।
१०. वर्तमान वर्किंग कमेटी से मुझे बिलकुल संतोष नहीं ।
११. दूसरी बनाने में भी पूरी कठिनाई है ।
१२. कांग्रेस-प्रेसिडेंट के बारे में मुझे देश की हालत से वाकिफ होना जरूरी है । मैं खुला रहना ज्यादा पसन्द करूंगा । इतने पर भी जवाबदारी आयेगी तो ठीक है ।
१३. फरवरी से पहले याने सजा खत्म होने की तारीख के पहले मैं लौट आया तो शायद उतने रोज जेल में रहना पड़े ।
१४. मैं कांग्रेस-अधिवेशन के अवसर पर अवश्य आना चाहता हूं ।
१५. शिक्षण-पद्धति तथा अन्य परिस्थितियों व विचारों पर भी उन्होंने अपने विचार कहे ।
१६. जेल आदि के बारे में भी खुलासा किया ।

२४-९-३५, विन्सर (अल्मोड़ा)

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्मदिन है ।

नीचे मन्दिर में जो साधु ब्रह्मचारी रहते हैं उनसे हरिजनों के मंदिर-प्रवेश के बारे में बहुत देर तक बातें हुईं । मेरी बात उनके गले नहीं उतरी । पुराने विचारों के हैं। स्नान वगैरा करके १२ से १२-३० तक सब लोगों ने मौन रहकर कताई की । रात को दादा धर्माधिकारी ने बापू की जीवनी पर बहुत ही सुन्दर विचारणीय प्रवचन किया। उसके बाद प्रार्थना व भजन हुए ।

३-१०-३५, वर्धा

बापूजी से बातचीत । जवाहरलालजी की बातचीत का हाल कहा, महिलाश्रम व कन्याश्रम के बारे में भी बातें कीं ।

४-१०-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास गया । उनके साथ सिन्दी गांव पैदल गया और आया । मीराबहन की झोंपड़ी देखी ।

बापू से कृष्णदास, केशव आदि की बातें। चरखा-संघ की सावली में हुई बैठक का परिणाम सुना।

५-१०-३५, वर्धा

मगनवाड़ी गया। वहां से बापू के साथ सिन्दी जाते-आते समय बातें। बापू से फिर बातें। उन्हें बैतूल की चर्चा का हाल दादा धर्माधिकारी ने सुनाया।

९-१०-३५, वर्धा

बापूजी से बातें। उन्हें बैतूल की स्थिति मैंने कही थी, वह आज कबूल की। शान्ता के विचार कहे।

१०-१०-३५, वर्धा

बापूजी के पास दिल्ली-डेरी की बैठक हुई—दो घंटे करीब सुबह और एक घंटा शाम को। श्री लक्ष्मीनारायणजी, परमेश्वरीप्रसाद, ईश्वरदयाल हाजिर थे। पुराने कर्ज (दिसम्बर १९३५ तक) की जिम्मेवारी बापू ने तीन जनों पर, खासकर घनश्यामदास, लक्ष्मीनारायणजी और मुझपर छोड़ी।

१३-१०-३५, वर्धा

सुबह वल्लभभाई के साथ मगनवाड़ी गया। वहां से बापू के साथ सिन्दी तक पैदल।

२२-१०-३५, वर्धा

मगनवाड़ी से बापू व जयरामदास के साथ पैदल सिन्दी गये-आये। रास्ते में बापू से मैंने 'बम्बई क्रानिकल', राजाजी, कांग्रेस-सभापति आदि के बारे में अपने विचार कहे। उन्होंने अपनी राय दी।

बापू ने आज ग्रामीण कार्यकर्ताओं के सामने १-३० से २-३० तक खाद्य पदार्थ व ग्राम-सेवा पर प्रवचन किया। आश्रम में प्रार्थना। बापू से बातें।

२३-१०-३५, वर्धा

बापू आज नालवाड़ी गये। चर्मालय तथा मरे ढोरों के चमड़े के बारे में विचार-विनिमय। कतल की, हुई बकरी के चमड़े का उपयोग किया जा सकता है। बापू ने आश्रम के कार्यकर्ताओं के सामने अपने विचार ग्रामीण कार्यकर्ताओं के वेतन के संबंध में कहे। कम-से-कम तीन आना, ज्यादा-से-ज्यादा आठ आना रोज।

२५-१०-३५, वर्धा

पूज्य बापू, बा व मनु (हरिलाल गांधी की पुत्री) से बात करके मनु की सगाई चि० सुरेन्द्र मश्रूवाला से करने का निश्चय। विनोद; मुद्दा ९-३० बजे हुआ।

सर जस्टिस मडगांवकर बापू से मिलने आये।

२७-१०-३५, वर्धा

पूज्य बापूजी से ३ से ४ तक टांसिल-आपरेशन, महिला-मंडल ट्रस्ट, हिन्दी-प्रचार विद्यालय, मद्रास में हिन्दी-प्रचार वगैरा के संबंध मे बातें।

२९-१०-३५, वर्धा

बापू को नये वर्ष के प्रणाम करने गया।

२९-१०-३५, वर्धा

कल बापू से अनायास राधाकृष्ण व अनसूया की जो बातें हुईं व बापू ने जो निर्णय किया, वह सब राधाकृष्ण ने मुझसे कहा। उसने कहा कि बापू ने तो दोनों से बात करके यह कहा कि वे तो आज नये वर्ष के दिन यह सम्बन्ध पक्का हुआ मानते हैं। इसपर सुबह ही जाजूजी से सविस्तर बातें हुईं। वहां राधाकृष्ण व अनसूया हाजिर थे। दोनों की पूरी तैयारी से सम्बन्ध पक्का हुआ। दोनों के घरवालों को कहा गया। दोनों के पत्र पढ़े गए और विचार-विनिमय हुआ। बाद में चि० राधाकृष्ण की सगाई चि० अनसूया के साथ पूज्य बापूजी, काकासाहब, जाजूजी तथा अन्य प्रतिष्ठित मित्र-समुदाय के सामने पक्की हुई। बापू ने सारगर्भित भाषण दिया। समारंभ अच्छा हुआ।

३०-१०-३५, वर्धा

बापू व जाजू से बातें।

चि० तारा के साथ बापू के पास ३ से ४ तक। केनिया की हालत श्री पाण्डे ने कही।

१-११-३५, वर्धा

बापू के पास चि० तारा के साथ ७ से ८॥ तक बातें होती रहीं। बापू ने ठीक खुलासेवार बात की।

दोपहर को ३ से ४ तक बापू से बातें। जमीन का फैसला। बापू ने तारा के बारे में अपनी राय कही। मुझे भी ठीक मालूम हुई।

७-११-३५, वर्धा

नागपुर-मेल से वर्धा पहुंचा। मगनवाड़ी में बापू से मिला। ग्रामोद्योग-संघ की बैठक का कार्य १॥ से ४ तक हुआ।

८-११-३५, वर्धा (जन्मदिन)

स्नान आदि से निवृत्ति के बाद मां को प्रणाम। लक्ष्मीनारायण मंदिर में दर्शन व बापू को प्रणाम। बापू व अन्य मित्रों के साथ मगनवाड़ी में ही आज भोजन किया।

९-११-३५, वर्धा

विनोबा से करीब डेढ़ घंटे तक टेनरी देखने के बाद विचार-विनिमय। विनोबा ने कहा :

१. देहातों में स्वाभाविक रूप से श्रमजीवी जीवन व्यतीत करने-वाले लोगों में श्रमजीवन के सिद्धान्तों के बारे में निष्ठा निर्माण करके उन्हीं में से देहातों की सेवा करनेवाले श्रद्धावान और साहसी कुशल कार्यकर्ता निर्माण हो सकें, ऐसी योजना बनाना।

२. शिक्षित वर्ग के जो कार्यकर्ता देहात की सेवा की लगन रखते हैं, वे स्वतंत्र रूप से अपने पैरों पर खड़े रह सकें, ऐसी औद्योगिक शिक्षण की—सहकार्य—की और दिशा-दर्शन की योजना तैयार करना।

३. अहिंसक आंदोलन के मूलभूत तत्त्वों के बारे में विश्वास और ज्ञान की कमी बिलकुल निकट के कार्यकर्ताओं में भी दिखाई देती है। ऐसी स्थिति में उन मूल तत्त्वों का महत्त्व जानने और उसके अनुसार जीवन-परिवर्तन करने की आवश्यकता खुद के और आसपास के लोगों के चित्त पर बनी रहे, ऐसी आचार-योजना बनाना।

बापू से विनोबा की बातचीत पर विचार-विनिमय।

१०-११-३५, वर्धा

बापूजी ने आज प्रार्थना के बाद रायचन्द्र-जयन्ती पर सुन्दर प्रवचन किया। व्यवहार करते हुए भी मनुष्य उच्च विचार व आचार रख सकता है।

१३-११-३५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९-३० तक बातें। विषय—कार्यकर्ताओं की कमी, मगनवाड़ी की व्यवस्था, बापू का मोह, डेरी, जामिया वगैरा।

श्री जुगुलकिशोर बिड़ला व श्री रामेश्वरदास बिड़ला के पत्र अंबेडकर के बारे में आये। उन्हें तार व पत्र दिया। बापू से भी कहा।

१४-११-३५, वर्धा

प्रार्थना, बापू से हरजीवनभाई के बारे में व विट्ठलराव, सुमित्रा आदि के बारे में बातें।

२१-११-३५, वर्धा

घनश्यामदासजी से बातें। उनका मेरे कान के इलाज के लिए विदेश (वियेना) जाने पर जोर। उन्होंने बापू से भी इस संबंध में बातें की।

२२-११-३५, वर्धा

हरिजन-बोर्ड के सदस्य आना शुरू हुए। मगनवाड़ी में बापू से बातें—ऊपर की इमारत, फेलोशिप वगैरा के बारे में।

२४-११-३५, वर्धा

बापू के पास हरिजन बोर्डिंग-विषयक थोड़ी बातें। बाद में दिल्ली-डेरी के बारे में विचार-विनिमय।

२६-११-३५, वर्धा

बापू से मीराबहन के सेगांव में रहने आदि के बारे में बातें।

२७-११-३५, वर्धा

मगनवाड़ी में बापू से दिल्ली-डेरी, बिहार-रिलीफ, हिंगणघाट मजदूर-हड़ताल के बारे में विचार-विनिमय। जो मैंने फैसला किया, वही महाबीर-प्रसाद को बापू ने कहा।

२८-११-३५, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर श्री रामेश्वरी नेहरू व मीराबहन के साथ सेगांव गया। जाते समय आश्रम से पैदल गये। आते समय अपने बगीचे में व बाबासाहब के यहां दही-हुड्डा का भोजन हुआ। गांव में सभा हुई। बाबासाहब बाढोणेवाले सभापति थे। वह, श्री रामेश्वरी नेहरू, दादा धर्माधिकारी व मैं बोले। मीराबहन का परिचय दिया और वहां रहने का

कारण समझाया। मालगुजारी के बारे में बताया और कहा कि ब्याज-सहित जितने रुपये निकलेंगे, उसके बारह आने भी नगदी दे देवें तो यह हिस्सा पुराने पटेल को देने को आज भी तैयार है। दो वर्ष तक भी यह व्यवस्था करेंगे तो विचार किया जायगा। मीराबहन वहां रहने लगी।

२९-११-३५, वर्धा

दिल्ली-डेरी व जुगुलकिशोरजी बिड़ला को मैं जो पत्र भेजना चाहता था, बापू से उस संबंध में सब कहा। बापू ने कहा—इस प्रकार के पत्र भेजने की जरूरत नहीं। उसके कारण भी बताये।

१-१२-३५, वर्धा

सिन्दी से मगनवाड़ी तक बापूजी से सिन्दी की व्यवस्था व डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की व्यवस्था पर खास विचार। उनका कहना था कि इसमें अधिक ध्यान देना जरूरी है।

३-१२-३५, वर्धा

बापू ने रामदास गांधी की छपाई के काम की योजना बिलकुल नापास की। उसके साथ पूरा समझ लेने के बाद बापू को मैंने भी अपनी राय बताई।

मगनवाड़ी जाकर बापू व बहनों से मिला। चि० तारा को गौरीशंकर भाई के पास इलाज को भेजने का बापू ने निश्चय किया।

४-१२-३५, वर्धा

मगनवाड़ी बगीचे से सिन्दी तक जाने की सड़क बनाने का फैसला किया। पेड़ों के बीच से ही रास्ता बनाने का तय रहा—म्युनिसिपल कमेटी की दृष्टि से। बगीचे की कीमत के बारे में बापू जी, जाजूजी और कुमारप्पा से देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

बापूजी के स्वास्थ्य खराब होने की सूचना मिलने पर बगीचे गया और वहां सब व्यवस्था करके आया। सिन्दी के लोग मिलने आये। वहां की हालत समझी।

५-१२-३५, वर्धा

सुबह जल्दी मगनवाड़ी गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक मालूम हुआ। वहीं नाश्ता किया। बाद में सिन्दी पैदल घूमने गया।

महिला-आश्रम में बापू के लिए मकान की सफाई करवाई।

डॉ० खरे, शेरलेकर, मंगरूलकर और महोदय आदि ने मिलकर बापू की भली प्रकार से जांच की और कहा कि कोई खास शिकायत नही है। थोड़ा आराम लेने से ठीक हो जायगा। चिन्ता कम हुई।

७-१२-३५, **वर्धा**

बापू को आज फिर से ब्लडप्रेशर का दौरा हुआ व गर्दन में दर्द हुआ। उनसे दौरे का कारण व आराम लेने के बारे में बातचीत। उन्होंने शान्ता (मिस मेरी) के बारे में तथा मैंने विट्ठलसिंह के बारे में अपने विचार कहे।

प्रार्थना आज मगनवाड़ी मे ही की।

७-१२-३५, **वर्धा**

बापू का ब्लडप्रेशर ता० ५ को १६०-११० था। वह आज दोपहर को डॉ० साहनी (सिविल सर्जन), मंगरूलकर, शेरलेकर, महोदय आदि ने देखा तो २१०-१२० निकला। चिन्ताजनक बात है। शाम को डॉ० खरे व सिविल सर्जन ने फिर लिया तो १८०-११० हुआ। फिर भी चिन्ता रही। डॉ० जीवराज को तार किया।

महादेवभाई व देवदास से बापू के आराम के बारे में विचार-विनिमय।

८-१२-३५, **वर्धा**

बम्बई से डॉ० जीवराज मेहता बापू को देखने आये। बहुत देर तक जांच की और बुलेटिन निकाला।

१०-१२-३५, **वर्धा**

मगनवाड़ी गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक नहीं लग रहा है। उन्हें स्थान-परिवर्तन की बात समझाई। उन्होने स्वीकार नही की। ब्लडप्रेशर ठीक नही है, यह चिन्ता का विषय है।

११-१२-३५, **वर्धा**

मगनवाड़ी गया। बापू को देखा। डॉ० साहनी ने बापू का ब्लडप्रेशर लिया।

बापू को स्थान-परिवर्तन का समझाने की कोशिश कर देखी। सफलता नहीं मिली। आन्ध्र के ४०० स्त्री-पुरुष पूज्य बापूजी के दर्शनों के लिए स्पेशल ट्रेन लेकर दो रोज के लिए आये। उनके नेता लोग भोजन को आये। शाम की प्रार्थना में मगनवाड़ी में शामिल हुए। उनकी स्पेशल ट्रेन देखी।

१२-१२-३५, वर्धा

बापू से मगनवाड़ी में मिला। यद्यपि वह मगनवाड़ी छोड़ना नहीं चाहते थे, फिर भी उनको महिला-आश्रम या अपने वहां बंगले पर स्थान-परिवर्तन करने को राजी किया। सिविल सर्जन से मिला। उन्होंने आश्रम का स्थान पसन्द किया—घर पर मच्छर वगैरा तथा अन्य अड़चनों के कारण।

कल सुबह ९ बजे आश्रम जाने का तय किया। पूज्य बा की इच्छा मगनवाड़ी में ही रहने की है।

आन्ध्र स्पेशल ट्रेन के यात्रियों को जो बापू के दर्शनों को आये थे, दूकान पर भोजन कराया। मैंने भी उनके साथ दुबारा भोजन किया। मंदिर में भजन। शाम को महादेवभाई ने बताया कि बापू महिलाश्रम नहीं जायंगे।

१३-१२-३६, वर्धा

मगनवाड़ी गया। बापू से मिला। उनकी इच्छानुसार अंत में मगनवाड़ी में ही रहने का निश्चय किया। पूज्य राजेन्द्रबाबू आये। बापू से बातें हुईं। वही प्रार्थना।

१५-१२-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई, मणि, डॉ० जीवराज मेहता, डॉ० गिल्डर आदि बंबई से आये। बापू को दोनों डॉक्टरों ने भली प्रकार देखा। डॉ० गिल्डर ने छाती की जांच की। फोटो लिया। डॉ० जीवराज ने कहा कि चिंता की बात नहीं है, पर बापू को अभी आराम लेने की जरूरत है।

बापू की तबीयत के बारे में उनके प्रोग्राम-संबंधी चर्चा।

१७-१२-३५, वर्धा

वल्लभभाई, महादेवभाई, मणि, उमा के साथ घूमते हुए मगनवाड़ी गया। बापू से मिलकर वापस पैदल बंगले आया।

१८-१२-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई के साथ बापू से मिलकर आया।

गांधी-सेवा संघ का कार्य तीन घंटे, ४ से ५-३० व ७ से ८-३० तक किया।

१९-१२-३५, वर्धा

वेरियर एलविन् सरदार के साथ बापू से मिलकर आये। एलविन से बातें।

२०-१२-३५, **वर्धा**

मगनवाड़ी गया। बापू से विनोद, तथा ४-३० से ५-१५ तक बातें। सरदार भी साथ थे।

गांधी-सेवा संघ की बैठक सुबह ८ से १०-१५ व शाम ८ से १० तक हुई। कान्फ्रेंस २९ फरवरी से ६ मार्च तक सावली में रखने का निश्चय हुआ।

२४-१२-३५, **वर्धा**

मगनवाड़ी गया। बापू से उनके साथ जानेवालों के बारे में तथा जो यहां रहेंगे, उनकी व्यवस्था करने के बारे में विचार-विनिमय। उनकी इच्छा जानी। मैंने अपना अभिप्राय बताया।

२५-१२-३५, **वर्धा**

डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से आये। बापू से देर तक बातचीत। स्वास्थ्य की जांच, ब्लड-प्रेशर, नाड़ी। प्रगति धीमी बताई।

डॉ० जीवराज से बापू के बारे में बातें। डॉ० खरे नागपुर से आये। उन्होंने भी बापू को देखा।

२६-१२-३५, **वर्धा**

बापू से बातें। उनको जो कहना था वह सुना। नागपुर जा नहीं सकते, मैंने कहा।

२७-१२-३५, **वर्धा**

बापू से बातें। उन्होंने रामकृष्ण व उमा के शिक्षण के बारे में कहा। अन्य बातें।

३१-१२-३५, **वर्धा**

४-३० उठा। मगनवाड़ी गया। बापू से मामूली बातचीत।

बापू से इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फेलोशिपवाले मिले। थोड़ी देर बात हुई। बापू से मेरी भी मामूली बातचीत हुई।

डायरी के अंश

१९३६

२-१-३६, बंबई

वर्किंग कमेटी की बैठक। पू० मालवीयजी से देर तक बातें।

३-१-३६, वर्धा

मगनवाड़ी गया। बापू को मालवीयजी का सन्देश कहा। बापू का ब्लड-प्रेशर फिर २०६-११२ हो गया। बढ़ जाने से चिंता। डॉ० महोदय से बापू के स्वास्थ्य के बारे में बातचीत।

शाम को फिर बापू के पास मगनवाड़ी गया। ४ से ७-३० तक डाक्टरों ने बापू को देखा। ब्लडप्रेशर २००-११५ हुआ। इतना आराम लेने पर भी ब्लडप्रेशर कम नहीं हो रहा है, यह जानकर चिन्ता होती है। बापू का आज बंबई जाना स्थगित रहा। डॉ० जीवराज ने भी टेलीफोन पर कहा कि १८५ से कम हो तो ही बापू को बम्बई भेजना चाहिए।

४-१-३६, वर्धा

सुबह ५ बजे उठा, दादा धर्माधिकारी के साथ मगनवाड़ी गया।

बापू को रात में नींद ठीक आई। आज ब्लडप्रेशर १८६-११० रहा। डॉक्टरों ने अंत में बापू को सेकंड या फर्स्ट क्लास में भी यात्रा न करने देने व बंबई न जाने देने का निर्णय दिया। डॉक्टरों ने व बापू ने जनवरी-आखिर तक आश्रम में ही रहने का निश्चय किया।

आश्रम जाकर बापू के रहने आदि की व्यवस्था की।

शाम को करीब ५॥ बजे बापू को मनगवाड़ी से महिला-आश्रम के पुराने भवन में ऊपर ले गए, डॉ० साहनी ने जांचा। ब्लडप्रेशर १९६-११०। शाम की प्रार्थना आश्रम में की। आज से जाजूजीवाले पुराने मकान में सोने का रखा। बाहर खुले में सोया।

५-१-३६, वर्धा

४ बजे उठकर प्रार्थना में गया। रात में बापू को नींद आ गई।

घूमने के बाद बापू के पास गया। डॉक्टरों ने बापू की जांच की। ब्लडप्रेशर १९२-११० हुआ। कम नहीं हुआ।

डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से ऐक्सप्रेस से आये और मेल से वापस गये। बापू को भली प्रकार देखा। विनोद व बातचीत। कुछ समय बाद आवश्यकता हुई तो बम्बई व बाद में माथेरान बापू को रखने का विचार हुआ। डॉ० जीवराज के साथ भोजन। शाम की प्रार्थना आश्रम में। बापू ने ७॥ बजे मौन लिया।

६-१-३६, वर्धा

४ बजे उठा। प्रार्थना, बापू का मौन। बापू को नीद ठीक आई। उनका ब्लडप्रेशर २२०-१२० करीब हुआ। डॉ० महोदय ने सिविल सर्जन डॉ० साह्नी को बुला लाने को कहा। वह आये। उन्होंने ब्लडप्रेशर देखा तो १७५-१२० निकला। दोनों में फर्क रहा। शाम को डॉ० शेरलेकर व डॉ० मंगरूलकर दोनों ने ब्लडप्रेशर लिया तो २१०-१२० निकला। इससे चिन्ता हुई। डॉक्टरों ने कहा कि बापू कमरे के अन्दर ही रहें व पूरा आराम लें।

७-१-३६, वर्धा

बापू को नींद ठीक आई। मिस लीस्टर आज बापू के मिलने आईं। अपने यहीं मेहमान हैं। उनके साथ में भोजन किया।

बापू का ब्लडप्रेशर १९४-११० था। स्वास्थ्य साधारण ठीक रहा।

८-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रातः बापू से मिलकर बंगले पर आया। पत्र लिखवाये। घूमने गया। बापू का स्वास्थ्य आज ठीक लगा। ब्लडप्रेशर १९०-१०६ था।

आज से बापू को रामायण सुनाने का निश्चय हुआ। शाम को आश्रम में भोजन किया। बाद में प्रार्थना।

९-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रातः बापू से मिलकर बंगले आया।

बापू का रामायण-वर्ग हुआ।

बापू के दो दांत डा० साह्नी ने निकाले। ब्लडप्रेशर शाम को १८०-११०।

१०-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू को देखकर बंगले आया। वहांपर कुछ लिखना-पढ़ना किया। मिस लीस्टर वगैरा सेगांव गये।

श्री राजेन्द्रबाबू मेल से आये। बापू के पास ८-२० से ९ तक रहे। रामायण-वर्ग में बैठे रहे। बात ज्यादा नही की। बापू को आज रात में नीद कम आई। ब्लडप्रेशर शाम को १८६-१०६ था।

भोजन के बाद जल्दी ही वापस बापू के पास गया।

११-१-३६, वर्धा

बापू का ब्लडप्रेशर सुबह १७६-१०६, शाम को १७२-१०४। स्वास्थ्य ठीक है। रामायण-वर्ग।

सरदार वल्लभभाई व राजेन्द्रबाबू के प्रोग्राम तथा बंगाल-संबंधी विचार-विनिमय।

मनगवाड़ी गया, उसके बाद बापू के पास गया।

१२-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू को रात नींद आई थी।

डॉ० जीवराज, डॉ० गिल्डर बम्बई से १२-१५ बजे करीब आये। डॉ० बरेटो दांत निकालने नागपुर से आये। १ बजे सब मिलकर सात डॉक्टर होगए। डॉ० जीवराज व गिल्डर तो बापू को बम्बई ले जाने को आये थे, किन्तु बापू ने आज जाने से इन्कार किया। दो दांत निकलवाये।

मेरी राय थी कि बंबई जाना हो तो आज जाना चाहिए। बाद में सरदार, डॉ० जीवराज व डॉ० गिल्डर ने मिलकर गुरुवार को बम्बई जाने का विचार किया। कई कारणों से मुझे दुःख हुआ, रात में नींद भी बराबर नहीं आई।

१३-१-३६, वर्धा

३ बजे उठा, ४ बजे प्रार्थना। रात में बापू को नींद आई थी। मनोज्ञा भूल से सुबह प्रार्थना के समय अंदर बापू के पास आई। उसे समझा दिया। उसके प्रश्न ठीक मालूम हुए। सरदार के साथ वापस पैदल बापू के पास। बापू का आज मौन था। दिन में ठीक आराम किया। बापू को स्टेशन ले जाने के बारे में स्टेशन-मास्टर के साथ विचार-विनिमय।

प्रार्थना के बाद बापू के समक्ष महादेवभाई ने लीलावती को बापू के दर्शन कराने के बारे में जो दुराग्रह व जिद की, तथा उस समय मेरा भी जो व्यवहार रहा, उसके लिए मन में दुःख अनुभव होता रहा। बापू के सामने यह घटना नहीं होनी चाहिए थी। उन्हें भी विचार रहा होगा।

सरदार और राजेन्द्रबाबू मीराबहन के पास सेगांव जाकर आये।

१४-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। रात में महादेवभाई के साथ घटी कल की घटना का विचार चलता रहा। कई बातें मन में आईं।

बापूजी को रात में नींद कम आई और १ बजे दो दस्त हुए, यह सुनकर चिंता हुई। महादेवभाई को दुःख से भरा हुआ पत्र लिखा। उनका भी पत्र आया। इस संबंध में सरदार का व्यवहार न्याय से थोड़ा अलग मालूम हुआ। आज मन में काफी असंतोष व दुःख रहा, आंखें भी गीली हुईं।

इन्दौरवाले हीरालालजी व मनोज्ञा, अम्बा आदि से बातें। उन्हें कृष्णदास का संबंध पूर्णतया पसन्द है। बापू को भी कहा। इन सब लोगों को शाम को बापू के दर्शन करा दिये। बापू ने हीलारालजी के बारे में पूछा।

बापू ने अपने मन की दो बातें कही। एक मगनवाड़ी को सफल बनाना व दूसरी जो आखरी की लड़ाई लड़नी है उस बारे में। केन्द्र वर्धा ही रखना जरूरी बतलाया।

•

१६-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू से मिलकर बंगले आये, सरदार व मणि के साथ घूमते हुए फिर आश्रम। डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से आये। बापू से मिलकर स्टेशन गया। बापू को ले जाने की व्यवस्था देखी। वहां से मनगवाड़ी जाकर व अस्पताल में डॉ० साहनी से मिलकर ११-३० बजे भोजन। बापू की इच्छा के मुताबिक ४-३० से ५-३० तक खास-खास लोगों को उनसे मिलाया। कुमारप्पा, तारा, शान्ता, लीलावती, हरिलाल गांधी, महादेवभाई वगैरा। बापू को आज आश्रम की बहनों ने भजन सुनाये। कम पसन्द आये।

बापूजी रात को एक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुए।' व्यवस्था से पूरा संतोष नहीं रहा।

३-२-३६, वर्धा

घूमने मगनवाड़ी गया। मीराबहन से बहुत देर तक बातचीत। उन्हें कई तरह से समझाया कि बापू के पास जाने से उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। मीराबहन ने मेरे आग्रह पर कबूल तो किया, पर कहा कि अगर नही गई तो सिर फट जायगा, ऐसा लगता है आदि।

महादेवभाई का पत्र आया। आखिर में मीराबहन ने जाने का ही निश्चय किया। उसकी हालत देख क्रोध व प्रेम दोनों पैदा होते हैं।

बापू का ब्लडप्रेशर १४५-९०।

७-२-३६, वर्धा-भुसावल

हरिभाऊजी के साथ पैदल स्टेशन। महादेवभाई, दुर्गाबहन कलकत्ते गये। उन्होंने बापू के स्वास्थ्य का व मन का हाल थोड़े में बताया। मीराबहन और प्यारेलाल का भी। बडनेरा तक प्यारेलाल की राम-कहानी; महादेव-भाई के पत्र वगैरा देखे।

९-२-३६, अहमदाबाद

वल्लभभाई व जीवराज मेहता आये। मुझे भी साथ ले गए। बापू का प्रोग्राम जो निश्चित हुआ था, बतलाया। बापू बारडोली ठहरते हुए ता० २३ को वर्धा पहुंचेंगे, यह कहा।

गुजरात-विद्यापीठ में प्रार्थना। बापू से बात नहीं हुई।

२१-२-३६, वर्धा

मीराबहन से बातें। मैंने अपने विचार कहे। किशोरलालभाई से गांधी-सेवा-संघ के बारे में बातचीत। छगनलालभाई से कृष्णदास के विवाह के बारे में बातें। प्यारेलाल से बातें। उसे समझाया। तीन रोज बाद, आखिर उसने बहुत समझाने पर, खाना खाया।

२३-२-३६, वर्धा

पू० बापूजी, सरदार, मणि दोपहर को ऐक्सप्रेस से वर्धा पहुंचे।

२५-२-३६, वर्धा

सरदार से बड़ौदा कन्या-विद्यालय की बातें। मैंने अपनी राय बताई। उन्होंने बापू से बात करके निश्चय करने का विचार किया।

जवाहरलालजी का पत्र; विचार-विनिमय।

बापू को ब्लड-प्रेशर ज्यादा हुआ, यह सुना। मीराबहन वगैरा ने बातें ज्यादा कीं।

२६-२-३६, **वर्धा**

निवृत्त होकर प्यारेलाल व सुशीला के साथ पैदल आश्रम गया।

पू० बापू के पास रामायण ८-३० से ९ तक हुई। बाद में ९ से १०-१५ तक बापू से सेगांव, सावली, देवली, मीराबहन, प्यारेलाल, बड़ौदा का मामला, तारा, वल्लभभाई आदि की चर्चा व विचार।

२७-२-३६, **वर्धा**

पू० बापू सेगांव गये। मन पर बहुत विचार रहा। जाते समय रबर-टायरवाली बैलगाड़ी में गये और आते समय बाबासाहब की मोटर में आये।

बापू का ब्लडप्रेशर ता० २५ को १८८-११०, ता० २७ को सुबह ७-३० बजे २१९-१२०। सेगांव से वापस आने पर ११ बजे १८८-११०, दोपहर को २-४५ बजे १८८-११० रहा। सरदार ऐक्सप्रेस से आये। बड़ौदा-प्रकरण के बारे में ठीक बातें हुईं। सरदार से बापू व बड़ौदा के प्रोग्राम के बारे में चर्चा।

२८-२-३६, **वर्धा-सावली**

बापू व कमला से मिले। सुशीला दिल्ली गई, हम लोग सावली रवाना हुए। रात को १०-३० बजे के करीब बापू व राजेन्द्रबाबू वगैरा आये।

२९-२-३६, **वर्धा-सावली**

बापू, सरदार, राजेन्द्रबाबू से मिलना व बातचीत। बापू ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। अपने विचार कहे। प्रदर्शनी में आसपास का सामान ही रहना चाहिए था। दूध व साग पर प्रवचन। कृष्णदास (गांधी) के विवाह का तार भेजा, बापू ने लिखवाया।

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी की सभा। मौन-कताई १२॥ से १ तक। साधारण सभा, परिचय, रिपोर्ट आदि।

१-३-३६, **सावली**

बापू का कन्या-गुरुकुल बड़ौदा न जाने का, सरदार का ता० ९ को वहां पहुंचने का व बापू का ता० ८ को दिल्ली पहुंचने का निश्चय। सभा का कार्य। सदस्यों का परिचय। बापू के साथ ४ से ५ तक प्रश्नोत्तर।

३-३-३६, सावली

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी का कार्य सुबह ७-३० से ९-३० तक। कान्फ्रेंस में प्रश्नोत्तर। बापू ४ से ५ तक रहे। प्रचार-कार्य का खुलासा करना पड़ा। जो थोड़ी गलतफहमी थी, वह दूर हुई।

४-३-३६, सावली

सुबह गांधी-सेवा-संघ की कान्फ्रेंस हुई। विनोबा का स्पष्टीकरण सुन्दर व महत्त्वपूर्ण हुआ। बापू ने कान्फ्रेंस की कार्य-पद्धति पर टीका की। उस समय बहुत ज्यादा क्रोध आया। इतने क्रोध का इन वर्षों में अनुभव नहीं हुआ था। बापू से भी ज्यादा पू० वल्लभभाई पर क्रोध आया। मन में खूब दुःख व विचार आता रहा। विनोबा व किशोरलालभाई से बातचीत। अखीर में बापू और वल्लभभाई से खुलासा होने पर थोड़ी शान्ति हुई।

५-३-३६, सावली

कृष्णदास (गांधी) का विवाह मनोज्ञा के साथ हुआ।

६-३-३६, सावली-चांदा-वर्धा

आज गांधी-सेवा-संघ की सभा में पू० विनोबा का तकली व चरखे के बारे में सुन्दर व प्रभावशाली भाषण हुआ। राजेन्द्रबाबू, बापूजी का, किशोरलालभाई व मेरा भाषण भी ठीक हुआ।

१-१२ को बापू व राजेन्द्रबाबू के साथ मोटर से चांदा रवाना। २-३० के करीब चांदा पहुंचे। वहां से पैसेंजर से वर्धा। रास्ते में बापू व कुमारप्पा से बातें। गर्मी बहुत थी। भोजन रास्ते में ही हुआ।

वर्धा करीब ८-१० बजे। बापू को आश्रम में छोड़ा। आज करीब सत्तर मेहमान बंगले पर ठहरे।

७-३-३६, वर्धा

सुबह जल्दी बापू के पास गया। उन्हें मगनवाड़ी ले गए। ग्रांड ट्रंक से बापूजी व बा दिल्ली गये।

१७-३-३६, दिल्ली

हरिजन-सेवक-संघ की कॉलोनी में ठहरे। स्नान व नाश्ते के बाद बापू से मिले। जवाहरलालजी आये। बापू से सुबह ९ से १०॥ व शाम को ४ से ५। मिले। उनके साथ थोड़ी चर्चा हुई।

१८-३-३६, दिल्ली

हिन्दी-प्रचार के लिए इन्दौर से जो पंद्रह हजार की सहायता मिली, बापू से उस बारे में तथा अन्य बातें ।

१९-३-३६, दिल्ली

सुबह पू० बापू से थोड़ी बातें। डॉ० अन्सारी ने बापू को देखा। स्वास्थ्य ठीक बताया। ब्लड-प्रेशर १५५-९२।

दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार सभा को पंद्रह हजार भेजने का कल बापू ने निश्चय किया। बापू से उनके स्टेटमेंट, जवाहरलालजी के प्रोग्राम तथा डेरी-सम्बन्धी बातें।

जवाहरलालजी से सुबह व शाम बातचीत हुई। बहुत-सी बातें साफ हुईं। खासकर देशी रियासतों के प्रश्न पर अच्छी चर्चा हुई।

पू० मालवीयजी से मिला।

२२-३-३६, दिल्ली

बापू से बातचीत। बाद में शंकरलाल बैंकर को लखनऊ टेलीफोन किया।

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११, शाम को १।। से ५ तक हुई। तेरह मेंबर हाजिर थे। भूलाभाई व पंतजी की दलीलें ठीक थीं।

सरदार बीमार पड़ गए। बापू का ब्लड-प्रेशर डॉ० अन्सारी ने लिया, १५४-१०२ हुआ। नाड़ी ७२।

२३-३-३६, दिल्ली

बापू से मिला।

वर्किंग कमेटी सुबह ७।।। से १० तक और दोपहर १२ से ५ तक।

पू० मालवीयजी से मिला। जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू, जयरामदास और कृपलानी से करीब एक घंटा बातें।

२४-३-३६, दिल्ली

बापू के साथ टी० बी० अस्पताल डॉ० कृष्णा के साथ देखी। आंख की अस्पताल भी देखी। बापू से बातें। बापू के रामायण-वर्ग में।

बापू, राजेन्द्रबाबू, जवाहरलालजी के साथ ९ से ११ तक विचार-विनिमय।

सरदार वल्लभभाई का स्वास्थ्य खराब हो गया। उन्हें बुखार आ गया। डॉ० अन्सारी ने देखा। उनकी राय से उन्हें बिड़ला-हाउस ले गए।

वर्किंग कमेटी दोपहर १ से ६ तक और रात को ९ से १०॥ तक होती रही

२५-३-३६, दिल्ली

सुबह बापू से बातचीत।

सरदार वल्लभभाई का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, उनके पास देर तक बैठा।

पू० मालवीयजी महाराज से देर तक बातचीत। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कांग्रेस व पद-ग्रहण, आपस का समझौता आदि की चर्चा। कृपलानी आदि के बारे में उन्होने अपने विचार कहे। उन्हें समझाया और उनका भ्रम दूर किया।

२६-३-३६, दिल्ली

सुबह बापू, राजेन्द्रबाबू व प्यारेलाल से बातचीत। बापू से ठीक बातें हुईं। प्यारेलाल का चार्ज बापू ने लिया।

सुबह ९-१५ से १० व शाम को बिड़ला-हाउस में ४ से ५ तक बापू के साथ डेरी-संबंधी चर्चा। डेरी की भावी व्यवस्था बापू की इच्छा के अनुसार हुई। एक चिंता कम हुई।

बापू ने डॉ० टैगौर की ठीक सहायता करवाई।

२७-३-३६, लखनऊ

बापू के ठहरने के योग्य स्थान देखा। घूम-फिरकर अंत में यूनिवर्सिटी रोडवाला मकान पसन्द हुआ। वहां व्यवस्था की। शाम को बापू के लिए जो मकान किराये से लिया, वहां रहने आया।

२८-३-३६, लखनऊ

सुबह ६-३० बजे लखनऊ से करीब तीस मील दूर के स्टेशन पर बापू को उतारकर मोटर से लाये। ६० मील आना-जाना हुआ। यूनिवर्सिटी रोड-वाले किराये के बंगले में बापू को ठहराया। व्यवस्था की देखभाल की।

जवाहरलालजी दोपहर की गाड़ी से आये। उन्हें लेने गया। बापू ५। के बाद प्रदर्शनी में गये, साथ में जवाहरलालजी व राजकुमारी थे। प्रदर्शनी

देखने के बाद बापू का भाषण हुआ। भीड़ बहुत ज्यादा नहीं थी। बापू के जेलर बनने का चार्ज लेना पड़ा ।

३०-३-३६, लखनऊ

प्रदर्शनी में तीन बजे से ६-४५ तक रहा, वहां की स्थिति समझी। पू० बापू से प्रदर्शनी की व थोड़ी अन्य बातें ।

३१-३-३६, लखनऊ

बापू के साथ प्रदर्शनी में गया। ७। से १०।। तक खूब घूमकर ठीक तौर से प्रदर्शनी देखी ।

शाम को प्रार्थना के बाद बापू से शंकरलाल का डर, उसके विचार तथा मेरा डर कहा ।

१-४-३६, लखनऊ

सुबह घूमते समय बापू से बातचीत । रामायण-पाठ। बाद में मुलाकातें। प्रार्थना के बाद सुरेन्द्र ने बापू से काश्मीर के बारे में बातें की। बापू से गिरधारी व प्रदर्शनी-संबंधी तथा अन्य निजी बातें कीं। चरखा काता। बाद में प्यारेलाल से देर तक बातचीत ।

२-४-३६, लखनऊ

४ बजे सुबह प्रार्थना। बाद में पू० बापू से प्यारेलाल के बारे में बातचीत। बापू के साथ प्रदर्शनी में गया। कैलाश ने स्टालों का वर्णन ठीक समझाया ।

३-४-३६, लखनऊ

रात को लखनऊ से बापू के साथ इलाहाबाद के लिए रवाना ।

४-४-३६, इलाहाबाद

सुबह करीब ५ बजे प्रयाग पहुंचे। बापू की पार्टी के साथ जवाहरलालजी, रणजीत (पंडित), सरूप (विजयालक्ष्मी पंडित) आदि आये थे। स्टेशन से आनन्द-भवन तक पैदल चलकर आये ।

बापू का प्रोग्राम—मुलाकात आदि की व्यवस्था की। रामायण-वर्ग। बापू की जवाहरलालजी से बातें। शाम को घूमते समय भी बापू से बातें।

५-४-३६, इलाहाबाद

सुबह बापू के साथ घूमे। जवाहरलालजी और मैं दोनों थे। बहुत-सी

बातें होती रहीं। बापू व जवाहरलाल के साथ एक घंटा कमला-मेमोरियल संबंधी बातें। कठिनाई आदि पर चर्चा।

शाम को ५ से ६।।। तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय का उद्घाटन बापूजी ने किया, उपस्थिति ठीक थी। बापू का भाषण अच्छा हुआ। प्रार्थना के बाद बापू थोड़ा घूमे।

६-४-३६, इलाहाबाद

बापू मौन होते हुए भी सुबह अकेले घूमने निकल गये। कुछ देर तक खूब विचार व चिन्ता होती रही। थोड़ी दौड़-धूप करनी पड़ी। मोटर लेकर खोजने निकले, पर रास्ते में ही मिल गए। सरोजनी नायडू साथ थी।

वर्किंग कमेटी १-३० से रात के ९ तक होती रही। काफी चर्चा और विचार-विनिमय हुआ।

८-४-३६, लखनऊ

सुबह करीब ५ बजे रास्ते में ही बापू के साथ उतर गए। १२ मील के पत्थर के पास एक घंटा पैदल घूमे। बाद में मोटर से लखनऊ पहुंचे।

९-४-३६, लखनऊ

बापू के साथ पैदल एक घंटा घूमे।

सुबह वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। शाम को ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। बाद में सब्जेक्ट कमेटी रात में देर तक चली।

१३-४-३६, लखनऊ

सुबह जल्दी बापू के साथ घूमा। राजेन्द्रबाबू भी शामिल हो गए। कांग्रेस की बातें। बाद में सरदार व राजेन्द्रबाबू बापू से मिलने आये। स्थिति समझाई। वर्किंग कमेटी ८ से ११-३० तक। शाम को ५-३० से कांग्रेस का खुला अधिवेशन शुरू हुआ। रात में १।। बजे तक चला। २ बजे सोये।

१४-४-३६, लखनऊ

बापू घूमकर आये। उसके बाद उनके साथ बातें।

बापू से प्रभावती के बारे में गरमागरम बातें हुईं। दुःख के साथ मेरा कष्ट भी मालूम हुअ.।

जवाहरलालजी बापू से मिलने आये।

कांग्रेस का खुला अधिवेशन आज समाप्त हुआ। रात में १॥ बजे तक उसमें रहना पड़ा।

१५-४-३६, लखनऊ

सुबह बापू से थोड़ी बातें।

जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू, मौलाना, सरदार ये चारों बापू के पास देर तक बैठे—विचार-विनिमय। स्थिति नाजुक; विचारणीय व चिन्ताजनक। आज ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक व बापू के व्याख्यान में जाना नही हो सका। शाम को भी जवाहरलालजी व मौलाना बापू से मिलने आये। समझौता होता हुआ मालूम हुआ। जवाहरलालजी से देर तक बातचीत।

१६-४-३६, लखनऊ

बापू के साथ घूमने गया। राजेन्द्रबाबू भी साथ हो गए। जवाहरलालजी, सरदार तथा मेरी अपनी स्थिति कही। मेरा नाम आखिर रखा गया। उससे मन में थोड़ी अशान्ति हुई।

जवाहरलालजी आये। साथ में मौलाना आजाद भी थे। बापू से देर तक बातचीत। मुझे थोड़ा क्रोध आ गया। जो कहना था सो कहा।

लखनऊ से ९॥ बजे रवाना। थर्ड क्लास में बापू के डिब्बे में आराम रहा। बाद में उनसे थोड़ी बातचीत।

२१-४-३६, वर्धा

बापू से नागपुर में होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन की व्यवस्था पर विचार-विनिमय व सेगांव के बारे में चर्चा। मैंने अपने विचार बताये। सरदार ने भी अपने कहे। बापू का निश्चय।

२३-४-३६, वर्धा

बापू से मिलकर राजेन्द्रबाबू नागपुर गये। कन्हैयालाल मुंशी आये। शाम को बापू व सरदार को लेकर नागपुर गये। रास्ते में बापू से बातचीत होती रही।

२४-४-३६, नागपुर

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य हुआ। काकासाहब व बापूजी के भाषण हुए। हाल में आवाज गूंजने के कारण भाषण बराबर सुनाई नहीं

दिये। रात में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ, बापूजी आये थे।

२५-४-३६, नागपुर

सुबह जल्दी उठा।

बापू से विचार-विनिमय। हिन्दी साहित्य सम्मेलन व भारतीय सम्मेलन का कार्य हुआ। बाद में सम्मेलन की कार्यकारिणी की बैठक।

२६-४-३६, नागपुर

टिकेकर के यहां बापूजी के पास रहा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली पर विचार होता रहा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सब्जेक्ट कमेटी २ से ६-४५ तक हुई। प्रचार-विभाग का निर्णय हुआ। बापू वर्धा गये।

२८-४-३६, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ७॥ से १०॥ व दोपहर को २ से ६॥ तक। शाम को वर्किंग कमेटी में पूज्य बापूजी आये। देर तक विचार-विनिमय।

२९-४-३६, वर्धा

जल्दी उठा। वर्किंग कमेटी का कार्य सुबह ७॥ से ११॥ तक हुआ।

गांधी-सेवा-संघ की बैठक ३ से ४॥ तक हुई।

जवाहरलालजी ने बापू से ४ से ५॥ तक बातें की।

३०-४-३६, वर्धा

बापू आज से सेगांव रहने गये। वहां जाकर उनकी व्यवस्था देख आया।

१-५-३६, वर्धा

डा० अंबेडकर व बालचंद हीराचंद बम्बई से आये। उन्हें मोटर से बापूजी के पास सेगांव ले गया। वहां ७-४५ से ९-३० तक बातचीत हुई। उन्होंने अपने विचार कहे। शाम को भी सेगांव गये। साथ में भोजन। डॉ० अम्बेडकर व बालचन्दभाई से बातचीत।

३-५-३६, वर्धा

मगनवाड़ी में प्रदर्शनी का उद्‌घाटन। पू० बापू का व जाजूजी का भाषण हुआ। बापू से थोड़ी देर बातचीत।

४-५-३६, वर्धा

सुबह ४ बजे मगनवाड़ी में प्रार्थना। बापू का मौन था। उनके साथ पोस्ट आफिस तक आया। वह सेगांव गये।

६-५-३६, पवनार

खादी-यात्रा का कार्य। विनोबा का सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन। बाद में पू० बापू का प्रवचन।

७-५-३६, वर्धा

खामगांव-निवासी चि० पुरुषोत्तम झुनझुनवाला के साथ चि० सीता की सगाई हुई। पूरी बातचीत हो जाने पर बापू के सामने निश्चित करके जाहिर की गई।

बापू ने ग्रामोद्योग संघ के सदस्यों के सामने भाषण दिया।

८-५-३६, वर्धा

दांतवाले डॉ० पाठक नागपुर से बापू के दांत के इलाज के लिए आये। बापू आज ग्रांड ट्रंक से बेंगलौर (नन्दी हिल) गये। मगनवाड़ी में आंधी बहुत आई।

१४-६-३६, वर्धा

बापू आज ग्रांड ट्रंक से मद्रास से आये।

किशोरलालभाई व बापूजी से कमल की सगाई के बारे में विचार-विनिमय।

मगनवाड़ी में प्रार्थना। बापू से थोड़ी चर्चा।

१६-६-३६, वर्धा

सुबह बापू बारिश में भी सेगांव गये। साथ में चि० कमलनयन, वालुंजकर व चिरंजीलाल भी गये।

२०-६-३६, वर्धा

सुबह ६ बजे पैदल सेगांव गया। मिस लीस्टर भी साथ थीं। वापस आते समय जोर का पानी बरसने लगा। खूब भीगे। ११॥ बजे घर पहुंचे।

२७-६-३६, वर्धा

बापू आज सेगांव से मगनवाड़ी रहने गये। मिलने गया। बापू से घूमते

समय भावी प्रोग्राम की चर्चा। मेरे अंदर निरुत्साह का कारण बतलाया। मगनवाड़ी में प्रार्थना।

२९-६-६, वर्धा

दोपहर को वर्किंग कमेटी का काम २॥ से ६ बजे तक हुआ। पू० बापूजी से थोड़ी देर लिखकर बातें हुईं।

३०-६-३६, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८-३० से १२ बजे तक हुई। दुःख व चिन्ताजनक स्थिति। मित्रों सहित बापू से मिला। शाम को वर्किंग कमेटी नहीं हो सकी। रात मे गैस्ट-हाउस में मित्रों के साथ देर तक बातचीत। अंत में रास्ता निकला। स्थिति सुधरी।

१-७-३६, वर्धा

जवाहरलालजी को घुमाने ले गया। पवनार, महिला-आश्रम वगैरा दिखाया। वापस लौटते समय उन्होने अपने मन का गुबार निकाला। उनको समझाया। वर्किंग कमेटी में साफ-साफ बातचीत; थोड़ी गरमा-गरमी हुई। बाद में वातावरण संतोषकारक व समझौते का हुआ। सुबह से ११। व दोपहर को १। से ४॥ तक वर्किंग कमेटी का काम होता रहा। बाद में पार्लमेंटरी कमेटी का काम हुआ।

३-७-३६, वर्धा

सरदार के साथ बापू के पास गया। गांधी-सेवा-संघ तथा अन्य बातें। गांधी-सेवा-संघ की बैठक ९॥ से १०॥। तक हुई। रात में ८ से ९ तक।

४-७-३६, वर्धा

भारतीय साहित्य सम्मेलन व हिन्दी-प्रचार के कार्य की सभा १ से ५ तक बापू के पास हुई। पहले व बाद में बंगले पर काम हुआ।

५-७-३६, वर्धा

श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार व रामकुमार केजडीवाल से चि० कमल व सावित्री की सगाई के बारे में खूब खुलासेवार विचार-विनिमय। उन्होंने कहा कि चि० सावित्री ने स्वयं व सब घरवालों ने भी कमल के साथ सम्बन्ध न करने का पूर्ण निश्चय कर लिया है। उनका आग्रह रहा कि

चार वर्ष तक विवाह न करने की शर्त भारी है, दिसम्बर १९३७ तक विवाह हो जाना चाहिए ।

पू० बापू, सरदार व राजेन्द्रबाबू से सब स्थिति कही । बापू ने कहा कि सावित्री व उसकी माता को मेरे पास भेज दो । मैं उनसे बात कर सगाई पक्की कर दूंगा ।

हिन्दी-प्रचार-कार्य की बैठक में । बापू के साथ महिला-आश्रम गया ।

१४-७-३६, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर सेगांव पैदल । चि० शांता साथ में । मर्यादा, कर्तव्य आदि पर उससे चर्चा ।

पू० बापूजी से महिला-मंडल वगैरा के बारे में बातचीत । पू० बा व बापू के लिए अलग झोंपड़ी की चर्चा ।

मीराबहन की झोंपड़ी देखी । वहां आराम किया । बाद में फलाहार । सुन्दर दृश्य देखा ।

२३-७-३६, वर्धा

सुबह सेगांव पैदल । राजकुमारी बहन, महादेवभाई, श्रीमन्, मोहन भी पैदल साथ में थे । जानकी गाड़ी में थी ।

चि० कमल की सगाई चि० सावित्री पोद्दार से होने के संबंध के बापूजी के नाम के लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री के पत्र उन्हें दिये । बापू ने सम्बन्ध पक्का करके कलकत्ता व चि० कमल को तार दिया । मैंने भी स्वीकृति-पत्र लिख भेजे ।

२८-७-३६, वर्धा

सेगांव बापूजी से मिलकर आये । गाड़ी में रामकृष्ण डालमिया साथ थे । उनकी पत्नी भी थी । उन्होंने बिहार के चुनाव में जो मदद करना कबूल किया था, उस बारे में तथा गांधी-सेवा-संघ की सहायता के संबंध में बापूजी से खुलासा बातचीत ।

४-८-३६, वर्धा

धर्मानन्द कौसाम्बी बम्बई से बापू से मिलने आये ।

साढ़े ग्यारह की गाड़ी से खान अब्दुल गफ़्फ़ार खां अलमोड़ा-जेल

से छूटकर मथुरा होते हुए आये। उन्हें लेने स्टेशन गया। खानसाहब के साथ सेगांव गया। वह पू० बापू से मिले। बातचीत।

तुकडोजी बुआ के भजन। राजकुमारी अमृतकौर व मीराबहन ने राखी बांधी।

७-८-३६, वर्धा

खानसाहब का बहुत आग्रह होने के कारण उनको लेकर दोपहर में सेगांव जाना पड़ा। पू० बापू से विनोद। पैदल घूमते हुए मीराबहन के वहां गये। तुकडोजी बुआ से थोड़ा विनोद। मीराबहन का स्वास्थ्य ठीक था। बापू से सलाह करके वर्धा-आश्रम से किसीको भेजने का निश्चय करना पड़ा।

९-८-३६, वर्धा-पवनार

अब्दुल गफ्फार खां को देखने डॉ० साहनी आये। खानसाहब आज सेगांव रहने गये।

१२-८-३६, वर्धा

वरोरा होकर पैदल सेगांव गया। मीराबहन की झोंपड़ी में आध घंटा ठहरकर सेगांव पहुंचा। भोजन वर्धा से तैयार होकर गया था, बापू के साथ बैठकर सभीने खाया। खानसाहब व तुकडोजी से बातचीत। आराम। तुकडोजी के भजन २॥ बजे शुरू हुए। तीन बजे तक वहां रहे।

१६-८-३६, वर्धा

श्री राजाजी मद्रास से आये। राजेन्द्रबाबू, राजाजी, महादेवभाई, चन्द्रशेखर के साथ सेगांव गया। रास्ते में मोटर बिगड़ गई। दो मील पैदल चले। बापू के साथ भोजन किया। अढ़ाई बजे वापस आये।

शाम को ग्रांड ट्रंक से जवाहरलालजी आये। स्टेशन पर राजाजी और राजेन्द्रबाबू ने बातें की। भोजन के बाद जवाहरलालजी, राजाजी, राजेन्द्र-बाबू के साथ देर तक बातचीत। राजाजी के रिटायर होने-संबंधी व अन्य बातें भी हुईं।

१७-८-३६, वर्धा

जवाहरलालजी को मारवाड़ी विद्यालय, हिन्दी शाखा व महिला-आश्रम दिखाया। वहां वह थोड़ा बोले भी। बाद में सेगांव गये।

राजेन्द्रबाबू व राजाजी से बातें। उन्हींके साथ भोजन व आराम। दोनों मोटर से सेगांव गये।

राजाजी से देर तक बातचीत—कांग्रेस, मानसिक स्थिति आदि के बारे में।

२६-८-३६, **वर्धा**

सरदार व खानसाहब सेगांव गये। सेगांव जाते समय मथुराबाबू व आश्रम से पद्मावती साथ हुई। पू० बापू से मोती के बारे में विशेष बातें। मोती से भी थोड़ी बातचीत।

२७-८-३६, **वर्धा**

बापू सेगांव से आये। उनके साथ सरदार व मृदुला। बापू के सभापतित्व में चरखा-संघ की महत्त्व की बैठक हूई।

२८-८-३६, **वर्धा**

चरखा-संघ की बैठक का कार्य ७ से १० तक पू० बापू की उपस्थिति में हुआ। काम पूरा हुआ।

गांधी-सेवा-संघ बैठक का कार्य २ से ४ तक व रात में ७।। से १० तक हुआ। तीन से पांच तक बापू हाजिर थे। कौंसिल-प्रवेश इत्यादि पर विचार-विनिमय हुआ।

३१-८-३६, **वर्धा**

बापू को १०५ डिग्री बुखार। चिंता।

१-९-३६, **वर्धा**

बापू के स्वास्थ्य की चिन्ता। सरदार, सिविल सर्जन डॉ० साहनी व डॉ० महोदय मोटर से देखने गये। मोटर रास्ते से नहीं जा सकी। ये लोग पैदल गये। गाड़ियां भेजीं। सरदार व महादेवभाई के प्रति क्रोध आया। वे बापू को हैरान करते हैं, ऐसी मेरी समझ हुई। पर कोई उपाय नहीं। आज बापू को ज्वर नहीं हुआ। मगनवाड़ी महादेवभाई के पास गया, सरदार साथ में।

२-९-३६, **वर्धा**

सुबह सेगांव बापू को देखने सरदार वगैरा गये। तीन गाड़ी गईं-आईं। एक अंग्रेज भी गये। पेरीबहन व नरगिस सेगांव गईं।

खानसाहब सेगांव से आये। बापू के स्वास्थ्य के बारे में उन्होंने बताया। उन्हींके साथ डाक्टर की रिपोर्ट भेजी। मीराबहन भी बीमार। अस्पताल में दाखिल हुई।

३-९-३६, वर्धा

चि० राधाकृष्ण बापू को लाने सेगांव गया। डॉ० महोदय, महादेव-भाई, कनु सेगांव से आये। आज रात-भर विचार आते रहे। सिविल सर्जन से बातें। अस्पताल में बापू के लिए कमरा ठीक किया। मीराबहन से बातें। बापू अस्पताल में १२॥ बजे भरती हुए। वहां जाकर व्यवस्था देखी।

४-९-३६, वर्धा

बापू को अस्पताल में देखने गया। उन्हें पूरा आराम मिले, इस बारे में झगड़ा हो गया। आवश्यक व्यवस्था आदि की। वहां मि० संजाना व डी० एस० पी० भी आये थे।

५-९-३६, वर्धा

सुबह अस्पताल में बापू से बातें। उन्होंने अपने सपने की थोड़ी बातें कहीं। मनोरंजक थीं। पर उनको ज्यादा बोलने से मना किया।

६-९-३६, वर्धा

पू० बापू ने हरेक को पच्चीस रु० मासिक की सहायता उनके मार्फत फंड में से १ सितंबर से भेजने को कहा। बाद में सेगांव से मलेरिया दूर करने के बारे में और टेकड़ी पर रहने का मकान बनाने की योजना के बारे में बातें कीं। बापू को उनकी वर्तमान स्थिति में अधिक बातचीत न करने को कहा।

७-९-३६, वर्धा

सुबह घूमते हुए महिला-आश्रम व अस्पताल बापू के पास गये। बरसात की झड़ी लगी थी।

सेगांव के गरीब किसानों व मजदूरों को कर्ज में अनाज देने की योजना चिरंजीलाल ने रखी। वह मंजूर की।

१२-९-३६, वर्धा

जल्दी उठे। बापू के साथ घूमे। आज बापू अस्पताल से वापस सेगांव गये।

१६-९-३६, वर्धा

सेगांव गया। खुर्शीदबेन व जयप्रकाश भी आये। बापू से जयप्रकाश की बातें हो गईं। वहीं पर सभीने भोजन किया।

बापू से बातें। खानसाहब के लड़के ग़नी के विषय में उन्होंने अपनी राय कही। खानसाहब के दौरे के बारे में फैसला हुआ कि अभी उसे स्थगित रखें। सरदार का व मेरा पत्र बापू को दिखलाया। उसपर विचार। बापू ने अपने विचार कहे। मेरा राजस्थान का दौरा, स्वास्थ्य, टेकड़ी पर झोंपड़ी आदि के बारे में चर्चा।

जे० जे० वकील का बंबई से टेलीफोन आया। बापू को ता० १८ सितंबर को १० बजे कष्ट है, ऐसा भविष्य बताया। चिंता।

१८-८-३६, वर्धा

बापू को करीब ९-४५ बजे उनके संबंध की भविष्यवाणी की बात अकेले मे बताई। विनोद व हँसी। उन्होंने अपने विचार कहे कि जून १९३७ तक मै निकाल सका तो फिर पांच-सात वर्ष निकल जाना स्वाभाविक है। बापू से भोजन के बाद ग़नी के संबध में तथा अन्य बातें।

२०-९-२६, वर्धा-सेगांव

सुबह सरदार व घनश्यामदास बिडला सेगांव गये और बापू से मिलकर आये। दोपहर को घनश्यामदास व सरदार के साथ सेगांव बापू के पास जाकर आया। सरदार व घनश्यामदास ने खूब आग्रह किया। मुझे व्यापार आदि करना चाहिए। बापू ने भी मदद करने को कहा। मन में विचार आते रहे। सरदार, घनश्यामदास से बातें होने के बाद राजेन्द्रबाबू के साथ एक बाजी शतरंज खेली।

२४-९-३६, वर्धा

आज वर्षा खूब ज्यादा आई। खानसाहब व लाली सेगांव से आये। राजेन्द्रबाबू को चक्कर आये। शाम को सेगांव गया। बापू से साधारण बातचीत।

२५-१०-३६, बनारस

बापू ने 'भारत-माता मन्दिर' का उद्घाटन किया।

सुबह ४ बजे प्रार्थना में बापूजी के साथ।

भारतमाता के मन्दिर में दो बजे से पांच बजे तक रहे। भीड़ अच्छी थी। प्रबन्ध साधारण था। समारंभ ठीक हुआ। वहीपर कई लोग मिल गए।

सेवा-उपवन में बापू तथा अन्य मित्रों से बातचीत।

३०-१०-३६, नदियाड

विठ्ठल कन्या-आश्रम में मनसुखभाई हिन्दू-छात्रालय की इमारत का मेरे हाथ से उद्‌घाटन हुआ। पू० बापूजी, खांसाहब, सरदार, बा वगैरा थे। थोड़े में मुझे जो कहना था, सो कहा। बापूजी मोटर से अहमदाबाद गये, खानसाहब भी।

९-११-३६, वर्धा

श्री एण्ड्रूज व कालिदास नाग आज आये। दोनों सेगांव जाकर आये।

१७-११-३६, वर्धा

जवाहरलालजी शाम को मेल से आये। स्नान-भोजन के बाद सेगांव। जवाहरलालजी महादेवभाई के साथ बापू से रात को मिलकर आये।

१७-११-३६, वर्धा

सेगांव दो बार जाना हुआ। सरदार, राजेन्द्रबाबू, व जवाहरलालजी साथ थे। खानसाहब व बापू वहां थे ही। जवाहरलालजी से साफ-साफ बातें हुईं।

२५-११-३६, वर्धा

राजेन्द्रबाबू से जवाहरलालजी के स्टेटमेंट के बारे में तथा सरदार व बम्बई के मित्रों का डर आदि के बारे में बातें। मथुरादास व बापू से भी बातें। १-३० बजे राजेन्द्रबाबू, जीवनलाल, मरियम और विजया के साथ सेगांव बापू से मिलने गया। बापू व जवाहरलालजी का स्टेटमेंट तथा बापू के विचार जाने। हम लोगों के स्टेटमेंट (मसविदा) पर विचार।

२७-११-३६, वर्धा

मगनवाड़ी के ट्रस्ट व दान-पत्र आज रजिस्टर्ड किये। श्री वैकुंठ मेहता साथ थे। वहां देर लगी।

२-१२-३६, वर्धा-नागपुर

भोजन-बाद रजिस्ट्रार-कोर्ट गये, गांधी-सेवा-संघ का मार्टगेज रद्द करने पर ही अहमदाबाद का डेपूटेशन मेल से आया। श्री कस्तूरभाई साखरभाई,

नारायणदास व शंकरलाल, गुलजारीलाल, खांडूभाई वगैरा आये। बापू ने भी थाना के कागजात पर कोर्ट में जाकर सही की। मोटर ले जाकर बापू को चौकी से कोर्ट तक लाये। दिल्ली-डेरी का खुलासा।

५-१२-३६, वर्धा

श्री कस्तूरभाई स्टेशन पर मिले। बातचीत की, पर कोई परिणाम नहीं आया। श्री मुंशी बंबई से आये व बापू से सेगांव मिलकर आये। ट्रस्ट, मीराबहन, मोटर-ऐक्सीडेंट आदि के बारे में देर तक बातचीत।

अगाथा हैरिसन ग्रांड ट्रंक से आई। सी० एफ० ऐण्ड्रूज रात को ग्रांड ट्रंक से आये।

६-१२-३६, वर्धा

सेगांव। बापू से बातें—बम्बई हिन्दी-प्रचार, इन्दौर के रुपये, हिन्दी-प्रचार-कार्य व स्थान, जयदयाल का पत्र, अंडे, जापान-यात्रा, बापू को जाना पसन्द, खानसाहब आदि।

बापू ता० २० को सुबह फैजपुर पहुंचेंगे।

२३-१२-३६, फैजपुर

बापू से बातें, मेरा कांग्रेस का खजांची न रहने के बारे में। जवाहरलालजी को मैंने वर्किंग कमेटी में अपने न रहने का कारण समझाकर कहा। एम० एन० राय व बापू की बातचीत समाधानकारक हुई। सुख मिला।

बापू से सुव्रतादेवी व मदन रूइया के बारे में वार्ता।

वर्किंग कमेटी ३ से ५॥ तक। जवाहरलालजी को मेरे वर्किंग कमेटी में न रहने का कारण समझाकर बताया।

२४-१२-३६, फैजपुर

एम० एन० राय की बापू से बंगाल-रेलवे के संबंध में बातें। बापू ने अपने विचार कहे। आज की चर्चा से एम० एन० राय के विचारों में ज्यादा गहराई नहीं मालूम हुई।

वर्किंग कमेटी की बैठक ८ से ११ व २ से ६ तक हुई।

२५-१२-३६, फैजपुर

खादी-प्रदर्शनी का उद्घाटन। बापू का भाषण। बापू से गो-सेवा-संघ-

संबंधी बातें। कांग्रेस कमेटी की बैठक ९-३० से ११-३० । सब्जेक्ट कमेटी २ से ६ तक हुई।

२६-१२-३६, फैजपुर

बापूजी से व राजकुमारीजी से बातें ।

वर्किंग कमेटी की बैठक ८ से ११ तक तथा सब्जेक्ट कमेटी ३ से ८॥ तक हुई। कोरोनेशन-बहिष्कार के प्रस्ताव पर ४९-७९ मत आये ।

२९-१२-३५, फैजपुर

सरदार व राजेन्द्रबाबू जबरदस्ती से कैम्प में ले गए। वर्किंग कमेटी की चर्चा। बिना इच्छा के उसमें भाग लेना पड़ा व जवाहरलालजी, सरदार व राजेन्द्रबाबू आदि के आग्रह के कारण एक बार वर्किंग कमेटी में नाम घोषित करने की इजाजत देनी पड़ी।

बापू की पार्टी व जानकीदेवी वर्धा गये। उनकी व्यवस्था देखी।

डायरी के अंश

१९३७

५-१-३७, वर्धा

डॉ० जाकिर हुसैन व खानसाहब के साथ सेगांव हो आया। बापू का विचार पूना व त्रावनकोर जाने का मालूम हुआ।

६-१-३७, वर्धा

ग्रांड ट्रंक से वर्धा। बापूजी को मगनवाड़ी पहुंचाया। वह आज पूना तथा त्रावनकोर की तरफ गये।

१९-१-३७, पूना-बंबई

प्रेमाबहन कंटक आईं। उससे बातचीत। उन्होंने बापू से जो बातचीत हुई, वह सविस्तर कही। बापू के विचार जाने। प्रेमाबहन ने अपनी स्थिति समझाई। ग्राम-सेवा-कार्य की जानकारी दी।

२६-१-३७, वर्धा

सेगांव जाते हुए रास्ते में काका कालेलकर के साथ बातचीत। बापू से स्वतंत्रता-दिवस के बारे में बातें। खानसाहब ने पेशावर के मीठे नीबू दिये।

५-२-३७, वर्धा

सेगांव गया। बापूजी से बातें। जवाहरलालजी का पत्र, मालवीयजी के संबंध में। विचार-विनिमय। दिल्ली-डेरी के बारे में स्वीकृति। वहीं बालकोबा से मिला। प्रार्थना में शामिल हुआ।

१७-२-३७, वर्धा

सेगांव से नालवाड़ी तक मोटर में आते हुए बापू से कार्यकर्ता-योजना के संबंध में बातचीत। जाजूजी तथा सम्मेलन के सभापतित्व आदि के विषय में भी चर्चा।

१८-२-३७, वर्धा

सेगांव गया। पू० बापूजी से सम्मेलन-सभापति, कांग्रेस-सभापति,

जाजूजी, ग्राम-उद्योग-कार्य, मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरी आदि के बारे मे बातें। फिर मिलकर विस्तार से बातें करना है।

१९-२-३७, वर्धा

राजेन्द्रबाबू के साथ सेगांव गया। बापू व राजकुमारीजी से बातें।

२१-२-३७, वर्धा

सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना व गीता-पाठ के बाद बापू के पास सेगांव गया। ग्राम-उद्योग-संघ के विद्यार्थियों का प्रवचन सुना। बाद में बापू के साथ घूमते समय मन.स्थिति, मन की कमजोरी, ब्रह्मचर्य आदि के संबंध में साफ बातें उदाहरण देकर कही। बापू ने स्थिति समझी व उपाय भी बतलाया। इस बारे में फिर और बातें होंगी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन और कांग्रेस, दोनों के सभापति पद से अलग हट जाने के बारे में बातें हुईं। बापू ने पोलक को जो खत दिया, वह समझाया। ठीक से समझ में नही आया।

२६-२-३७, वर्धा

जवाहरलालजी बापू से मिलने सेगांव गये।

२७-२-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ९ से ११ तक, दोपहर १॥ से ५ तक व रात्रि में ८ से १० तक हुई। पू० बापूजी सुबह ९ से शाम को ५ तक रहे।

२८-२-३७, वर्धा

पू० बापूजी सुबह ८-३० से शाम के ५-१५ तक वर्किंग कमेटी में रहे। उन्होंने आफिस लेने के बारे में अपनी राय व शर्ते आदि बताईं। काफी विचार-विनिमय हुआ।

१-३-३७, वर्धा

जवाहरलालजी की गिरफ्तारी के बारे में पूछताछ करने के लिए रायटर का टेलीफोन आया। मन में चिंता हुई। बापूजी, मौलाना आजाद जवाहरलाल, सरदार व मैं मिलकर करीब शाम को ६ बजे से ८ तक बात-चीत करते रहे। विचारों की सफाई व खुलासा हुआ। गांधी-सेवा-संघ की बैठक २ से ४-१५ तक हुई।

२-३-३७, वर्धा

नालवाड़ी टेनरी का समारंभ। बालुंजकर की रिपोर्ट मननीय थी। गो-रक्षा व हरिजन-सेवा का टेनरी से जो संबंध है, उस बारे में भी बापूजी ने समझाया। बापू के साथ सेगांव गया। वही भोजन, भ्रमण, प्रार्थना व रामायण-पाठ में शामिल हुआ।

१४-३-३७, वर्धा

ग्रांड ट्रंक से बापूजी व राजाजी के साथ देहली रवाना। रास्ते में ही सम्मेलन के बारे में विचार-विनिमय। भाषण के बारे में बापूजी व राजाजी से परामर्श। बापू ने १२-१५ बजे मौन लिया।

१६-३-३७, दिल्ली

प्रार्थना, गीताई का पाठ। बापू से बातें। जवाहरलाल को बापू का दुःख कहा। वर्किंग कमेटी ९ से १२ व शाम को २ से ६ तक हुई। आखिर में पदग्रहणवाला मुख्य प्रस्ताव ठीक तौर से मंजूर हुआ।

१७-३-३७, दिल्ली

सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी के साथ हरिजन-कॉलोनी पहुंचे। उन्हें बापू व अन्यों से मिलाया।

प्रार्थना में सुचेता ने भजन गाया—"अन्तर मम विकसित करो, अन्तरतर हे!" सुन्दर था।

१८-३-३७, दिल्ली

वर्किंग कमेटी ९ से १२ तक हुई। गंभीर चर्चा। जवाहरलाल की मानसिक स्थिति के कारण समाधान हुआ।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक २ से रात के ९॥ बजे तक हुई। पद-ग्रहणवाला मुख्य प्रस्ताव स्वीकार हुआ। श्री जयप्रकाश के संशोधन को, जिसके पक्ष में पू० मालवीयजी, टंडनजी, व विजयालक्ष्मी पंडित थे, ७-८ वोट मिले। मूल प्रस्ताव के पक्ष में १२७ व विपक्ष में ७० आये। ५७ के बहुमत से मुख्य प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव के पक्ष में सरदार का भाषण बहुत सुन्दर हुआ। भाषा की दृष्टि से थोड़े सुधार की आवश्यकता थी।

१९-३-३७, दिल्ली

जलियांवाला बाग-स्मारक की बैठक हरिजन-कॉलोनी में बापूजी के

सभापतित्व में हुई। दो घंटे से ज्यादा बैठक का काम चला। नया जीवन पैदा करने के बारे में विचार-विनिमय। ट्रस्टी-मण्डल में फंसना पड़ा।

कन्वेंशन में जवाहरलाल का भाषण पौने दो घंटे से ज्यादा हुआ। उसमें जहर तथा क्रोध था। भाषण अच्छा नहीं हुआ। बापू से पौने दो घंटे तक विचार-विनिमय।

२०-३-३७, दिल्ली

वर्किंग कमेटी ११ से १ व रात में ८ से ११॥ बजे तक हुई। पं० जवाहरलाल ने अपना खुलासा पेश किया व अन्तःकरण से भूल स्वीकार की। माफी भी मांगी। उसका मन पर अच्छा असर हुआ। उनके प्रति आदर व भक्ति बढ़ी।

जवाहरलाल से वर्किंग कमेटी के पहले व रात में ११॥ से १२ तक दिल खोलकर बातें हुईं। क्रोध प्रेम में परिवर्तित हुआ। आदर बढ़ा।

२३-३-३७, वर्धा

शाम की गाड़ी से पू० बापूजी, सरदार, भूलाभाई आदि आये। बापूजी की अध्यक्षता में चरखा-संघ की बैठक का कार्य हुआ।

२६-३-३७, मद्रास

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागत-सभा में।

बापू के साथ अपने भाषण के बारे में थोड़ी चर्चा[1]। अंग्रेजी में थोड़ा सुधार किया।

द० भा० हिंदी प्रचार सभा का कन्वोकेशन-समारंभ। बापू का भाषण उत्तम हुआ। टंडनजी का भाषण भी मननीय था। थोड़ा लंबा हो गया था।

२७-३-३७, मद्रास

भारतीय-हिन्दी-परिषद में बापूजी व काकासाहब के भाषण हुए।

२८-३-३७, मद्रास

दोपहर को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य प्रारंभ हुआ। बापू का राजाजी आदि दक्षिण प्रान्त के मित्रों से खूब विचार-विनिमय। राजाजी ने कांग्रेस-संबंधी प्रस्ताव रखा। टी० प्रकाशम्, सांबमूर्ति, कालेश्वरराव, याकूब हुसेन ने प्रस्ताव पर अपने विचार प्रकट किये। अच्छा वातावरण बना।

---

[1] **मद्रास में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति जमनालालजी थे।**

भारतीय परिषद्। बापूजी ने प्रस्ताव का परिचय दिया। हिन्दी-हिन्दुस्तानी के भेद पर खुलासा किया। बाद में मुझे सभापति के नाते काम करना पड़ा।

३०-३-३७, मद्रास

टंडनजी व पू० बापूजी से बातें। वे आज ग्रांड ट्रंक से वर्धा के लिए रवाना।

२-४-३७, वर्धा

बापूजी से सेगांव मिलने गया। खानसाहब को वहां छोड़ा और नन्दलाल बोस को वहां से साथ लाया। नन्दलाल बोस को पवनार का स्थान व समाधि की जगह दिखाई। बापू ने समाधि के स्थान के बारे में अपनी इच्छा बताई।

१५-४-३७, पूना

मेल से हुबली के लिए थर्ड में रवाना। गाड़ी में भीड़ थी। पूना में १०॥ बजे तक बापू के साथ बातें।

१६-४-३७, हुबली

रात में गाड़ी में भीड़ भी थी व रास्ते में जगह-जगह बापूजी का जय-जयकार होता रहा। स्टेशन से सवा-डेढ़ मील दूर हुबली गांव के पास कैम्प में पैदल आये। बापू से बातें।

१२-३० से १ तक चरखा-यज्ञ। बापू भी कातने आये थे।

१। से ३ बजे तक गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी की बैठक। ४ बजे से गांधी-सेवा-संघ की कान्फ्रेंस शुरू हुई।

१७-४-३७, हुबली

हिन्दी-प्रचार सभा की बैठक बापूजी के डेरे पर हुई।

हुबली शहर में सवेरे ६-३० से ९ तक मजदूरी का काम किया। सुख व आनन्द मिला।

१८-४-३७, हुबली

शाम को गांधी-सेवा-संघ का कार्य। बापू का खुलासा तथा विचार-विनिमय। सभापति के नाते किशोरलालभाई की कठिनाई। कौंसिल-प्रवेश आदि की चर्चा। आर्यनायकम् के बारे में बातें।

१९-४-३७, हुबली

किशोरलालभाई के मन में सभापति की हैसियत से गो-सेवा-संघ का काम करने में कठिनाई । विचार-विनिमय ।

२०-४-३७, हुबली

गांधी-सेवा-संघ कान्फ्रेंस ७ से ११ तक रही । उसके पहले बापू के पास थोड़ी देर किशोरलालभाई व बापू की बातचीत सुनी । नाथजी भी वहां थे । आखिर में बापू ने किशोरलालभाई को सभापित बने रहने की आज्ञा दी । बापूजी ने आज सभापति का काम किया। बड़ी देर तक समझाते रहे । गो-सेवा का महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुआ ।

२२-४-३७, पूना-जुहू

रेल में बापू से प्रयाग के प्रोग्राम की चर्चा ।

२६-४-३७, प्रयाग

सुबह ९ बजे इलाहाबाद पहुंचे । बापू, चि० इन्दिरा तथा रणजीत पंडित के साथ आनन्द-भवन गये । जवाहरलालजी, मम्मा, स्वरूप आदि से मिलना हुआ । वर्किंग कमेटी २-३० से ५-३० तक; बाद में प्रार्थना तक । रात में भी ९-३० तक बैठक होती रही । बापू को कई पत्र दिखाये । बापू ने भी एण्ड्रूज, सर पी० सी० राय, घनश्यामदास बिड़ला तथा दिल्ली-डेरी के बारे के पत्र आदि दिखाये ।

२७-४-३७, इलाहाबाद

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११॥ तक, दोपहर में २ से ५ तथा शाम को ५-४५ से ७-१५ और रात में ८ से ९-१५ तक होती रही। कौंसिल डेडलाक, मि० बटलर तथा लार्ड लोदियन आदि के वक्तव्यों पर विचार-विनिमय। प्रान्तों के नेताओं के विचार—खासकर राजाजी, पंतजी । बापू के मसविदे पर विचार-विनिमय । जवाहरलालजी व सरदार से आगामी कांग्रेस के बारे में विचार-विनिमय । जवाहरलालजी से रात में देर तक बातें ।

२८-४-३७, इलाहाबाद

बापू के साथ घूमने गया । जवाहरलालजी से जो बातें हुई, वे उन्हें बताईं। अध्यक्ष-पद के लिए सुभाषबाबू की इच्छा बहुत ज्यादा होने के कारण उन्हें ही अध्यक्ष बनाने का विचार ठहरा । वर्किंग कमेटी के पहले

हिन्दी-प्रचार के बारे में बापूजी व टंडनजी से बातचीत; खासकर भ्रमण के बारे में।

१-५-३७, वर्धा

बापूजी व राजाजी प्रयाग से आये। बापूजी ने मेहताबबाबू, डॉ० काटजू, सुभाषबाबू, कांग्रेस-प्रेसिडेण्ट आदि के बारे में बाते की।

९-५-३७, वर्धा

सेगांव में बापू से देर तक बातें। जेटलैंड का भाषण, किशोरलालभाई का पत्र, कांग्रेस के खजांची-पद से मेरा इस्तीफ़ा आदि के बारे में बापू से बातें। बापू ने अपने विचार बताये।

बापू सेगांव से आये। बंगले पर ही प्रार्थना हुई। भजन व रामायण-पाठ हुआ। बापूजी ऐक्सप्रेस से तीथल के लिए रवाना हुए।

११-६-३७, वर्धा

पू० बापूजी श्री कैलनबेक के साथ ४।। बजे की पैसेंजर से आये। बंगले पर गरम पानी, नीबू वगैरा लेकर पैदल उनके साथ बालकोबा को देखते हुए सेगांव गये।

१२-६-३७, वर्धा

मीराबेन व महादेवभाई के साथ सेगांव गया। बापू के साथ सेगांव गांव में गया। वहां सभा हुई। उसमें बापू बोले। उसका मराठी-भाषांतर किया गया।

१६-६-३७, वर्धा

श्री केदार व बडकश के साथ सेगांव। बापू से बातें। 'सावधान'-केस का हाल कहा। 'म्युचुअल बेनिफिट सोसायटी', बारलिंगे का व्यवहार, विधवा-सवाल आदि विषयों पर चर्चा।

२०-६-३७, वर्धा

डॉ० खरे ने बापूजी से मिलकर जो स्थिति थी, उन्हें साफ-साफ कही। मन में जो था, वह समझाकर कहा।

२२-६-३७, वर्धा

जाजूजी, किशोरलालभाई व गोमतीबहन के साथ सेगांव गया। बापू से वर्धा में छापाखाना खोलने के बारे में बातें। पूना-दिल्ली से भाव मांगना।

मदालसा के संबंध के बारे में बापूजी ने, जाजूजी ने व किशोरलालभाई ने भी श्रीमन् को ही सब तरह से ठीक समझा। गांधी-सेवा-संघ की रकम रोकने व ब्याज उपजाने के बारे में भी विचार-विनिमय हुआ।

असोसियेटेड प्रेसवाले श्री भारतन् वाइसराय का भाषण लेकर आये। पढ़कर सुनाया। लम्बा था व नरम भी था।

६-७-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११॥ बजे व शाम को १-३० से ७ तक तथा रात में ८॥ से १० तक हुई। पद-ग्रहण करने, न करने के बारे में चर्चा व विचार-विनिमय। बापू के मसविदे पर विचार हुआ। जवाहरलालजी भी दूसरा मसविदा बनावेंगे।

७-७-३७, वर्धा

सुबह हिन्दी-प्रचार सभा की ओर से पू० बापूजी के हाथ से प्रचार-विद्यालय खोला गया। बापू, राजेन्द्रबाबू व काकासाहब बोले। श्री पदमपत सिंहानिया व मेरी सहायता की बापू ने घोषणा की।

वर्किंग कमेटी ८ से १२ तथा २ से ९ तक हुई। जवाहरलालजी ने अपनी स्थिति कही। आखिर में बापू व जवाहरलालजी दोनों का मिला हुआ प्रस्ताव मंजूर हुआ। नरीमान व वल्लभभाई-प्रकरण तथा खरे के व्यवहार के बारे में भी उन्हीके सामने थोड़े में सब स्थिति बताई। पूनमचन्द-प्रकरण तथा सोनक आदि के बारे में वर्किंग कमेटी के सामने बात आई। मैं त्यागपत्र क्यों देना चाहता हूं, यह भी कहा। देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

९-७-३७, वर्धा

सेगांव गया। हिन्दी-प्रचार सभा का कार्य पू० बापूजी की उपस्थिति में पूरा हुआ। टंडनजी हाजिर थे। टंडनजी रात को प्रयाग गये।

११-७-३७, वर्धा

मदालसा के विवाह की तैयारी—६-१५ बजे दूकान पर (गांधी-चौक) पहुंचे। सात बजे से विधि शुरू हुई। पू० बापूजी व विनोबाजी की उपस्थिति में विवाह संपन्न हुआ। ठीक समुदाय उपस्थित था।

२१-७-३७, **वर्धा**

मौलाना व मैं बैलगाड़ी से सेगांव गये। बरसात खूब जोर की हो रही थी। रास्ते में गाड़ी का चाक निकल गया। पहुंचने में देर हुई। वहां बापू से मौलाना की व मेरी बातचीत। बापू कुछ थके हुए मालूम हुए। बापू से किशोरलालभाई व पंडितजी के पत्रों पर विचार।

वर्धा में मौलाना से अच्छी तरह बातें हुईं।

३-८-३७, **बनारस**

प्रयाग में जवाहरलालजी मिले। उन्होंने बापू के नाम पत्र व सन्देश दिया। कृपलानी दिल्ली तक साथ रहे। खाना साथ हुआ व अन्य राजनैतिक बातें भी।

४-८-३७, **दिल्ली**

दिल्ली पहुंचे। हरिजन-कॉलोनी जाकर बापू से बातें। बापू ११।। से १ बजे तक वाइसराय से मिले। शाम ५-३५ की ग्रांड ट्रंक से बापूजी के साथ थर्ड क्लास में वर्धा रवाना। बापू ने वाइसराय से जो बातें हुईं व उनपर जो असर हुआ, वह बताया। सरदार-नरीमन-प्रकरण पर भी ठीक चर्चा। मैंने दूसरा पक्ष लेकर जो कहना था, सो कहा।

५-८-३७, **नागपुर-वर्धा**

बापूजी से सुबह व शाम खुलासेवार ठीक बातचीत हुई। विषय—मदालसा, उमा की सगाई, डॉ० बतरा व उनकी पत्नी के लिए सेगांव में दो छोटे घर बनाना, विनोबा, सीकर या सेगांव, हरिहर शर्मा, पारनेरकर, सावित्री व विदेशी वस्त्र-प्रयोग, कार्यकर्ताओं का अभाव, आश्रम के नियमों का परिणाम, मनुष्य की कमजोरी, बापू का भावी प्रोग्राम आदि।

शाम को वर्धा पहुंचे। बरसात हो रही थी। बापू बंगले पर थोड़ी देर ठहरे, बाद में सेगांव गये।

७-८-३७, **वर्धा**

बापूजी व विनोबा के पारनेरकर तथा रामेश्वरदास के बारे में पत्र। बाद में बापू के नाम पत्र लिखकर सेगांव भेजे।

१०-८-३७, **वर्धा**

नागपुर से शिक्षा-मंत्री श्री रविशंकर शुक्ल बापूजी से मिलने आये। शिक्षण-संबंधी बातचीत।

डॉ० खरे व पटवर्धन नागपुर से खासतौर से मुझसे मिलने आये। डॉ० खरे ने कहा कि मैंने जो पत्र लिखा है, उसे मैं वापस ले लूं। उन्होंने अपना दुःख प्रकट किया। क्षमा आदि की बातें कीं और कहा कि प्रान्त की जिम्मेदारी मुझे ले लेनी चाहिए आदि। बहुत देर तक अपने विचार का उन्होंने खुलासा किया। मैंने भी अपना दुःख व दर्द कहा।

१४-८-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी ९ से ११॥ व शाम को १॥ से ६॥ तक हुई। बापू भी हाजिर थे।

१७-८-३७, वर्धा

बापू साढ़े सात बजे आये। सिन्ध-योजना के संबंध में डॉ० चौइथराम से बातें, खानसाहब से भी बातें।

वर्किंग कमेटी का काम सुबह ८ से ११॥ तक व २ से ६॥ तक हुआ। बापू ५ बजे तक हाजिर थे।

१८-८-३७, वर्धा

बापू आये। उनसे शंकरराव देव की सरदार-नरीमन-प्रकरण के बारे में मेरे सामने बातें हुईं। बाद में बापू ने सरदार से व मुझसे नरीमन-प्रकरण के संबंध में बातें की। सरदार को बहुत चोट पहुंची। दुःख हुआ। रात को दो-ढाई घंटे उनके पास देव के साथ बातचीत।

१९-८-३७, वर्धा

गंगाधरराव देशपांडे व स्वामी आनन्द का लिखा पत्र तथा उनको लिखा पत्र दोनों बापूजी को देने के लिए सरदार वल्लभभाई को दिये।

सेगांव में बापू से बातें। सरदार बम्बई गये।

२१-८-३७, वर्धा

डॉ० गिल्डर व गुलजारीलाल नंदा बम्बई से आये। बापू का ब्लडप्रेशर ज्यादा हो गया, २०० के करीब। चिन्ता हुई। डाक्टर व बापू से विचार-विनिमय। डॉ० गिल्डर ने एक छोटा-सा वक्तव्य दिया।

२७-८-३७, वर्धा

बापूजी से हँसी-विनोद की बातें। उन्होंने अंगूर खाना स्वीकार कर लिया। पूना व बंबई जाने का प्रोग्राम बताया।

५-९-३७, वर्धा

पैदल सेगांव गया। बरसात शुरू हो गई। मदालसा, श्रीमन्, काका-साहब व नाना आठवले साथ थे। बापू खूब थके हुए मालूम हुए। ब्लडप्रेशर तो १६५-१०५ था, नाड़ी भी ठीक थी; फिर भी थकावट खूब थी।

८-९-३७, वर्धा

महादेवभाई ने सेगांव की चिन्ता दूर की। उन्होंने अच्छी रिपोर्ट दी है।

९-९-३७, वर्धा

जवाहरलालजी व इंदिरा के साथ नाश्ता किया। सुबह ७॥ बजे मोटर से सेगांव गये। २-४५ बजे तक वहीं रहे। बापू कमजोर मालूम दिये। वहां का वातावरण ठीक करने के प्रयत्न।

प्यारेलाल का आज सातवां उपवास था। उससे देर तक बातें करके उपवास छुड़वाया। नानावटी को मैनेजर मुकर्रर किया। बापू से व अन्य लोगों से भी बातचीत।

जवाहरलालजी व इन्दु वापस आते समय थोड़ी दूर बैलगाड़ी में आये। घर पर चाट-पार्टी की। कुछ और मित्र भी आये थे। बिहार का फैसला उन्हें दिखाया। दोनों को ठीक नहीं मालूम हुआ। जवाहरलालजी व इन्दु को मगनवाड़ी दिखाते हुए स्टेशन पहुंचे। वहां से वे दोनों मेल से बम्बई गये, थर्ड क्लास में।

१५-९-३७, पूना

सर मडगांवकर मिलने आये। उनका बापूजी से मिलने का प्रोग्राम बनाया।

राधाकृष्ण व रीता का संबंध टूटा। इस संबंध में उन्हें खूब समझाया, हिम्मत व उत्साह दिलाया। उन्हें बापू के पत्र पढ़ाये।

१६-९-३७, वर्धा

वर्धा पहुंचा। महादेवभाई ने स्टेशन पर बापू के स्वास्थ्य की अच्छी खबर सुनाई। शंकरलाल बैंकर बापू के पास सेगांव जाकर आये।

१७-९-३७, वर्धा

चरखा-संघ की बैठक ८ से ११। तक व दोपहर में १ से २ तक। ३ से ५ तक चरखा-संघ व ग्रामोद्योग-संघ दोनों की सम्मिलित सभा। बापू सेगांव

से आये। जिन प्रान्तों में कांग्रेस मंत्रि-मंडल है, वहां किस प्रकार रचनात्मक कार्य किया जाय, इस बारे में अपने विचार बताये। जवाबदारी भी बतलाई। वह ३-१५ बजे वापस सेगांव गये।

१९-९-३७, वर्धा

लक्ष्मीदास आसर के साथ बापूजी के पास सेगांव गया। गांधी-सेवा-संघ, शिक्षण-सभा व चरखा-संघ के बारे में थोड़ी बातें।

२२-९-३७, वर्धा

मुझे नागपुर प्रांतिक कांग्रेस कमेटी का सभापति सर्वानुमति से चुना गया, यह सूचना मिली।

बापू से बातें। मुझे नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी का सभापति बनाया गया, यह बापू को बताया। बापू ने सरकार के साथ संघर्ष की तैयारी रखने को कहा, शिक्षण समग्र दृष्टि से हो, क्रांतिकारी लोगों की व्यवस्था, हमीदा का प्रश्न—आदि विषयों की चर्चा हुई।

२३-९-३७, वर्धा

सेगांव गया। बापू से देर तक विचार-विनियम। शंकरलाल बेंकर साथ में थे।

२-१०-३७, वर्धा

तारीख के हिसाब से आज बापू-जन्मदिन। बापूजी को ६७ वर्ष पूरे हुए और ६८ वां चालू हुआ। सेगांव गया। बापूजी, लीलावती आसर को लेकर सेगांव से अस्पताल आये। लीलावती का टांसिल का आपरेशन हुआ। बापूजी साढ़े चार बजे तक अस्पताल में रहे। बाद में उन्हें सेगांव छोड़कर आया। आते व जाते समय मोटर में बातचीत। नवभारत विद्यालय में बापू के जन्मदिन-निमित्त विनोबा का भाषण हुआ।

१९-१०-३७, वर्धा

सेगांव गया। बापू थके हुए लगे। उनका मौन था। उनके प्रोग्राम आदि के संबंध में उनसे बातें कीं।

२४-१०-३७, वर्धा

नार्मल-स्कूल की प्रदर्शनी देखी। बापूजी भी आये थे। शिक्षण-समिति की पहली बैठक बापूजी की उपस्थिति में हुई। बापूजी ने कार्य-पद्धति समझाई।

२५-१०-३७, वर्धा

नागपुर-मेल से थर्ड में कलकत्ता रवाना हुए। बापूजी तथा सरदार वगैरा भी इसी गाड़ी से चले। रास्ते में खूब भीड़ रही, स्टेशनों पर भी। आराम कम मिला। सिर में चोट आ गई। बिलासपुर में दर्वाजा नहीं खोलने देने के कारण क्रोध भी आया।

२६-१०-३७, कलकत्ता

खडगपुर में उठे, निवृत्त हुए। प्रार्थना आदि। उमा की सगाई के बारे में बापू से चर्चा। वल्लभभाई के साथ का मतभेद, सुशीला, प्यारेलाल, बापू के स्वास्थ्य व आराम तथा भावी प्रोग्राम की चर्चा। बापूजी को स्टेशन से सुभाष व शरद बोस अपने घर ले गए।

वर्किंग कमेटी १-३० बजे शरद बोस के घर पर हुई।

२७-१०-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८-३० से ११-३० और २ से ७-३०। श्री खेर व जवाहरलाल के विवाद से दुःख हुआ। खेर की थोड़ी गलती थी, इस कारण जवाहरलाल को रोक नहीं सका, परन्तु जवाहरलाल का व्यवहार भी ठीक नहीं था।

२८-१०-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८-३० से ११-३० और २ से ५ तक हुई। आज मौलाना आजाद व जवाहरलाल पर क्रोध आया। जो कहना था, सो साफ तौर से कहा। जवाहरलाल का व्यवहार मिनिस्टरों के साथ असभ्यता का था व उनकी हिदायतें वर्किंग कमेटी के बहुमत की नहीं थीं।

३१-१०-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी में ५ से ८ तक। रात में बापू से कहकर वर्किंग कमेटी से अपने त्यागपत्र का मसविदा बनाया। मित्रों को दिखाया। ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी में भी एक घंटा गया—२ से ३ तक।

१-११-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८-३० से ११-३० और १२-३० से ५ बजे तक हुई। गरमागरम चर्चा, विचार-विनिमय। मैंने वर्किंग कमेटी में नहीं रहने का

निश्चय रखा। नागपुर-मेल से वर्धा रवाना। बापू का ब्लडप्रेशर खूब बढ़ गया; स्वास्थ्य चिंताजनक। बापू रवाना नहीं हो सके।

१७-११-३७, वर्धा

शाम को सेगांव गया। वहां बापू के रहने आदि की व्यवस्था देखी। भोजन वहीं किया और रात को वहीं सोया।

१८-११-३७, वर्धा

बापू कलकत्ता से मेल से आये। डाक्टर ने देखा। बापू के साथ सेगांव गया। बापू वहां थोड़ा बोले। उनकी व्यवस्था की।

'गांधी-सेवा-संघ' की बैठक का कार्य हुआ। महत्त्वपूर्ण बैठक थी। ठीक विचार-विनिमय हुआ। सरदार, गंगाधरराव, जयरामदास, कृपलानी, शंकरराव देव, प्रफुल्लबाबू आदि हाजिर थे।

१९-११-३७, वर्धा

सुबह उठकर बापू के साथ पैदल डेढ़ मील तक घूमना हुआ। बापू को देखने डाक्टर लोग आये।

महादेवभाई से बंगाल की हालत समझी। विचार-विनिमय।

बापू के पास जल्दी गया। गांधी-सेवा-संघ की बैठक में विचार-विनिमय। रात सेगांव में रहा। प्रार्थना।

२०-११-३७, वर्धा

सुबह ४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लडप्रेशर १९४-११४ हो गया। इससे थोड़ी चिन्ता हो गई। सेगांव गया। बापू का स्वास्थ्य तथा उनकी व्यवस्था आदि देखी।

२१-११-३७, सेगांव-वर्धा

प्रातः ४ बजे उठा। बाद में पैदल वर्धा के लिए रवाना। रास्ते में खेत वगैरा देखे।

बंबई से डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज मेहता बापू को देखने आये। स्टेशन पर बातचीत।

२२-११-३७ नागपुर-वर्धा

बापू का ब्लड-प्रेशर २१८-११८ हो गया। बापू को देखने डॉ० जीवराज व महादेवभाई के साथ सेगांव गया। ब्लड प्रेशर बहुत ज्यादा था। उससे चिन्ता बढ़ गई।

डॉ० जीवराज से बापू के स्वास्थ्य के बारे में देर तक बातचीत। प्रार्थना के बाद बापू ने सेगांव से और कहीं न जाने के बारे में अपने विचार कहे।

२३-११-३७, सेगांव-वर्धा

पू० बापू से बातें व विनोद। थोड़ा घूमना। ब्लड-प्रेशर १९४ व ११२ हो गया। चेहरा भी ठीक मालूम हुआ।

२४-११-३७, वर्धा

पांच बजे के करीब उठा। बापू का ब्लड-प्रेशर १९४-११२। बापू के साथ घनश्यामदास बिड़ला और महादेवभाई की कलकत्ते के बारे में बातें। नजरबंदों के विचार सुने। शरदबाबू को पत्र दिया। दिन-भर सेगांव रहा। गांव देखने गया।

२६-११-३७, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड-प्रेशर १९४-११२, शाम को १८०-११०। मगनवाड़ी-म्यूजियम के बारे में विचार-विनिमय।

भोजन करके सेगांव गया। प्रार्थना के बाद कार्यकर्ताओं से बातें।

२७-११-३७, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड-प्रशर ८ बजे १८०-११० रहा।

२८-११-३७, वर्धा

सुबह बापू को घनश्यामदासजी के साथ देखकर आया। स्वास्थ्य साधारण।

सेगांव में हिम्मतसिंहका की बरात को हुड्डा-पार्टी। बापू के साथ प्रार्थना का आनन्द।

१-१२-३७, सेगांव

प्रातः बापू से मिला। घूमने गया। बालकोबा को देखा।

नागपुर-यूनिवर्सिटी बापूजी को डॉक्टरेट की पदवी देना चाहती थी। बापू ने कहा कि मैं उसके योग्य नहीं हूं। विनोद होता रहा।

३-१२-३७, सेगांव

प्रार्थना के बाद बापू से विनोद। थोड़ी देर पढ़ना-लिखना।

बापू ने बातचीत के लिए बुलाया। हिंसामय वातावरण को रोकने के लिए हम लोगों ने जोरों से प्रयत्न करने का कहा।

४-१२-३७, सेगांव-वर्धा

डॉ० नर्बदाप्रसाद महादेवभाई के साथ मोटर से सेगांव जाकर आये। बापू का स्वास्थ्य वैसा ही है। सुबह २००-११४ के करीब व दोपहर को १६०-१०८ ब्लडप्रेशर रहा। दोपहर का ठीक था।

५-१२-३७, सेगांव-वर्धा

सेगांव पैदल गया। डॉ० जीवराज मेहता व नर्बदाप्रसाद आये। डॉ० मेहता से बातचीत। डॉ० जीवराज के आग्रह से कल मेल से बापू ने बम्बई (जुहू) जाने का निश्चय किया। बम्बई तार-टलीफोन वगैरा किये।

सेगांव-आश्रम की व्यवस्था की। बापू ने ६ बजे के करीब मौन लिया।

६-१२-३७, सेगांव-वर्धा

मेल से बापू को लेकर बम्बई रवाना हुए। रास्ते में बापू को थोड़ा शारीरिक आराम मिला। विचार चलते रहे।

प्रार्थना। बापू का मौन रहा।

७-१२-३७, दादर

कल्याण में तैयार होकर बापू के डिब्बे में गया। दादर उतरकर वहां से बापू को जुहू ले आये। अपनी छोटी कुटिया में बापू ठहरे। वहीं भोजन किया। उन्हें कुटिया पसन्द आई।

डॉ० जीवराज, गिल्डर व रजबअली वगैरा देखने आये। बापू की जांच की।

८-१२-३७, जुहू (बंबई)

बापू को रात में नींद ठीक आई। बापू के साथ घूमना हुआ। डॉ० जीवराज वगैरा ने बापू के पेशाब व खून वगैरा की जांच कराई। मिलने-जुलनेवालों से बापू को शान्ति मिले, इसकी व्यवस्था की। बापू का कुटंब-परिवार मिलने आया।

९-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ। दिनशा मेहता ने कहा कि बापू का शायद ऐक्स-रे फोटो लेना पड़े।

बापू को रात में नींद ठीक आई। शान्ति भी मिली। डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज ने आज जांचा। ब्लडप्रेशर १८८-११२ रहा।

बापू की प्रार्थना में। अपनी कुटी के सामने—देशपांडे ने भजन गाये।

१०-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमा।

हरिहर शर्मा (अण्णा) से बातचीत की। बापू की इच्छा के कारण उनसे मिलाया, परन्तु बापू को दुःख पहुंचा। यहां आने की जरूरत नहीं थी।

बापू का ब्लड-प्रेशर १८४-११२। वजन ११२ पौंड रहा।

११-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना तथा विनोद। ब्लड-प्रेशर १८२-११०। सरदार व जयरामदास आये। सरदार व पुरुषोत्तमदास बापू से मिले।

१३-१२-३७, जुहू

बापू का ब्लड-प्रेशर आज कल से कम, यानी १७५-१०० था। बापू के साथ शाम को भी घूमना हुआ।

१४-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ। हिज हाईनेस आगाखां व उनका लड़का प्रिंस अलीखां बापू को देखने आये। कुछ विनोद करके चले गए। शाम को कमजोरी मालूम हुई तो भी बापू के साथ घूमना हुआ।

१५-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ। उन्हें अपना दूसरा प्लाट दिखाया। शाम को भी बापू के साथ घूमना व प्रार्थना। जल्दी सोया।

१६-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ।

बापू को आज डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज ने देखा। शाम को ब्लड-प्रेशर फिर ज्यादा मालूम हुआ। चिंता हुई।

२१-१२-३७, जुहू

पीठ में दर्द ज्यादा हुआ। बापू न सेंक करने को कहा। बापू के साथ थोड़ा घूमा। महाराजा रीवां बापू के दर्शन को आये। उनसे बातचीत।

२२-१२-३७, जुहू (बम्बई)

यादवजी वैद्य व रामेश्वरदासजी बिड़ला आये। बापू के तथा मेरे स्वास्थ्य के बारे में बातचीत। बापू से मिलकर वर्धा जाने की तैयारी।

२४-१२-३७, वर्धा

सेगांव गया। वहां सबको बापू के समाचार बतायें।

३१-१२-३७, जुहू (बम्बई)

दादर उतरकर जुहू २-३० बजे करीब पहुंचा। स्नान वगैरा करके बापू से मिला।

डायरी के अंश

१९३८

१-१-३८, जुहू (बम्बई)

सवेरे बापू के साथ घूमना हुआ।

सरदार वल्लभभाई, राजेन्द्रबाबू, भूलाभाई, जयरामदास दौलतराम, शंकरराव देव व शंकरलाल बैंकर जुहू आये। वर्किंग कमेटी के संबंध में देर तक विचार-विनिमय होते रहे।

२-१-३८, जुहू

सुबह जल्दी तैयार हुआ और बापू से मिलकर पंडित जवाहरलाल से मिलने बम्बई गया। बाद में बिड़ला-हाउस में राजन्द्रबाबू, सरदार, जयरामदास, भूलाभाई, कृपलानी आदि से अपनी नीति के बारे में विचार-विनिमय।

३-१-३८, जुहू

सुबह जल्दी तैयार होकर व बापू से मिलकर बम्बई। वर्किंग कमेटी ८-३० से ११-१५ व १-३० से ३-१५ तक हुई। बाद में पं० जवाहरलाल, मौलाना आजाद, सरदार, राजेन्द्रबाबू और राजाजी बापू से मिलने आये। जानकी-कुटीर में नाश्ता, चाय वगैरा व चर्चा।

४-१-३८, जुहू

जल्दी तैयार होकर बम्बई जाते समय बापू से मिलकर कल का हाल कहा।

वर्किंग कमेटी सुबह ८-३० से ११-३० व १२-३० से ८ तक हुई। महत्त्व की चर्चा व दो महत्त्व के प्रस्ताव पास हुए। खासकर कांग्रेस की नीति मिनिस्टरों के मामले में व हिंसा आदि के बारे में साफ की। बिहार किसान-सभा के बारे में भी ठीक चर्चा व विचार-विनिमय हुआ।

५-१-३८, जुहू

बापू से मिलकर बम्बई । कल शाम को बापू की लकड़ी एक पागल मुसलमान ने पकड़ ली, इस घटना का हाल पू० बापूजी ने बताया ।

कृपलानी और जयरामदास मिलने आये । बापू को कल के दोनों ठहराव ठीक मालूम हुए ।

राजेन्द्रबाबू सरदार, राजाजी, भूलाभाई, जयरामदास, खेर आदि से बातचीत । मिनिस्टरों के व्यवहार के बारे में विचार-विनिमय ।

८-१-३८, वर्धा

जल्दी निवृत्त हुआ । पू० बापूजी बंबई से आये । स्टेशन पर पैदल गया । गाड़ी १ घंटा १० मिनिट लेट थी । बापू बंगले आये । ब्लड-प्रेशर देखा ।

९-१-३८, वर्धा

पैदल सेगांव । बापू से महादेवभाई के साथ बातचीत । उन्हें हरिपुरा-कांग्रेस तक पूरा आराम लेने को कहा, परन्तु कोई फल नहीं निकला । बापू की इच्छा के मुताबिक महादेवभाई मुलाकात, प्रोग्राम आदि की व्यवस्था करेंगे ।

१०-१-३८, वर्धा

मोटर से सेगांव जाना व आना । सीतारामजी, जानकीदेवी साथ में । वहीं प्रार्थना ।

बापूजी ने आज लिखने का काम ज्यादा किया । ब्लडप्रेशर भी ठीक था । जवाहरलालजी की माता के देहान्त होने की खबर बापूजी ने दी ।

११-१-३८, वर्धा

सुबह जल्दी उठा—४ बजे स्नान आदि से निवृत्त । पैदल सेगांव । प्यारेलाल से करीब डेढ़ घंटे बातचीत । उसका मानस समझा ।

बापू यहां से अगले महीन की ता० ७ को जानेवाले हैं । वहांतक तो चिन्ता का कारण नहीं ।

१२-१-३८, वर्धा

डॉ० खर के साथ सेगांव गया । डॉ० खरे न बापू को देखा । स्वास्थ्य ठीक बताया ।

१३-१-३८, वर्धा

पैदल सेगांव—बापू से हकीमजी की बातचीत। बापूजी को देखने नागपुर से हुकूमतराय व सिविल सर्जन आये।

प्यारेलाल से बातचीत।

१५-१-३८, वर्धा

पैदल सेगांव, रास्ते में महादेवभाई मिले। उन्होंने बापू की हालत बताई। ब्लड-प्रेशर बढ़ा हुआ है—२०० के ऊपर। बापू से थोड़ी बातें। हकीमजी को भेजने का विचार। वापस आते समय किशोरलालभाई, गोमतीबहन व शांता साथ में। हकीमजी, सरस्वती (गाड़ोदिया) जानकी वापस सेगांव गये।

१७-१-३८, वर्धा

चि० शान्ता के साथ सेगांव। पू० बापूजी को देखकर हकीमजी व सरस्वतीबाई को लेकर जल्दी वापस।

घनश्यामदास बिड़ला आज मेल से कलकत्ता से आये। मेरे आने के पहले वह सेगांव पहुंच गए। महादेवभाई से लार्ड लोथियन के प्रोग्राम के बारे में विचार-विनिमय।

१८-१-३८, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर लार्ड लोथियन के लिए स्टेशन गया। गाड़ी १० मिनट पहले आ गई। काकासाहब व शान्ता को मिलाया। बाद में महादेवभाई व दोनों कुमारप्पा को मिलाया। डॉ० नर्बदाप्रसाद की गाड़ी में सेगांव रवाना। रास्ते में आर्यनायकम् आदि से भी मिलाया। सेगांव पहुचकर लार्ड लोथियन बापू से मिले। बाद में मीराबहन को मिलाया। उन्हें अपने कच्चे मकान में ठहराया।

बापू के साथ घूमना। फिर वापस वर्धा।

वियेना के एक प्रोफेसर व डाक्टर व उनके एक साथी बापू को देखने आये। उनकी व्यवस्था की। वापस सेगांव आकर बापू से मिला।

१९-१-३८, वर्धा

लार्ड लोथियन नवभारत विद्यालय, महिलाश्रम, मगनवाड़ी, खादी-भंडार, लक्ष्मीनारायण मंदिर देखने आये। उनके भोजन की व्यवस्था महिलाश्रम में की। वह थोड़ा बोले, पर सुन्दर बोले।

दोपहर को व शाम को लार्ड लोथियन के साथ सेगांव गया। उनको घूमकर सब दिखाया।

बापू के पास प्रार्थना तक रहा। घनश्यामदास बिड़ला भी आये। शाम को सेगांव में ही भोजन किया।

२०-१-३८, वर्धा

आज सुबह लार्ड लोथियन ने हरिजन बोर्डिंग, राष्ट्रभाषा प्रचार विद्यालय, नालवाड़ी टेनरी, कार्यालय आदि को देखा। उन्होंने कोई २०-२५ मिनट विनोबा के साथ आध्यात्मिक विचार-विनिमय किया। उसके बाद लार्ड लोथियन घर पर आये। कार्यकर्त्ताओं व मित्रों से परिचय व बात-चीत। भोजन। सारा समारंभ ठीक रहा।

लार्ड लोथियन व घनश्यामदासजी सेगांव गये। बापू से बातें। प्रार्थना। आज बापू का ब्लड-प्रेशर ज्यादा था।

२१-१-३८, वर्धा

सवेरे लार्ड लोथियन को ग्रांड ट्रंक ऐक्सप्रेस पर पहुंचाया। वह दिल्ली गये।

सेगांव गया। बापू से पचास हजार रुपये (घनश्यामदासजी बिड़ला के इस वर्ष के एक लाख में से) गांधी-सेवा-संघ के जनरल फंड में दिलाने का निश्चय। ईयरमार्क-फंड में से ढाई हजार बापू के जिम्मे नालवाड़ी में विद्यार्थियों के लिए मकान बनाने के लिए। विट्ठलभाई-फंड के संबंध में विचार। उत्तमचन्द शा (पैरिसवालों) ने पांच हजार का चेक दिया।

२२-१-३८, वर्धा

तुकडोजी महाराज के भजन। सेगांव पैदल गया। बापूजी से मुलाकात। फ्रंटियर जाने तथा हकीमजी के जाने के बारे में चर्चा। सेगांव में नाश्ता।

२३-१-३८, वर्धा

सेगांव तक पैदल। बापू के साथ कांग्रेस व शिक्षण बोर्ड-विषयक चर्चा। विद्यापीठ के स्नातक, सरस्वतीबाई गाडोदिया, हकीमजी वगैरा बापू से मिले। प्यारेलाल से बातें। बापू ने कांग्रेस जाने के बारे में पूरी तैयारी रखने को कहा।

२५-१-३८, वर्धा

सेगांव जाकर बापू व अन्य लोगों से मिला। वापस घर आकर भोजन। बाद में दो बजे फिर महादेवभाई के साथ सेगांव गया। बापू से २ से ३ तक बातचीत—गांधी-सेवा-संघ, विट्ठलभाई पटेल, वर्किंग कमेटी, फेडरेशन, मलकानी, आर्यनायकम्, डॉ० बतरा, प्यारेलाल आदि के बारे में।

२६-१-३८, वर्धा

सेगांव जाकर बापू से सेगांव का हिस्सा व अन्य इमारतें आदि ग्राम-सेवा-मंडल को देने पर विचार-विनिमय। बापू ने अपना भावी कार्यक्रम व इच्छा बतलाई। उन्हें अब सेगांव छोड़ना नहीं है। हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए फ्रंटियर रहना पड़े तो विचारणीय है।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी व स्वतंत्रता के प्लेज (प्रतिज्ञा) पर विचार।

२९-१-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू से सेगांव दान देने के बारे में बातचीत। मालगुजारी का हिस्सा दान में देने में व्यवहार की अड़चन। बगीचा व जमीन वसंत-पंचमी से दान देने का निश्चय।

३१-१-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक था। सुशीला ने बताया कि नार्मल हालत समझी जा सकती है। बापू को नागपुर-कांग्रेस के चुनाव व डॉ० खरे, पूनमचंद रांका आदि की स्थिति का हाल थोड़े में कहा। बापू का मौन था।

२-२-३८, वर्धा

सुबह स्टेशन गया। वल्लभभाई, जयरामदास आदि बापू से मिलने आये। नागपुर से मोटर द्वारा जवाहरलालजी व कृपलानी आये। मेल से सुभाषबाबू आये। पहले जवाहरलालजी को लेकर सेगांव गया। बाद में सुभाषबाबू को लेकर गया।

३-२-३८, वर्धा

पैदल सेगांव गया। बापू से मिला। सुभाषबाबू को लेकर वर्धा आया।

४-२-३८, वर्धा

प्रार्थना। पैदल सेगांव। बापू को वर्किंग कमेटी का थोड़ा हाल बताया।

वर्किंग कमेटी ८।। से ११।। व २ से रात्रि ९।। तक होती रही। फडरेशन-वाला ठहराव हुआ।

५-२-३८, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८।। से १।। व २ से ८।। तक होती रही। बीच में कुछ लोग सेगांव बापू के पास हो आये।

वर्किंग कमेटी में आज भूख-हड़ताल, मिनिस्टरी, देशी रियासतें आदि पर खासतौर से विचार-विनिमय हुआ।

६-२-३८, वर्धा-नागपुर

वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। देशी रियासत का ठहराव बहुत वाद-विवाद व विचार-विनिमय के बाद जवाहरलालजी ने जैसा पेश किया, वही सबोंने मंजूर किया।

सेगांव जाकर बापू से मिले। जवाहरलालजी की बापू से बातचीत। आते समय महिला-आश्रम के उत्सव में ठहरे।

१३-२-३८, हरिपुरा (विट्ठलनगर)

दादर-स्टेशन से बैठकर मढ़ी-स्टेशन पर उतरे। रास्ते में सुभाषबाबू व डा० पट्टाभि से देशी रियासतों के संबंध में बातचीत। सुभाषबाबू के साथ भोजन। बाद में उन्हें इन तीन वर्षों की स्थिति व वर्किंग कमेटी के अन्दर के काम से ठीक तौर से वाकिफ कराया। बाद में सुभाष से जितनी बातें हुईं, वे सब घूमते हुए बापू को सुनाईं। उन्हें पसंद आईं। सुभाषबाबू बापू से मिल लिये।

१५-२-३८, हरिपुरा

वर्किंग कमेटी ८।। से ९।। व २ से ६ तक हुई। जवाहरलालजी की रिपोर्ट पर आज गरमागरमी रही।

बापू से वर्किंग कमेटी का हाल कहा। शाम की प्रार्थना में गये।

बापू के साथ जवाहरलालजी, सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार और मैंने मिनिस्ट्री के बारे में, खासकर बिहार व यू० पी० के बारे में बातचीत की। उन्होंने अपने विचार कहे।

१६-२-३८, हरिपुरा (विट्ठलनगर)

बापू के साथ बातचीत। मैंने बताया कि मैं वर्किंग कमेटी में नहीं

रहूंगा। मुझे इसम से निकाल। उन्होंने कबूल तो किया। और भी हालत कही।

खादी-प्रदर्शनी के स्थान पर प्रार्थना। बाद में बापू का खादी के महत्व पर मार्मिक भाषण हुआ।

१७-२-३८, हरिपुरा

श्री खेर से बम्बई के गवर्नर के बारे में जो बातचीत हुई, उसका हाल बापू से कहा।

शाम की वर्किंग कमेटी की बैठक में मुख्यमंत्री श्री गोविन्दवल्लभ पंत व श्री कृष्णसिंह के निवेदन व वहां की स्थिति का वर्णन सुनने पर दुःख व चिन्ता।

१९-२-३८, हरिपुरा

बापू से बातें व अपन संबंध में—वर्किंग कमेटी के बारे में।

२१-२-३८, हरिपुरा

वर्किंग कमेटी में चर्चा। वर्किंग कमेटी में न रहने के बारे में अपने विचार मैंने साफ कहे।

जवाहरलालजी, सुभाषबाबू वगैरा शाम को बापू से मिले।

कांग्रेस का खुला अधिवेशन। आज की कार्रवाई आखिर तक की ठीक रही।

बापू से हुई बात का सार मौलाना ने कहा। मुझे वर्किंग कमेटी में रहना चाहिए, इसका आग्रह किया। अपनी कठिनाइयां मैंने कहीं।

२२-२-३८, हरिपुरा

प्रातःकाल बापू के जाने की तैयारी। उनसे मिला। बापू ने मित्रों का व सुभाषबाबू का यह आग्रह, कि मैं वर्किंग कमेटी में रहूं, बताया। मैंने इन्कार किया।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक में सुभाषबाबू ने मेरा नाम भी जाहिर कर दिया। सरदार ने जो खुलासा किया, वह पूरा नहीं किया, अधूरा किया। मैं पूरा कराना चाहता था, पर सुभाषबाबू ने कहा, यहां ठीक नहीं मालूम होगा।

२५-२-३८, बम्बई

डॉ० रजबअली के यहां वर्किंग कमेटी के मेम्बरों की इनफार्मल बैठक हुई। आठ मेम्बर हाजिर थे। मिनिस्टरों की स्थिति टेलीफोन से समझी व उन्हें स्वीकृति दी।

बापूजी के स्टेटमेंट के आधार पर बयान देने को कहा।

२-३-३८, वर्धा

सेगांव गया। हीरालालजी शास्त्री व रतनबहन के साथ बापू से जयपुर-प्रजा-मंडल की स्थिति, वार्षिक उत्सव, उस अवसर पर मेरे वहां जाने आदि के बारे में विचार-विनिमय।

रमीबाई कामदार, मौलाना, सुभाषबाबू, हरिपुरा-कांग्रेस व खर्च वगैरा के बारे में थोड़ी बातें।

३-३-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू के पास—विनोबा व महादेवभाई साथ थे। नागपुर प्रांतिक कांग्रेस कमेटी से त्यागपत्र देने के बारे में देर तक विचार-विनिमय। बापू ने अपनी नीति कही। सब जिम्मेदार कार्यकर्ताओं को कांग्रेस में सम्मिलित होना चाहिए। विनोबा व शिक्षण-बोर्ड आदि की चर्चा।

४-३-३८, वर्धा-पुलगांव-देवली

मेल से शांतिकुमार, मास्टर व गगनबिहारी आये। दोपहर में बापू के पास सेगांव गये। विदेशी व्यापारी भारत में किस नीति से व्यापार करें, इसपर विचार-विनिमय। महादेवभाई भी मौजूद थे।

६-३-३८, वर्धा

सुभाषबाबू ने दो बार कलकत्ते टलीफोन पर बात की। शरदबाबू से बापू के प्रोग्राम के बारे में व डिटेन्यू के लिए प्रचार आदि सम्बन्ध में बातें। सुभाषबाबू ने मंदिर, खादी-भंडार, मगनवाड़ी देखी।

सुभाषबाबू व मौलाना के साथ सेगांव गया। बापू के साथ बातें। मिस्टर जिन्ना का पत्र-व्यवहार। शहीदगंज का मामला। सिक्खों का खून, बंगाल का प्रोग्राम, वर्किंग कमेटी की जगह पूरी करना, वर्किंग कमेटी की बैठक उड़ीसा में रखना तथा शिक्षण-बोर्ड आदि के बारे में बात हुई। उस मय पंडित रविशंकर शुक्ल भी मौजूद थे।

७-३-३८, वर्धा

मौलाना से कलकत्ते का हाल व सुभाषबाबू के विचारों के बारे में बातचीत। सेगांव गया। बापू का मौन था। मौलाना से जो बात हुई, वह बापू को सुनाई। प्रार्थना के बाद वापस।

२६-३-८, बेरबोई-डेलांग

प्रार्थना। डेलांग उतरकर पैदल बेरबोई गांधी-सेवा-संघ कान्फ्रेन्स में पहुंचे। साथ में लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, महाबीरप्रसादजी पोद्दार, रामकुमारजी केजडीवाल, हीरालालजी सराफ आदि थे।

बापूजी के साथ घूमना। थोड़ी बातें। सिर में दर्द हो गया। मेंथल वगैरा लगाया।

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी सुबह ८ से १० तक। कान्फ्रेंस ३ से ५ तक। रात्रि में कार्यकारिणी ७॥ से ९॥ तक रही।

२८-३-३८, डेलांग

प्रार्थना के बाद बापू ने हिन्दू-मुस्लिम-दंगे के बारे में जो प्रस्ताव रखा था, उसके बारे में मेरी शंकाओं का समाधान करने की दृष्टि से भाषण किया —करीब एक घंटा।

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी कमेटी ८ से १० तक हुई। दोपहर को १॥ से ३॥ तक। कान्फ्रेंस ३ से ५ तक।

३०-३-३८, बेरबोई-डेलांग

बापू व जयप्रकाश से थोड़ी बातें।

१॥ से ५ तक गांधी-सेवा-संघ कान्फ्रेंस का काम हुआ। कृपलानी, सरदार, राजेन्द्रबाबू, किशोरलालभाई के भाषण ठीक हुए।

३-४-३८, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८ से ११॥ व २ से ७ तक हुई। दो से पांच तक बापूजी के साथ नागपुर का शरीफ़-प्रकरण चला। सुबह सुभाषबाबू के घर डॉ० खरे ने जो परिस्थिति कही, उससे स्थिति एकदम बदली हुई मालूम हुई। उस बारे में विचार-विनिमय। बापूजी के सामने मैंने मि० शरीफ़ को यहां बुलाने के खिलाफ़ जो विचार रक्खे, वे सरदार को बिलकुल पसन्द नहीं आये, लेकिन कई मित्रों को बहुत पसन्द आये।

४-४-३८, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी में ८।। से ११।। व दोपहर को २ से ४।।। बजे तक मैं रहा। बाद में पू० बापूजी से मिला। चि० सावित्री वगैरा को बापू से मिलाया। सीतारामजी से मिलकर हावड़ा-स्टेशन। श्री सुभाषबाबू व मौलाना का आग्रह था कि मैं न जाऊं, परन्तु जाना तो था ही। नागपुर के मामले में सरदार का रुख देखकर भी जाना ही उचित समझा।

५-४-३८, वर्धा

मैंने ता० ३ को कलकत्ते में शरीफ-प्रकरण के बारे में बापू के सामने वर्किंग कमेटी मे जो यह राय दी थी कि डॉ० खरे का खुलासा सुनने के बाद अब हम इस स्थिति में विशेष कुछ कर नहीं सकते, क्योंकि पार्टी-मीटिंग में सर्वानुमति से उन्हें माफी दे दी गई व सब मिनिस्टरों की भी यही राय है, तब फिर उन्हें बुलाने से क्या लाभ है, आदि। इससे सरदार वल्लभभाई नाराज हो गए, ऐसा मामूली मालूम हुआ था। परन्तु आज ज्यादा हाल मालूम हुए। रायपुर से बापू व सुभाष बोस को ऐक्सप्रेस तार दिया कि मेरी राय का विचार न किया जाय।

६-४-३८, वर्धा

बंबई जाने की तैयारी। जाजूजी व किशोरलालभाई से देर तक वर्किंग कमेटी से मेरा त्यागपत्र, सरदार से मतभेद तथा मानसिक दुर्बलता आदि का हाल कहा। दोनों ने त्यागपत्र अभी नही देने की राय दी। विचार करना है।

१६-४-३८, वर्धा

स्टेशन गया। ग्रांड ट्रंक से बापूजी दिल्ली से वर्धा आये। उन्हें सेगांव के आधे रास्ते तक पहुंचाकर वापस आया।

१८-४-३८, वर्धा

सेगांव गया। प्रार्थना के बाद बापू का मौन खुलने पर थोड़ी देर बातचीत। डॉ० सौन्दरम् साथ थी।

१९-४-३८, वर्धा

यादवजी वैद्य व बम्बईवाले श्री दवे वैद्य नागपुर से आये। उनसे बातचीत। उन्हें लेकर सेगांव गया।

बापू से करीब एक घंटा बातचीत। जयपुर प्रजा-मंडल का व खादी-

प्रदर्शनी, वर्किंग कमेटी, महिला-सेवा-मंडल व परीक्षा-विभाग, स्वास्थ्य, मानसिक अशान्ति व महर्षि रमण इत्यादि प्रश्नों पर विचार-विनिमय।

२१-४-३८, वर्धा

बापूजी सेगांव से आये। नार्मल-स्कूल में उनका भाषण। उन्होंने आज विद्या-मंदिर योजना के मकान की नीव रखी व ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन किया। वह थके हुए मालूम हुए।

२२-४-३८, वर्धा

बापू से सेगांव में दिल खोलकर स्पष्ट तौर से मन की स्थिति व कमजोरी का वर्णन किया। बापू ने जवाब दिया व अपनी स्थिति का वर्णन किया। किशोरलालभाई, राजकुमारी, प्यारेलाल, मीराबहन वगैरा मौजूद थे। मन थोड़ा हलका भी हुआ व दुःख भी हुआ।

२३-४-३८, वर्धा

बापू ने जो नोट तैयार किये, वे राजकुमारी अमृतकौर ने पढ़कर सुनाये। प्यारेलाल ने बापू का स्टेटमेंट, जो उन्होंने जिन्ना की मुलाकात के बारे में दिया था, सुनाया।

२८-४-३८, जुहू

पू० बापूजी को लेने दादर-स्टेशन गया। गाड़ी करीब डेढ़ घंटा लेट थी। दादर से बापू को लेकर जुहू आया। बापू अपने यहां ठहरे। घूमने गये, स्नान वगैरा किया।

बापू जिन्ना से मिलकर आये, उसका हाल कहा।

शाम की प्रार्थना में लोग ज्यादा थे।

२९-४-३८, जुहू

बापू से उदयपुर व सीकर के मामले की बात। उन्होंने भी मेरा वहां जाना पसन्द किया। बापू ने उड़ीसा व मैसूर पर स्टेटमेंट लिखवाये। खेर से बातचीत।

फ्रंटियर-मेल से बापू के साथ रवाना। साथ में जानकीदेवी, उमा, रामकृष्ण, दामोदर व विट्ठल थे।

३०-४-३८, सवाई माधोपुर-जयपुर

रतलाम में बापूजी के डिब्बे में गया। जयपुर प्रजा-मंडल के लिए संदेश

लिया । जिन्ना से समझौते की जो बात चल रही है, उस बारे में बापू ने अपने विचार कहे । मिनिस्टरी के बारे में विचार-विनिमय । फ्रंटियर के बारे में महादेवभाई का नोट पढा । थोड़ा दुःख हुआ ।

बापू के पास ही नाश्ता किया । बापू अपनी निराशा की बाते करते थे, मैं अपनी ।

सवाई माधोपुर में हीरालालजी शास्त्री, जयपुर से आये । बापू से थोड़ी बातें ।

७-५-३८, जयपुर

पू० बा, देवदासभाई, काति, सरस्वती, दिल्ली से आये । जयपुर प्रजा-मंडल की तरफ से प्रोसेशन बहुत सुंदर ढंग से उत्साहपूर्वक व धूमधाम के साथ निकला । शाम को प्रदर्शनी का उद्घाटन पू० कस्तूरबा ने किया । देवदास ने भी भाषण दिया ।

मि० यंग भी आये थे । उनसे वहीं पर देर तक बातचीत । कल फिर मिलने का निश्चय ।

८-५-३८, जयपुर

यंग के साथ बहुत देर तक राजनैतिक, खासकर सीकर के संबंध में, विचार-विनिमय होता रहा। वहां से आकर पू० बापूजी को व जयरामदास को तार करना पड़ा—जयरामदासजी के जयपुर आने से रुकने के बारे में ।

११-५-३८, सीकर

पू० बा, जानकीदेवी और पार्वतीदेवी दोपहर की गाड़ी से जयपुर से सीकर पहुंचे । जनता ने उनका स्वागत किया ।

१२-५-३८, सीकर

पू० बा, जानकीदेवी, पार्वतीदेवी, गुलाबबाई वगैरा राणी साहेब से मिलकर आये । उन्हें अपना दृष्टिकोण साफ-साफ समझाकर बताया ।

पू० बा, पार्वतीदेवी वगैरा कासी-का-बास जाकर आये ।

१५-५-३८, जुहू (बंबई)

बापू के पास वर्किंग कमेटी के सदस्य जमा हुए थे । विचार-विनिमय में मैं भी शामिल हुआ । दोपहर को बंबई में भूलाभाई के घर वर्किंग कमेटी की बैठक हुई ।

बापू के साथ घूमना, प्रार्थना व मिलना-जुलना। सीकर की हालत बापू से कही।

१६-५-३८, बंबई

वर्किंग कमेटी ८ से ११। तक व शाम को २ से ५।। तक भूलाभाई के यहां हुई। शाम को बापू के साथ जुहू में घूमना व प्रार्थना।

१७-५-३८, जुहू

प्रार्थना। पू० बापूजी के पास वर्किंग कमेटी के काम की चर्चा व विचार-विनिमय ११।। बजे तक होता रहा।

वर्किंग कमेटी भूलाभाई के घर २ बजे से ५।। तक हुई। सी० पी० के मामले से चिन्ता।

जुहू में बापू के साथ घूमना व प्रार्थना।

१८-५-३८, जुहू

प्रार्थना, घूमना। सुबह बापू के साथ पास वर्किंग कमेटी के लोग आये। उनसे बातचीत। जुहू में प्रार्थना बापू के साथ।

१९-५-३८, जुहू

बापू के पास वर्किंग कमेटी के खास-खास लोग देर तक चर्चा, विचार-विनिमय करते रहे—फ्रंटियर, मैसूर, सीकर, जयपुर आदि प्रश्नों पर।

२०-५-३८, जुहू

पू० बापू के पास सुभाषबाबू, सरदार, मौलाना, जयरामदास, कृपलानी आदि आये। देर तक विचार-विनिमय। मैसूर, फ्रंटियर, सी० पी०, कम्यूनिस्ट आदि प्रश्नों पर चर्चा।

सरदार व किशोरलालभाई के साथ बातचीत। सरदार, राजाजी, मौलाना आदि मित्रों का सी० पी० की जवाबदारी लेने का मुझसे आग्रह। मैंने अपनी कमी व स्थिति साफ बताई।

आज वर्किंग कमेटी दो बजे से थी; मेरी समझ ४ बजे की रह गई। उसका दुःख हुआ और आश्चर्य भी हुआ। बापू के पत्र दे दिये।

बापू से प्रार्थना, जवाहरलालजी पंचगनी से आये। डा० पट्टाभि वगैरा के साथ भोजन।

२१-५-३८, जुहू

बापूजी, सुभाषबाबू, मौलाना आजाद, सरदार व खानसाहब देर तक,

११ बजे तक, विचार-विनिमय करते रहे। सीकर-जयपुर के बारे में सुभाषबाबू स्टेटमेंट देंगे।

सी० पी० मिनिस्ट्री की चर्चा में मैंने अपनी कठिनाई साफ तौर से बतलाई।

बापूजी जिन्ना व राजेन्द्रबाबू से मिलकर वर्धा जाने के लिए सीधे स्टेशन गये।

२३-५-३८, वर्धा-नागपुर

सेगांव में बापू से मिलकर आया। बापूजी व राधाकृष्ण साथ में थे। बापू ने कहा कि पंचमढ़ी जाना जरूरी है। बम्बई के पारसी मित्र ने जो पत्र दिया था, वह उन्हें दे दिया।

जाजूजी से नागपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

२५-५-३८, नागपुर-वर्धा

काफी चर्चा के बाद छहों मिनिस्टरों ने आपस में बैठकर फैसला किया। एक बार तो टूटने का मौका आ गया था। बाद में दुर्गाशंकर मेहता व खरे ने मिलकर एक नया फार्मूला दिया। मैंने उसमें दुरुस्ती की। वह सबोंने स्वीकार की। पार्टी में एक बार तो मामला सुलझ गया। सभीने अच्छा स्वागत किया, पर भविष्य ठीक नही दीखता था।

२७-५-३८, पंचमढ़ी

सरदार के साथ बापूजी के पास सेगांव गया। सरदार ने पंचमढ़ी की चर्चा व सारी स्थिति का वर्णन बापूजी से किया व स्टेटमेंट की बात की। डॉ० खरे व शुक्ला तो तार भेजा। मुझे जहां दुरुस्ती करनी थी, की।

२८-५-३८, वर्धा

सरदार वल्लभभाई व महादेवभाई जल्दी भोजन कर पू० बापूजी के पास सेगांव गये। बापूजी ने स्टेटमेंट बनाया। पं० रविशंकर शुक्ल व मिश्र ने उसे देखा व कुछ शब्दों में हेर-फेर किया। सरदार बम्बई गये।

सेगांव गया। बापूजी ने पेरीनबहन व सुभाषबाबू का पत्र पढ़ाया। मुझे जो कुछ कहना था, वह कहा।

३१-५-३८- वर्धा

सेगांव गया। चि० राधाकृष्ण की नालवाड़ी के काम बढ़ाने की योजना

पर बापूजी से विचार-विनिमय। बापूजी ने उसकी जिम्मेदारी लेना उचित समझा। मैंने कहा कि चालीस हजार के लगभग की जरूरत होगी। विनोबा व जाजूजी की लिखित स्वीकृति होना जरूरी है। बापूजी मुझसे भी सलाह व मदद की आशा रखते हैं।

बापूजी से श्री सरदार आंग्रे, टाटा, प्रो० बारी, जगतनारायण व सरदार आदि के संबंध में बातें हुईं।

९-६-३८, जुहू

महादेवभाई का पत्र पढ़ा। पू० बापू के मन की स्थिति के हाल पढ़कर आश्चर्य व दुःख हुआ। मन में विचार चलने लगा।

१८-६-३८, **वर्धा**

भूलाभाई व राजेन्द्रबाबू के साथ सेगांव। १ से ४॥ तक भूलाभाई ने यूरोप के राजनीतिज्ञों से जो बातचीत हुई, वह बापू से कही।

बापू से, डॉ० खरे व शरीफ मिल गए, इसका थोड़ा हाल कहा। विट्ठलभाई पटेल के बिल के बारे में विचार-विनिमय।

२३-६-३८, **वर्धा**

जानकीदेवी व मां के साथ सेवाग्राम गया। वहां बा, बापूजी से मिलना।

श्री धनुस्कर ने एक नवयुवक को वहां सत्याग्रह के लिए बैठा दिया था। उसे समझाया।

बालकोबा के पास थोड़ी देर बातचीत करने से मन को थोड़ी शान्ति मालूम हुई। बा के पास प्रसाद लिया। जानकी से कहा कि बापू से बातचीत करके मन हलका करले, परन्तु वैसा नहीं हो सका।

२४-६-३८, **वर्धा**

सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार, कृपलानी, राजेन्द्रबाबू के साथ विचार-विनिमय। जिन्ना-प्रकरण, नागपुर-मिनिस्टरी-प्रकरण, विट्ठलभाई-बिल आदि के बारे में। बाद में मौलाना व मेरे साथ सुभाषबाबू की बातचीत।

सेगांव में सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी और मैं बापू से मिले। जिन्ना (मुसलिम लीग) के बारे में तथा बंगाल के कैदियों के बारे में चर्चा।

२८-६-३८, वर्धा

सेगांव में बापू मे मिलकर आया। जवाहरमल हैदराबादवाले के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि एक वर्ष के लिए रख लिया जाय। महिला-आश्रम ५०, उमा-रामकृष्ण ५०, ऐसे कुल मिलाकर सौ रुपये मासिक दिये जायं। बापू की चिन्ता का कारण सुना। सरस्वती (काति गांधी की पत्नी) का बंगलौर का आग्रह। प्यारेलाल वगैरा से बातें।

२९-६-३८, वर्धा

डॉ० खरे नागपुर से आये। उनसे बातचीत।

डॉ० खरे सेगांव बापू से मिलकर वापस आये और बाद में देर तक मुझे कुछ फाइल व पत्र-व्यवहार दिखाते रहे। मैंने उन्हें मेरे विचार भली प्रकार समझाने की कोशिश की व पत्र न भेजने को कहा। आपस में सफाई करना ठीक रहेगा, यह जोर देकर कहा। आखिर उनके साथ नागपुर गया।

५-७-३८, वर्धा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साधारण समिति की बैठक का कार्य सुबह ८॥ से ११॥ व दोपहर २॥ से ६ बजे तक। बाद में ८ से १०॥ तक, हिन्दी-प्रचार का काम भी हुआ। श्री टंडनजी से व मंत्री बाबूराम से गरमागरम बहस। थोड़ा दुःख पहुंचा। मेरी भी थोड़ी गलती थी।

पू० बापूजी साहित्य सम्मेलन की बैठक के लिए वर्धा आये। ३ से ५ तक बैठे।

शिमला-अधिवेशन, प्रचार-समिति के अधिकार आदि पर विचार-विनिमय। नियमावली वगैरा के संबंध में।

८-७-३८, वर्धा

जयपुर से हीरालालजी शास्त्री का तार, वहां जल्दी आने के बारे में, आया। सेगांव गया। बापूजी की सलाह हुई कि वहां जाना जरूरी है।

२५-७-३८, वर्धा

जयपुर से लौटकर घर पहुंचते ही मुझे सेगांव जाना पड़ा। बापू ने डॉ० खरे को भली प्रकार समझाने का प्रयत्न किया। एक बार तो उन्होंने बापू से कह दिया कि जैसा आप कहें वैसा करूंगा; पर बाद में बदल गए।

२६-७-३८, **वर्धा**

वर्किंग कमेटी का कार्य सुबह ८।। से ११ व तीसरे पहर २ से ८ बजे तक चला। पूज्य बापूजी २।। से ८ बजे तक बैठे। सी० पी० मिनिस्ट्री का प्रस्ताव-सर्वानुमति से खूब सोच-समझकर विचार-विनिमय के बाद पास हुआ। मन में बुरा तो लगता था, परन्तु दूसरा कोई उपाय, कांग्रेस की प्रतिष्ठा की दृष्टि से, दिखलाई नहीं दिया।

वर्किंग कमेटी के प्रायः सभी सदस्यों की राय हुई कि अगर श्री जाजूजी स्वीकार करलें तो उनका नाम लीडर के लिए सुझाया जाय। मैं श्री जाजूजी से किशोरीलालभाई के साथ मिला। हम दोनों ने खूब समझाया। बाद में उन्हें शरदबाबू, मौलाना, सरदार आदि से मिलाया। फिर सुभाषबाबू से भी मिलाया। सुभाषबाबू ने बड़ी ही अच्छी तरह प्रेमपूर्वक व जोर देकर समझाने का प्रयत्न किया। आखिर सुबह बापू के पास जाकर शंकाओं का समाधान होने पर विचार करने का निश्चय हुआ।

२७-७-३८, **वर्धा**

सुबह ४ बजे उठकर श्री जाजूजी को लेकर बापूजी के पास सेगांव गया। किशोरलालभाई साथ थे। बापूजी ने उनकी शंकाओं का भली प्रकार समाधानकारक उत्तर दिया। एक बार तो मालूम हुआ कि वह मुख्यमंत्री-पद के लिए तैयार हो जायंगे। मैंने भी काफी जोर लगाया। बाद में वर्धा वापस आये तो उन्होंने यह जवाबदारी लेने से इनकार कर दिया। मैंने सुभाषबाबू को सब हालत बता दी। मुझे भी निराशा हुई।

३१-७-३८, **वर्धा**

राजेन्द्रबाबू के साथ सेगांव गया। बापूजी को नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में जो खास ठहराव पास हुए वे बतलाये। डॉ० खरे के बारे में राय ली। हिंगनघाट-मिल की पिकेटिंग व कानपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। बापू ने कहा कि हिंगनघाट की पिकेटिंग इस प्रकार बिलकुल नहीं हो सकती। वह जल्दी बन्द होनी चाहिए। मेरा कर्त्तव्य बतलाया। श्री महर्षि रमण के पास जाने को कहा।

१-८-३८, **वर्धा**

श्री काकासाहब, नाना आठवले, काकासाहब कालेलकर के चार विद्यार्थी-

कार्यकर्ता पांडुरंग, दाबके, सबनीस व श्रीपाद ने परसों सेगांव से आयी हुई नीरा पी थी। उससे उनको हैजा हो गया। सबकी हालत चिन्ताजनक हो गई है व वातावरण एकदम गंभीर है। सेगांव बापू से मिलकर आया। उन्हें काकासाहब आदि की स्थिति कही। बीमारों की व्यवस्था आदि में रात के साढ़े ग्यारह बज गए। कई बार जाकर उन्हें देखा।

१५-८-३८, पांडिचेरी

सुबह जल्दी निवृत्त होकर अरविन्द-आश्रम में नाश्ता। बाद में करीब सवा आठ बजे जानकीदेवी व चि० शान्ता रानीवाले के साथ श्री अरविंद व श्री मां के अच्छी तरह से दर्शन किये। श्री अरविंद फोटो की अपेक्षा प्रत्यक्ष देखने में विशेष प्रभावशाली व तेजस्वी दिखे। श्री टैगोर से मिलते-जुलते थे। दर्शन के बाद वहां नीचे सवा घंटे बैठा।

सर हैदरी से परिचय। दोपहर को अरविंद-आश्रम में भोजन। १० आने रोज के देना पड़ता है। मैंने जो मालाएं ली थीं, वे उत्साह व पवित्रता प्राप्त करानेवाली प्रतीत हुई।

१८-८-३८, तिरुवण्णामलै (मद्रास)

आज अरुणाचलम् पहाड़ के चारों तरफ घूमा। कई स्थान, जहां रमण महर्षि ने तपश्चर्या की, देखे। बहुत सुन्दर व रमणीक पहाड़ है। 'स्कन्द-आश्रम' में स्नान, भोजन व आराम। स्थान बहुत ही सुन्दर है। यहां रहने की इच्छा होती है।

१९-८-३८, तिरुवण्णामलै

रमण भगवान के पास ३ बजे से ४॥ बजे तक रहा। उनका साग काटना, रसोई का काम करना वगैरा देखा। देखकर संतोष हुआ। थोड़ी बातें भी कीं। बाद में कुछ देर आराम किया। उनके बाद शाम को ५ बजे से ६ बजे तक फिर रमण महाराज के पास बैठा।

२२-८-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू के पास जाकर उन्हें रमण महर्षि, श्री अरविन्द व श्री मां के दर्शन का व उनके आश्रम का इतिहास कहा। बापू का मौन था। प्यारेलाल ठीक था।

२५-८-३८, वर्धा

सेगांव गया। काकासाहब को बापू के पास ले गया। बीमारी के बाद पहली बार बापू से उनकी बातचीत हुई। प्यारेलाल ठीक था।

२९-८-३८, वर्धा

सेगांव गया। रात को सुभाषबाबू का फोन आया। बापूजी से उसका हाल कहा। बापू ने कहा कि वर्धा में ता० २० अक्तूबर के बाद वर्किंग कमेटी व ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक रखी जा सकती है। वह उस समय तक फ्रंटियर से आ जायंगे। पहले रखना हो तो दिल्ली रखी जाय।

५-९-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू से जाहिर सभा के बारे में तथा ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी में रखने के प्रस्ताव के बारे में विचार-विनिमय।

१०-९-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापूजी से कांग्रेस-प्रेसिडेंटशिप के बारे में उनके विचार जाने। जयपुर व सीकर की परिस्थिति, हैदराबाद व सर हैदरी का स्टेटमेंट, शिमला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हरिजन-सत्याग्रह वगैरा के सम्बन्ध में भी बापू से चर्चा। काकासाहब, गोपालराव, कमल व दामोदर भी थे।

२१-९-३८, दिल्ली

बापू के पास ३ बजे से ५ बजे तक वर्किंग कमेटी के मित्रों के साथ विचार-विनिमय।

२२-९-३८, दिल्ली

बिड़ला-हाउस में वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। बापू के साथ वर्किंग कमेटी के लोग ३ से ५ बजे तक बैठे।

२७-९-३८, दिल्ली

चरखा-संघ की बैठक बापू के पास सुबह ९ से ११ तक हुई।

वर्किंग कमेटी की बैठक दोपहर को बापू के पास २ से ५॥ तक हुई।

२८-९-३८, दिल्ली

वर्किंग कमेटी सुबह बापूजी के पास ८॥ से ११ तक। शाम को बिड़ला-हाउस में ४॥ से ६॥ तक।

चरखा-संघ की बैठक दोपहर को बापू के पास हुई।

३०-९-३८, दिल्ली

हरिजन-कॉलोनी में बापूजी के पास वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। ८॥ से ११ तक आसाम की परिस्थिति पर खास चर्चा हुई।

स० वल्लभभाई व घनश्यामदासजी बिड़ला आये। मुझे बिड़ला-हाउस ले गए। आसाम के बारे में सुबह वर्किंग कमेटी में मैंने जो कुछ कहा, उस संबंध में बातचीत। सरदार को मेरे व्यवहार से दुःख व नाराजी थी। मुझे भी उनके व्यवहार से पूरा असंतोष था। कल बापू के पास बैठकर आखिरी फैसला करने का निश्चय हुआ। रात में राजेन्द्रबाबू से थोड़ी बातें हुई, पर मन हलका नही हुआ।

१-१०-३८, दिल्ली

बापू के पास वर्किंग कमेटी ८॥ से ११। तक हुई।

बापू के पास सरदार व घनश्यामदासजी ३ बजे से ४॥ बजे तक रहे। सरदार वल्लभभाई पटेल का व मेरा जो मतभेद था, उसका आखिर में खुलासा हुआ। मतभेद काफी तीव्र व दुःखदायक था। दूसरे और कारण तो थे ही, किन्तु यह भी एक महत्त्व का कारण था, जिससे वर्किंग कमेटी से मुझे निकलना आवश्यक मालूम हुआ। पू० बापू ने स्वीकृति दी। मेरे त्यागपत्र के मसौदे में बापू ने थोड़ी दुरुस्ती की।

२-१०-३८, दिल्ली

वर्किंग कमेटी की बैठक बापूजी के यहां ८॥ से ११॥। तक होती रही। अगर वर्किंग कमेटी चाहे तो डॉ० खरे को और समय दे सकती है।

मैंने आज ही वर्किंग कमेटी की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। बापूजी ने मेरी अच्छी तरह से व साफ तौर से वकालत की। मैंने भी जो कहना था, थोड़े में कहा। मेम्बर लोग इस्तीफा स्वीकार नहीं करना चाहते थे; पर बापू ने विश्वास दिलाया कि वह सब ठीक कर लेंगे।

पू० बापूजी से जावरा जाने की इजाजत ली। राजेन्द्रबाबू से देर तक बातचीत। मानसिक स्थिति व सरदार की बातचीत का सारांश कहा। उन्हें मेरे वर्किंग कमेटी से निकल जाने का रंज था।

१७-१०-३८, वर्धा

सुभाषबाबू से देर तक बातचीत। उनका आग्रहपूर्वक कहना था कि

वकिंग कमेटी का मेरा त्यागपत्र स्वीकार करने से बहुत ज्यादा गलतफहमी फैलेगी। कई उदाहरण भी दिये। कमल से जो बातचीत हुई थी, वह कही। वकिंग कमेटी के सभी मेम्बरों की इच्छा है कि मुझे त्यागपत्र नही देना चाहिए। मैंने अपनी मानसिक स्थिति समझाकर कही। उन्होंने आराम देने व छुट्टी लेने को कहा। उन्होंने कहा कि वे पू० बापू को भी पत्र लिखेंगे।

१९-१०-३८, वर्धा

सेगांव में श्री भंसाली व बालकोबा को देखा। भंसाली अच्छे हो जायंगे। बालकोवा की हालत ठीक नही दिखी।

२६-१०-३८, वर्धा

सेगांव में बहुत-से लोग बीमार पड़ गए हैं। सिविल सर्जन डॉ० नर्बदा-प्रसाद को वहां भिजवाया। उन्होंने आकर रिपोर्ट दी। थोड़ी चिन्ता हुई। पारनेरकर को वर्धा-अस्पताल में लाये।

२९-१०-३८, वर्धा

धोत्रे व किशोरलालभाई से बातचीत। बापू का पत्र। गांधी-सेवा-संघ से त्यागपत्र देने के बारे में किशोरलालभाई के पत्र से थोड़ी गैरसमझ हुई। महिला-आश्रम के काम में धोत्रे मदद करें, यह निश्चय हुआ। सुभाषबाबू को पू० बापूजी के नाम लिखे पत्र की नकल भेजी।

४-११-३८, वर्धा (जन्मदिन)

पू० बापू, सरदार, जानकीदेवी व कमलनयन को, हृदय में जो दुःख व मंथन चल रहा है, उसके संबंध में पत्र लिखे। कुछ महत्त्व के पत्र विनोबा ने देखे। राधाकृष्ण ने नकलें कीं।

२१-११-३८, वर्धा

जवाहरलालजी, इन्दिरा वगैरा आये।

इन्दिरा व अगाथा हैरिसन के साथ बापू के पास सेगांव गया। थोड़ा विनोद रहा। हैदराबाद के बारे में हाल बताये।

२७-११-३८, वर्धा

बापू से बात करने के लिए नोट तैयार किये। सेगांव गया। बापू से

करीब सवा घंटे बातचीत। मेरे जन्मदिन पर लिखा मेरा पत्र[1] उन्हें (बापू) नहीं मिला था। आश्चर्य हुआ।

प्यारेलाल से बातचीत। उसे भी पत्र नहीं मिला। मेरे त्यागपत्रों के बारे में बापू से खुलासा। मैंने पूछा—वर्किंग कमेटी यहां हो, उस समय में बाहर रह सकता हूं। उन्होंने कहा—"हां। जयपुर की जिम्मेवारी नहीं छोड़ी जा सकती। नागपुर की भी नहीं। परन्तु नागपुर की तो शायद छोड़ी-सी भी जा सकती है, अगर वहां के लोग मेरा कहना मान लें तो। राजकोट का उदाहरण जयपुर, उदयपुर व हैदराबाद को नहीं लागू करना चाहिए।" बापू ने साफ तौर से कहा।

सेगांव में नये कुएं पर हुड्डा-पार्टी।

४-१२-३८, वर्धा (सेगांव)

बापू से मिलकर सरदार किबे के बारे में विचार-विनिमय। अगर वह नागपुर रहना चाहते हों तो रह सकते हैं। बापू ने मेरे प्रश्नों के उत्तर दिये—

१. हैदराबाद स्टेट के बारे में सरोजिनी नायडू का पत्र पढ़कर जवाब भेजने को कहा।

२. जयपुर प्रजा-मंडल के बारे में यंग का तार बताया। बोले कि अभी गिरफ्तारी की संभावना कम मालूम होती है।

३. राजकोट वगैरा के संबंध में हरिजन के अगले अंक में वे लिखने-वाले हैं। इस अंक में भी स्टेटों के बारे में लिखा है। उन्होंने मेरे संबंध के खुलासे का मसविदा दिया है।

४. नागपुर म्युनिसिपल कमेटी की स्थिति के बारे में उन्होंने कहा, कि ढवले व पटवर्धन को त्यागपत्र देना ही चाहिए। सालवे-ग्रुप को खुलासा करना चाहिए व भूल कबूल करनी चाहिए।

५. नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के बारे में कहा कि वे लोग जब तुम्हारी बात न मानें तो जिम्मेवारी छोड़ देना ठीक होगा। ज्यादा दिन तक एक्सप्लाइट (अनुचित लाभ) नहीं होने देना चाहिए।

६. बम्बई जा सकता हूं। वहां से जयपुर या और कहीं आराम के

---

[1] देखिये 'बापू के पत्र', पृष्ठ-संख्या १५७ और २०४।

लिए जा सकता हूं। वर्धा में न्यू रेस्ट हाउस बनान के बारे में मेरा पत्र नहीं मिला।

बापू जनवरी में बारडोली होंगे।

नागपुर म्युनिसिपल-प्रकरण पर विचार-विनिमय।

७-१२-३८, वर्धा-नागपुर

स्टेशन मेल पर गया। औंध के राजासाहब, बालासाहेब, चिरंजीव अप्पासाहब व दीवान वगैरा की पार्टी आई। जापान की पार्लमेंट के एक सदस्य भी आये। सुरेश बनर्जी भी आये।

सेगांव जाकर पू० बापूजी के पास से इन सबों का समय निश्चित किया।

९-१२-३८, वर्धा

बापू से मिलकर सर हैदरी के पत्र का जवाब तैयार किया। बम्बई जाने का विचार।

२५-१२-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू से बातचीत—सुभाषबाबू के आने के बारे में, बापू का प्रोग्राम व स्वास्थ्य।

२६-१२-३८, वर्धा

पू० बापू को जन्म-दिन के रोज लिखे हुए पत्रों की नकलें व असली पत्र पढ़ाये। बापू, सरदार व जानकीदेवी के नाम के पत्र व उसका व राधाकृष्ण का जवाब आदि। बापू कल पत्र लिखकर भेजेंगे।

२७-१२-३८, वर्धा

मेल से आज सुभाषबाबू आ गए। देर तक बातचीत। जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। उन्होंने बापू की राय ठीक बताई। राजकोट का फैसला होने के समाचार सुभाषबाबू ने कहे। खुशी हुई।

बापू का (सेगांव से) खानगी पत्र मिला। उमा ने उसकी नकल की। उन्हें जवाब भेजा।

सुभाषबाबू बापू से मिलकर आये। बुखार आजाने के कारण उनका आज का मद्रास जाने का प्रोग्राम स्थगित रहा।

प्रो० रंगा भी आये।

२८-१२-३८, बंबई

सरदार वल्लभभाई से सुबह फोन से व बाद में मिलकर राजकोट के बारे में मुद्दे की बात समझ ली। बाद में जयपुर की स्थिति पर देर तक विचार-विनिमय हुआ। बापू ने जो सलाह दी, वह कही।

३०-१२-३८, नई दिल्ली

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय वगैरा आये। निषेधाज्ञा व जयपुर प्रजामंडल की स्थिति पर बहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा। बारडोली में ता० ४ को बापू से मिलकर फैसला करने का निश्चय। प्रेस स्टेटमेंट आदि। शास्त्रीजी की बातचीत से दुःख पहुंचा। मेरी भी गलती थी।

डायरी के अंश

१९३९

४-१-३९, सूरत-बारडोली

बापू से भोजन के समय बातचीत हुई। उसमें मि० यंग से सवाई माधोपुर में जो बातें हुई थीं, उसका जिक्र किया तथा घनश्यामदासजी की सर ग्लेन्सी के साथ की मुलाकात का हाल बताया। उन्होंने वाइसराय को पत्र लिखा है। मिस अगाथा हैरिसन भी सर ग्लेन्सी तथा वाइसराय को लिखनेवाली हैं। इन सारी बातों से बापू को परिचित कराया।

शाम की प्रार्थना के बाद बापू का करीब १। घंटा जयपुर के मामले में, जयपुर के मित्रों के साथ विचार-विनिमय। बापू ने स्थिति समझी। मित्रों को थोड़ा निरुत्साह हुआ, परन्तु उसकी जरूरत थी।

सरदार से मिलकर उन्हें स्थिति समझाई। लड़ने के सिवाय और दूसरा उपाय नहीं रहता, यह जोर देकर कहा। बापू से स्वीकृति व आशीर्वाद प्राप्त करने की दृष्टि से भी सरदार को सारी स्थिति से परिचित कराना आवश्यक है।

५-१-३९, बारडोली

पाटीदार जीन प्रेस में आज जयपुर के मित्रों के साथ हुड्डा खाया, व आपस में जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय किया। मैंने मेरी स्थिति उन्हें बहुत ही साफ तौर पर बतलाई। इन सबोंका आग्रह थाकि सब प्रकार की जोखिम उठाकर भी लड़ाई लड़नी ही चाहिए। हम सब पूरी तरह से तैयार हैं। आपकी आज्ञा का पूरा पालन करेंगे। आप हमारे सत्याग्रह के नेता रहेंगे, वगैरा।

६-१-३९, बारडोली

सुबह ३-३० बजे के करीब नींद खुल गई। जयपुर-लड़ाई के बारे में विचार व योजना चलती रही। बापू के साथ सवेरे घूमा। भोजन के समय

बापू से बातें। बाद में २ बजे से करीब ३॥ तक बापू के पास जयपुर के मित्रों के साथ स्टेटमेंट के मसविदे वगैरा तैयार किये। प्रेसिडेण्ट कौंसिल ऑव स्टेट के नाम पत्र तैयार किया गया। परंतु देर होने से रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जा सका। कल भेजने का निश्चय। वर्तमान परिस्थिति में सीकर के बारे में मै क्या कर रहा हूं, इस संबंध में भी पब्लिक स्टेटमेंट तैयार करना है।

सरदार बंबई गये। उनसे बातें। चिरंजीलाल मिश्र भी बंबई गये। हंसराज, भालचंद, हरलालसिंग, शामसिंग शाम की गाड़ी से गये।

शाम को बापू के साथ घूमा। प्रार्थना। बाद में थोड़ी देर तक विचार-विनिमय।

७-१-३९, बारडोली

बापू के साथ प्रार्थना। बापूजी का ब्लडप्रेशर आज २२० तक हो गया। बापू से २ बजे थोड़ी देर मुलाकात। लीलावती से बातचीत। बापू की स्थिति के बारे में विचार-विनिमय। मैंने बापू को थोड़ा-सा इशारा किया— सरदार, जयपुर-निषेधाज्ञा, घनश्यामदास और जयपुर के बारे में।

राजकुमारीजी ने जयपुर-सीकर की फाइल पढ़ी व प्रेसिडेण्ट, कौंसिल ऑफ़ स्टेट के नाम का मसविदा तैयार किया। बापू ने उसे सुधार कर ठीक कर दिया। यह ता० ९ सोमवार को बारडोली से भेजने का निश्चय हुआ। प्रेसिडेण्ट, कौंसिल ऑफ़ स्टेट के नाम जयपुर-निषेधाज्ञा के बारे में बापूजी ने जो पत्र कल तैयार किया, वह आज छोटूभाई के मार्फत रजिस्ट्री द्वारा भेजा गया। जयपुर-लड़ाई की रचना के संबंध में शास्त्रीजी, हरिभाऊजी, शंकरलाल वर्मा आदि के साथ बापू से २ बजे मिला। प्रेस को पब्लिक स्टेटमेंट भेजा।

शाम को बंबई के लिए रवाना।

१२-१-३९, बारडोली

वर्किंग कमेटी की बैठक में रहा।

बापू ने मेरे गुण-दोषों के व मानसिक स्थिति के बारे में पूछा। उन्होंने जो पूछा, उसका सच्चा व साफ जवाब दिया। देवदासभाई से बहुत देर तक बातचीत व विचार-विनिमय।

१३-१-३९, बारडोली

बापू से बातें। मानसिक हालत, कमजोरी की स्थिति, दोष आदि के बारे मे चर्चा। देवदासभाई, प्यारेलाल व सरदार वल्लभभाई से भी मानसिक हालत का परिचय दिया।

वर्किंग कमेटी ने जयपुर के बारे में प्रस्ताव[१] पास किया।

१४-१-३९, बारडोली

बापू से व सरदार से जयपुर के बारे में बातचीत।

हैदराबाद स्टेटवालों को बापू से मिलाया व उनकी बातचीत कराई।

राजकोट के बारे में श्री ढेबर, नानाभाई, जयंतीलाल, जीवन पुजारी आदि की बापू से व सरदार से जो बातचीत हुई, वह सुनी। चर्चा में थोड़ा भाग भी लिया। बापू से बातें।

जवाहरलालजी से जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

१५-१-३९, बारडोली

सुबह पू० बापू से जयपुर व अपनी मनःस्थिति के संबंध में थोड़ी चर्चा। बाद में सरदार से बापू की बातचीत। उन्हें बैरिस्टर चुडगर का पत्र ठीक मालूम हुआ। सीकर के रावराजा का केस कमजोर है। अपनी लड़ाई में उसे न मिलाने का निश्चय।

चुडगर नवसारी से मोटर द्वारा आ गए। उनसे बातचीत। उनकी सीकर के रावराजा, कुंवर हरदयालसिंह व जयपुर में मर बीचम सेंट जॉन से जो बातचीत हुई, वह सब समझी। उन्होंने मेरे नाम एक पत्र लिखकर दिया है। वह पत्र बापू को दे दिया।

---

[१] **प्रस्ताव निम्न प्रकार है--**

"The Working Committee deplores the ban placed on the entry into the Jaipur State of Seth Jamnalalji by the Jaipur authorities whilst he was on his way to Jaipur, his native place for famine relief work and to attend the meeting of the Jaipur Rajya Praja Mandal of which he is the President. The Working Committee hope that wiser counsels will prevail and the authorities will withdraw the ban and prevent an agitation both in the Jaipur State and outside."

१६-१-३९, जुहू (बंबई)

बांदरा उतरकर जुहू गया। घूमते समय जानकीदेवी से बारडोली में बापू से व अन्य मित्रों से जो बातचीत हुई, वह थोड़े में कही।

२०-१-३९, वर्धा-पवनार

बारडोली में पू० बापूजी, महादेवभाई व देवदास से जो बातें हुई, उन पर जानकीदेवी के साथ विचार-विनिमय। भविष्य में भी पहले-जैसे संयम व निश्चय करने में ही शांति व उत्साह बना रह सकता है, इत्यादि।

२६-१-३९, वर्धा

सुबह प्रार्थना। गांधी-चौक में झंडा-वंदन, सेगांव में भी झंडा-वंदन हुआ, भाषण देना पड़ा। स्वतंत्रता-दिन मनाया गया।

जयपुर के लिए बिदायगी का समारंभ उत्साहजनक व भावपूर्वक हुआ। मंदिर में उत्सव

रात में ऐक्सप्रेस से शुभ मुहूर्त में रवाना। मन में उत्साह।

२७-१-३९, बारडोली

स्टेशन पर सरदार आये।

बापू को व सरदार को सुभाष व मौलाना की बातचीत का सारांश कहा।

२८-१-३९, बारडोली-बंबई

बापू से सुबह घूमते समय जयपुर, मन:स्थिति, दीपक आदि के बारे में बातें। बापू ने थोड़े में मन:स्थिति के बारे में समझाया। मैंने भी कहा कि उत्साह व विश्वास तो होता है। बापू न शुद्ध सत्याग्रही के उदाहरण आदि दिये।

बापू ने स्टेटमेंट बनाकर दिया। सबको पसंद आया।

जयपुर में मुसलमानों व जयपुर-सरकार के बीच लड़ाई हुई, उसमें गोली लगने से ७ आदमी मरे, कई घायल हुए। बापू को रात में टेलीफोन द्वारा यह सारा हाल कहा। इस हालत में भी १ फरवरी का मेरा जयपुर जाना निश्चित।

जयपुर-सत्याग्रह, कौंसिल की रचना। अन्य विचार-विनिमय।

३-२-३९, आगरा

रात के १२ बजे तक कई जगह टेलीफोन करते रहना पड़ा। जयपुर सूचना कर दी थी कि (जयपुर-सरकार की निषेधाज्ञा को तोड़ते हुए) कल रात को सीकर के लिए फुलेरा होकर जाने का प्रयत्न करूंगा। लेकिन घनश्यामदास व महादेवभाई ने कहा कि अभी और कुछ रोज नहीं जाना चाहिए। जयपुर कौंसिल को पत्र देना चाहिए, इत्यादि उनकी राय थी। मुझे यह पसंद नहीं आया। बापू का तार आ गया कि मुझे जाना चाहिए। उससे संतोष हुआ। बापू को लगा होगा कि मैंने देर क्यों की; परंतु हाल उन्हें मालूम होने पर संतोष मिलेगा।

४-२-३९, आगरा

महादेवभाई का पत्र लेकर आदमी आया। पढ़कर चोट लगी। आखिर में मेरा मन हो, उस मुताबिक करने की बापू की इजाजत आ गई। उससे सुख मिला।

जवाहरलाल नेहरू, गोविन्दवल्लभ पंत, काटजू, घनश्यामदास व महादेवभाई को व वर्धा दो बार फोन किया।

९-२-३९, आगरा

महिला-आश्रम, वर्धावाली श्री उर्मिला वर्धा गई। उसके हाथ बापूजी के नाम पत्र भेजा।

वर्धा से फोन पर बापूजी का संदेश आया। बापू ने कहलाया कि जानकीदेवी अभी स्वास्थ्य के कारण जयपुर नहीं जा सकेंगी।

१०-२-३९, आगरा

आज रींगस का प्रोग्राम बदलने के कारण सिर थोड़ा भारी मालूम देने लगा।

बापू के नोट में यंग के बारे में जो गलत खबर छपी, उसके बारे में तार व पत्र भेजे।

१८-२-३९, मोरांसागर (जयपुर-जल)

'सर्वोदय', अंक ३, पृष्ठ ३२ पर बापू का बा के नाम लिखा एक पत्र छपा है, वह पढ़ा। बापूजी १९०८ की दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह की लड़ाई

में जेल गये थे। वहां उन्हें खबर मिली कि बा बहुत बीमार है। उस समय बापू की उम्र करीब ४० की थी। बापू ने बा के नाम पत्र में लिखा था—

"तेरी बीमारी का तार वेस्ट ने दिया। मेरा हृदय व्यथित है। मैं रोता हूं, परन्तु तेरी सेवा के लिए वहां आ नहीं सकता। सत्याग्रह की लड़ाई में मैंने अपना सबकुछ अर्पण कर दिया है। कुछ भी बचा नहीं रखा है। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूं कि अगर तुझे इस दुनिया से कहीं चल बसना पड़े तो मैं तेरे पीछे दूसरी पत्नी नहीं करूंगा। ईश्वर पर दृढ़ विश्वास रखकर प्राण-विसर्जन करना!"

१९-२-३९, मोरांसागर

बापू के पत्र में से 'सर्वोदय', पृष्ठ ३७, अंक ३ में पढ़ा—

१. अपने प्रति करुणा करके सब जीवों को समान मानकर उनपर करुणा करें और अपने किसी भी प्रकार के सुख के लिए जीव-हानि करते हुए कांप उठें।

२. देह की उपेक्षा न करते हुए मृत्यु का ज़रा भी भय न मानें।

३. देह अत्यन्त धोखेबाज है, ऐसा मानकर इसी क्षण से मोक्ष की तैयारी करें।

२६-२-३९, मोरांसागर

केलनबेक की बीमारी के बारे में बापूजी को वर्धा तार भेजा।

२८-२-३९, मोरांसागर

हाल की बंबईवाली घटना पर विचार करने से साफ मालूम देता था कि इन्साफ नहीं हो सका। महादेवभाई के व अन्य मित्रों के व्यवहार से चोट तो जरूर पहुंची, परंतु भविष्य में मेरे लिए परिणाम ठीक निकलेगा, इसी एक आशा पर सहन करना व कड़वा घूंट पीना उचित समझा।

बापू के अनुयायियों में उदारता, सेवा एवं प्रेम की वृत्ति तो दिखाई देती है, परंतु न्याय (Justice) का माद्दा कम रहता है—ऐसे विचार आये। मेरे भीतर इतना नीचपन व हल्की वृत्ति इन वर्षों में क्यों हुई? विचार करने पर कई बातें दिखाई दीं, परंतु साफ कारण समझ में नहीं आया।

मुझे विनोबा के संसर्ग में अधिक रहना चाहिए, उसीसे मेरा मार्ग साफ और निष्कलंक हो सकेगा व जीवन में असली उत्साह प्राप्त हो सकेगा।

बापू के प्रेम व उदारता का ख़याल करता हूं तो अपनेको बहुत नीचा, नालायक समझने लगता हूं। बापू को समय बहुत कम मिलता है, इसलिए उनसे भी कई बार न्याय के मामले में गलतियां होती दिखाई देती हैं। परंतु उनके मन में द्वेष, ईर्ष्या व किसीका बिगाड़ हो, ऐसी वृत्ति न होने से उसका परिणाम ज्यादातर ठीक ही आता है।

१-३-३९, मोरांसागर

पू० बापूजी राजकोट पहुंच गए। अब आशा होती है कि वहां का मामला सुलझ जायगा।

२-३-३९, मोरांसागर

बापूजी का राजकोट-प्रकरण का वर्णन व स्टेटमेंट देखा। राजकोट का फैसला जितना जरूरी है, उतना ही बापूजी का त्रिपुरी जाना भी जरूरी है।

३-३-३९, मोरांसागर

ता० २५-२ का 'हरिजन' पूरा पढ़ा। A Good Samaritan Dr. Chesterman नामक लेख में पढ़ा—प्रतिवर्ष २ लाख स्त्रियों की मृत्यु प्रसव से, १ लाख की चेचक से और ३६ लाख की सब प्रकार के बुखारों से। देश में १० लाख कोढ़ी हैं, ६ लाख अंधे हैं।

त्रावणकोर की स्थिति पूरी पढ़ी। लीमडी की खबर पढ़कर तो आश्चर्य व दुःख हुआ। जयपुर पर बापू का छोटा नोट था।

८-३-३९, मोरांसागर

कई दिनों के अखबार आज एक साथ मिले। बापू के उपवास करने व छोड़ने की तथा राजकोट का मामला सुलझने की खबरें पढ़कर सुख मिला। दो-तीन रोज से जो निरुत्साह था, वह चला गया।

१२-३-३९, मोरांसागर

पू० बापू को दिल्ली भेजने के लिए पत्र तैयार किया।

जयपुर से यंगसाहब का पत्र ता० ९-३ का नोटिफिकेशन व अखबार लेकर सवार डेरे पर आया। रात को ३ बजे तक पढ़ता रहा। बाद में आराम।

श्री यंग को पत्र लिखा। बापू के पत्र के साथ नोटिफिकेशन भेजा।

१८-३-३९, मोरांसागर

रात को ९ बजे रामप्रसाद अर्दली श्री यंग का पत्र, पू० बापूजी का सीलबंद पत्र, चिरंजीव राधाकृष्ण का पत्र व अन्य पत्र और अखबार लेकर आया। पहले सब पत्र पढ़े, बाद में देर तक अखबार पढ़ता रहा।

राजकोट बापूजी को ठीक हैरान कर रहा है। शायद उन्हें वापस फिर राजकोट जाना पड़े।

बापूजी के स्वास्थ्य का विचार आया। परमात्मा सब ठीक करेगा।

बापू की सूचनाओं पर सोते समय देर तक विचार व चिंतन। शांति मिली।

२२-३-३९, मोरांसागर

शाम को ता० २१ के 'हिंदुस्तान टाइम्स' व 'स्टेट्समैन' अखबार आये। जयपुर-सत्याग्रह कौंसिल ने पू० महात्माजी की आज्ञा से सत्याग्रह स्थगित किया। देखें, अब ऊंट किस करवट बैठता है।

२३-३-३९, मोरांसागर

चि० राधाकृष्ण, दामोदर, गुलाबबाई, हरगोविंद, रामप्रसाद पुलिस-क्लर्क के साथ श्री यंग का पत्र लेकर आये। सबोंसे मिलकर प्रसन्नता हुई। देर तक बातचीत। सारी स्थिति पूरी तरह से समझी। पू० बापू ने जिस उद्देश्य से सत्याग्रह स्थगित किया, वाइसराय से जो बातें हुईं, भविष्य में अगर सत्याग्रह चालू करना पड़ा तो उस संबंध में बापू के विचार, उसमें आनेवाली कठिनाइयां वगैरा समझीं।

आज की मुलाकात खानगी थी।

२४-३-३९, मोरांसागर

बापूजी ने सत्याग्रहियों के बारे में जो नई प्रतिज्ञा बनाई है, उस संबंध में मेरे विचार राधाकृष्ण के मार्फत उन्हें कहला भेजे। इस प्रतिज्ञा का पालन तो मेरे लिए भी संभव नहीं है। मेरी समझ से तो बापू के सिवाय शायद ही कोई इनका पालन कर सके।

२६-३-३९, मोरांसागर

अखबार देखा। जयपुर की स्त्री-कैदियों को छोड़ दिया गया। और सत्याग्रहियों को छोड़ने के समाचार भी पढ़े। बापूजी प्रयाग गये।

१-४-३९, मोरांसागर

आज चार रोज बाद अखबार आये ।

बापू का ब्लडप्रेशर फिर बढ़ गया । जानकर चिन्ता हुई । बापू दिल्ली में ही हैं । राजकोट का फैसला ठीक हो गया, ऐसा मालूम होता है । बापू का ब्लडप्रेशर ता० २७ मार्च को २२०-११२ था । राजकोट के उपवास के बाद १६०-९० हो गया था, जो ठीक समझा जाता था । कांग्रेस व देशी रियासतों की चिन्ता के कारण ऐसा हुआ दीखता है ।

३-४-३९, मोरांसागर

बापू ने जयपुर, रचनात्मक कार्य तथा सत्याग्रह की शर्तों पर 'हरिजन' में लिखा है ।

१०-४-३९, मोरांसागर

राजकोट का फैसला पढकर सुख व समाधान मिला । बापूजी फिर वाइसराय से मिले व राजकोट गये ।

११-४-३९, मोरांसागर

ता० ११ का अखबार आया । उसमें बापू का लेख पढ़ा । उसमें वाइसराय से मुलाकात, राजकोट के बारे में उपवास. त्रिपुरी न जाना, फेडरल कोर्ट के चीफ जज से फैसला करवाना, दिल्ली इतने रोज बैठे रहना, इत्यादि का बापू ने खुलासा किया था । उपवास के बारे में बापू की नकल दूसरे कोई न करें तो अच्छा है ।

१३-४-३९, मोरांसागर

राजकोट का ठाकुर फिर गड़बड़ी कर रहा है, यह देखकर आश्चर्य व चिन्ता हुई । विश्वास होता है कि आखिर में सब ठीक हो जायगा । बा का स्वास्थ्य ठीक होने के समाचार मिले ।

१४-४-३९, मोरांसागर

रामदुर्ग स्टेट (कर्नाटक) में जनता की ओर से भयंकर हिंसा के समाचार पढ़कर दुःख व चिन्ता हुई । इस घटना पर विचार करने से तो लगता है कि स्टेटों का सत्याग्रह स्थगित किया गया वह ठीक ही हुआ; अन्यथा रोष, द्वेष व उत्तेजना ज्यादा फैल जाती, जिसे बाद में संभालना कठिन हो जाता ।

१५-४-३९, मोरांसागर

भवरसिंह के हाथ पत्र भेजे—पू० बापूजी को राजकोट व महादेवभाई को दिल्ली। रास्ते में घूमते हुए बापू को जो पत्र लिखा, उसका चिन्तन चलता रहा। हृदय भर आया। श्री भरतजी की चौपाई याद आई—

हृदय हेरि हारेउ सब ओरा। एकहि भांति भलहि भल मोरा।
गुरु गुसाईं साहिब सिय रामू। लागति मोहि नीक परिणामू।

१६-४-३९, मोरांसागर

'सर्वोदय', अंक ९, पृष्ठ ३३ पर गांधीजी का वचन पढ़ा,

"जिसने बंधुत्व की भावना को हृदयस्थ कर लिया है, वह यह नहीं कहने देगा कि उसका कोई शत्रु है।"

१८-४-३९, मोरांसागर

राजकोट में—ग्रामिये (भयात) लोगों ने प्रार्थना के समय १६-४ को जो भद्दा प्रदर्शन किया, वह पढ़कर दुःख व आश्चर्य हुआ। मुझे तो अब विश्वास हो रहा है कि राजकोट के ठाकुर का व वीरवाला का विनाश-काल नजदीक आ रहा है। वहां के मुसलमानों को लीग (जिन्ना) ने भड़काया मालूम देता है। राजकोट का मामला काफी पेचीदा बन गया है। इसका बुरा असर सारी स्टेटों में पहुंचेगा।

१९-४-३९, मोरांसागर

राजकोट की हालत खराब होती जा रही है। अखबारवालों ने बापू को कोसना शुरू कर दिया है। प्रजा में दरारें डाली जा रही हैं। मुझे तो इसमें वहां के पोलिटिकल एजंट व वाइसराय की नीति पर संदेह होने लगा है—जयपुर के कारण भी।

२३-४-३९, मोरांसागर

ता० २१-४ का 'हिंदुस्तान' देखा। बापूजी को राजकोट में बुखार आ रहा है। राजकोट तो बापूजी की पूरी ताकत ले रहा है। मि० जिन्ना व डॉ० अम्बेडकर भी जान लेने वहां पहुंच गए हैं। उधर राजाजी ने भी मद्रास से चिल्लाना शुरू कर दिया है। बापूजी ता० २६ को कलकत्ता पहुंचनेवाले हैं।

२६-४-३९, मोरांसागर

ता० २५ के अखबार आये । राजकोट का फैसला नही हुआ। बापू कलकत्ते रवाना हो गए।

२८-४-३९, मोरांसागर

राजकोट के मामले पर बापू ने दुखी हृदय से जो स्टेटमेंट दिया, वह पढ़ा। एक बार तो बुरा लगा और दुःख भी पहुंचा; पर यह विश्वास होता है कि परमात्मा ने किया तो जल्दी ही कोई समाधानकारक रास्ता निकलेगा। बापू को व सरदार को खूब कष्ट व दुःख पहुंचना स्वाभाविक है। उधर सुभाष-बाबू के कारण कलकत्ते का वातावरण खूब गंदा हो रहा है। सरदार ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक मे नही जायंगे। बापू का स्टेटमेंट देखा। एक तरह से यह ठीक है। वर्तमान मे कांग्रेस की, देशी रियासतों की, भारत की व दुनिया की जो हालत हो रही है, उसे देखते हुए मेरे लिए तो कैद मे रहने में ही मेरा सब प्रकार का लाभ दिखाई देता है—स्वास्थ्य की दृष्टि से भी।

३-५-३९, मोरांसागर

बापू का जयपुर के कैदियो के बारे मे 'हरिजन' में लिखा लेख देखा। उसमें मेरा भी उल्लेख किया है।

इन दिनों मेरा स्थान बदलने या मेरे लिए साथी देने के संबंध में विचार चल रहा है। मेरी तो इस संबंध में यही इच्छा रही है कि कोई कोशिश न हो तो ठीक। किंतु लगता है कि मुझे यहां से जल्दी ही दूसरे स्थान पर ले जायंगे।

७-५-३९, मोरांसागर

जयपुर से अखबार व डाक आई। जयपुर में सत्याग्रहियों को छोड़ना शुरू कर दिया है।

राजकोट का कोई रास्ता नही बैठ रहा है।

वृन्दावन (चम्पारन) का बापू का भाषण पढ़ा।

११-५-३९, करनावतों का बाग (जयपुर-जेल)

अखबारों में बापू के स्टेटमेंट, राजेन्द्रबाबू व सुभाष के भाषण वगैरा

पढ़े। ता० १०-५ के 'हिंदुस्तान' में सरदार का भाषण है। उसमें जयपुर की भी चर्चा है।

१९-५-३९, करनावतों का बाग

पत्रों के जवाब मदनलाल के पास लिखवाये। बापूजी व खानसाहब को भी पत्र लिखे।

२०-५-३९, करनावतों का बाग

ता० १९-२० के अखबार में बापू के व राजकोट-ठाकुर के स्टेटमेंट देखें।

पू० बापू ने वृन्दावन (चम्पारन-बिहार) में गांधी-सेवा-संघ के सम्मेलन के समय जो भाषण दिया, वह ता० १३ मई के 'हरिजन' में पढ़ा। उसमें बापू ने कहा—

"सत्याग्रही की ईश्वर में जीवित श्रद्धा होनी चाहिए। यह इसलिए कि ईश्वर में अपनी अटल श्रद्धा के सिवाय उसके पास कोई दूसरा बल नहीं होता। बगैर उस श्रद्धा के सत्याग्रह का अस्त्र वह किस प्रकार हाथ में ले सकता है! आप लोगों में से जो ईश्वर में ऐसी जीवित श्रद्धा न रखते हों, उनसे तो मैं यही कहूंगा कि वे गांधी-सेवा-संघ को छोड़ दें और सत्याग्रह को भूल जायं।"

२२-५-३९, करनावतों का बाग

राजकोट-प्रकरण का आखिर ता० २०-५ को अन्त हुआ। बापूजी भी दरबार में शामिल हुए। जुलूस में भी ठाकुरसाहब के साथ रहे। राजकोट के लिए सुधार कमेटी बनी। वीरवाला उसके प्रेसीडेण्ट हुए।

२५-५-३९, करनावतों का बाग

ता० २५-५ के 'हिंदुस्तान' में राजकोट की आम सभा में दिया बापू का भाषण छपा है। उसमें निम्न अंश बड़े महत्त्व का है—"There is not a single person in the whole world who does not deserve our love. To achieve unity of soul, is the greatest purushartha I am after."

२८-५-३९, करनावतों का बाग

ता० २७ व २८ के अखबार पढ़े। कृपलानीजी का भाषण पढ़ा।

पं० जवाहरलाल के लेख, जो उन्होंने 'नेशनल हैरल्ड' में लिखे थे, देखे। इस पर से उनकी मन की स्थिति का साफ पता लगता है। राजकोट की स्थिति के बारे में समझना तो सभीके लिए कठिन है। सरदार को भी बहुत कड़वा घूंट पीना पड़ रहा है, आखिर में परिणाम ठीक आ गया। अब तो सब बातें भूलकर व परिणाम की तरफ देखकर बापू के प्रति श्रद्धा और बढ़नी चाहिए, अन्यथा देशी रियासतों का मामला पहले तो पेचीदा था ही, अब और ज्यादा हो जायगा।

२-६-३९, करनावतों का बाग

महादेवभाई का राजकोट का भाषण पढ़ा। वीरवाला राजकोट सुधार कमेटी के प्रेसिडेंट होंगे, यह पढ़कर आश्चर्य हुआ।

बापू से राधाकिसन, दामोदर, गुलाबचंद, कासलीवाल आदि मिले। राधाकिसन बापू के साथ बंबई गया।

दामोदर, मीरां, मृदुला, मदन कोठारी मिलने आये। मीरां ने राजकोट की पढ़ाई पूरी करली। मृदु को देख खुशी हुई। राधाकिसन से बापूजी के स्वास्थ्य तथा प्रोग्राम के बारे में तथा वृन्दावन-सम्मेलन वगैरा का वर्णन सुना। प्रार्थना व भजन के बाद लोग वापस गये। मौन रखा।

६-६-३९, करनावतों का बाग

देशी रियासतों के बारे में बापूजी का स्टेटमेण्ट पढ़ा। जयपुर के अधिकारी इसका एक बार तो गलत मतलब लगायेंगे, लेकिन बापूजी जब जयपुर के बारे में खुलासा करेंगे, तब साफ हो जायगा।

८-६-३९, करनावतों का बाग

पू० बापूजी आज सेगांव (वर्धा) पहुंच गए होंगे।

१५-६-३९, करनावतों का बाग

राधाकिसन आज मिला। उसने बापूजी व अन्य मित्रों के समाचार कहे। जयपुर के बारे में बापूजी का स्टेटमेण्ट पढ़ा। चरखा काता।

२२-६-३९, करनावतों का बाग

रामेश्वरदासजी के पत्र में पू० बापूजी को छोटा-सा नोट भेजा। उसमें लिखा—

"राधाकिसन मिला । मेरी चिन्ता का कारण नहीं । मुझे जितना ज्यादा यहां रहने को मिलेगा, उतना ही मेरा तो लाभ है। साथ ही रचनात्मक कार्य को भी लाभ पहुंचेगा ।"

२५-६-३९, करनावतों का बाग

जून के 'सर्वोदय' में बापू के भाषण से—

१. "अपने प्रतिपक्षी से जल्दी समझौता करो ।"

२. "अगर किसीके बारे में तुम्हारे दिल में गुस्सा है तो उसपर सूर्य को न डूबने दो । सूर्यास्त के पहले ही उसके पास चले जाओ और उससे बातचीत कर लो ।"

मेरे लिए यह वाक्य वेद-वाक्य से कम कीमती नहीं है । यही अहिंसा की जड़ है । अहिंसा को हिंसा के मुंह में चले जाना है ।

ता० २५-६ के अखबार देखे । राजेन्द्रबाबू का भाषण, फारवर्ड ब्लाक के प्रस्ताव, बापू का स्टेट के बारे में खुलासा, अ० भा० कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव वगैरा पढ़े । जानकीदेवी के दौरे का वर्णन भी पढ़ा ।

५-७-३९, करनावतों का बाग

किशोरलालभाई का पत्र भिजवा दिया । दामोदर मिल गया । बापू के लिए संदेश दिया । डॉ० विलियम्सन का जवाब तथा दिल्ली वगैरा के बारे में बातें हुई ।

२-८-३९, करनावतों का बाग

आज दोपहर को स्वप्न आया कि महादेवभाई व पू० बापू मुझे देखने आये । स्वास्थ्य व जयपुर की स्थिति पर बातचीत । बाद में वह ए० जी० जी० (राजपूताना रेज़ीडेण्ट) से मिलने जाने की तैयारी करने लगे । इतने में आंख खुल गई ।

९-८-३९, करनावतों का बाग

बापू का तार आया । उन्होंने डॉ० भरूचा को[1] महादेवभाई के साथ

---

[1] **जमनालालजी ९-८-३९ को ही नजरबंदी से छूट गए थे, पर १२ ता० तक करनावतों के बाग में ही रहे थे ।**

भेजने को लिखा। इजाजत मांगकर रखने का लिखा है। मैंने तार भिजवा दिया कि अभी न भेजें।

१२-८-३९, करनावतों का बाग

करीब १॥ बजे कपूरचंदजी पाटनी व देशपांडेजी आये। वर्धा से बापू का फोन आया है। उन्होंने मुझे वहां जल्दी बुलाया है। बापू मुझे डॉ० विधान को दिखलाना चाहते हैं। सरदार, राजेन्द्रबाबू भी वही हैं।

१३-८-३९, वर्धा

वर्धा-स्टेशन पर राजेन्द्रबाबू (राष्ट्रपति), सरदार, कृपलानी, पट्टाभि, देव, शंकरलाल, पू० बा, महादेवभाई तथा कांग्रेस, म्युनिसिपल कमेटी, महिला विद्यालय आदि के मित्र लोग प्रेम से आये। मन में भावना जागृत हुई। किशोरलालभाई व जाजूजी आदि भी थे। प्रोसेशन की तैयारी की थी। मैंने इन्कार कर दिया।

सरदार, महादेवभाई व बा के साथ सेगांव गया। प्रार्थना में शामिल हुआ। बाद में पू० बापू को स्वास्थ्य तथा जयपुर की स्थिति आदि का थोड़े में वर्णन सुनाया। रास्ते में सरदार तथा महादेवभाई को भी सुनाया। वापस घर आया।

आज यहां बहुत दिनों के बाद बरसात होने से सबको खुशी हुई, बापू को भी। वर्किंग कमेटी ने सुभाषबाबू बोस के बारे में प्रस्ताव किया। लड़ाई के समय कांग्रेस की नीति क्या होगी, उस बारे में भी। जवाहरलाल का पूरा सहयोग था। जवाहरलाल सुभाष बोस के लिए एक वर्ष चाहते थे। लड़ाई के प्रस्ताव का मसविदा जवाहरलाल का था; सुभाष बोस के संबंध का बापू का। देर तक बात होती रही। मेरा त्यागपत्र स्वीकार नहीं हुआ।

१४-८-३९, वर्धा

जवाहरलाल को कमल के बारे में पत्र भेजा। जयपुर-प्रोग्राम आदि का पत्र भेजा। बापू ने कमल को चीन जाने की सलाह नहीं दी।

१८-८-३९, बंबई

होमियोपैथीवाले डॉ० दास से देर तक बातचीत। उन्होंने कहा कि

में उनकी दवा ले सकूं तो मुझे लाभ पहुंच सकता है। बापू से सलाह करके एक महीना लेकर देखने का विचार है।

१९-८-३९, वर्धा

बापूजी के पास सेगांव गया। बापूजी ने डॉ० भरूचा, डॉ० जीवराज व डॉ० मेहता की रिपोर्ट ध्यानपूर्वक सुनी। विचार-विनिमय के बाद पूना रहकर डॉ० मेहता की देखरेख में इलाज कराने की सलाह बापू ने दी। जयपुर जाना जरूरी है। इसलिए एक महीने तक इच्छा हो तो डॉ० दास का होमियोपैथी के इलाज करके देख लूं। बापू ने कहा कि अनाज खाना एक बार बंद कर दो। फल, साग और दूध लेने की सलाह दी।

आज से यह शुरू किया है।

२०-८-३९, वर्धा

बापू के पास जाकर आया। १॥ बजे २ बजे तक जयपुर व स्वास्थ्य के संबंध में बातचीत।

जयपुर के बारे में (प्रजामंडल के) नाम में थोड़ा परिवर्तन करना जरूरी मालूम दे तो कर लिया जाय। जयपुर राज्य प्रजा-मंडल के पदाधिकारी दूसरी राजनैतिक संस्था के मेंबर न हों, यह बात बिल्कुल स्वीकार न की जाय। अगर अधिकारी लोग लड़ना ही चाहें तो अपन लड़ेंगे। थोड़े चुने हुए साथियों को लेकर मुझे (जमनालाल को) स्वास्थ्य व संचालन के लिए बाहर रहना जरूरी होगा। त्रावणकोर में सत्याग्रह करने की बापू इजाजत देनेवाले हैं। बाहर के लोगों की सलाह सहायता देने के विरोध में हैं, यह मैंने बापू से कहा। दीपक-राधा आदि व मेरे त्यागपत्र, कांग्रेस-सभापति, गांधी-सेवा-संघ-सभापति आदि विषयों पर भी विचार-विनिमय।

२२-८-३९, वर्धा

सेगांव गया। रानी विद्यादेवी व उनकी लड़की तारादेवी से उर्मिला ने परिचय करवाया। बापू से जयपुर, उमा की सगाई, नागपुर बैंक, महाराजा बीकानेर, बालकोबा वगैरा के बारे में व कलकत्ता होकर जयपुर जाने के बारे में बातचीत।

२५-८-३९, वर्धा

आगरावाले श्री राजनारायण विनोबा के पास कमल के साथ गये। बाद में बापू से उन्हें व उमा को मिलाकर लाया। बापू ने राजनारायण को उमा के लिए उपयुक्त समझा। वहां पू० बा, राजकुमारी, मीराबेन व आशाबहन ने भी देख लिया। जानकी साथ में थी। सुबह किशोरलाल भाई व जाजूजी ने देखा था।

आज दूध-फल पर सातवां रोज है। तीन रोज से प्राय: भूख बंद-सी हो गई है। बापू ने दो रतल मौसम्बी का रस, एक रतल अंगूर का रस, कम-से-कम दो रतल दूध, खजूर बीस व साग-फल लेने को कहा। सोडा दूध में भी ले सकते हैं।

बापू से हैदराबाद की वर्तमान स्थिति कही। श्री काशिनाथ राव के बारे में भी कहा कि अब वही वहां के नेता रहेंगे।

श्री राजनारायण व उमा की आज ठीक से बातचीत हो गई। उमा ने कहा, मुझे पूरा संतोष हो गया है। बाद में पू० विनोबा व बापूजी की राय जानी। उन्हें भी पसंद आ गया।

विनोबा व बापूजी के समक्ष संबंध निश्चित हो गया। उन्होंन आशीर्वाद दिया। बाद में रात को कुटुंब के लोगों ने देख लिया। गुड़ वगैरा बांट दिया।

२९-८-३९, कलकत्ता

शरत बोस से करीब एक घंटे तक दिल खोलकर बातचीत। सुभाषबाबू किस प्रकार गलत रास्ते जा रहे हैं, यह उनसे कहा। उन्होंने भी मेरे विचार व योजना पसंद की कि वे बापू से दिल खोलकर बात कर लें व उनकी आज्ञा के अनुसार व्यवहार रखें। उन्हें खुद फारवर्ड ब्लाक पर विश्वास नहीं है। सर सुल्तान, डॉ० विधान राय वगैरा के बारे में कहा।

२-१०-३९, जयपुर

गांधी-जयंती के निमित्त आजाद-चौक में आम सभा। २००० रु० की थैली प्रजा-मंडल के लिए मिली। बापू के जीवन से हम क्या ले सकते हैं, इस संबंध में भाषण।

३-१०-३९, दिल्ली

सरदार वल्लभभाई व राजेन्द्रबाबू से देर तक बातचीत करता रहा। पं० जवाहरलाल और मौलाना से मिलना व विनोद।

बापू से जयपुर के प्राइम मिनिस्टर व वहां की हालत के बारे में बातचीत।

राजेन्द्रबाबू व जवाहरलालजी वाइसराय लार्ड लिनलिथगो से करीब सवा दो घंटे मिलकर आये। उन्होंने उसका हाल सुनाया।

सुभाष बोस ने बैरिस्टर जिन्ना से बात करते समय बापू के चरित्र पर जो दोष लगाया, वह जिन्ना ने अन्य मित्रों से कहा। बापू से यह जानकर दुःख हुआ व चोट पहुंची।

४-१०-३९, दिल्ली

बापू से बातचीत—जयपुर के प्रोग्राम के बारे में मार्च महीने में जाने का निश्चय। जयपुर के दीवान के बारे में सर जगदीश से जो बातें हुई, वे बताई। सर जगदीश तो देशी रियासत में जाना पसंद नही करते। सर भोर भोपाल में है। वह नही जायंगे, यह कहा। व्यक्ति अच्छे व योग्य हैं। इसके अलावा ई० राघवेन्द्रराव, गोपालस्वामी आयंगर—ये नाम भी उन्होंने पसद किये। वह सर बर्नर्ड ग्लेन्सी से बात करेंगे।

लड़ाई के बारे में सर जगदीश को बापू की नीति पसंद थी।

मौलाना ने वाइसराय से मिलने के बारे में बापू से इनकार कर दिया। बापू को बुरा लगा। बापू ने मौलाना को समझाया। मुझे तो मौलाना के कहने में सार मालूम हुआ।

बापू से शाम की प्रार्थना के बाद खानगी में अपनी कमजोरी का पूरा चित्र खोलकर कहा। उन्होंने हिम्मत व उत्साह दिया।

५-१०-३९, दिल्ली से वर्धा जाते हुए

बापू से बातचीत। जुगलकिशोरजी व घनश्यामदासजी से बातें। घनश्यामदासजी का आग्रह रहा कि मुझे रहने का मुख्य स्थान जयपुर बना लेना चाहिए। बापू की भी राय तो यही रही, परंतु पहले तो स्वास्थ्य का प्रश्न है।

बापूजी वाइसराय से मिलकर आये। बापूजी, सरदार, जवाहरलाल राजेन्द्रबाबू, मौलाना, कृपलानी के साथ वर्धा रवाना।

६-१०-३९, रेल में

भेलसा में उठा। भोपाल में शुएब कुरेशी व उनकी पत्नी बापू से मिलने आये।

बापू व जवाहरलालजी मे इलाज के बारे मे बातचीत। बापू ने तो मलबारी (मालिश) के बारे मे मना किया। बड़ौदा के माणिकरावजी वाले तथा अन्य मसाज के लिए भी मना किया। डाक्टरों के, याने एलोपैथिक, इलाज के लिए भी इनकार किया।

उनकी राय, डाक्टर मेहता का या दिल्लीवाले महादेवभाई के परिचित वैद्य आनन्दस्वामी का इलाज करके देखने की है। जवाहरलालजी ने अपने भाई से, जो अभी यूरोप मे आये है और आजकल शायद पीलीभीत मे हैं, पूछने को कहा।

बापू की वाइसराय से जो बात हुई, उसमे कोई संतोषकारक परिणाम निकलने की आशा नही मालूम हुई। शाम को वर्धा पहुंचे।

७-१०-३९, वर्धा

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ९ से ११ तक। दोपहर को २ से ७॥ तक हुई। कई मेम्बरों से जयपुर-जेल के बाद पहली बार मिलना हुआ। प्रेमानुभूति। दोपहर की बैठक में बापू से युद्ध तथा वर्किंग कमेटी की नीति के बारे मे चर्चा व खुलासा। बापू के जाने के बाद की चर्चा मे मालूम हुआ कि बापू का समर्थन करनेवाले जयरामदास दौलतराम, शकरराव देव व प्रफुल्ल घोष ही रहे होंगे। राजेन्द्रबाबू भी थोड़े थे। सरदार, भूलाभाई वगैरा तो प्रस्ताव के पक्ष में थे, याने बापू सरकार को पूरी मदद करें। बापू ने वाइसराय से जो कुछ कहा, सरदार तो उसपर से दुखी भी मालूम हुए।

८-१०-३९, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व १२ से २ तक हुई। दोपहर की वर्किंग कमेटी में बापू का खुलासा ठीक रहा। लड़ाई के समय अगर ब्रिटिश सरकार ने वर्किंग कमेटी की मांग मंजूर कर ली तो बापू का व्यवहार क्या रहेगा, इस

बात का खुलासा ठीक हुआ। बापू को चोट तो खूब पहुंच रही है, परंतु उपाय क्या !

देशी राज्य प्रजा-परिषद् की कार्यकारिणी जवाहरलालजी के सभापतित्व में हुई। वहां दस बजे रात तक बैठना पड़ा। जवाहरलाल का स्टेटमेंट ठीक हुआ। मेरे बारे में भी उन्होंने जिक्र किया कि वर्किंग कमेटी यह कार्य मुझे सौंपना चाहती है। बापू ने मुझे जब यह कहा था तो मैंने कहा कि मेरी अभी तैयारी नहीं है।

११-१०-३९, वर्धा

बापू के पास वल्लभभाई के साथ सेगांव गया। वल्लभभाई से जयपुर वगैरा की बातें।

बापू से स्टेट के मामलों पर वर्किंग कमेटी की थोड़ी चर्चा। बापू स्टेट पीपुल्स की स्टैंडिंग कमेटी के साथ एक घंटा बैठे।

१३-१०-३९, वर्धा-नागपुर

हीरालालजी शास्त्री, सीतारामजी सेक्सरिया, सीतारामजी पोद्दार व मदालसा के साथ सेगांव जाकर बापू से मिला। बापू ने मेरे लिए कहा कि डॉक्टर लक्ष्मीपति की राय लेना बहुत जरूरी है। उन्हें भी दिखाया।

१४-१०-३९, वर्धा

बापू से मिला। भारती व जयरामदास भी साथ थे। डाक्टर लक्ष्मीपति की रिपोर्ट पढ़ी। डॉक्टर मेहता का ही इलाज कराने की बापू की राय रही।

१५-१०-३९, वर्धा

राजाजी दिल्ली से आये। उनके साथ बापूजी के पास सेगांव गया। जयरामदासजी भी साथ थे। राजाजी दिल्ली में वाइसराय से दो बार मिले। उसका हाल उन्होंने सुनाया। उन्हें कांग्रेस से झंझट न हो, इस बारे में २५ टका उम्मीद है। आगे चलकर तो उन्हें संघर्ष आता दिखाई देता है। असेम्बली के प्रस्ताव में थोड़ी दुरुस्ती वाइसराय ने बतलाई। वह स्वीकार हुई। उसके अनुसार सरदार वल्लभभाई को व श्रीकृष्णसिंह, मुख्यमंत्री बिहार, को टेलीफ़ोन कर दिये गए।

४-११-३९, पूना

रेडियो व अखबार की खबरें सुनीं। बापू व जिन्ना आज वाइसराय से फिर मिले। बापू वर्धा रवाना हुए। थोड़ी उम्मीद दिखाई देती है।

६-११-३९, पूना

आज १२ बजे वर्धा से दामोदर का तार आया। आशादेवी आर्यनायकम् का लड़का बब्नी कल शाम को एकाएक चल बसा। तार पढ़कर दुःख हुआ। चोट पहुंची। सरलाबहन यहीं थी। शाम को उसे भी समझाया। बापू का तार भी मिला। आशाबहन को तार दिये। पत्र भी लिखा। बापू को भी पत्र लिखा। मन में थोड़ा विचार चलता रहा।

२७-१२-३९, पूना

राजकुमारीजी का लिखा हुआ बापू का पत्र आया—जयपुर की स्थिति के बारे में। तार भेजा।

पत्र का मसविदा तैयार हुआ।

३०-१२-३९, पूना

वर्धा से कमलनयन व हीरालालजी शास्त्री आये। बापू से जयपुर के बारे में उनकी जो बातचीत हुई, वह सुनी।

डायरी के अंश

१९४०

२४-१-४०, वर्धा

राजकुमारी अमृतकौर से बातचीत । बापू का मौन ।

बापू के पास गया । उन्हें स्वास्थ्य आदि के समाचार कहे । किशोरलाल-भाई, जयरामदास, कृष्णदास, परचुरे शास्त्री, आशानायकम् वगैरा मित्रों से मिला और बातचीत की ।

२६-१-४०, वर्धा (स्वतंत्रता-दिन)

स्वतंत्रता-दिन के निमित्त ध्वज-वन्दन । गांधी-चौक में महादेवभाई का व्याख्यान ठीक हुआ ।

बापू से मिला । उन्हें जयपुर का तार बताया । वह वाइसराय से बात करेंगे । गांधी-सेवा-संघ के बारे में व सेगांव की जमीन, ग्रामोद्योग-संघ, आदि पर विचार-विनिमय ।

किशोरलालभाई से गांधी-सेवा-संघ आदि के बारे में विचार-विनिमय । जयरामदास दौलतराम, आशानायकम् आदि से मिलना व बातें ।

२७-१-४०, पूना

सरलाबहन का इलाज व क्लीनिक का खर्च, फीस वगैरा के बारे में बापूजी जो फैसला करेंगे, वह ठीक रहेगा ।

२९-१-४०, पूना

जयपुर के बारे में बापूजी को पत्र भेजा ।

३१-१-४०, पूना

हीरालालजी के नाम का जयपुर का पत्र पढ़ा । राजा ज्ञाननाथ का व्यवहार व वकीलों का भीतियुक्त जवाब पढ़कर दुःख व चिन्ता । जयपुर जाकर बैठना ही कर्तव्य दिखाई देता है । बापू को तार भेजा । डॉक्टर से बातचीत ।

१-२-४०, पूना

बापू का तार आया। उन्होंने अभी जयपुर जाने को मना किया है। चिन्ता छोड़कर इलाज करने को लिखा। फिर भी जयपुर जाने का विचार मन से निकाल नहीं सका। कल हीरालालजी आयंगे। बापू का पत्र भी आयगा। तभी अधिक सोचा जा सकेगा।

२-२-४०, पूना

हीरालालजी शास्त्री आये। उनके साथ जयपुर की स्थिति के बारे में देर तक विचार-विनिमय। पू० बापू का पत्र पढा। जयपुर अभी न जाने के बारे में उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ेगा, परन्तु उससे मन मे संतोष नही हुआ।

६-२-४०, पूना

बापूजी की व वाइसराय की मुलाकात संतोषकारक नही हुई। हीरालालजी शास्त्री का तार आया कि मेरा पत्र व स्टेटमेंट बापू ने पसन्द किया।

२३-२-४०, पूना

जयपुर के प्राइम मिनिस्टर को तार भेजा। बापूजी व घनश्यामदासजी को भी तार भेजे। जयपुर-प्रजामंडल को भी।

२६-२-४०, वर्धा

सेगाव गया। राजकुमारी अमृतकौर व सुशीला से मिलकर वहां की स्थिति समझी। इनकी तो राय थी कि बापू यहा न आकर उधर ही आराम करते तो ठीक था।

२८-२-४०, कलकत्ता

पू० बा, किशोरलालभाई, गोमतीबहन, सुरेन्द्रजी व प्यारेलाल से लोयलका-हाउस में मिलकर आया। बा को आज ज्वर नही है। किशोरलाल-भाई को टी० बी० का संशय सुना। उससे चिन्ता हुई। उनसे गांधी-सेवा-संघ की तथा अन्य बातें कीं।

२९-२-४०, पटना

पहुंचते ही बापू से मिलकर जयपुर की स्थिति पर वातचीत की। उनकी राय में भी मेरा जयपुर शीघ्र चला जाना ही ठीक रहेगा। कहा कि वहां की

स्थिति देखकर, वहां रहना जरूरी मालूम दे तो वहां रहूं। रामगढ़ न आऊं तो भी हर्ज नहीं। अपनेको आगे होकर तो लड़ाई शुरू नहीं करनी है। स्टेटवाले लड़ना ही चाहते हों तो कोई उपाय नहीं, इत्यादि।

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ व २ से ६ व ७ से ८॥ तक होती रही। सबों से मिलना हुआ। बापूजी व जवाहरलालजी के प्रस्ताव पर ठीक तौर से विचार-विनिमय हुआ। कल व आज की चर्चा के बाद जवाहरलालजी दूसरा प्रस्ताव बनाकर लाये।

१-३-४०, पटना

बापूजी से मिलकर थोड़ी बातें की।

वर्किंग कमेटी की बैठक ८॥ से ११ तक हुई। मुख्य प्रस्ताव एकमत से स्वीकार हुआ। पू० बापू को भी पूरा संतोष रहा। शाम को भी थोड़ी देर वर्किंग कमेटी की बैठक हुई।

बापूजी, सीतारामजी, हीरालालजी कलकत्ता गये।

१४-३-४०, रामगढ़-कांग्रेस

सुबह निवृत्त होकर बापू के पास उनके थर्ड क्लास के डिब्बे में गया। बापू से बातें—

(१) अभयंकर-स्मारक, नागपुर की इमारत के बारे में पूनमचंदजी रांका यह समझे थे कि आपने अभी न बनाने की राय दी है। मैंने उन्हें सब स्थिति समझाई, तो उन्होंने बनाने की इजाजत दे दी।

(२) जयपुर रहना हो सके तो वहां रहना ठीक रहेगा। बापू ने मेरे प्रश्न का खुलासा किया व देशी रियासतों के बारे में अपनी कल्पना कही। वाइसराय लार्ड लिनलिथगो से जयपुर के दीवान के लिए योग्य व्यक्ति की नियुक्ति के बारे में जो बातें हुईं, वे उन्होंने कहीं। मै जयपुर रहना निश्चित करूं तो उन्हें पसन्द है।

(३) कॉमर्स कालेज के प्रिंसिपल के लिए बापू मलकानी को लिखेंगे। बापू को शंकर (सतीश) कालेलकर ज्यादा पसन्द है। बापू समझते है कि वह ठीक काम कर सकेगा।

(४) महिला-आश्रम के लिए राजकुमारीजी को समझाने का बापू ने कहा।

(५) अपनी मनःस्थिति के बारे में मैंने कहा कि उसमें विशेष सुधार नहीं। खुलासेवार बातें बाद में करने का तय हुआ।

१५-३-४०, रामगढ़-कांग्रेस

बापू के साथ घूमते हुए देर तक बातचीत। सरदार व भूलाभाई भी साथ थे। भूलाभाई ने दिल्ली का अनुभव व वहां का वातावरण बतलाया।

१६-३-४०, रामगढ़-कांग्रेस

पू० बापू से सुबह घूमते समय एक घंटे बातचीत। उनके विचार जाने।

१७-३-४०, रामगढ़

बापू के साथ घूमते हुए एक घंटा बातचीत। विचार-विनिमय।

१८-३-४०, रामगढ़

कल वर्किंग कमेटी की चर्चा का मुझ पर जो असर हुआ, वह बापू से घूमते समय कह दिया।

दोपहर को बापू की उपस्थिति में वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। बापू को जवाबदारी से मुक्त करने के प्रस्ताव का मौलाना, सरदार, जवाहरलाल वगैरा ने विरोध किया। मैं मुक्त करने के पक्ष में था। प्रफुल्लबाबू, देव, पट्टाभि, राजाजी की राय भी मेरे साथ थी।

सब्जेक्ट कमेटी की बैठक हुई। मुख्य प्रस्ताव, अच्छी तरह वाद-विवाद व चर्चा होने के बाद भारी बहुमत से पास हुआ। सब्जेक्ट कमेटी में बापू का भाषण हुआ।

१९-३-४०, रामगढ़

बापू के यहां २ से ३ बजे तक हिन्दी-प्रचार की कार्यकारिणी की बैठक हुई।

हैदराबाद-डेपुटेशन बापू से मिला। खेर व रामनाथ पोद्दार बापू से मिले। उन्होंने 'आनन्दीलाल पोद्दार आयुर्वेद विद्यालय' खोलने की इजाजत बापू से ले ली।

बापू के कहने से रात की ८ बजे की गाड़ी से वर्धा रवाना हुए। वर्षा जोरों की थी।

२२-३-४०, वर्धा

बापू रामगढ़ से आये। उनके साथ बंगले तक पैदल आया। घुटने में थोड़ा दर्द तो था ही। बापू ने मां के कान पकडे; मां ने बापू के कान पकड़े। खूब हँसी-विनोद रहा।

२४-३-४०, वर्धा

सेवाग्राम में बापू से मिलना व बातचीत। फातिमा इस्माइल ने कुरान की आयतें पढ़कर सुनाईं। रेहानाबहन ने भजन गाये।

२८-३-४०, वर्धा

बापू से सेवाग्राम जाकर मिल आया। जयपुर व बम्बई की चर्चा। दोपहर को घनश्यामदासजी व राजाजी बापू के पास गये।

३०-३-४०, वर्धा

सेगांव जाकर बापू से जयपुर के बारे में खुलासेवार बातचीत व विचार-विनिमय। व्यक्तिगत सत्याग्रह की जरूरत हो तो करने की इजाजत।

तारा मश्रूवाला-संबंधी चर्चा। किशोरलालभाई, गोमतीबहन भी मौजूद थीं। मैंने अपने मन की बात कही। बापू के साथ घूमने में और लोग भी साथ हो गए थे, इसलिए साफ बातें न हो सकीं। मन में विचार रहा।

प्रार्थना के बाद बापू का भाषण खादी-यात्रा में हुआ।

२४-४-४०, जयपुर

महाराजसाहब जयपुर से ११ बजे मिलना हुआ। पत्रों के सेंसर, पुलिस के व्यवहार के बारे में बातें हुईं। ज्ञाननाथजी ने गजट बराबर नहीं निकाला। जकात-रिपोर्ट, मातादीन वगैरा पर मुकदमे, खादी, जोधपुर, महात्माजी को जलसे में बुलाना आदि के विषयों पर अपने मन के भाव स्पष्ट तौर से कहे। महाराजसाहब ने नोट करा लिये। ता० १ को २ बजे फिर मिलने पर इनके बारे में जवाब देने को कहा। राजा ज्ञाननाथजी के साथ पटरी नहीं बैठती दिखाई देती, यह भी मैंने कह दिया।

२-५-४०, जयपुर

१२॥ से १॥। तक महाराजसाहब से मिलना हुआ। मैंने नोट्स लिख-

कर दे दिये। उन्होंने पढ़ लिये। उसपर ठीक से खुलासा किया गया। नीचे लिखे प्रश्नों पर चर्चा हुई--

१. पत्र अभीतक सेंसर होते है। आज से नहीं होंगे, ऐसा रेसिडेंट कहते है--ऐसा प्राइम मिनिस्टर ने कहा। उनसे वे बात कर लेंगे।

२. प्राइम मिनिस्टर से जो वाद-विवाद चल रहा है--उसे आप निपट लेंगे।

३. मातादीन वगैरा पर जो झूठे मुकदमे चल रहे है, उनकी वे जांच करेंगे। प्राइम मिनिस्टर ने कहा कि कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

४. प्राइम मिनिस्टर की दमन-नीति कई उदाहरण लेकर बताई। महाराजासाहब ने नोट कर लिया। उनसे बात करेंगे।

५. जकात-रिपोर्ट मंजूर होना जरूरी है। इसे नोट कर लिया। इस संबंध में सहानुभूति दिखाई।

६. खादी-खरीद में सहायता देना। प्राइम मिनिस्टर से बात हो गई है। सब डिपार्टमेंटों में सूचना भेजी जायगी--जयपुर की बनी हुई खादी महंगी होगी तो भी।

७. जोधपुर-समझौते के संबंध में अभी जवाब नही आया।

८. महात्माजी को बुलाने के संबंध में और उनको स्टेट का गेस्ट बनाने में पोलिटिकल डिपार्टमेंट को आपत्ति है।

९. रावराजाजी को सीकर भेजने के बारे में नोट कर लिया। रेसिडेंट से बात करके जवाब देंगे।

११-५-४०, वर्धा

सेवाग्राम में भोजन करते समय बापू को जयपुर की सारी स्थिति समझाई। आखिर में घनश्यामदासजी की सलाह से डॉ० कैलासनाथ काटज व रामेश्वरी नेहरू को बापू ने तार भेजा। महादेवभाई को भेजने की भी बातचीत हुई। शाम को वापस वर्धा आया। दिन-भर वहीं रहा। आराम किया।

१२-५-४०, वर्धा

बापू से सेवाग्राम जाकर मिल आया। जयपुर के लिए सन्देश लाया।

डॉ० काटजू का जयपुर-प्रदर्शिनी खोलने का तार आया। जाजूजी, राधाकिसन आदि से खादी-कार्य, खासकर राजपूताना की स्थिति समझी।

१५-५-४०, जुहू-बम्बई

घूमते समय बालचन्द हीराचन्द व सर होमी मोदी से बातचीत हुई। मोदी से गांधीजी का व मेरा सम्बन्ध कैसे बढ़ा, उस बारे में भी बातें हुईं।

बंबई खादी-भंडार में सरदार से मिलना हुआ।

२०-५-४०, जुहू

डॉ० लेमली ने दोनों कान साफ किये। तीन बार के २०) रुपये फीस ली। मैंने उन्हें कहा कि हिन्दुस्तान के रचनात्मक कार्य में आप लोगों को महात्माजी की सहायता करनी चाहिए।

५-६-४०, जुहू

दामोदर के साथ किशोरलालभाई से मिला। बापू के उपवास की बात उन्होंने कही। राधाबहन का पत्र किसीने फाड़कर फेंक दिया। गांधी-सेवा-संघ की चर्चा। आश्रम का तनसुख भट्ट मिला।

१५-६-४०, वर्धा

वर्धा के कॉमर्स कालेज के बारे में आज का प्रायः बहुत-सा समय विचार-विनिमय में गया। टंडनजी, बापूजी, जाजूजी आदि से अलग भी विचार-विनिमय हुआ।

सेवाग्राम गया। बापू को सर पुरुषोत्तमदास की स्कीम दी। थोड़ी बातें हुईं। जाजूजी साथ में थे। वहां से जल्दी ही लौट आया।

१७-६-४०, वर्धा

जवाहरलालजी, स्वरूप (विजयालक्ष्मी पंडित), राजेन्द्रबाबू आदि १८ लोग आये। बापूजी २ बजे आये।

वर्किंग कमेटी ३॥ से ८ तक हुई। बापू आदि के साथ पैदल दो मील घूमना हुआ। बापू कांग्रेस से उसके सलाहकार के रूप में अलग होना चाहते हैं।

१८-६-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ७॥ से १०॥ और २। से ७ तक होती रही। बापूजी २। से ७ बजे तक रहे। सुबह कृपलानी से बिना कारण बोलचाल हो गई। शाम को बापू ने अपने विचार कहे।

बापू के साथ १।। मील पैदल घूमना हुआ। रूई-सिंडिकेट के बारे में बातचीत। उन्होंने कहा कि इसमें नैतिक दोष नहीं है। स्वरूप पंडित भी साथ थीं।

१९-६-४०, **वर्धा**

वर्किग कमेटी सुबह ८ से शुरू हुई। शाम को २। बजे से। पू० बापूजी की इच्छा के अनुसार उन्हें मुक्त करने का निश्चय।

२०-६-४०, **वर्धा**

वर्किग कमेटी सुबह ८ से १०।। व दोपहर को २। से ७ बजे तक होती रही। मुख्य प्रस्ताव पर महत्त्व की चर्चा व विचार-विनिमय। काफी गंभीर स्थिति पैदा हुई। आज चरखा नहीं काता।

२१-६-४०, **वर्धा**

बापूजी का गांधी-सेवा-संघ व चरखा-संघ की बैठक में ७ से ९ बजे तक व्याख्यान हुआ।

वर्किग कमेटी ९ से १०।।। तक हुई। मैंने कहा कि इस समय हम लोगों का अलग होना ठीक नहीं। बापू की योजना जब अमल में आयगी तब जिसकी जितनी तैयारी हो, वह उसमें शामिल हो जाय। मैंने प्रस्ताव में कोई भाग नहीं लिया। शाम को बापूजी बैठक में आये। मुख्य प्रस्ताव पास हुआ। हिन्दू-मुस्लिम-एकता की चर्चा। मौलाना से जो बातचीत हुई, वह कही।

२२-६-४०, **वर्धा**

बापू ने चरखा-संघ व गांधी-सेवा-संघ की बैठक में दो घंटे से ज्यादा देर तक अपने विचार रखे। बाद में चर्चा होती रही। मैंने भी वर्किग कमेटी की ओर से थोड़ा खुलासा किया। मेरी समझ से वह महत्त्व का था।

राष्ट्रभाषा हिन्दी-प्रचार-सभा की बैठक हुई। बापूजी, राजेन्द्रबाबू, काकासाहब आदि उपस्थित थे। मैंने कहा कि काकासाहब न तो अलग संस्था बनाते हैं और न ही बनी हुई यहां की सोसायटी से सम्बन्ध रखते हैं। इससे आगे चलकर गलतफहमी या झगड़े का डर है। बापू वगैरा ने कहा कि जगह (इमारत) के बारे में कोई झगड़ा नहीं होनेवाला है।

२६-६-४०, **वर्धा**

बैरिस्टर रशीद, होम-मिनिस्टर इन्दौर व डॉ० काटजू के साथ सेवा-

ग्राम में बापू से मिलना हुआ। बातचीत। वापस आते समय मोटर कीचड़ में फंस गई। सबको दो मील के करीब पैदल चलना पड़ा।

२७-६-४०, वर्धा

पू० बापूजी, बैरिस्टर रशीद, महादेवभाई, कनु, प्यारेलाल व सुशीला दिल्ली व शिमला को रवाना हुए। बापू से बातचीत।

२-७-४०, दिल्ली

बिडला-हाउस में ठहरे। बापू को बताया कि गोविन्दराम सेक्सरिया से कॉमर्स कालेज के लिए सवा लाख मिल गया। पचीस हजार और मिल जायगा, उन्हें खुशी हुई। घनश्यामदासजी को आश्चर्य हुआ व खुशी भी हुई।

३-७-४०, नई दिल्ली

बापू के साथ घूमना हुआ। स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेंस में जो नये मेम्बर लिये, वे उन्हें बताये। सेक्रेटरी के बारे में बातचीत। बलवंतराय मेहता को तो भावनगर ही रखना है। बापू ने दामोदर का नाम भी सुझाया। देर तक चर्चा होती रही। सरदार भी चर्चा में शामिल थे। ओरियंटल बीमा कंपनी व खादी-सहायता, नया चुनाव आदि के बारे मे बातें हुईं। भूलाभाई व खादी-सहायता के बारे में बापू बात करेंगे।

पू० मालवीयजी महाराज को बहुत समय बाद आज देखा। उनके पास आध घंटा बैठा।

वर्किंग कमेटी सुबह इन्फार्मल ९ से १०॥ व दोपहर को २ से ६॥। तक होती रही। वाइसराय व बापू की मुलाकात का हाल, उसपर तथा वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय।

प्रतापनारायणजी अग्रवाल (आगरावाले) मिलने आये। उमा का विवाह इसी ता० १३ को करने को तैयार। बापू से उनको मिलाया। उन्होंने भी कहा कि कर दिया जाय।

५-७-४०, नई दिल्ली

वर्किंग कमेटी ८॥ से १०॥ और २ से ७ तक हुई। बापू, राजाजी व जवाहरलाल के विचारों पर विचार-विनिमय होता रहा। निश्चित फैसला नहीं हो सका।

६-७-४०, नई दिल्ली

सुबह बापू के साथ घूमा। वर्किंग कमेटी ८॥ से १०॥ व २ से ६॥ तक। राजाजी के प्रस्ताव पर खूब विचार-विनिमय। मेम्बर तथा निमंत्रित सज्जनों की राय ली गई।

आज वर्धा जाने के लिए इजाजत तो मिल गई, परन्तु मेरे जाने के बारे में पू० बापू की इच्छा कम थी। जवाहरलालजी व राजाजी की तो साफ राय थी कि मैं न जाऊं। सामान स्टेशन से वापस मंगवाना पड़ा।

७-७-४०, नई दिल्ली

बापू के साथ सुबह घूमना हुआ। वर्किंग कमेटी व राजाजी के प्रस्ताव के बारे में विचार-विनिमय। बाद में सरदार भी आगए थे।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग में कल राजाजी के प्रस्ताव[1] के पक्ष में ये लोग थे—राजाजी, राजेन्द्रबाबू, डॉ० घोष, डॉ० महमूद, बैरिस्टर आसफ-अली, सरोजिनी नायडू, भूलाभाई और मैं।

विरोध में थे—सरदार वल्लभभाई, जवाहरलाल, शंकरराव देव, खानसाहब, कृपलानी।

गोविन्दवल्लभ पंत गैरहाजिर थे, किन्तु वह राजाजी के पक्ष में थे। मौलाना राजाजी के पक्ष में विचार रखते थे।

निमंत्रित लोगों में—डॉ० पट्टाभि राजाजी के पक्ष में थे और अच्युतराव व नरेन्द्रदेव विरोध में थे।

आज की मीटिंग में राजाजी के प्रस्ताव के पक्ष में—सरदार वल्लभभाई, राजाजी, भूलाभाई, आसफअली, डॉ० महमूद और मैं।

---

[1] **प्रस्ताव निम्न प्रकार है—**

"The Working Committee have noted the serious happenings which have called forth fresh appeals to bring about a solution of the deadlock in the Indian political situation; and in view of the desirability of clarifying the Congress position, they have earnestly examined the whole situation once again in the light of latest developments in world affairs."

विरोध में—जवाहरलालजी, खानसाहब और मौलाना।

तटस्थ—राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, शंकरराव देव, डॉ० घोष, सरोजिनी। निमंत्रितों में—पट्टाभि राजाजी के पक्ष में, नरेन्द्रदेव व अच्युत पटवर्धन विरुद्ध। पू० मालवीयजी राजाजी के पक्ष में राय रखते थे।

ग्रांड ट्रंक से थर्ड में बापू के डिब्बे में वर्धा के लिए रवाना।

८-७-४०, वर्धा

वर्धा पहुंचे। बापू का मौन वर्धा में खुला। स्टेशन से बंगले तक बापू के साथ पैदल। बापू ने मां के कान पकड़े, मां ने बापू के दोनों कान पकड़े। विनोद।

१२-७-४०, वर्धा

सेवाग्राम में रात को सियार ने भंसाली, मुन्नालाल, बाबला व पुलिस सिपाहियों को बुरी तरह से काट खाया। उनको अस्पताल में लाकर इंजेक्शन दिलवाया।

"The Working Committee are more than ever convinced that the acknowledgment by Great Britain of the complete Independence of India, is the only solution of the problems facing both India and Britain and are, therefore, of opinion that such an unequivocal declaration should be immediately made and that as an immediate step in giving effect to it, a provisional National Government should be constituted at the Centre, which though formed as a transitory measure, should be such as to command the confidence of all the elected elements in the Central Legislature, and secure the closest cooperation of the Responsible Governments in the provinces.

"The Working Committee are of opinion that unless the aforesaid declaration is made, and a National Government accordingly formed at the Centre without delay, all efforts at organizing the material and moral resources of the country for Defence cannot in any sense be voluntary or as from a free country, and will, therefore, be ineffective. The Working Committee declare that if these measures are adopted, it will enable the Congress to throw in its full weight in the efforts for the effective organisation of the Defence of the country."

१३-७-४०, **वर्धा**

उमा का विवाह-कार्य ७॥ बजे शुरू हुआ। वर्षा हो रही थी तो भी उपस्थिति ठीक थी। मंडप ठीक बना था। पू० बापूजी व बा ने आकर आशीर्वाद दिया। उमा व राजनारायण के लिए यह बड़े भाग्य व सुख की बात थी।

१४-७-४०, **वर्धा**

सेवाग्राम गया। बापू से बातें—खासकर खुरशीद, पवनार, नालवाड़ी के बारे में।

विनोबा से बातें। प्रार्थना।

१५-७-४०, **वर्धा**

खुरशीद बहन के साथ घूमने गया। उनसे कांग्रेस, फ्रंटियर, बापू, अहिंसा व उनके खुद के सम्बन्ध में बातचीत।

१८-७-४०, **वर्धा**

सेवाग्राम गया। लक्ष्मणप्रसादजी वगैरा साथ में थे। बापू से उनको मिलाया। बापू से बातचीत। ओझा, खुरशीदबहन, आगे का प्रोग्राम, अपनी मनःस्थिति, वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, खानपान, कान का दर्द आदि विषयों पर देर तक विचार-विनिमय। बा, आशाबहन व सरलाबहन से भी मिलना हुआ।

२८-७-४०, **पूना**

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी ८॥ से ११। तक व २ से ८॥ तक हुई। आज काम समाप्त हुआ। दिल्लीवाले प्रस्ताव पर मत लिये गए। पक्ष में ९५, विरोध में ४७। तटस्थ नहीं गिने गए। कुल मिलाकर उपस्थिति १९० के करीब होनी चाहिए। प्रस्ताव पास तो हुआ परन्तु मन में समाधान नहीं मिला। जवाहरलाल का भाषण ठीक हुआ। राजाजी का भाषण व जवाब तो ठीक था, परन्तु बापू के बारे में अव्यावहारिक आदि होने की जो समालोचना इन्होंने व सरदार ने की, वह थोड़ी बुरी मालूम दी। क्योंकि इन लोगों के मुंह से इन बीस वर्षों में पहली बार ही इस प्रकार के वाक्य सुनने को मिले। वैसे मेरी भी राय इनके साथ ही थी, परन्तु वह तो कमजोरी आदि के कारणों को लेकर थी।

६-८-४०, जुहू

बापू से मिला। काकासाहब व श्रीमन् साथ में थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्वरूप, प्रचार और व्यवस्था आदि के बारे में देर तक बातचीत व विचार-विनिमय।

७-८-४०, वर्धा

चि० मुन्नी (सुमन) का आज जन्मदिन था। मकान पर (बच्छराज-भवन में) बालकों के खेल-कूद हुए। पू० बा वगैरा आये थे। बाद में बा व दुर्गाबहन को सेवाग्राम पहुंचाया।

८-८-४०, वर्धा

सेगांव गया। जानकीदेवी व शान्ताबाई साथ में। बापू से वाइसराय के पत्र और स्टेटमेंट पर विचार-विनिमय। राजेन्द्रबाबू को जयपुर ले जाने के बारे में भी।

मीराबहन व पृथ्वीसिंह के बारे में बापू ने कहा कि यह सम्बन्ध कराना हम सबोंका धर्म हो गया है। अन्य बातें।

१०-८-४०, वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से खादी-योजना के बारे में, जो शांतिकुमार व डायाभाई पटेल कर रहे हैं, बात की। वे एक अपील तैयार करेंगे। उस-पर मेरी सही भी लेनेवाले हैं।

बापू के साथ वर्किंग कमेटी, जयपुर, मीराबहन, वासन्ती वगैरा के बारे में बातचीत।

हैदराबादवालों की बापू से जो बातचीत हुई, वह सुनी व समझी।

११-८-४०, वर्धा

मीराबहन बंगले आई। पृथ्वीसिंह के साथ अपना विवाह-सम्बन्ध करने का निश्चय बताया। न हुआ तो मृत्यु वगैरा की बात कही।

सेवाग्राम गया। बापूजी से बातें। वर्किंग कमेटी की बैठक होने के बाद जयपुर जाने का निश्चय। पृथ्वीसिंह व मीराबहन के बारे में उन्होंने बताया।

१४-८-४०, वर्धा

पू० बापूजी सेवाग्राम से आये। दत्तू दास्ताने, किशोरलालभाई, राजेन्द्र-बाबू आदि से मिले। देर तक ठहरे।

१५-८-४०, वर्धा

बालासाहब खेर, उनकी पत्नी, बहू व पूनावाली पार्टी से मिलना हुआ। उनकी व्यवस्था। साथ में भोजन।

पू० बापूजी सेवाग्राम से वर्धा आये। ३ बजे से ५ बजे तक पूना के मित्रों के प्रश्नों के उत्तर उन्होंने दिये। प्रश्न विशेषतया अहिंसा को लेकर थे।

१६-८-४०, वर्धा

सेवाग्राम गया, बापू को पृथ्वीसिंह की बातचीत का सारांश सुनाया। आशाबहन व सरलाबहन दीक्षित के साथ की बातों का हाल भी कहा।

१८-८-४०, वर्धा

सुबह घूमना हुआ। जानकीदेवी साथ में थी।

पृथ्वीसिंह ने उनकी व बापूजी की जो बातचीत हुई वह सारांश में कही। मैंने उन्हें अभी बापू के पास रहने के बारे में समझाया।

किशोरलालभाई से मिला। उनसे पृथ्वीसिंह-संबंधी आदि बातें।

सरदार, भूलाभाई, राजाजी, सरोजिनी, कृपलानी, सुचेता, देव, पट्टाभि वगैरा सुबह की गाड़ी से आये और जवाहरलाल व महमूद ४॥ की गाड़ी से। वर्किंग कमेटी २ बजे से शुरू हुई। बापूजी सेवाग्राम से आये। देर ७॥ बजे तक बातचीत व विचार-विनिमय होता रहा।

१९-८-४०, वर्धा

सुबह पैदल घूमना हुआ। पृथ्वीसिंह से बातचीत।

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ७ तक हुई। वाइसराय को पत्र भेज दिया गया। बापूजी के पास से उसे मैंने ठीक करवा लिया था।

२०-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ और २। से ७॥ तक हुई। दोपहर की मीटिंग में बापूजी आये। ठीक बातचीत व खुलासा।

बापूजी के साथ सेवाग्राम रेलवे-फाटक से करीब ढाई मील तक पैदल गया। बापूजी से वर्तमान वर्किंग कमेटी व कांग्रेस-स्थिति पर बातचीत, विचार-विनिमय। अहिंसक दल के बारे में मैंने अपने विचार बताये। सेना-रहित राज्य के बारे में बातें हुई।

२१-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ६॥ तक हुई। बापू दोपहर को २। बजे के करीब आये व ५ बजे के करीब सेवाग्राम चले गए। बापू का मसविदा पसन्द नहीं हुआ। मुझे लगा कि उसमें थोड़ा फर्क करना संभव होता, तो ज्यादा ठीक मालूम देता।

२२-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ तक हुई। अंत में मुख्य प्रस्ताव मंजूर हुआ। वर्तमान स्थितिवाले प्रस्ताव पर अच्छी तरह विचार-विनिमय।

शाम को २। से ६। बापू आये। आज बातचीत के सिलसिले में उन्होंने संकोच व दुःखी हृदय से अपनी मनोदशा, विचार व भावी प्रोग्राम (उपवास के बारे में) कहा। उसे सुनकर सब-के-सब चकित व किंकर्त्तव्य-विमूढ़ बन गए। मन में चिंता व विचार शुरू हुए।

खुरशीदबहन से मिलकर सेवाग्राम में बापू से, खासकर महादेवभाई से बापू की भयंकर योजना समझी। सरदार व राजेन्द्रबाबू से बातचीत। चिन्ता में ही सोया।

२३-८-४०, वर्धा

मौलाना, सरदार, जवाहर व मैं सेवाग्राम गये। बापू से बातचीत। चित्त को थोड़ा समाधान मालूम हुआ।

पवनार गया। विनोबा से मिलकर उन्हें स्थिति कही। शाम को विनोबा का बंगले आने का निश्चय। उनकी मदद मिलेगी।

स्टेशन पर सर बद्रीदासजी गोयनका से मिला। अम्बालालभाई नही आये। आसफअली दिल्ली गये।

नेशनल प्लानिंग की बैठक बंगले पर हुई। बापू आये।

बापू ने किशोरलालभाई के घर विनोबा, किशोरलालभाई, जाजूजी, काकासाहब आदि से अपनी भावी योजना (उपवास) के बारे में विचार-विनिमय किया। विनोबा की राय ठीक पड़ी। पर वर्किंग कमेटी की मंजूरी से ही बापू यह विकट मार्ग स्वीकार कर सकते हैं, यह तय हुआ। बापू ने वर्किंग कमेटी के आगे अपने विचार रखे। वर्किंग कमेटी की सर्वानुमति से प्रेसीडेंट

मौलानासाहब ने बापू को पत्र लिखकर दिया। उसमें प्रार्थना की गई थी कि यह मार्ग स्वीकार न करें। बापू ने मंजूर किया।

२४-८-४०, **वर्धा**

सुबह मौलाना कलकत्ते जाने की तैयारी करके बापू से बिदा लेने सेवाग्राम गये। मैं भी साथ में था। बापू से बातचीत होती रही। बातचीत में ऐसा लगा कि बापू चाहते हैं कि और अधिक बातचीत होना जरूरी है, इसलिए मौलाना ने कलकत्ते जाना मुलतवी कर दिया। मेरे कहने पर बापू ने एक मसविदा बनाकर दिया।

वर्धा आकर सरदार, राजेन्द्रबाबू, भूलाभाई को वह दिखाया गया। मौलाना ने उसे जवाहरलाल को दिखाया। वह स्वीकार नही हो सका। दोपहर को मौलाना, जवाहरलाल, राजाजी, सरदार, भूलाभाई, मैं, डा० महमूद वगैरा फिर बापू से मिलने सेवाग्राम गये। बातचीत के सिलसिले में यह निश्चय हुआ कि मौलाना, जवाहरलाल और सरदार बापू से मिलकर नया मसविदा बनावें। वर्किंग कमेटी के बाकी के मेम्बर जो वर्धा में रह सकें, वे उसमें भाग लें। इसलिए विचार-विनिमय शुरू हुआ। राजाजी, भूलाभाई, कृपलानी तो आज चले गए।

२५-८-४०, **वर्धा**

बापू सेवाग्राम से ९। बजे करीब आये। सुबह ११ बजे तक व दोपहर को २॥ से रात के ९ बजे तक बापू के साथ रहे। मौलाना आजाद, पं० जवाहरलाल, सरदार वल्लभभाई की खासतौर से व राजेन्द्रबाबू, सरोजनी नायडू, डॉ० सैयद महमूद व मेरी बातचीत बापू से हुई। आखिर में संतोष-कारक परिणाम आया। बापू को संतोष हुआ। यह जानकर सुख मिला।

बापू व मौलाना, जो निर्णय पर आये, उस बारे में सरदार से थोड़ी बातचीत हुई।

सरदार व जवाहरलाल, रात की ऐक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुए।

२६-८-४०, **वर्धा**

नागपुर-मेल से नागपुर तक राजेन्द्रबाबू और मैं मौलाना आजाद के साथ सैकंड में बैठे।

२१-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ६॥ तक हुई। बापू दोपहर को २। बजे के करीब आये व ५ बजे के करीब सेवाग्राम चले गए। बापू का मसविदा पसन्द नहीं हुआ। मुझे लगा कि उसमें थोड़ा फर्क करना संभव होता, तो ज्यादा ठीक मालूम देता।

२२-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ तक हुई। अंत में मुख्य प्रस्ताव मंजूर हुआ। वर्तमान स्थितिवाले प्रस्ताव पर अच्छी तरह विचार-विनिमय।

शाम को २। से ६। बापू आये। आज बातचीत के सिलसिले में उन्होंने संकोच व दुःखी हृदय से अपनी मनोदशा, विचार व भावी प्रोग्राम (उपवास के बारे में) कहा। उसे सुनकर सब-के-सब चकित व किंकर्त्तव्य-विमूढ़ बन गए। मन में चिंता व विचार शुरू हुए।

खुरशीदबहन से मिलकर सेवाग्राम में बापू से, खासकर महादेवभाई से बापू की भयंकर योजना समझी। सरदार व राजेन्द्रबाबू से बातचीत। चिन्ता में ही सोया।

२३-८-४०, वर्धा

मौलाना, सरदार, जवाहर व मैं सेवाग्राम गये। बापू से बातचीत। चित्त को थोड़ा समाधान मालूम हुआ।

पवनार गया। विनोबा से मिलकर उन्हें स्थिति कही। शाम को विनोबा का बंगले आने का निश्चय। उनकी मदद मिलेगी।

स्टेशन पर सर बद्रीदासजी गोयनका से मिला। अम्बालालभाई नहीं आये। आसफअली दिल्ली गये।

नेशनल प्लानिंग की बैठक बंगले पर हुई। बापू आये।

बापू ने किशोरलालभाई के घर विनोबा, किशोरलालभाई, जाजूजी, काकासाहब आदि से अपनी भावी योजना (उपवास) के बारे में विचार-विनिमय किया। विनोबा की राय ठीक पड़ी। पर वर्किंग कमेटी की मंजूरी से ही बापू यह विकट मार्ग स्वीकार कर सकते हैं, यह तय हुआ। बापू ने वर्किंग कमेटी के आगे अपने विचार रखे। वर्किंग कमेटी की सर्वानुमति से प्रेसीडेंट

मौलानासाहब ने बापू को पत्र लिखकर दिया। उसमें प्रार्थना की गई थी कि यह मार्ग स्वीकार न करें। बापू ने मंजूर किया।

२४-८-४०, वर्धा

सुबह मौलाना कलकत्ते जाने की तैयारी करके बापू से बिदा लेने सेवाग्राम गये। मैं भी साथ में था। बापू से बातचीत होती रही। बातचीत में ऐसा लगा कि बापू चाहते हैं कि और अधिक बातचीत होना जरूरी है, इसलिए मौलाना ने कलकत्ते जाना मुलतवी कर दिया। मेरे कहने पर बापू ने एक मसविदा बनाकर दिया।

वर्धा आकर सरदार, राजेन्द्रबाबू, भूलाभाई को वह दिखाया गया। मौलाना ने उसे जवाहरलाल को दिखाया। वह स्वीकार नहीं हो सका। दोपहर को मौलाना, जवाहरलाल, राजाजी, सरदार, भूलाभाई, मैं, डा० महमूद वगैरा फिर बापू से मिलने सेवाग्राम गये। बातचीत के सिलसिले में यह निश्चय हुआ कि मौलाना, जवाहरलाल और सरदार बापू से मिलकर नया मसविदा बनावें। वर्किंग कमेटी के बाकी के मेम्बर जो वर्धा में रह सकें, वे उसमें भाग लें। इसलिए विचार-विनिमय शुरू हुआ। राजाजी, भूलाभाई, कृपलानी तो आज चले गए।

२५-८-४०, वर्धा

बापू सेवाग्राम से ९। बजे करीब आये। सुबह ११ बजे तक व दोपहर को २॥ से रात के ९ बजे तक बापू के साथ रहे। मौलाना आजाद, पं० जवाहरलाल, सरदार वल्लभभाई की खासतौर से व राजेन्द्रबाबू, सरोजनी नायडू, डॉ० सैयद महमूद व मेरी बातचीत बापू से हुई। आखिर में संतोष-कारक परिणाम आया। बापू को संतोष हुआ। यह जानकर सुख मिला।

बापू व मौलाना, जो निर्णय पर आये, उस बारे में सरदार से थोड़ी बातचीत हुई।

सरदार व जवाहरलाल, रात की ऐक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुए।

२६-८-४०, वर्धा

नागपुर-मेल से नागपुर तक राजेन्द्रबाबू और में मौलाना आजाद के साथ सैकंड में बैठे।

आगे राजेन्द्रबाबू भी थर्ड में ही रहे । उनकी तबीयत ठीक रही । मौलाना आजाद ने भी राजेन्द्रबाबू को एक माह तक के लिए इधर रहने की इजाजत दे दी । कल जो बापू (महात्माजी) से निर्णय हुआ, उसपर मौलाना ने संतोष प्रकट किया ।

२८-९-४०, नई दिल्ली

घनश्यामदासजी ने शिमला, बम्बई, देवदास गांधी को फोन किये । मेरे बारे में भी । रात को शिमला का हाल महादेवभाई ने कहा ।

बापू का तार आया । शिमले में ठंढ बहुत ज्यादा है, ऐसा लिखा । दिल्ली ठहरने की इच्छा भी लिखी ।

३०-९-४०, नई दिल्ली

शिमला से फोन द्वारा मालूम हुआ कि वाइसराय से फैसला नहीं हुआ । लड़ाई होगी । बापू मोटर से दिल्ली आ रहे हैं । भूलाभाई व आसफअली से बातें । आसफअली ने जयपुर जाना स्वीकार कर लिया ।

१-१०-४०, नई दिल्ली

सुबह करीब ५ बजे बापूजी मोटर द्वारा शिमला से दिल्ली पहुंचे । साथ में राजकुमारी व महादेवभाई थे ।

बापूजी के साथ घूमना । बापूजी ने शिमला की बातचीत का सारांश कहा । बापूजी ने वाइसराय से जयपुर के बारे में जो बातें कही, वे सुनीं । वाइसराय का खुलासा भी सुना । मुझे जयपुर-स्थिति सुलझाने में ही विशेष समय लगाने की सलाह दी । राजा ज्ञाननाथ चिढ़कर जेल आदि भेजे तो ठीक ही है । राजेन्द्रबाबू को सीकर में ही आराम लेने देना चाहिए । वर्किंग कमेटी की बैठक में न आयें तो कोई हर्ज नहीं होगा । जो खादी-रकम बम्बई में जमा हुई, उसमें राजस्थान की रकम राजपूताना के लिए ईअरमार्क करने का मैंने कहा । उसे उन्होंने सुन लिया, उसका विरोध नहीं किया । यह रकम अन्दाजन एक लाख तक होगी । भावी प्रोग्राम की थोड़ी रूपरेखा समझी । आसाम का दौरा कायम रखने का कहा । वर्धा राष्ट्रभाषा-प्रचार की बैठक पर भी न आयें तो हर्ज नहीं, ऐसा कहा ।

बापू के साथ हरिजन-आश्रम गया । वहां आधा घंटा चरखा-कताई हुई ।

२-१०-४०, जयपुर-सीकर

घनश्यामदासजी बिड़ला की लिखी हुई 'बापू' पुस्तक पढ़ी। भूमिका महादेवभाई की लिखी हुई है।

सीकर पहुंच, तांगा किराये पर करके कमरे पहुंचा। प्रोग्राम वगैरा के संबंध में पू० राजेन्द्रबाबू से बातें।

बापू का जन्म-दिवस मनाया गया। राजेन्द्रबाबू बोले। देर तक चरखा चलाया।

११-१०-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी २ बजे से शुरू हुई। पू० बापू आये। तेरह मेम्बर हाजिर थे, केवल राजेन्द्रबाबू व डॉ० महमूद गैरहाजिर थे। बापू ने वाइसराय से हुई बातचीत का हाल कहा व अपनी व्यक्तिगत सत्याग्रह की योजना बताई। विनोबा को प्रथम सत्याग्रही की उनकी कल्पना है, ऐसा कहा।

बापू के साथ सेवाग्राम गया। मोटर में बापू से जयपुर की स्थिति कही।

१२-१०-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से १०॥ तक व शाम के २ से ७ बजे तक हुई। दोपहर को बापू आये। व्यक्तिगत सत्याग्रह का खुलासा। चर्चा में ही अधिक समय गया।

बापू को पहुंचाने सेवाग्राम गया। रास्ते में बातचीत। पानी बहुत जोर का आया। मोटर गीली हो गई। वापस आने पर कपड़े बदलने पड़े।

जवाहरलाल से देर तक खानगी व सार्वजनिक बातें बन्द कमरे में होती रहीं।

१३-१०-४०, वर्धा

घूमने गया। वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८॥ से १०॥ बजे तक व शाम को २ बजे से ५॥ बजे तक होती रही। पू० बापू ने शंकाओं का समाधान किया—जितना उनके लिए संभव था उतना। मौलाना व जवाहरलाल का पूरा समाधान नहीं हुआ। डिसिप्लिन (अनुशासन) पालन करने का उनका निश्चय।

बापू के साथ पवनार गया। विनोबा से बातचीत। प्रथम सत्याग्रही के नाते विचार-विनिमय। विनोबा अपना बयान तैयार करेंगे। बापू स्टेटमेंट

बनावेंगे। विनोबा बापू से ता० १५ मंगलवार को दो बजे मिलेंगे। बाद में सत्याग्रह का स्थान निश्चित होगा। बहुत करके बुध, नहीं तो गुरुवार को पवनार से विनोबा सत्याग्रह शुरू करेंगे।

१७-१०-४०, **वर्धा**

पू० बापू से इजाजत लेकर मोटर से पवनार गया। पवनार में विनोबा का सत्याग्रह का प्रथम भाषण हो रहा था। वर्षा भी हो रही थी। करीब १०-१५ मिनट भाषण सुना। बाद में विनोबा के साथ जमना-कुटीर गया। वहां देर तक बातचीत और विचार-विनिमय।

कृपलानी, सुचेता, किशोरलालभाई, गोपालराव के साथ सेगांव गया। बापू से विनोबा के प्रोग्राम वगैरा की चर्चा। विनोबा का भाषण जो महादेवभाई ने लिख लिया था, पूरा पढ़ा।

पवनार जाकर विनोबा को बापू के साथ हुई सब बातें बताईं। विचार-विनिमय होता रहा। छत के ऊपर प्रार्थना व भजन।

२०-१०-४०, **वर्धा**

सेवाग्राम गया। बापू से बातचीत। किशोरलालभाई व गोपालराव साथ में थे। डॉ० हसन, डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के चुनाव, सेगांव की जमीन ग्राम-उद्योग-संघ के नाम पर चढ़ाना, जयपुर जाना, सत्याग्रह की लड़ाई आदि विषयों पर चर्चा।

२१-१०-४०, **वर्धा**

सुबह साढ़ पांच के करीब गोपालराव काले आये और उन्होंने कहा कि विनोबा को रात के साढ़े तीन बजे डिफेंस ऑफ इंडिया ऐक्ट में गिरफ्तार करके मोटर से वर्धा लाये हैं। सेवाग्राम, नागपुर वगैरा फोन किया। विनोबा वर्धा-जेल में पहुंच गए। वर्धा में हड़ताल रखन की योजना व व्यवस्था की।

विनोबा से जल में मिलने के बाद सेवाग्राम जाकर बापू को सब हाल बताये। बापू ने स्टेटमेंट का ड्राफ्ट बनाया। बापू का मौन था। अन्य बातें बापू ने लिखकर कहीं। दुर्गाबहन के यहां भोजन। महादेवभाई व राजकुमारी अमृतकौर के साथ जेल में विनोबा से मिले। उन्होंने जो स्टेटमेंट तैयार किया, उसमें सुधार।

विनोबा का मुकदमा हुआ। मैजिस्ट्रेट श्री कुंते ने तीन अपराधों पर तीन-तीन महीने की सादी सजा दी। तीनों सजाएं साथ-साथ चलेंगी।

४-११-४०, नागपुर से वर्धा

नागपुर में ग्रांड ट्रंक बदलकर नागपुर-मेल में मौलानासाहब के साथ बैठा। बापू के उपवास की बात नागपुर में जोरों से चल रही थी।

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। जयपुर की स्थिति का हाल व उनके उपवास वगैरा की थोड़ी बातें कीं।

आज तारीख के अनुसार मेरा जन्मदिन था। ५१ वर्ष पूरे हो गए। बापू को प्रणाम किया।

सुबह मौलाना के साथ थोड़ी दूर घूमा। वह सेवाग्राम गये।

५-११-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी की सुबह खानगी में आपस में चर्चा। राजेन्द्रबाबू व कृपलानी ११ बजे आये। जाब्ते की मीटिंग २ बजे से हुई। पू० बापू भी आये। ठीक तौर से चर्चा व विचार-विनिमय हुआ। आसफअली व सरदार में झड़प हो गई। बुरा मालूम दिया। असेम्बली में बजट का विरोध करने के लिए जाने का निश्चय हुआ। बापू ने अपना प्रोग्राम कल तय करने को कहा।

६-११-४०, वर्धा

बापू ने फिलहाल तो उपवास करने की बात छोड़ दी—किशोरलालभाई ने यह जानकारी दी। मौलाना व पंतजी से बातचीत। वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह व शाम को हुई। बापू ने वर्किंग कमेटी के सदस्यों, ऑल इंडिया कमेटी के सदस्यों व असेम्बली के मेम्बरों को, कुछ शर्तों के साथ, इजाजत देने का विचार प्रकट किया।

७-११-४०, वर्धा

सेवाग्राम—डॉ० सौन्दरम् (ब्राह्मण) का श्री जी० रामचन्द्रन् (नायर) त्रावणकोरवाले के साथ विवाह हुआ। सौन्दरम् के माता-पिता की आज्ञा नहीं मिली थी। उनका आशीर्वाद भी नहीं मिला था। पू० बापूजी व बा ने कन्यादान किया। श्री परचुरेशास्त्री ने विवाह करवाया। राज-

गोपालाचारी और मौलाना मौजूद थे । माता-पिता का आशीर्वाद न मिला, यह देखकर बुरा लगता रहा ।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह व शाम को होकर आज समाप्त हुई । बापू ने प्रेस-रिपोर्टरों को संदेश दिया । सरदार, भूलाभाई, राजेन्द्रबाबू, शंकरराव वगैरा गये ।

८-११-४०, **वर्धा**

सेवाग्राम जाकर बापू से चरखा-संघ-संबंधी थोड़ी बातें कीं ।

शरद पारनेरकर का विवाह उज्जैनवाले माचवे के साथ हुआ, बापूजी की उपस्थिति में । चरखा-संघ की बैठक में, सुबह व दोपहर में गया । आज चरखा-संघ की बैठक में, कोशिश करने पर ट्रस्टी का व खजांची का व राजस्थान के एजेंट-पद का मेरा त्यागपत्र बहुत चर्चा के बाद बापूजी की मदद से स्वीकार हुआ । गंगाधररावजी देशपांडे का भी स्वीकार हुआ । जाजूजी से मिला । गांधी-सेवासंघ-संबंधी बातचीत ।

९-११-४०, **वर्धा**

चरखा-संघ की बैठक में बापूजी आये । मै भी कुछ समय के लिए गया । बापूजी के साथ रेलवे-फाटक तक पैदल गया । उन्होंने सतीशबाबू व अप्पा पटवर्धन से जो बातें की, वे समझीं ।

१०-११-४०, **वर्धा**

सेवाग्राम गया । ब्रिजलालजी बियाणी, रविशंकरजी शुक्ल और गोपालराव काले साथ थे । बापू की शर्तों का खुलासा । संस्थाओं का खुलासा ।

११-११-४०, **वर्धा**

आज मीरा मूंदड़ा सत्याग्रह करनेवाली थी । बाद में मालूम हुआ कि मीरा के तो दिन चढ़े हुए हे । जानकर आश्चर्य हुआ । इसमें गोपालराव काले की लापरवाही मालूम दी । दामोदर की भीं पूरी भूल रही । बापू को फोन किया । उन्होंने कहा, "इस हालत में तो जेल नहीं भेज सकते ।" बापू के पास जाकर खुलासा किया । इस घटना से बापू को व मुझको दोनों को बुरा लगा, लोगों की लापरवाही के कारण ।

देशी तिथि से मेरा जन्म-दिन था । बा और बापू को प्रणाम किया ।

२१-११-४०, बंबई

बापू का तार मिला। बहुत जल्दी में रात की ऐक्सप्रेस से दामोदर व विट्ठल के साथ थर्ड क्लास में ही वर्धा रवाना।

२२-११-४०, वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। उन्होंने कर्नाटकवाले दिवाकर से जो बातें कीं, वे समझीं। चीन के जो बड़े लोग आनेवाले हैं, उनकी व्यवस्था। चीन का डेपुटेशन (हिज ऐक्सेलेंसी ताइ-ची-ताऊ वगैरा सात चीनी)। ग्रांड ट्रंक से बापू से मिलने आया। उनका स्वागत किया। इन्हें घर पर ठहराया। भोजन वगैरा साथ में नीचे बैठाकर किया। बातचीत। चीन की स्थिति, जापान के बर्ताव पर बातें। ताई-ची-ताऊ का परिचय वगैरा।

ये लोग २३ की शाम को ग्रांड ट्रंक से वापस गये।

२४-११-४०, वर्धा

श्री राजगोपालाचारी मद्रास से आये। उनसे बातचीत। उन्होंने बापू से बातें कीं। उस समय मैं भी थोड़ी देर उपस्थित था। बापू से मुझे भी बातें करनी थीं। परन्तु उनका ब्लड-प्रेशर बहुत ज्यादा बढ़ जाने के कारण बात नहीं कर सका।

२५-११-४०, वर्धा

सेवाग्राम से फोन आया कि बापू का स्वास्थ्य खराब है, सिविल सर्जन को लेकर आयें। व्यवस्था करने के बाद फिर फोन आया कि अभी नहीं लायें। ब्लड-प्रेशर कम हुआ है।

बापू के स्वास्थ्य की चिन्ता हो गई। अनसूया के साथ सेवाग्राम गया। बापू से थोड़ा विनोद। उन्हें हँसाया। ब्लड-प्रेशर कम था। पूरा आराम लेने का करार किया। महादेवभाई से बातचीत।

२७-११-४०, वर्धा

डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से पू० बापू को देखने आये। वे सेवाग्राम गये। बापू को देखकर मेल से वापस बम्बई गये।

सेवाग्राम गया। बापूजी का हृदय वगैरा की स्थिति व ब्लडप्रेशर ठीक था। कमजोरी थी। कुछ समय तक आराम से रहना जरूरी बताया। मेरे प्रोग्राम के बारे में बापू से बातचीत। उन्होंने कहा, तुम्हें प्रान्त में घूमना व

मीटिंग करना जरूरी मालूम होता हो तो तुम खुशी से वैसा कर सकते हो। सत्याग्रह करना हो तो सेवाग्राम से, या जहां से तुम्हारी इच्छा हो, वहां से कर सकते हो।

२-१२-४०, वर्धा

पवनार व सेवाग्राम सुव्रता बहन के साथ गया। प्रार्थना में शामिल हुआ। बापू का मौन था।

३-१२-४०, वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। रमा व श्रीनिवास का विवाह। १०१) रु० भेंट। सुव्रताबहन-वगैरा मिले। बापू से व्याख्यान के विषय व पृथ्वीसिंह के बारे में बातचीत।

७-१२-४०, वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से थोड़ी देर बातचीत। जमीन, आर्यनायकम्, प्रान्त का दौरा आदि।

देवदास गांधी वगैरा मिले।

८-१२-४०, वर्धा

बापू ने सेवाग्राम बुलवाया। जलियांवाला बाग-ट्रस्ट के बारे में विचार-विनिमय। मैंने ट्रस्ट में नाम बदलने का कहा।

सेवाग्राम-जमीन की बिक्री आपकी (बापू की) इच्छा के मुताबिक करने का नायकम् को कह दिया है, यह बापू को कहा। नायकम् की भूल, आदर्श ग्राम, प्यारेलाल के सत्याग्रह आदि के बारे में बातें। बंगले पर का पत्र, मुखर्जी के लाये हुए जलियांवाला बाग के कागजों पर सही की। बापू का पत्र देखा। 'महिला-आश्रम' व 'शिक्षा-मंडल' के कालेज के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

९-१२-४०, सेवाग्राम

सेवाग्राम पैदल गया। उमा, दामोदर साथ में। चि० आनन्दनायकम् की समाधि का स्थल टेकड़ी पर देखा। श्री आशाबहन व नायकम् की भावना व प्रेम देखकर थोड़ा आश्चर्य भी हुआ। उनसे मिला व बातचीत की। मैंने अपने मन के भाव कहे। नायकम् की भूल बताई। मेरी समझ से ठीक खुलासा हो गया। मेरा भी दिल भर आया था। मुझे भी अपने विचारों में

परिवर्तन करना पड़ा । इन दोनों को वहां समाधि-स्थल पर जाने से शान्ति मिलती है ।

१५-१२-४०, वर्धा

जल्दी तैयार होकर नवभारत विद्यालय में गया । महादेवभाई का भाषण सुना । श्रीमती सरोजिनी नायडू, महादेवभाई, काकासाहब, गोपालराव काले के साथ सेवाग्राम गया । वहीं भोजन । बापू को अपने दौरे का सार कहा । सेवाग्राम के चौक से ता० २१ को सुबह ९ बजे सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ ।

श्री परचुरेशास्त्री अन्न व जल के बिना उपवास कर रहे हैं । उनसे मिला ।

१६-१२-४०, वर्धा

शाम को सेवाग्राम-प्रार्थना में । प्रार्थना के बाद बापूजी से सत्याग्रह वगैरा के बारे में बातचीत ।

सेवाग्राम में मेरे लिए अलग मकान बनाने के बारे में विचार व विनोद ।

मोटर से भंडारावाले जकातदार वकील आये । उन्हें बापू से मिलाया । प्रार्थना में शामिल हुए । बापू ने जो मसविदा बना दिया था, उसे वे सही करके मुझे दे गए और भंडारे से तार भेजने को कह गए ।

१९-१२-४०, वर्धा

घूमते समय दमयन्तीबाई व दादा धर्माधिकारी ने गत वर्ष नवम्बर में श्री किशोरलालभाई को जो पत्र लिखा था, वह मुझे पढ़ाया । पू० बापू ने उसका जो जवाब दिया, वह भी पढ़ा । थोड़ी और बातें । बाद में पंजाब के सुदर्शनदास व जगन्नाथ ने पंजाब की हालत सुनाई ।

सेवाग्राम में परचुरेशास्त्री को देखा । बापू से पंजाबवालों के बारे में उनका कहना सुनाया । महिला सत्याग्रही भेजने तथा मेरे व्याख्यान, स्टेटमेंट आदि के बारे में बातें ।

गांधी-चौक में जाहिर व्याख्यान ठीक हुआ । सरदार गुरुमुखसिंह मुसाफिर अहिंसा पर ठीक बोले । सरदार संपूर्णसिंह से बातचीत ।

२०-१२-४०, वर्धा

सेवाग्राम में शाम की प्रार्थना । बाद में पू० बापूजी से पहले

सीतारामजी सेक्सरिया के प्रोग्राम की चर्चा। स्लोगन पर बिचार-विनिमय। नीचे लिखे अनुसार खुलासा—

It is wrong to help the British war effort with men or money. The only worthy effort is to resist all war with nonviolent resistence,

"इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे से मदद देना हराम है। लड़ाइयों का सही विरोध अहिंसा से ही हो सकता है।"

कविता में—

ब्रिटिश युद्ध-प्रयत्न में जन-धन देना भूल है।
सकल युद्ध-अवरोध का यत्न अहिंसा मूल है।

२१-१२-४०, वर्धा-जेल

सुबह ४ बजे उठा। प्रार्थना में शामिल हुआ। बापू से बातचीत। रात को जो विचार चलते थे, उस बारे में तथा आज की सभा के स्टेटमेंट वगैरा के बारे में चर्चा। इतने में खबर आई कि पुलिस गिरफ्तार करने मोटर लेकर आई है। बापू ने महादेवभाई को भेजा। गिरफ्तारी का सैक्शन पूछा। डिफेंस ऑफ़ इंडिया ऐक्ट में देखा। बराबर पता नहीं लगा। वहां पुलिस-अधिकारियों की बात से मालूम हुआ कि मुझे नजरबंद करेंगे। पू० बापू, बा व प्रह्लाद हरिजन ने अपने हाथ के सूत का हार पहनाया। खूब प्रेम-पूर्वक आशीर्वाद। प्रायः सब लोग मोटर तक आये। पू० बा ने वंदेमातरम् गीत गाया। कलेवा कराया। आश्रम की बहनें वर्धा से चलकर आईं, वे सब मिलीं। वहां से अपनी मोटर में वर्धा। बंगले पर मुंह-हाथ धोया। बाद में मजिस्ट्रेट श्री कुंते के घर ले गए। उन्होंने धारा १२१ समझाई। जेल में पैदल गया।

कोर्ट का काम १२ बजे चला। मेरा स्टेटमेंट वगैरा रेकार्ड हो गया। २। बजे जज ने ९ महीने कैद, पांच सौ जुरमाना। जुरमाना वसूल न हुआ तो सजा ज्यादा नहीं। 'ए' क्लास की सिफारिश। मैंने धन्यवाद देते हुए कहा कि सजा कम दी गई।

२७-१२-४०, नागपुर-जेल

श्री रविशंकरजी शुक्ल मिलने आये। कहने लगे कि वह तथा श्री

द्वारकाप्रसाद मिश्र कल सुबह सिवनी-जेल में ट्रांसफर होनेवाले हैं। देर तक बातचीत। इनका लड़का भगवती व कुमारी दुर्गा भी पहुंच गए। बापू को तार भेज दिया। मैंने विवाह करा देने की सलाह दी।

३०-१२-४०, नागपुर-जेल

आज से विनोबा का भाषण शुरू हुआ। विनोबा ने बापू की ट्रस्टीशिप की कल्पना की सुन्दर व्याख्या की। कबीर का दोहा समझाया—

पानी बाढ़ौ नांव में, घर में बाढ़ौ दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥

डायरी के अंश

१९४१

१-१-४१, नागपुर-जेल

रात को नींद कम आई। स्वप्न में विचार शुरू हुए। पू० बापू तथा किशोरलालभाई ने मेरी कमजोरियों की छानबीन की। श्री जानकीदेवी, मंजुकेशा इत्यादि गवाह थे। विट्ठल नौकर भी। इस प्रकार की विचार-धारा के स्वप्न में ही, मेरी समझ से, रात का बहुत-सा हिस्सा चला गया।

आज से नई डायरी शुरू की। मन में ही विचार-विनिमय होता रहा।

४-१-४१, नागपुर-जेल

मुलाकात के लिए चि० शान्ता, मदालसा और श्रीमन्नारायण आये। प्यारेलाल की मुलाकात का बापू का सन्देश मिला।

जानकीदेवी सेवाग्राम में है। बापू ने उसे उपवास पर रखा है।

६-१-४१, नागपुर-जेल

डॉ० दास के बारे में सुपरिंटेंडेंट से पूछा तो उन्होंने कहा, उन्हें नहीं बुला सकते और न ही उनसे जांच करा सकते हैं। वह मुझसे मिलकर बात करना चाहें तो कर सकते हैं। बाद में उन्होंने थोड़ी विचित्र-सी बातें कीं—याने आप तो इनवेलिड (अशक्त) हैं। महात्माजी ने सत्याग्रह की इजाजत कैसे दी? यह कोई 'रेस्ट क्यूअर' स्थान थोड़े ही है! अगर आपको बाहरी ट्रीटमेण्ट चाहिए या इलाज के लिए बार-बार मेयो अस्पताल भेजना पड़ा तो सरकार आपको रिहा कर देगी, इत्यादि। मैंने उन्हें कहा कि डॉ० दास जांचकर के खानपान-वगैरा बतलानेवाले थे। यदि आप मंजूर करते तो उसका अमल होता रहता। महात्मा गांधी ने इजाजत कैसे दी, यह प्रश्न सरकार की ओर से आपको पूछने का कोई कारण नहीं। सरकार को पूछना होगा, तो पूछेगी। और मैं तो जेल के गेट के बाहर—मेयो अस्पताल वगैरा जाना भी नहीं चाहता। यह मैंने पहले ही कह दिया था। इसपर

उन्होंने कहा कि आपके स्वास्थ्य की जिम्मेवारी सरकार की है। तब मैंने कहा कि ठीक है। मैं अपने खर्चे से खाने का जो सामान मंगाता हूं, वह बन्द कर देता हूं। जब आपपर जिम्मेदारी है तो आप जैसा ठीक समझें करें। उन्होंने कहा कि ठीक है। बाद में मैंने डा० दास को न भेजने के बारे में इनकी इजाजत से पत्र लिखकर भेज दिया। प्यारेलाल से भी देर तक बातचीत होती रही।

१०-१-४२, नागपुर-जेल

रामनरेश त्रिपाठी की लिखी हुई अपनी जीवनी पढ़ना शुरू की। देर तक आंखों से पानी बहता रहा--खुद की कमजोरियों का खयाल आकर, विशेषतया मेरी जीवनी लिखने की बापू की स्वीकृति का जिक्र पढ़कर।

११-१-४१, नागपुर-जेल

चार बजे के बाद कमलनयन, सावित्री, रामकृष्ण व सुशील नेवटिया आदि को, मेरे स्थान पर ही, एक आफिसर मुलाकात के लिए लेकर आये। बाद में जेलर श्री पाठक आ गए।

जानकीदेवी को आज उपवास का दसवां रोज है। बापू ने घाव देखा। पृथ्वीसिंह मालिश देते हैं। उमा खूब सेवा करती है। सब बातें सुन व समझकर समाधान मिला।

'खोटा पैसा व खोटा बालक समय पर काम आते हैं,' जानकी का यह सन्देश मिला। सुख हुआ।

१३-१-४१, नागपुर-जेल

सुपरिंटेंडेंट पहले राउंड पर आ गए। स्वास्थ्य आदि के समाचार पूछ गए। बाद में दुबारा फिर आये। उनकी माताजीकी मृत्यु हो गई। उनसे समवेदना प्रकट की।

बापू ने मेरे बारे में महादेवभाई के जरिये यह पत्र लिखवाया कि कमलनयन के मिलने पर मुझसे कहा जाय कि मैं जो ज्यादा दूध, फल वगैरा ले रहा था, वह चालू रखूं। यह पत्र सुपरिंटेंडेंट ने मुझे पढ़ाया। मेरे साथ रदे तक चर्चा की। मुझे अपने खर्च से दूध-फल लेना चाहिए, आदि समझाने लगे। पहले उनसे जो बात हुई थी, वह मैंने दोहराई। ब्रिजलाल बियाणी, प्यारेलाल मौजूद थे। शाम को विनोबा से भी इस सम्बन्ध में विचार-

विनिमय हुआ। उन्होंने भी कहा कि दूध-फल लेना शुरू कर देना ठीक रहेगा।

१४-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा १।।। से २।। तक आये। बातचीत। बापू को अपनी शारीरिक व मानसिक स्थिति का समाचार उनके मार्फत भेज दिया।

विनोबा कल जेल से छूटनेवाले हैं, इस कारण कई मित्रों ने चरखा-संघ के सूत-सदस्य होने का निश्चय किया।

१५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा आज छूटनेवाले हैं, इसलिए जल्दी ही उनके पास गया। करीब ८।।। बजे उनके साथ थोड़ा घूमना व मामूली बातचीत हुई––ब्रह्मदत्त, ब्रिजलाल, जानकीदेवी आदि के बारे में। वह अन्दर के फाटक के बाहर गये। विनोबा के वियोग से, जोकि थोड़े समय के लिए ही मालूम देता है, बुरा मालूम दिया। विनोबा के प्रति दिन-दिन श्रद्धा बढ़ती ही जाती है। परमात्मा अगर मुझे इस देह से उनकी श्रद्धा के योग्य बना सकेगा तो वह दिन मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनिया में बापू पिता का और विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं, अगर मैं अपनेको योग्य बना सकूं तो।

अकोलावाले श्री दादा गोले से देर तक बातचीत। मथुरादास गोपालदास के मामले में इनपर पू० बापूजी की भेंट का परिणाम समाधान-कारक हुआ।

१८-१-४१, नागपुर-जेल

मेरे खानपान के बारे में डॉ० दास पू० बापू से सलाह कर लिख भेजेंगे। मेरा ब्लडप्रेशर १०२ व १४८ है। और सब ठीक है।

२५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा से मुलाकात हुई। बापू, जानकी आदि के समाचार मालूम हुए।

८-२-४१, नागपुर-जेल

राजकुमारी अमृतकौर, श्री आर्यनायकम् और चि० मदालसा मुलाकात के लिए आये थे। सामान संभलवाने दामोदर भी आ गया था। बापू का स्वास्थ्य ठीक है। बापू का ब्लडप्रेशर सुबह १५३ व ९६ था। दोपहर को कम हो जाता है। वजन १०८ है। बापू का 'हरिजन' का प्रकाशन

शुरू करने का विचार नहीं है। सरकार से समझौते की कोई आशा नहीं है। आज के 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' में इस संबंध में अग्रलेख है। बापू की कड़ी टीका है। मेरे नाम का भी गलत उपयोग किया है।

सेवाग्राम के पानी की जांच कराई थी। वह ठीक निकला। मीराबहन और अम्तुल वापस सेवाग्राम आगए हैं।

शाम की प्रार्थना के बाद विनोबा ने बापू का सन्देश सुनाया।

९-२-४१, नागपुर-जेल

जेल के राजनैतिक सत्याग्रही को विनोबा ने कल बापू के जो विचार सुनाये थे, उसपर आज विचार-विनिमय, टीका-टिप्पणी व मजाक होता रहा, वह सुना।

१५-२-४१, नागपुर-जेल

आचार्य कृपलानी, श्रीमन्नारायण व दामोदर मुलाकात के लिए आये। कृपलानीजी ने कहा कि जवाहरलाल को पूरा समाधान व संतोष है। राजाजी के विचारों में विशेष फर्क नहीं है। समाधानवालों को सरकार की ओर के व्यवहार से संतोष नही है। जानकीदेवी अभी एक संतरे, अंगूर व सब्जी के रस पर हैं। तीन-साढ़े तीन मील रोज घूम लेती हैं। बापू खूब आनन्द में हैं। मदालसा सेवाग्राम रहती है।

बापूजी पर टाइम्स ऑफ़ इंडिया ने जो टीका की थी, उसका खुलासा आज छपा है—

"Civil Disobedience will certainly be withdrawn if free speech is genuinely recognised and status-quo restored."

(अगर भाषण की स्वतंत्रता सच्चे तौर पर मान ली गई और यथा-स्थिति कायम कर दी गई तो सत्याग्रह जरूर वापस कर लिया जायगा।)

२८-२-४१, नागपुर-जेल

पू० गांधीजी को नीचे लिखे अनुसार प्रयाग तार किया—

"Pray Hospital prove worthy Kamla's memory, Agreeable Narialwallas proposals regarding accounts Suggest another treasurer appointment preferably Allahabad."[1]

—Jamnalal

---

[1] कमला नेहरू-अस्पताल के उद्घाटन के अवसर पर।

(भगवान् से प्रार्थना है कि अस्पताल कमला की यादगार के योग्य बन। हिसाब के बारे में नारियलवाला के सुझाव से सहमत हूं।) मेरा सुझाव है कि एक दूसरे कोषाध्यक्ष की नियुक्ति की जाय। वह इलाहाबाद का हो तो अच्छा। —जमनालाल

२-३-४१, नागपुर-जेल

बापूजी आज इलाहाबाद से वर्धा पहुंच गए। जवाहरलालजी लखनऊ-जेल ले जाये गए।

६-३-४१, नागपुर-जेल

"मेरी सलाह तो यह है कि हमें देहातों में जाकर व्यक्तियों की सेवा करने की तरफ अपना खयाल रखना चाहिए, न कि सारे समाज की तरफ।"

"बापूजी के लेख मुझे कम ही याद आते हैं, लेकिन उनके हाथ का परोसा हुआ भोजन मुझे हमेशा याद आता है; और मैं मानता हूं कि उससे मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन हुआ है।"

—'विनोबा के विचार' में से।

९-३-४१, नागपुर-जेल

निर्भयता के बारे में बापू और विनोबा के विचार समझे।

बापू बताते हैं कि निर्भय सेवक का कर्त्तव्य यह है कि हमें सुकरात की तरह जीना और मरना सीखना चाहिए।

विनोबा निर्भयता के प्रकार में बताते हैं कि (१) **विज्ञ निर्भयता** वह निर्भयता है, जो खतरों से परिचय प्राप्त करके उनका इलाज जान लेने पर निर्माण होती है। (२) **ईश्वर-निष्ठ** निर्भयता मनुष्य को पूर्ण निर्भय बनाती है। (३) **विवेकी निर्भयता**—मनुष्य को ऊटपटांग और अनावश्यक साहस नहीं करन देती।

१३-३-४१, नागपुर-जेल

विनोबा का लेख 'आत्मशक्ति का भान' पढ़ा। उसमें लिखा निम्न विचार पसंद आया, "गांधीजी का जन्मदिन है। आइये, हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारे देश में सत्पुरुषों का ऐसा ही अखंड प्रवाह चलता रहे!"

२९-३-४१, नागपुर-जेल

शान्ताबाई, रामकृष्ण, चिरंजीलाल और दामोदर मुलाकात करने को आये। रामकृष्ण ने कहा कि बापूजी ने उसे सत्याग्रह की इजाजत दे दी है। राम के विचार व निर्णय की शक्ति आदि देखकर सुख व समाधान मिला। पढ़ाई के बारे में उसे पढ़ाई कॉमर्स कालेज, वर्धा में ही करने की मैंने राय दी, जो उसने भी पसन्द की।

३१-३-४१, नागपुर-जेल

ब्रिजलाल बियाणी ने बापू से मेरा परिचय किस प्रकार हुआ व मुझपर किन-किन बातों का प्रभाव पड़ा, इस बारे में आज से नोट लेना शुरू किया।

४-४-४१, नागपुर-जेल

मैंने विनोबा से कहा कि अगर आप मेरी पूरी जवाबदारी लेने को तैयार हों तो आपकी देखरेख में मैं काम करने को तैयार हूं। मेरी कमजोरियां, योग्यता, अयोग्यता देखकर मुझे काम सौंपा जाय। उन्होंने कहा कि मुझे भी तो बापू ने खूटे से बांध रखा है। मैं तो स्वयं ही उड़ना चाहता हूं, बन्धन से मुक्त होना चाहता हूं।

५-४-४१, नागपुर-जेल

राधाकिसन मुलाकात के लिए आया। लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्लान पर उससे विचार-विनिमय किया। मैंने कहा कि बापू, श्री मेहता, गुलाटी व तुम्हें, जैसा ठीक लगे, वैसा करो।

१५-४-४१, नागपुर-जेल

आज मेरा मन किस प्रकार के संबंध मानना चाहता है, यह विचार चला—पिता—बापूजी (गांधीजी); गुरु—विनोबा; माता—मां व बा (कस्तूरबा); भाई—जाजूजी, किशोरलालभाई; बहन—गुलाब, गोमती-बहन; लड़के—राधाकिसन, श्रीमन्नारायण, राम; लड़कियां—चि० शान्ता (रानीवाला), मदालसा।

२२-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा के आश्रम तक जाकर आया, तो आज आते समय थकावट काफी मालूम दी। पहले इतनी नहीं मालूम दी थी। विनोबा से 'टाइम्स

ऑफ़ इंडिया' के लेख व बापू के स्टेटमेंट पर विचार-विनिमय हुआ।

२३-४-४१, नागपुर-जेल

चि० सावित्री सेवाग्राम में इस गर्मी में कुछ दिन रह गई, जानकर सुख मिला। वह कल बंबई जानेवाली है। बंबई का वातावरण कौमी दंगों के कारण थोड़ा ठीक नहीं दीखता। कुछ दिन ठहर जायगी, तो ठीक रहे। परन्तु सन्देश भेजने का मौका नही रहा।

२६-४-४०, नागपुर-जेल

लक्ष्मीनारायण गाडोदिया दिल्लीवाले, राधाकिसन और दामोदर मुलाकात के लिए आये।

बापू के तीन दिन के उपवास के बारे में व अहमदाबाद तथा बम्बई के दंगों के बारे में बापू की मनोव्यथा आदि जानकर चिन्ता होना स्वाभाविक था। ईश्वर सहायक है।

२७-४-४१, नागपुर-जेल

कल बापू ने ऐमरी के जवाब में जो वक्तव्य दिया, वह विनोबा के साथ सुना। उसपर थोड़ी चर्चा हुई। हम सबोंको वक्तव्य बहुत पसन्द आया। बापू के हृदय की जलन व दुःख उसमें प्रकट होता था। बहुत ही स्पष्ट था।

३-५-४१, नागपुर-जेल

पू० राजेन्द्रबाबू, गुलाबबाई, दिलीप और हरगोविन्द मुलाकात को आये। प्रो० त्रिवेदी का आखिर शुक्रवार को प्रातः २ बजे शरीर छूट ही गया। बापूजी व जानकी ने रात को ही उनकी स्त्री व पुत्र मन्नूभाई से मिलकर उन्हें सान्त्वना दी। जानकीदेवी दूसरी बार भी मिल आई। मेरी इच्छा थी कि इनकी अग्नि-संस्कार क्रिया अपने खेत में करते तो ठीक रहता। इनका एक छोटा-सा स्मारक वर्धा में बनाने की इच्छा है।

९-५-४१, नागपुर-जेल

कमिश्नर श्री राव जेल के राउंड पर आये। स्वास्थ्य वगैरा की पूछताछ की। बाद में मैंने, नागपुर के डिप्टी कलक्टर ने व्यापारी-मंडल को जो अनुचित जवाब दिया, उस बारे में बताया और कहा कि गुंडों का जोर बढ़ता जा रहा है। व्यापारियों को तंग किया जा रहा है। व्यवस्था ठीक नही हो रही है। हिन्दू-मुस्लिम दंगे की भी संभावना हो सकती है। आप हिन्दुस्तानी हैं और

बड़े अधिकारी हैं। ठीक व्यवस्था रहनी चाहिए। अगर दंगा हो गया तो महात्माजी का यहां आकर दंगे के बीच जाना संभव है, इत्यादि बातें समझाई। उन्होंने कहा कि डिप्टी कलेक्टर ने खुलासा किया है कि उसने ऐसा नहीं कहा है। वह इस बारे में पूरा खयाल रखेंगे, वगैरा।

१४-५-४१, नागपुर-जेल

आज प्रायः सारी रात नींद नही आई। पहले हवा का जोर रहा, बाद में विचार चालू हो गए। वर्धा-जेल में मुझे भेज दें तो मुझे थोड़ी तकलीफ रहेगी, पर डॉ० दास, बापूजी, जानकी आदि की तकलीफ व चिंता कम हो जायगी। पहले तो ग्रेवाल ने कहा था कि वर्धा जाना चाहोगे तो जा सकोगे। परन्तु अब कहते हैं कि देखेंगे। वर्धा-जेल जाना अगर संभव न हो तो फिर मुझे कुछ समय के लिए मेयो अस्पताल (नागपुर) ही जाना स्वीकार कर लेना चाहिए।

बापूजी और विनोबा भी मुझपर इतना प्रेम क्यों करते हैं? बापूजी को मेरी इस बीमारी के कारण दो-तीन रोज बहुत चिता व परेशानी रही, ऐसा डॉ० दास कहते थे। वह तो यहां मुझे देखने के लिए आने को भी तैयार थे। परन्तु मेरे मना करने पर व डॉ० दास के यह कहने पर कि जरूरत नहीं है, रुके। रात को बड़ी देर तक मेरे मन में यही विचार चलता रहा कि मैं पापी हूं, विश्वासघाती हूं। क्या मैंने अपना असली रूप बापू व विनोबा को बता दिया है? एक मन तो कहता था कि कई बार तो बता दिया है; पर दूसरा कहता था कि नही, साफ तौर पर, बिलकुल नग्न रूप में सामने नहीं रखा है। रखने के विचार से बापू के पास कई बार जाना हुआ, परन्तु वहां पूरा मौका ही नही मिल पाया, इस कारण वह अधूरा ही रह गया। तीन वर्ष पहले पवनार से जो पत्र बापू को फ्रंटियर भेजा था, वह भी उन्हें नहीं मिला। उनके कहने पर बाद में पत्र की नकल उन्हें वर्धा आने पर दे दी थी। अब जैसे ही मौका लगेगा, एक बार अपनी आत्म-हत्या के विचार की व अपनी मन की स्थिति खूब स्पष्ट रूप से बापू से अवश्य कहूंगा। तभी मानसिक शांति मिलेगी। अन्यथा हृदय व मन का यह युद्ध चलता ही रहेगा। मैंने यह प्राकृतिक उपचार भी, मुख्यतः मानसिक शान्ति की दृष्टि सामने रखकर ही स्वीकार किया है, अन्यथा इस समय ज्यादा उत्साह नहीं था; क्योंकि पूना में एक

प्रयोग हो ही चुका था। परमात्मा से प्रार्थना करता रहता हूं। देखें, क्या परिणाम लाता है। इस जन्म में सद्‌बुद्धि प्राप्त हो जायगी व स्वच्छ तथा पवित्र सेवामय जीवन बिताते हुए यह शरीर छूट सकेगा तो चित्त को समाधान हो सकेगा; अन्यथा जैसे कर्म किये हैं वैसा फल भोगना भाग है ही। ईश्वर की माया अपरंपार है। विनोबा से तो यहां जल्दी ही बात कर लूंगा। देखें, कोई राजमार्ग निकलता है क्या! मुझसे बड़ी उमर का कोई शुद्ध अन्तःकरणवाला भाई या बहन, इस दुनिया में मिल सकता हो और जो मुझे अपने आश्रय में लेकर बालक की तरह प्रेम-भाव से, मेरे व्यथित हृदय में कुछ जीवन पैदा कर सके, तो मुझे शांति मिल सकती है। ईश्वर की इच्छा होगी, तो यह भी संभव हो जायगा।

रात में प्रायः इसी प्रकार के विचार कई घंटों तक चलते रहे। बीच-बीच में आंखों से पानी भी बहता रहा। बालकपन का व तरुण अवस्था का मेरा संकोची, शरमीला व डरपोक मन का स्वभाव पूरी तौर से आजतक कायम रहता तो कितना अच्छा होता! बुरी संगत का अच्छा परिणाम व अच्छी संगत का बुरा परिणाम। यह कैसी ईश्वरी माया है! मेरा तो सदा चिंतन यही रहता है—

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्।

तथा

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नाऽपुनर्भवम्।

१७-५-४१, नागपुर-जेल

डॉक्टर दास वर्धा से आये। उन्होंने मेरे स्वास्थ्य की जांच की। वजन १४०, नाड़ी ७२, टेंपरेचर ९७.८, पेशाब में दर्द कम। नींद ठीक आई। आज से मंगलवार तक ४४ औंस रस—संतरे, मोसम्बी, अनन्नास, सेब आदि का, चार रतल दूध फाड़कर व एक आम, यह खुराक लेने को कहा। रोज एनीमा व दो बार टब-बाथ लेना है। यह भी कहा कि बापू की इच्छा है कि मैं वर्धा-जेल में आ जाऊं तो ठीक रहेगा। महादेवभाई, गुलजारीलाल नंदा व दामोदर मुलाकात को आये। महादेवभाई ने बैम्बई व गुजरात की स्थिति कही। बापू की इच्छा वहां जाने की है, परन्तु सरदार वगैरा इस समय बापू का जाना ठीक नहीं समझते। बम्बई-गवर्नर से लिखा-पढ़ी इत्यादि चल रही

है। गुलजारीलाल नंदा ने बताया कि चरखा-संघ के एक आदमी ने रुपयों की गड़बड़ी की है। श्री शंकरलाल बैंकर के स्वास्थ्य के बारे में भी बताया।

२१-५-४१, नागपुर-जेल

डॉ० दास व जानकीदेवी मिलने आये। कल व परसों पानी कम पिया गया, उसका डॉ० दास को बहुत बुरा मालूम दिया। आज से रस बढ़ाया गया है। दूध १२ औंस व आम तीन। डॉ० दास का सेवाग्राम से फोन भी आया था। बापू ने यहीं (नागपुर) रहकर मेरा इलाज चालू रखने को कहा है। डॉ० महोदय ने आज की रिपोर्ट दी।

२२-५-४१, नागपुर-जेल

सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० गुप्ता आये। स्वास्थ्य के बारे में कहने लगे कि कमजोरी बहुत हो गई है। बम्बई के श्री भरूचा या डॉ० जीवराज को दिखाना चाहिए। डॉक्टर दास का इलाज, थोड़ा वजन घटे, वहांतक तो ठीक था; पर अब तो वजन ज्यादा कम हो रहा है। मैंने महादेवभाई का नोट उन्हें दिया।

३१-५-४१, नागपुर-जेल

बापूजी ने धन्नालाल व शिवराजसिंह—इन दो सत्याग्रहियों के बारे में पूछताछ करवाई है।

३-६-४१, वर्धा

आज जेल से छूटे। सेवाग्राम आकर बापू को प्रणाम किया। विनोद। स्वास्थ्य की थोड़ी हकीकत कही। नये अतिथि-घर में ठहरा।

४-६-४१, सेवाग्राम

आज तीन महीने बाद प्रथम बार दो खाखरा, साग-पानी-सहित दो औंस व दो आम मिले। साग व खाखरा बहुत ही स्वादिष्ट लगा। गांधीबाबा की जय! शाम को दूध और रस लिया।

५-६-४१, सेवाग्राम

बापू दो बार देखने आये। डॉ० दास से बातचीत।

८-६-४१, सेवाग्राम

बापूजी, डॉ० दास, डॉ० सुशीला वगैरा से बातचीत।

९-६-४१, सेवाग्राम

आज से चर्खा शुरू किया। बापू का स्वास्थ्य आज खराब हो गया। ज्वर आ गया और अतिसार भी हुआ। प्रयोगों का प्रताप बताया जाता है।

१०-६-४१, सेवाग्राम

बापू का स्वांस्थ्य ठीक नहीं। शाम को उनसे थोड़ा विनोद।

११-६-४१, सेवाग्राम

डॉ० सुशीला से उसके कल नागपुर जाते समय के व्यवहार के संबंध में कहा-सुनी हुई। बाद में उसे समझाया। उसका पत्र आया। रात को उसका समाधान किया व उसकी गलती समझाई।

बापू का स्वास्थ्य आज भी ठीक नहीं हुआ।

१२-६-४१, सेवाग्राम

केशव (जापानी), जो आश्रम में रहते हैं, उसे एक पागल ने बहुत बुरी तरह पीटा। केशव ने गजब की शान्ति व अहिंसा का परिचय दिया।

१४-६-४१, सेवाग्राम

मेरा स्वास्थ्य साधारण ही है। मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। घूमते समय जानकीदेवी व शान्ताबाई से मनःस्थिति कही। जेल में ता० १४ मई को डायरी में जो नोट किया था, वह पढ़कर समझा दिया।

जेल से आने के बाद बापूजी से आज पहली बार खानगी में बातचीत। किशोरलालभाई, राजकुमारी अमृतकौर, गोमतीबहन, डॉ० सुशीला वहां थे। मैंने अपनी मानसिक स्थिति कही। ता० १४ मई को नागपुर-जेल में डायरी में जो नोट किया था, वह पढ़कर सुनाया। अन्य विचार-विनिमय। बापू को डायरी सुनाने के बाद मन थोड़ा हल्का हुआ।

१५-६-४१, सेवाग्राम

कमला व सरला बियाणी अकोला से आई। बापूजी से उनको मिलाया और परिचय करा दिया।

हीरालालजी शास्त्री, कपूरचन्दजी पाटणी, हरलालसिंहजी, लादूराम जी, रतनबहन वगैरा से जयपुर की स्थिति के बारे में देर तक विचार-विनिमय। बापूजी से भी मिलना हुआ। उनको स्थिति समझाई व उनकी राय समझी।

शाम को मीराबहन से शान्ति प्राप्त करने के उपाय पर चर्चा ।

१६-६-४१, सेवाग्राम

देर तक जयपुर के सम्बन्ध में विचार-विनिमय । बापू को बातचीत का सारांश लिखकर भेजा ।

१७-६-४१, सेवाग्राम

सुबह घूमते समय शान्ताबाई से महिलाश्रम के बारे में चर्चा । डॉ० दास से स्वास्थ्य-सम्बन्ध में विचार-विनिमय । हिमालय या काश्मीर जाने के संबंध में विचार । पू० बापूजी आये । उनसे भी विचार-विनिमय । उनकी राय हुई कि जुलाई बाद जाना ठीक रहेगा ।

१८-६-४१, सेवाग्राम

बापू ने चन्द्रभाल जौहरी के बारे में पुछवाया । मैंने अपनी राय बताई । मीराबहन अपनी स्थिति थोड़ी ही देर कहने पाई कि इतने में डॉ० दास मोटर लेकर आगए ।

१९-६-४१, सेवाग्राम

बापू से स्वास्थ्य, प्रोग्राम, मन स्थिति आदि के संबंध में थोड़ी देर बातचीत । उनकी इच्छा रही कि अभी तो मुझे यहीं रहना चाहिए ।

मैंने बापू से कहा कि संभव हो तो जब भी आपको अनुकूल हो, मुझे रोज १५-२० मिनिट अपना एकांत का समय दें ।

२०-६-४१, सेवाग्राम

बापूजी के साथ २।। बजे चरखा-संघ की बैठक में पहुंचा । पांच बजे तक वहां रहा । ठीक चर्चा व विचार-विनिमय ।

२१-६-४१, सेवाग्राम

चरखा-संघ की बैठक में पू० बापू के साथ गया ।

२२-६-४१, सेवाग्राम

पू० बापू के साथ चरखा-संघ की बैठक में गया । आज की बैठक बहुत ही गंभीर हुई । पू० जाजूजी अपना दुःख कहते-कहते रो पड़े । पू० बापूजी को भी कल देशपांडे के कथन व व्यवहार से चोट पहुंची । मुझे भी चोट लगी । देर तक चर्चा व विचार-विनिमय ।

२५-६-४१, सेवाग्राम

पू० बापूजी से घूमते समय मनःस्थिति पर काफी विचार-विनिमय हुआ। कल फिर बातचीत होगी। चि० राधा (गांधी) के बारे में मैंने अपने विचार बापू को बताये।

२६-६-४१, सेवाग्राम

पू० बापूजी से आज घूमते समय व बाद में १० से ११ तक एकान्त में अपनी मनःस्थिति पर साफ-साफ बातें। मैं अपनी स्थिति ज्यादा स्पष्ट तौर से समझा सका। अब मुझे विश्वास हो गया कि बापू मेरी स्थिति पूरी तौर से समझ गए हैं। परमात्मा ने चाहा तो शांति का कोई-न-कोई मार्ग निकल आयगा।

पू० बापूजी की आज्ञा लेकर बम्बई रवाना हुआ।

५-७-४१, नासिक रोड

पू० बापूजी का तार मिला। राजकुमारी बहन का शिमला आने का निमंत्रण आया है। मुझे वर्धा बुलाया है। मैंने सोम या बुधवार तक पहुंचने का लिखा।

६-७-४१, वर्धा

बापू से मिला। बातचीत हुई। ता० १५ को शिमला जाने का निश्चय हुआ।

९-७-४१, वर्धा

सुबह ४ बजे घूमने निकला। सरदार पृथ्वीसिंह व शान्ताबाई साथ में थे। पैदल सेवाग्राम गया। बापू रास्ते में मिले। उनसे थोड़ा विनोद।

पू० बापू से ३ से ४ बजे तक बातचीत। बापू ने बताया कि राजकुमारीजी को शिमला मेरी मानसिक स्थिति पूरी तौर से बता दी है। राजकुमारी का आया हुआ पत्र भी पढ़ा। जलियांवाला बाग के बारे में बापू डॉ० गोपीचन्द को लिखेंगे। पृथ्वीसिंह के बारे में अपने विचार बापू से कहे। मुझे यह योजना आवश्यक मालूम देती है।

डॉ० सुशीला की माटुंगा में व्यवस्था करने के लिए प्रहलाद को समझाना। महेश का इलाज, उसे जेल में जाने की इजाजत नहीं देना।

वासन्ती के बारे में बापू ने कहा, 'धीरेन्द्र नहीं है इसलिए खुलासा नहीं हो सकता' इत्यादि ।

१०-७-४१, वर्धा

सुबह ४। बजे उठा और पैदल सेवाग्राम गया। राधाकिसन, शान्ताबाई व जानकीदेवी से बातचीत। पू० बापू से स्टेटमेंट के बारे में चर्चा। मेरे जेल जाने के बारे में विचार-विनिमय। जेल जाने की निकट-भविष्य में इजाजत नहीं मिली। मानसिक व शारीरिक शक्ति आने पर ही विचार होगा। स्टेटमेंट निकालने की जरूरत नहीं ।

११-७-४१, वर्धा

शाम को थोड़ी वर्षा खुली। मोटर में सेवाग्राम गया। खानसाहब साथ में थे। डॉ० दास, महेश, जानकीदेवी व मदू से बातें। वापसी में महादेव-भाई साथ आये। देहरादून-जेल में जवाहरलालजी से जो बातें हुई, वे महादेवभाई ने सविस्तर कही। सुनकर सुख व समाधान मिला। भूलाभाई तथा मौलाना के विचार व स्थिति समझी। कोई आश्चर्य नही हुआ। सरदार, मुंशी वगैरा के बारे में बातें हुई।

१२-७-४१, वर्धा

महादेवभाई दिल्ली गये। सेवाग्राम में बापू से मिला। जानकीदेवी व मदालसा से बातचीत ।

१३-७-४१, वर्धा

सेवाग्राम पैदल गया। वहां बापू के साथ घूमना। स्वास्थ्य के बारे में तथा शिमला के बारे में सूचना। विनोबा व काकासाहब से अखाड़े, लाठी, तलवार सिखाने आदि के संबंध में ठीक चर्चा। बम्बई हिन्दी-प्रचार के बारे में काकासाहब व नानावटी की भूल पर बापू ने उलहना दिया।

१४-७-४१, वर्धा

विनोबा ने शाम को ६ बजे नालवाड़ी में सत्याग्रह किया। पौन घंटा भाषण हुआ। भाषण अच्छा था। सेवाग्राम में प्रार्थना। बापू ने मनःस्थिति पूछी। मैंने बताया कि कोई विशेष सुधार नही हुआ।

रामकृष्ण व दुर्गाबहन से बातचीत ।

विनोबा गिरफ्तार कर लिये गए।

१६-७-४१, आगरा-दिल्ली

आगरा से मथुरा तक रामकृष्ण डालमिया से बातचीत । कल जो बातें की थीं, उसीपर विचार-विनिमय । गो-सेवा-संघ के बारे में पू० बापूजी की इच्छा व आज्ञा के अनुसार काम करना तय हुआ ।

१७-७-४१, शिमला वेस्ट (मेनर विला)

शिमला पहुंचा । राजकुमारी बहन व डॉ० शमशेरजंग व उनकी स्त्री मिले । स्नान, भोजन, बातचीत । बापू को तार व पत्र भेजा ।

१८-७-४१, शिमला

बापू का हृदय-स्पर्शी पत्र मिला । उसका जवाब भेजा । प्रभावती के पत्र का भी जवाब भेजा ।

२४-७-४१, शिमला

राजकुमारी बहन से देर तक बातचीत—सेवाग्राम के संबंध में खासकर बहनों के संबंध में । चरखा काता । साढ़े नौ बजे सोने चला गया । पर नींद नहीं आई । जयपुर के संबंध में और वहां के बारे में बहुत देर तक विचार चलते रहे । कई योजनाओं व सुधारों पर विचार चलता रहा । बाद में मानसिक स्थिति पर विचार शुरू हो गए । अगर जानकी में उदारता, विश्वास व निःस्वार्थ प्रेम बढ़ सके तो बहुत-कुछ शान्ति मिल सकती है, अन्यथा पू० बापू जानकी से बातें करें । राजकुमारी बहन की संगत तो हमेशा मिलना संभव नहीं, तथा वह व्यवहार्य भी नहीं है । इसलिए अगर चि० शान्ता, मदालसा, रेहाना, गुलाब इनमें से कोई मेरे साथ रहे, तो मुझे शांति मिल सकती है। क्योंकि इनके हृदय में मेरे प्रति उदारता व प्रेम विशेष रूप से दिखाई देता है। वैसे तो प्रभा व सुशीला में भी है, परन्तु वह संभव नहीं । बापू से बात करना होगा ।

एक बजे अन्दाज जाकर नींद आई ।

२६-७-४१, शिमला

दिल्ली से रघुनन्दन सरन के भेजे हुए श्री कृष्ण नायर आये । आगरा-जेल में जो नजरबंद भूख-हड़ताल कर रहे हैं, उनके बारे में राजकुमारी बहन लिखा-पढ़ी कर रही हैं । आज उन्हें भी संतोषजनक जवाब मिला । भूख-हड़ताल बन्द हो गई ।

आसफअली ने जेल से १६ पेज का लंबा पत्र भेजा। सरकार ने उसका फोटो ले लिया। पत्र शायद मौलाना को भेजा हो। डॉ० चौइथराम बापू के बहुत विरुद्ध हैं, और भी लोग प्राय: मुंशी-जैसे विचार रखते हैं। पंजाब में बहुत थोड़े लोग हैं, जो बापू की अहिंसा की व्याख्या को मानते हैं। देवदास गांधी को जयपुर के बारे में पत्र भेजा।

५-८-४१, शिमला

साढ़े चार बजे उठा। प्रार्थना की। अभयदेव ने माता आनन्दमयी का जो परिचय थोड़े में लिखा, वह पूरा पढ़ा। इनसे मिलकर कुछ समय इनके पास रहने की इच्छा हुई। बापू ने भी इनसे मिलने के लिए लिखा था।

७-८-४१, शिमला

गुरुदेव टैगोर की मृत्यु की खबर १ बजे करीब लगी। आज १२-१० पर वह चले गए। राजकुमारी बहन को बहुत ही बुरा लगा। दु:ख तो मुझे भी हुआ; परन्तु गुरुदेव की दृष्टि से तो ठीक ही हुआ है, ऐसा भी लगा। रात को रेडियो पर उनके समाचार सुने। हुगली के किनारे उनका दाह-संस्कार हुआ। बंगाल के गवर्नर, महात्माजी आदि के संदेश सुने। कलकत्ता में हाइकोर्ट वगैरा बन्द हुए। सरकारी झंडा आधा झुकाया गया था। जबरदस्त श्मशान-यात्रा निकली।

९-८-४१, शिमला

सुबह उठने के बाद और विचार चलते रहे। जयपुर के बारे में, सर फ्रांसिस वायली दौरे से आगए हों तो मिलना चाहिए या नहीं ? सर गिरजाशंकर वाजपेयी से तो खुलकर बातें हो ही गई थीं। उनकी राय राजकुमारी बहन, जवाहरलाल व बापू को तो मालूम थी ही। आखिर जब मैं फैसला नहीं कर सका तो परमात्मा का स्मरण कर चिट्ठी[1] डाली। चिट्ठी उनसे मिलने के प्रयत्न के पक्ष में आई। राजकुमारी बहन से कहा। श्री शिवराव के जरिये प्रयत्न शुरू किया।

---

[1]जब कभी जमनालालजी के सामने किसी प्रश्न के संबंध में समान महत्त्व का होने के कारण निर्णय पर पहुंचने में उलझन होती, तो वे चिट्ठी डालकर निर्णय कर लिया करते थे।

११-८-४१, शिमला

सुबह घूमते समय सरदार उमरावसिंह शेरगिल को बापू की गीता तथा विनोबा का परिचय ।

शाम को तारादेवी की ओर घूमने निकला । मुंशीजी नहीं आ सके । मिस बरिल साथ में थीं । सुबह बापू के परिचय का हाल व बाद में अहिंसा के संबंध में बातें । विनोबा का ठीक परिचय कराया । मेरे विचारों पर चर्चा होती रही । बहुत ही दयालु हृदय की लड़की है ।

१६-८-४१, देहरादून

स्नान-आदि से निवृत्त होकर माता आनन्दमयी (कमला नेहरू की गुरु) से राजपुर में मिलना हुआ । इनसे मिलने के लिए बापू ने भी लिखा था । १०। से १२। तक दो घंटे करीब वहां ठहरा व बातचीत की । इनके प्रति आकर्षण हुआ । अपनी मनःस्थिति कही—सभीके सामने । बाद में एकान्त में भी । उन्होंने प्रेमपूर्वक कुछ समझाया । मेरे सिर पर हाथ फेरा । शायद गोद में सुलाने का भाव हो । गोद की इजाजत दी । जाने के पहले फिर मिलने की इच्छा । स्थान रमणीय व सुन्दर मालूम दिया ।

जवाहरलाल व रणजीत पंडित से जेल में मिला । वहां कृष्णा व राजा हठीसिंग भी मिलने आये थे । देर तक बातचीत व विनोद । उनके विचार जान । इन्दु, बापू, व सुभाष के बारे में बातें । फल खाये । जेलर श्री काजमी सज्जन पुरुष हैं ।

१९-८-४१, राजपुर-देहरादून

बापू को तार व पत्र लिखा ।

२०-८-४१, राजपुर

मां आनंदमयी से एकान्त में मनःस्थिति पर विचार-विनिमय । मां पर ठीक श्रद्धा बढ़ती जा रही है । परमात्मा की बड़ी दया है । बापू सरीखे 'पिता' व माता आनन्दमयी का 'मां' के प्रेम का सौभाग्य मुझे इसी जन्म में प्राप्त हो रहा है । अब भी मैं नालायक रहा तो मेरा ही दोष या पाप समझना चाहिए । संभव है कि अब मेरा जीवन शुद्ध हो जाय ।

२१-८-४१, राजपुर-देहरादून

बापू का तार मिला । 'Glad stay at will' (खुशी है । जब

तक इच्छा हो, (मां के पास) ठहरो) । मां से एकान्त में बातचीत। १४ मई की जो डायरी नागपुर-जेल में लिखी थी और बापू को वर्धा में सुनाई थी, वह उन्हें पढ़कर सुनाई व समझाई। वैसे उसका सार तो पहले कहा ही था।

२३-८-४१, राजपुर

बापू का तार आया। महेश को वहीं रखना ठीक रहेगा। शान्ताबाई को, वह पसन्द करे तो, भेजने का लिखा है।

२६-८-४१, राजपुर

मां का प्रेम, प्रसाद, अमृत-पान मिला। इससे खूब सुख व समाधान मिला। आशा हो गई कि भावी जीवन समाधानकारक व शांतिपूर्वक बीतेगा।

२८-८-४१, राजपुर

श्री गौरीशंकर झंवर के साथ उनके घर भोजन। उनकी पुत्री कुमारी लीलावती झंवर, एम० ए०, बी० टी० से पारमार्थिक चर्चा। उनके आध्यात्मिक गुरु श्री सियाशरणदासजी, मां आनन्दमयीजी व महात्मा गांधीजी के बारे में चर्चा। उन्होंने कहा कि गांधीजी के बारे में आकाशवाणी सुनी गई थी कि वह पूर्वजन्म में सीताजी थे। देवताओं की प्रार्थना से यहां जन्म लिया है, इत्यादि।

३१-८-४१, कनखल-हरिद्वार

पू० बापू का तार आया। मां (आनन्दमयी) के साथ आने को लिखा। मां की इच्छा विन्ध्याचल वगैरा होकर बाद में आने की है।

२१-९-४१, वर्धा-सेवाग्राम

रात को नींद नहीं आई, पहले खांसी आती रही। कोई २ बजे से पहले से बापू से फैसला करने के बारे में विचार चलते रहे। स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति, सत्याग्रह, जयपुर-संबंधी कर्तव्य, हरिजन-संघ, खादी, गो-सेवा-संघ पर खासकर देर तक विचार चलता रहा। जयपुर-सुधार पर भी।

सेवाग्राम जाकर बापू को प्रणाम किया। भोजन के समय व ३॥ बजे बातचीत हुई। सुभाषबाबू व जवाहरलाल के बारे की खानगी बात भी हो गई। मेरे प्रोग्राम के बारे में मैंने चार प्रस्ताव रखे—

१. सत्याग्रह करके जेल जाना। बापू ने कहा—बिलकुल नहीं।

२. जयपुर का बाकी रहा कार्य करना। बापू ने उसके लिए भी 'नहीं' कहा।

३. पवनार या अन्य स्थान में चरखा, भजन व वाचन में समय बिताना। बापू ने कहा कि 'यह भी ठीक नहीं।'

४. गो-सेवा का कार्य अगर आप इस समय उपयुक्त व जरूरी समझते हों तो करना। बापू ने कहा—'यह कार्य मुझे पसन्द है, अवश्य किया जाय।'

२२-९-४१, वर्धा

श्रीमन् से बातें। वह आज श्रीनगर (काश्मीर) शिक्षण-परिषद् में भाग लेने गया।

चि० वासन्ती को देखकर पू० काकासाहब की कल बापू से जो बातें हुईं, वे कहीं। उनको हरिजनों के सम्बन्ध में पहले के अनुसार सवर्णों में काम करने की ज्यादा आवश्यकता मालूम दी। वह बापू को लिखेंगे।

चि० राधाकिसन से देर तक बातचीत। वह गो-सेवा का कार्य महत्त्व का, जरूरी व करने योग्य समझता है।

२३-९-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। साथ में रेहाना व गोपीकृष्ण थे। बापू से थोड़ी देर बातचीत। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की चर्चा।

२८-९-४१, वर्धा

गो-सेवा-संघ, लक्ष्मीनारायण मंदिर-ट्रस्ट वगैरा के बारे में नोट्स लिखे।

पू० बापू से मिला। गो-सेवा-संघ के प्रोग्राम के संबंध में विचार-विनिमय।

३०-९-४१, वर्धा

गो-सेवा-संघ के कार्य का बापू के हाथ से मुहूर्त हुआ। पू० बापूजी ने गो-सेवा-संघ के कार्य का उद्घाटन किया। मेरी जिम्मेदारी पर सुन्दर विचारणीय भाषण व आशीर्वाद। नालवाड़ी के ऊपरवाले यानी उत्तर भाग का नाम 'गोपुरी' रखा गया।

१-१०-४१, वर्धा

पू० बापूजी, राजेन्द्रबाबू, राधाकृष्ण, काकासाहब, स्वामी आनन्द, परमेश्वरी वगैरा की हाजिरी में गो-सेवा-संघ का विधान निश्चित हो गया।

गांधी-जयन्ती के निमित्त गांधी-चौक में ५॥ से ६। तक सामुदायिक कताई में चरखा काता। पू० राजेन्द्रबाबू भी साथ में थे।

२-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। पू० बापू का जन्म-दिन था। उनको प्रणाम किया, बातचीत व चर्चा। बापू ने महिला-आश्रम की बहनों को उपदेश दिया—विनोद भी किया। रिषभदास रांका के मन में जो हलचल चल रही थी, उसकी सारी स्थिति समझकर बापू ने उसे मेरे पास ही गो-सेवा का कार्य करने की आज्ञा दी।

३-१०-४१, वर्धा

चि० मदू के पास बैठा। उसके पास पद्माबाई, कृष्णाबाई, सत्यप्रभा व काशी थी। प्रार्थना की। मदू को सुबह ५-४८ पर लड़का हुआ। वजन ६॥ रतल। बालक व मदू प्रसन्न थे। बापू को फोन किया।

पू० बापू से मिलना हुआ। पू० बा व डॉ० दास आये। बापू के हाथ के शहद व पानी की घूंटी पू० बा ने दी।

४-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से फिरोज गांधी को मिलाया। कल इतवार को सुबह इनसे खानगी में बात करेंगे।

फिरोज गांधी से साफ-साफ बातचीत, खुलासा व शंका-समाधान होता रहा।

५-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से फिरोज गांधी की बातचीत कराई।

खादी-कार्य के लिए जाजूजी के साथ जगह देखी। कालेज के लिए भी जमीन देखी।

फिरोज गांधी से बापू की बात हुई। मैंने उसे कहा कि जवाहरलाल व बापू के आशीर्वाद प्राप्त करने का पूर्ण आग्रह रखना ही चाहिए। समय लगेगा, तो लगाऊंगा।

१३-१०-४१, बंबई

सुव्रताबहन से गो-सेवा-संघ व खादी-कार्य के बारे में सविस्तर लंबी चर्चा। विचार-विनिमय होता रहा। बापूजी के समागम में ज्यादा

रहने के लिए उन्हें समझाया। स्वीकार तो कर लिया है, रहे जब की बात।

१९-१०-४१, वर्धा

चार बजे उठा। निवृत्त हुआ। ब्रिजलालजी बियाणी ने विनोबा की जो जीवनी लिखी है, वह श्री धोत्रे को देखने को दी। बापू से भी बातचीत की।

सेवाग्राम गया—जानकी, दामोदर साथ में। घूमते समय बापू ने तीन बातों पर विचार करने का कहा—

१. रामकृष्ण डालमिया व बीकानेर-भाषण तथा अन्य शिकायतें। थोड़ी चर्चा के बाद मैंने कहा कि कई कारणों से मैं खुद ही इन बातों पर विचार कर रहा हूं।

२. मेहमानों का भार ज्यादा पड़ता होगा, इसकी व्यवस्था के बारे में देर तक चर्चा। सेवाग्राम तथा वर्धा के बारे में भी।

३. महेश मिश्र के लिए पत्ती की सब्जी व अंगूर की व्यवस्था।

४. मथुरादास त्रिकमजी की बीमारी का हाल कहा।

५. गो-सेवा-संघ के बारे में भी थोड़ी चर्चा हुई।

६. मेरे घुटने के दर्द व ऐक्स-रे की चर्चा। मलबार-मसाज (मालिश) के बारे में कहा कि कराके देखो।

२३-१०-४१, वर्धा

३ बजे बापू ने सेवाग्राम बुलाया। राजेंद्रबाबू का फोन आया था। गोपुरी होते हुए जानकी के साथ बैल-टांगे में गया। बापू सिंधवाले अल्लाबख्श से बातें करते रहे।

बापू, सरदार, राजाजी, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, महादेवभाई व मैं देर तक वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय करते रहे। महादेव-भाई ने जवाहरलालजी व मौलाना के विचार कहे। राजाजी के विचार पूना में जो थे, उससे ज्यादा दृढ़ हुए।

सरदार से थोड़ी देर बातचीत हुई।

२४-१०-४१, वर्धा

गंगाधरराव देशपांडे के साथ सेवाग्राम गया। पू० बापूजी को आज

मैंने अपने विचार कह सुनाये । राजाजी, सरदार, कृपलानी, महादेवभाई मौजूद थे ।

२५-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम जाते समय बैल-टांगे में विनोबा के कुछ पन्ने पढ़े ।

बापू के पास राजाजी, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, गोविन्दवल्लभ पंत, गंगाधरराव देशपांडे, सरदार, महादेवभाई, किशोरलालभाई व मैं । राजनीतिक विचार-विनिमय होता रहा ।

२६-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया । चि० ओम्, प्रमीला देशपांडे, मोहन, बालकृष्ण की स्त्री साथ में थे । बापूजी ने पहले तो श्रीनगर खादी-विवाद की जाजूजी से बातें कीं । बाद में हम लोगों को याने राजाजी, सरदार, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी को अपनी भविष्य की दृष्टि समझाई ।

२८-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया । बापू ने लम्बा स्टेटमेंट बनाया । वह पढ़ा । उसपर थोड़ी चर्चा हुई । उसमें सुधार हुआ ।

३०-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया । गो-सेवा के विधान में जो सुझाव आये थे, उनके अनुसार जो थोड़ा परिवर्तन किया था, वह बापू को पढ़कर सुनाया । राजेन्द्र-बाबू, जाजूजी, राधाकिसन, ऋषभदास, रामनारायणजी, किशोरलाल-भाई वगैरा हाजिर थे । बापू ने अपनी स्वीकृति दे दी । नियम लेने के बारे में प्रतिज्ञा में जो फरक किया, वह भी स्वीकार किया । कल जन्म-दिन होने के निमित्त बापू व बा को आज ही प्रणाम कर लिया ।

३१-१०-४१, पवनार

चरखा काता । आज के 'नागपुर टाइम्स' में बापू का स्टेटमेंट आया । वह फिर से सुना ।

९-११-४१, वर्धा

वसन्त व सरला को बापू के आशीर्वाद का महत्त्व समझाया । कमला भी उपस्थित थी ।

स्टेटमेंट बनाया। व्याख्यान का खुलासा। अम्बुजम्मा के रुपये की योजना। प्यारेलाल ने जेल की घटना कही।

९-१२-४१, गोपुरी

स्नान वगैरा करके सेवाग्राम गया। रेलवे-फाटक से साइकल पर। बापू से बातें। डेरी एक्सपर्ट सरदार सर दातारसिंह का पत्र पढ़ाया। उसका जवाब लिखाया। महिला-आश्रम व अम्बुजम्मा बहन द्वारा प्राप्त सहायता की योजना बापू को दी। वहीं पर बापू के साथ भोजन। किशोरलालभाई, राजकुमारीबहन से बातचीत। कु० कमला व करुणा से थोड़ी बातें। बैली में श्री बापूजी बंगले आये। वह बारडोली गये।

२२-१२-४१, गोपुरी

विनोबा के दक्षिण (मद्रास) में अधिक रोज ठहरने के बारे में तथा वहां के लोगों को बापू की दृष्टि समझाने के बारे में बातें हुईं। उन्होंने इसके लिए (वहां) ज्यादा ठहरने की आवश्यकता नहीं बताई।

२४-१२-४१, गोपुरी

श्री राजकुमारी बहन का पत्र वर्धा में ए० आई० सी० सी० के बारे में मिला। ऐक्सप्रेस तार किया कि यहां होने में कठिनाई है। बापू का पत्र मिला। बाद में शाम को किशोरलालभाई सेवाग्राम से इसीलिए आये। उन्होंने बारडोली टेलीफोन से महादेवभाई से बातें कीं। यहां व सेवाग्राम में करने में कठिनाई बतलाई। वह कल तार से सूचना करेंगे। बापू के सुन्दर पत्र का जवाब भी भेजा।

२७-१२-४१, गोपुरी

पू० बापूजी का पत्र ता० २४-१२ का लिखा हुआ मिला। इससे मुझे दुःख ही पहुंचा। मैंने उसका जवाब तो लिखा, परन्तु सन्तोष नहीं हुआ। इसलिए भेजा नहीं। किशोरलालभाई से मिलकर भेजने का निश्चय किया। सेवाग्राम जाने के लिए बैली-टांगे की व्यवस्था नहीं हो सकी।

२८-१२-४१, गोपुरी

सेवाग्राम गया। राष्ट्रीय ध्वज-वन्दन में शामिल।

किशोरलालभाई को बापू का पत्र दिखाया। उन्होंने व महादेवभाई ने टेलीफोन पर बापू के दुःख के जो समाचार कहे थे वे कहे। उन्होंने बापू को

पत्र लिखा, उसीमें मैंने थोड़ा-सा लिख दिया। मैंने जो दो पत्र लिख रखे थे, वे फाड़ डाले। काशीबहन गांधी ने जो भ्रम फैलाया था, उसके बारे में किशोरलालभाई ने कहा कि वह क्षमा मांगती है, इत्यादि। उनका समाधान हो गया।

३०-१२-४१, गोपुरी

मीराबहन सेवाग्राम से आईं। गोपुरी देखी। गो-सेवा-संघ का विधान व उद्देश्य उनको समझाया। उनके साथ में भोजन, बातचीत। उन्होंने व्रत लेने में थोड़ी कठिनाई बताई। उन्होंने अपनी योजना बताई। बापू से स्वतंत्रता लेकर हरिद्वार, सहारनपुर, गंगा, हिमालय के नजदीक स्त्रियों का छोटा-सा आश्रम बनाकर वहां कार्य करने का निश्चय-सा किया, आदि बातें बताईं। मैंने कई सूचनाएं उन्हें दीं।

डायरी के अंश

१९४२

१-१-४२, गोपुरी

बापू कांग्रेस से अलग हुए। वह सब पढ़ा; थोड़ा बुरा तो मालूम दिया, परन्तु विचार करने पर ठीक ही हुआ, ऐसा लगा।

७-१-४२, गोपुरी

विनोबा से डेरी-ऐक्सपर्ट श्री कोठावाला के पत्र पर विचार-विनिमय।

राजेन्द्रबाबू के स्टेटमेंट, वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, बापू के स्टेटमेंट तथा मैंने जो स्टेटमेंट दिया, उसपर विचार-विनिमय। वहीं नालवाड़ी में प्रार्थना।

९-१-४२, गोपुरी

बजाजवाड़ी में मेहमानों की व्यवस्था पर विचार-विनिमय। बापू कल सुबह ५ बजे आयेंगे।

१०-१-४२, गोपुरी

गाय-बैलों की प्रदर्शनी देखी। पू० बापूजी की गाड़ी लेट आई।

बजाजवाड़ी से रेलवे-फाटक तक जाते हुए बीच-बीच में बापू से बात-चीत होती रही। बापू ने कैम्प देखा। मदू से मिलकर व महिला-आश्रम होते हुए चौकी से मोटर में बैठे।

गो-सेवा-संघ कान्फ्रेंस १ से ४ फरवरी तक करने के बारे में बापू से चर्चा। मालवीयजी का पत्र, वे गो-सेवा-संघ के सदस्य बने। डॉ० भगवानदास भी शर्त के साथ सदस्य बने। कोठावाला का पत्र, हिगिनबाथम आवेंगे। रचनात्मक काम के १३ मुद्दों में गो-सेवा का उल्लेख भी नहीं है। स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस व श्री राजकुमारीजी को जनरल सेक्रेटरी बनाने के बारे में, 'जन्मभूमि' गुजराती दैनिक के बारे में भी चर्चा। बापू चक्षु-यज्ञ का उद्घाटन ता० २७ जनवरी को करेंगे।

१३-१-४२, गोपुरी

वर्किंग कमेटी सुबह ९ से ११ व दोपहर २। से ६। तक हुई। दोपहर की मीटिंग में बापूजी भी आये। ठीक चर्चा व विचार-विनिमय हुआ। मेरे त्याग-पत्र के बारे में बापूजी ने कहा—"मौलाना तथा अन्य सदस्यों की इच्छा त्यागपत्र स्वीकार करने की नही है। अतः मुझे इस समय आग्रह नही करना चाहिए। मैं अपने मन पर बोझ नही रखूं।" इत्यादि।

१४-१-४२, गोपुरी

वर्किंग कमेटी ९ से ११ व शाम को २। से ६। तक हुई। शाम की मीटिंग में बापूजी आये। रचनात्मक कार्य की अच्छी चर्चा हुई। मुझे भी बोलना पड़ा। लड़ाई की परिस्थिति पर विचार।

१५-१-४२, गोपुरी

ए० आई० सी० सी० २। से ७ तक हुई। बीच में पौन घंटा चाय-पानी। मौलाना का भाषण थोड़ा लंबा व पुनरावृत्ति के साथ हुआ; परन्तु वह बहुत स्पष्ट, खुलासेवार, नम्रता से भरा हुआ व बापू के प्रति श्रद्धा से भरा हुआ था। भाषण के बीच में मेरी आंखों में तो पानी आ गया। बापू ने भी परिस्थिति स्पष्ट कर दी। उन्होंने खास तौर से कहा कि "मैं बनिया हूं व बनिया ही मरना चाहता हूं। मै अपनेको व्यावहारिक समझता हूं। हवा में उड़नेवाला नही हूं। मैं तो ऐरोप्लेन मे भी नही बैठा हूं। दूर से ही देखे हैं।" जवाहरलालजी का भी भाषण ठीक हुआ। उन्होंने कहा, "बापू सौ फीसदी व्यावहारिक हैं, यह मेरा अनुभव है। हां, यह ठीक है कि मैं हवा में उड़नेवाला हूं। यह मुझे मालूम है।" इत्यादि। सब ठीक रहा।

१७-१-४२, गोपुरी

बजाजवाड़ी में वर्किंग कमेटी की मीटिंग ९ से ११ तक हुई। स्वयं-सेवकों के बारे में व सुभाषचन्द्र बोस की योजना के बारे में बातचीत। दादा धर्माधिकारी ने राष्ट्रीय युवक-संघ के काम के कारण, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्ध रखनेवाले किसी व्यक्ति के धमकी-वगैरा के जो पत्र आये, वे दिखाये। उस बारे में थोड़ी चर्चा वर्किंग कमेटी में व बापूजी से हुई। इन्दू के साथ सेवाग्राम गया। पू० बापूजी से नारायणदासजी बाजोरिया

को मिलाया। उनका जेवर व पांच हजार का चेक जाजूजी को दिलाया।

पू० बापूजी ने ३ बजे से ५ बजेतक कार्यकर्ताओं को रचनात्मक कार्य का खुलासा समझाया।

१८-१-४२, गोपुरी

जवाहरलालजी, पट्टाभि, बलवंतराय सेवाग्राम से आये। उन्होंने कहा, बापू ने आखिर फैसला कर दिया कि बलवंतराय यहां रहेगे। मैंने सरदार से जो बात हुई, वह कही कि उनकी इच्छा तो इन्हें भावनगर (काठियावाड़) रखने की है। इतने पर भी बलवंतराय अपनी जिम्मेदारी पर जो निश्चय करना हो, वह करें। वर्धा (सेवाग्राम) में आफिस रहे।

१९-१-४२, गोपुरी

बापूजी आज बनारस गये। राम भी साथ गया।

२२-१-४२, गोपुरी

राधाकृष्ण व महाबीरप्रसाद पोद्दार के साथ विनोबा से मिला। विनोबा से महाबीरप्रसादजी का परिचय करवाया। शिवाजी, गो-सेवा-संघ, विनोबा की आत्मकथा, बापू की इजाजत पर चर्चा। श्री लक्ष्मी-नारायण का निजी मंदिर हटाने का प्रश्न श्री मेहता इंजीनियर ने फिर उठाया। राधाकिसन की इच्छा भी हुई। पर विनोबा का कहना हुआ कि नहीं हटाना चाहिए।

२५-१-४२, गोपुरी

रेलवे-फाटक से साइकल पर सेवाग्राम गया। महाबीरप्रसाद पोद्दार भी साथ हो लिये। महादेवभाई ने बनारस की सफल यात्रा, नागपुर चोखा-मेला छात्रालय में ठाकरे वगैरा ने जो पत्थर फेंके और उससे कइयों को चोट लगी, दो जने अस्पताल भेजे गए, आदि की जानकारी दी।

बापू ने कहा कि पू० मालवीयजी का स्वास्थ्य बहुत ही कमजोर हो रहा है, अतः उन्हें आने का कष्ट करने की उन्होंने ही मनाही कर दी है। उन्हें पत्र लिखा। नेत्र-यज्ञ में बापूजी ४ बजे पहुंचेंगे। स्टेट्स कान्फ्रेंस का दफ्तर सेवाग्राम लाया जाय व बलवंतराय मेहता भावनगर ही रहें।

बजट का विचार बाद में कर लेना होगा। कोठावाला को गो-सेवा-संघ के संबंध में बापू के नाम से तार भेजना। महावीरप्रसादजी पोद्दार के बारे में बातचीत।

२७-१-४२, गोपुरी

बजाजवाड़ी में मोगावाले डाक्टर रा० ब० मथुरादास ने आंखों की बीमारी की जिस प्रकार छंटनी की व आपरेशन किया, वह देखकर ताज्जुब हुआ। पू० बापूजी भी चार बजे आकर देख गए।

२८-१-४२, गोपुरी

डा० मथुरादास को लेकर सेवाग्राम गया। बापूजी से अच्छी तरह परिचय व बातचीत।

३०-१-४२, गोपुरी

बापूजी ने प्रार्थना के बाद चरखा-संघ के विद्यार्थियों को उपदेश दिया। उसके बाद बापूजी से थोड़ी बातें।

३१-१-४२, गोपुरी

विनोबा व राधाकिसन के साथ गो-सेवा-संघ की बातें करते हुए बैली में सेवाग्राम जाना-आना। बापू से गो-सेवा-कान्फ्रेंस के सम्बन्ध में बातें की। घनश्यामदास बिड़ला को सेवाग्राम के आसपास की खेती व कुओं की योजना पर उन्होंने अपने जो विचार कहे, वे मुझे बताये।

१-२-४२, गोपुरी

ठीक २ बजे परिषद् शुरू हुई। वन्देमातरम् बापू ने बैठकर गवाया। गो-सेवा-कान्फ्रेंस में बापू का भाषण भावपूर्ण, दु:ख से भरा हुआ व विस्तार के साथ हुआ। सदस्य बनने पर जोर। विनोबा का भाषण विद्वत्तापूर्वक, गो-सेवा-संघ के नामकरण का खुलासा करनेवाला व महत्त्वपूर्ण था। सदस्यों की शंकाओं का निरसन तथा अन्य खुलासे।

२-२-५२, गोपुरी

सुबह ही गो-सेवा-संघ के बारे में पू० बापूजी को पत्र लिखकर गोपी के साथ सेवाग्राम भेजा; जो जवाब मिला, वह समझ में नहीं आया।

३-२-४२, गोपुरी

बजाजवाड़ी में २ से ५। तक संचालकों की व गो-विशारदों की बैठक

हुई। पू० बापूजी ने गाय व भेंस का खुलासा किया। ठीक चर्चा, विचार व ठहराव हुए।

४-२-४२, गोपुरी

गो-सेवा-संघ के संचालक-मंडल की बैठक ८ से १० तक हुई। शाम को संचालक-मंडल व ऐक्सपर्ट लोगों की बैठक २ से ५ तक हुई। पू० बापूजी से ठीक चर्चा व खुलासा हुआ। कार्य व उत्साह ठीक रहा।

५-२-४२, गोपुरी

मांटगुमरी वाले सर दातारसिंह के साथ बैली में सेवाग्राम जाते समय उन्होंने मद्रास में कमीशन के सामने जो बयान वगैरा हुए, वे बतलाये। बम्बई में ७ मार्च से इसकी मीटिंग का काम शुरू होगा। बापू से भी भोजन करते समय व बाद में कमीशन के बारे में बातें हुईं। वापस आते समय उनके कौटुम्बिक हाल व विचार आदि जाने। ठीक परिचय व दोस्ती हो गई।

सेवाग्राम में घनश्यामदास बिड़ला, नारायणदास बाजोरिया वगैरा से बातें। गो-सेवा-संघ की योजना अमल में लाने के बारे में देर तक विचार-विनिमय हुआ।

६-२-४२, गोपुरी

डा० महोदय ने, बापू से जो बातें हुईं, वे बताईं।

७-२-४२, गोपुरी

जानकी व शान्ता के साथ घोड़ेवाले टांगे में सेवाग्राम गया। बापू से नीचे-अनुमार बातें हुई—

(१) बच्छराज कंपनी में जो सार्वजनिक रकम जमा है, वह वहां से उठा ली जाने के बारे में श्री केशवदेवजी का पत्र। बापू ने पूछा कि फिर उसे कहां जमा रखा जाय? मैंने कहा कि चरखा-संघ में।

(२) श्री प्रताप सेठ का पत्र। उन्होंने कहा कि बीस लाख रुपये मिलने चाहिए। इसपर विनोद भी हुआ। तय हुआ कि मैं उन्हें लिखूं।

(३) डॉ० महोदय के बारे में बापू की राय यह रही कि उसे यहां स्वतंत्र धंधा नहीं करना चाहिए। मैंने कहा कि मन्नू (त्रिवेदी) से बात कर मैं फैसला करूंगा।

(४) अम्बुजम्मा के रुपयों के बारे में कहा कि रकम महिला-आश्रम को दी जाय।

(५) जरबाई-फंड का उपयोग हिन्दी पढ़नेवाली बहनों को छात्र-वृत्ति देने के रूप में किया जाय।

(६) जानकी व शान्ता ने बापू के साथ अलग बातें कीं। बापू के साथ घूमना।

९-२-४२, गोपुरी

सार्वजनिक फंड के व दूसरे रुपये चरखा-संघ में जमा रखने के बारे में जाजूजी से देर तक बातचीत। उन्होंने अपनी कठिनाई बताई। डॉ० महोदय के बारे में बातचीत बापू से हुई थी, वह तथा मेरे विचार उन्हें कहे। महोदय भी आ गए थे।

बैली से सेवाग्राम गया। रास्ते में वासन्ती व विजया से बातें। भाई घनश्यामदास बिड़ला ने मिलने बुलाया था। उन्होंने कहा कि टेकड़ी पर उनके लिए व नारायणदासजी के लिए बंगले बनें।

सेवाग्राम में वनमाला ज्यादा बीमार है।

११-२-४२

११ फरवरी, १९४२ को जमनालालजी का वर्धा में देहावसान हो गया।

●

जानकीदेवी बजाज को

जमनालाल बजाज द्वारा लिखे पत्रों में से

गांधीजी-संबंधी उल्लेख

●

कलकत्ता, ६-१-१९१६

सप्रेम आशीर्वाद । यहां मारवाड़ी जाति में विद्या-प्रचार के लिए प्रयत्न हो रहा है ।

श्री गांधीजी महाराज व उनकी धर्मपत्नी व पुत्र यहां आये थे । अपनी तरफ से सब प्रबन्ध किया गया था । १० रोज तक इनकी सेवा करने का ठीक मौका मिल गया था ।

.. ..

दिल्ली जाते समय, (रेल में)
११-२-२१

कल सुबह १० बजे महात्माजी के साथ काशी से रवाना होकर कल ही शाम को अयोध्या (फैजाबाद) आये । काशी में ४ रोज तक प्रातःकाल गंगा-स्नान का खूब आनंद रहा, तथा पूज्य गांधीजी, मालवीयजी एवं अन्य विद्वानों और महात्माओं के दर्शन-वार्तालाप का लाभ मिला । अयोध्या (फैजाबाद) में पूज्य महात्माजी का व्याख्यान बहुत ही उत्तम हुआ । वहां पर एक राजनैतिक काम करनेवाले नेता, श्री केदारनाथजी को, सरकार ने हाल ही में गिरफ्तार कर लिया था । उनकी धर्मपत्नी का व्याख्यान भी हुआ । वह बहुत ही बहादुरी तथा शांति से काम करनेवाली मालूम हुई । तलाश करने से मालूम हुआ कि उसकी अपने पति पर बहुत ही भक्ति तथा प्रेम व श्रद्धा थी । तथापि वह हताश न होकर पति का कार्य कर रही है । वह जेल में अपने पति से मिलने गई थी तथा उसने अपने पति से पूछा कि क्या वह उन्हें छुड़ाने का प्रयत्न करे ? उसपर उस देवी के पति ने कहा कि 'अगर मुझे फांसी का हुक्म भी हो तो तुम छुड़ाने के लिए प्रयत्न मत करना ! देश-सेवा के लिए आनंद से मरना ही मनुष्यत्व है । तुम आनंद व शांति से चरखे का तथा सूत कातने का प्रचार करो ।' यह बात उस देवी ने अपने मुंह से सभा में बताई । अगर यह देवी इतना धीरज व शांति नहीं रखती, तो शायद इनके पति को माननेवाली साधारण जनता उन्हें छुड़ाने के लिए कोशिश करती या धूमधाम करती व ऐसा होने

पर महात्माजी के सिद्धान्त के मुताबिक स्वराज्य के कार्य में पूरी बाधा पैदा होती।

बाबा रामचंद्र नाम के एक प्रसिद्ध नेता इस प्रांत (यू० पी०) में हैं, खासकर किसानों में। उन्हें भी सरकार ने काशी में महात्मा गांधीजी का व्याख्यान होते समय ही गिरफ्तार कर लिया। सभा में बहुत भारी भीड़ थी, पर वहां पूर्ण शांति रही। गिरफ्तारी के समय मैं भी वहां मौजूद था। लोगों को शांत व प्रसन्न रखने का उद्योग किया गया तथा एकत्र लोगों ने खूब ही शांति तथा आनंद का प्रदर्शन किया। महात्माजी (पूज्य बापूजी) की वजह से ज़माना (समय) एकदम बदल गया है। मुझे इस दौरे में बहुत ही आनंद तथा लाभ हो रहा है। परमात्मा ने चाहा तो अवश्य जीवन की उन्नति होवेगी। तुम्हारी कई बार याद आया करती है। आशा है कि अब तुम किसी तरह से भी पीछे नहीं रहोगी। धैर्य के साथ तथा शांति व सत्य के साथ कार्य करती रहोगी। मेरी समझ से कम-से-कम नौ मास तक कोई भी दागीना (गहना) नही पहनने का तुम व्रत ले लो। नथ छोड़कर पांव की कड़ी भी निकाल देनी चाहिए, व स्वदेशी कपड़े ही उपयोग में लाने चाहिए। कपड़ों के बारे में तो तुमने निश्चय-सा कर ही लिया है।

पूज्य बापूजी का साथ छोड़ते हुए जी दुःख पाता है। उनका भी हृदय से बहुत ही ज्यादा प्रेम है। आगे इनकी आज्ञा-मुताबिक आना होवेगा।

.. .. ..

बंबई, ६-३-१९२१

सविनय प्रेम ! अबके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के साथ जो यात्रा हुई, उससे बहुत फायदा हुआ। बहुत करके शनिवार को वर्धा पहुंचना होवेगा।

.. .. ..

बंबई, २९-६-२१

पत्र लिखने का बहुत दिनों से विचार था, परन्तु 'तिलक स्वराज्य-फंड' के कार्य के कारण नहीं लिख सका। परमात्मा की कृपा से पू० महात्मा गांधीजी और हिन्दुस्तान की बात रह जावेगी, ऐसे लक्षण

मालूम होते हैं। मुझे बहुत करके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के साथ मद्रास, लखनऊ, कलकत्ते की तरफ जाना पड़ेगा।

• • • — —

पटना के नजदीक (रेल में),
१५-८-२१

मैं अभी दो-ढाई घंटे बाद ही पूज्य बापूजी (महात्माजी) के पास पहुंच जाऊंगा। कल वहांपर (पटने में) कमेटी का कार्य होगा। बाद में मुझे तो ऐसा दीखता है कि पूज्य बापूजी के साथ कलकत्ता आसाम, मद्रास आदि स्थानों में जाना होगा। वह तो मुझे पहले ही ले जाना चाहते थे, परंतु बंबई के मित्रों ने नहीं जाने दिया। बापूजी के साथ रहने से मुझे तो बहुत फायदा पहुंचने की आशा है। मेरी इच्छा तो ऐसी होती है कि तुम और मैं दोनों इनके साथ भ्रमण में रहा करें, जिससे इनकी सेवा करने का मौका भी मिले तथा कई बातों का ज्ञान हो। ईश्वर करेगा तो यह भी इच्छा पूर्ण हो सकेगी। देश में भी एक बार जाने का बहुत मन होता है। पूज्य बापूजी छुट्टी देंगे तो वहां भी तुम्हें साथ में ले जाने का विचार है।

• • • • • •

गोहाटी, २०-८-२१

यहां के मारवाड़ी व्यापारियों ने भविष्य में विदेशी सूती कपड़ा नहीं मंगाने की प्रतिज्ञा कर ली। यह कार्य तो बापू के ही प्रताप से हुआ, परन्तु बिना विशेष उद्योग किये ही थोड़ा यश इसमें मुझे भी मिल गया। यहां के कार्यकर्ता बहुत प्रसन्न हो गए। गोहाटी में विदेशी कपड़ों की होली भी अच्छी हुई। भारी-भारी कीमती कपड़े भी जलाये गए। यहां के लोग थोड़े भोले हैं, और बापूजी पर इनकी बहुत श्रद्धा व प्रेम है, तथा त्याग भी है। गोहाटी में पहाड़ के ऊपर कामाख्यादेवी का प्राचीन मंदिर है, वहां भी मैं गया था। इधर प्राकृतिक दृश्य देखने-योग्य और बहुत ही सुन्दर हैं। चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। एक तो बापू का समागम; दूसरे नाना प्रकार के दृश्य तथा मनुष्यों से भेंट का लाभ। हमारे साथ पू० मौलाना मुहम्मदअली साहब की धर्मपत्नी भी हैं। वह बुर्का ओढ़ती हैं, पर बापूजी तथा हम

लोगों से बुर्का ओढ़े-ओढ़े ही बोलती है। गोहाटी में स्त्रियों की तीन सभाएं हुई थीं। इनमें एक मारवाड़ी स्त्रियों की भी थी। उसमें करीब १५० स्त्रियां होंगी। उसमें शोरगुल तो था, पर स्वदेशी-प्रचार का असर ठीक हुआ। उस सभा में मुझे बापूजी के भाषण का अर्थ मारवाड़ी भाषा में बताना पड़ा था।

.. .. ..

तेजपुर (आसाम), २२-८-२१

गोहाटी (आसाम) ता० १८ को पहुंचे। उस दिन श्रावणी पूर्णिमा थी। रास्ते में (रेलवे) स्टेशन पर ही स्नान करके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के हाथ से ही नई जनेऊ पहनी व उसी रोज़ शाम को उनसे राखी बंधवाई। कलकत्ते से हाथ का कता हुआ और कसुंबे में रँगा हुआ सूत का तार साथ ले आये थे। उन्होंने बहुत प्रेम तथा प्रसन्नता से राखी बांधी। मैंने राखी बांधने की दक्षिणा के लिए उनसे पूछा तो उन्होंने उनकी विरासत संभालने को कहा; तो मैंने कहा कि आप अपने आशीर्वाद के द्वारा मेरा आत्मिक बल बढ़ा दे। यह बात तुम्हारे ध्यान में रहे, इसलिए लिखी है। रक्षा-बंधन का दिन खाली नहीं गया। मेरी समझ से तो बापूजी ने इस भाव से अभीतक और कोई राखी नही बांधी होगी। जिस तरह हम लोगों की जिम्मेदारी बढती जाती है, उसी तरह परमात्मा हमारी ताकत भी बढायेगा, ऐसा मुझे भरोसा है।

.. .. ..

सिलहट (आसाम), २९-८-१९२१

तेजपुर (आसाम) से लिखा हुआ पत्र तुम्हें समय पर मिल गया होगा। आसाम के भ्रमण में कई नई बातें देखने में आईं। इधर भी पूज्य बापूजी पर बहुत श्रद्धा व भक्ति है। आसाम में मारवाड़ी, खासकर अग्रवालों के, घर बहुत हैं। गांव-गांव में और जंगलों व बगीचों में भी इनकी दूकानें हैं। डिब्रूगढ़ में मारवाड़ियों की तरफ से अच्छा स्वागत हुआ। मैं वहांपर एक रोज पहले पहुंच गया था। मारवाड़ी स्त्रियों की सभा भी हुई। महात्माजी ने विदेशी वस्त्र त्यागने के बारे में तो कहा ही, उसके साथ ही अपने समाज में गहने-दागीने पहनने की प्रथा

भी बहुत बुरी ह, इस बारे में भी कहा। इससे सुन्दरता नष्ट होती है। जहां-तक हो सके जेवर न पहने जायं। अगर पहने ही जायं तो बहुत थोड़े। और कपड़ा भी साफ-स्वच्छ, सफेद रंग का काम मे लाया जाय कि जिससे मारवाड़ी बहनें भी आसाम की बहनों के मुताबिक सीताजी के समान स्वच्छ दिखने लग जायं। यह बात, इस तरह का भाव समझाकर, उन्होंने कही और मुझसे कहा कि जिस तरह से हो, दागीने और रंग-बिरंगे अधिक कपड़े पहनने की चाल कम करने का प्रयत्न करना चाहिए। स्टेशनों पर हजारों लोग जमा हो जाते हैं और 'जय-जय' पुकारा करते हैं। महात्माजी के दर्शन कराने के लिए खूब प्रार्थना करते है। मै बापूजी के डिब्बे में ही रहता हूँ। बहुत बार मुझे ही यह कठोर कार्य करना पड़ता है और लोगों को दर्शनों से वंचित रखना पड़ता है। आज बापूजी के मौन का दिन (सोमवार) है। यहां सिलहट में नदी के किनारे एक बीकानेरी मारवाड़ी ओसवाल सज्जन के घर में बापूजी शाति से लिख रहे है। वहां से ही यह पत्र मै तुम्हे लिख रहा हूं।

बापूजी इतना भारी कार्य करके भी खूब आनंद में रहते हैं। कभी-कभी तो खूब हँसा करते है और मुझे तो कहते है, "कि मुझे अगर फांसी का हुक्म होगा तो भी मै तो सब कार्य करते-करते और हँसते हुए ही फांसी चढ़ जाऊंगा," ऐसा मेरा मन कहता है। ये सब बातें तुम्हें इसलिए लिखी हैं कि तुम बहुत ज्यादा फिकर किया करती हो। सो अब भविष्य के लिए जितने आनंद का लाभ लिया जाय, उतना लेने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। ज्यादा फिकर करने और उदास रहने की आवश्यकता नही। हमें तो अपने चरित्र शुद्ध बनाते हुए और आनंद से हँसते-हँसते सब शारीरिक कष्ट सहते हुए मृत्यु प्राप्त करनी है।

एक बात लिखनी रह गई। गोहाटी में बापू जिनके घर उतरे थे, वह श्रीयुत फूकनबाबू विलायत से बैरिस्टरी पास किये हुए है तथा बड़े ही शौकीन व्यक्ति है। उन्होंने अपने यहां के तमाम विदेशी कपड़े स्त्रियों के सुन्दर-सुन्दर भारी-से-भारी कपड़े बापू की अपील पर आग में जला दिये। करीब साढ़े तीन हजार के कपड़े थे। और भी कई लोगों ने जलाये।

•• •• ••

कलकत्ता, १३-९-२१

तुम्हारे दो पत्र मिले। तुम्हारे पहले पत्र का जवाब जल्दी देने का विचार था, परन्तु महात्माजी के यहां रहने के कारण और वर्किंग कमेटी में अधिक समय लगने के कारण पत्र नहीं लिख सका। तुमने लिखा कि मंदिर में प्रायः सब स्वदेशी कपड़ा होगया और अपने देश जाने का विचार तो मेरे वर्धा आने पर किया जायगा। क्योंकि अब तो प्राण ही बापू के अर्पण हैं। सपने में भी बापू ही दिखते हैं, सो यह सब पढ़कर बहुत ही समाधान और प्रसन्नता हुई। परमात्मा हमारी इस तरह की सद्बुद्धि बनाये रखे ! परमात्मा अवश्य ही सफलता और शक्ति प्रदान करेगा।

अवकाश मिलने पर फिर पत्र लिखूंगा। अभी तो बापूजी जा रहे हैं। उनके साथ जाना है।

.. .. ..

कलकत्ता, १७-९-२१

तुमने लिखा कि पहले पत्र के जवाब में देरी हुई, इससे तुम्हें चिंता हो गई थी। सो इस तरह चिंता होना ठीक नहीं है। कठिन परीक्षा का समय तो अब आनेवाला है। हम लोगों का तो बहुत जल्दी जेल में जाना सभव हो सकता है। अगर इस तरह की छोटी-छोटी बातों से चिंता हुआ करोगी तो पीछे असली ध्येय प्राप्त करने में देर लगेगी और बाधा होवेगी। मन को सदैव खूब शांत और आनंद से रखने की पूरी चेष्टा रखनी चाहिए। जब हम लोगों का परमात्मा पर पूरा विश्वास है तथा बापू का आशीर्वाद है, पीछे हमें चिंता क्या होती है, यह बिल्कुल भूल जाना चाहिए।

कलकत्ते में जो कार्य होता है, उसका हाल समाचारपत्रों में पढ़ लिया करती होगी। मुझे यहां से अजमेर, करांची, अमृतसर, भागलपुर आदि से आने के लिए तार व पत्र आ रहे हैं। यहां का कार्य समाप्त होने पर दो-चार रोज में ही बापू की जहां जाने की आज्ञा होवेगी, वहां जाने का विचार है अथवा वर्धा आकर वहां से कहां जाना है, यह निश्चय किया जायगा।

.. .. ..

लाहौर, ३०-९-२१

दशहरे के बाद आजतक तुमको पत्र नहीं लिख सका। इसका कारण यह है कि इस दौरे में अवकाश कम मिला। आज करांची से अभी रात को ९॥ के करीब यहां लाहौर (पंजाब) में पूज्य लाला लाजपतरायजी के घर पर पहुंचे हैं और दीपावली की रात इस पवित्र घर में बिताई जायगी। यहां कल रहकर ता० १ को अमृतसर और ता० ३ को दिल्ली जाने का विचार है। वहां से बहुत करके बंबई होकर वर्धा आना होगा। अगर पू० बापूजी दूसरी आज्ञा देंगे तो उसका पालन करना होगा।

.. .. ..

कानपुर जाते हुए (रेल में),
१२-१०-२१

सप्रेम वंदेमातरम्। अजमेर जाने का बिल्कुल निश्चय हो चुका था, परंतु कानपुर से कई तार आये, उसपर से महात्माजी ने पहले कानपुर जाने की आज्ञा दी, जिससे यहां आना पड़ा। कानपुर दो रोज ठहरकर अजमेर जाने का विचार है।

.. .. ..

वर्धा, २९-१-२२

बापूजी का बारडोली जाते समय का संदेश हमेशा विचार करने योग्य है।

.. .. ..

साबरमती-आश्रम, २०-३-२२

सप्रेम वंदेमातरम्। पूज्य श्री बापू के मुकदमे का हाल सब समाचार-पत्रों में पढ़ा ही होगा। मुझे इस समय यहां आने से बहुत लाभ हुआ। बापू से खूब बातें हुईं। बापू ने हमेशा के लिए संग्रह के योग्य एक बहुत ही सुन्दर पत्र लिखकर दिया है। किसी समय अशांति मालूम हो तो उस पत्र से बहुत लाभ पहुंचेगा। कोर्ट का दृश्य विचित्र था। ऐसा मालूम होता था, जज तथा उसके साथी दोषी हैं तथा बापू उनको दोष से मुक्त होने का प्रेम से उपदेश कर रहे हैं। जज आदि अंग्रेज होते हुए भी, उनपर खूब असर

हुआ। ता० १८ मार्च का दिन हमेशा याद रखने योग्य है। यह दिन भी हमारे भविष्य के इतिहास में बिजली की तरह चमकता रहेगा। अच्छा होता, तुम भी आजातीं। खैर, कोई बात नही। बापू ने मुझे खूब जोर से पीठ में धप्पा लगाकर आशीर्वाद दे दिया। अब मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग अपनी उन्नति अवश्य कर सकेगे। जिम्मेदारी खूब बढ़ गई है। अब जेल जाने की बाहर के कार्य की दृष्टि से बिलकुल जरूरत नही मालूम होती। हां, शांति तथा विश्रांति के लिए जाने की इच्छा होना संभव है। परंतु उसे रोकना होगा। कार्य करते हुए ही वैसा मौका आ गया तो आनंद की बात है, तथापि जान-बूझकर नही जाना है। बंबई में तथा यहां मेरे गिरफ्तार होने की चर्चा बहुत जोर से थी, परंतु उस चर्चा में कम-से-कम हाल में कोई दम नही है। अगर मुझे गिरफ्तार होना ही पड़ता तो उस हालत में हिन्दी 'नवजीवन' में प्रकाशक की हैसियत से मेरी जगह तुम्हारा नाम दिया जाय, ऐसा मेरा विचार हुआ था। और इस बारे में मैंने महात्माजी से पूछा भी था। उन्होंने भी कहा था, ऐसे मौके पर तुम्हारा नाम रख सकते हो। खैर, फिलहाल तो यह मौका है नही, जब आयेगा तब देखा जावेगा।

.. .. ..

बंबई, ९-४-२२

जो कार्य-भार पूज्य बापू ने तथा वर्किंग कमेटी ने दिया है, वह बराबर व्यवस्था से होने से शांति मिलेगी। तुम शांति से अपना कर्तव्य करती रहना। बापू को सजा हुई, उस दिन से मेरे मन में ऐसी इच्छा थी कि जहांतक हो सके थोड़ी देर चरखा अवश्य काता जाना चाहिए। परंतु कई कारणों से यह इच्छा पूरी नही हो सकी, इससे भी मन में थोड़ी अशांति रहती है। यहां घूमने का कार्य ज्यादा रहता है। कम-से-कम तुम ही रोज एक घंटा चर्खा कातने का प्रयत्न किया करो।

बापू के जेल में जाने के बाद कार्य की ज़वाबदारी ज्यादा मालूम होती है। परंतु बापूजी जाते समय जो उपहार, अपने हाथ का लिखा हुआ उपदेश दे गए, उससे शांति मिलती है और जवाबदारी पर प्रकाश पड़ता है।

.. .. ..

बंबई, ९-१०-२२

पूज्य बापूजी बच्चों की व तुम्हारी याद करते थ। तुम्हारे ऊपर उनका बहुत प्रेम-श्रद्धा है, ऐसा उनकी बातचीत पर से मालूम होता था। उनका स्वास्थ्य ठीक है।

.. .. ..

ओंगल, १०-१-२४

दक्षिण प्रांत में अंदाजन एक मास घूमना पड़ेगा। यहां खादी का कार्य खूब हो सकता है। कई गांवों को देखने का मौका मिला। यहां सूत कातनेवाली स्त्रियां तथा बुननेवाले जुलाहों की संख्या खूब है। इन्हें ठीक प्रकार रूई देकर सूत तथा कपड़ा लेने व बेचने की बराबर व्यवस्था हो जाय तो आन्ध्र देश लाखों रुपये की खादी बना सकता है। पूज्य बापूजी का खादी पर जोर देने का महत्व यहां घूमने से अधिक ध्यान में आया। अब तो चरखा रोज काते बिना शांति नही मालूम होती।

.. .. ..

वीरुदुपट्टी, १८-१-२४

अभी यहां पूज्य राजगोपालाचारीजी के साथ आया हूं। इधर के लोगों में पूज्य बापू के लिए खूब भक्ति है। खादी का प्रचार भी गांवों में ठीक है और दिन-दिन खूब बढ़ने की आशा है।

पूज्य बापूजी का आपरेशन तो ठीक हो गया। एक बड़ी घाटी में से बचाव हुआ। अब तो ऐसा मालूम होता है कि शायद सरकार इन्हें छोड़ दे। देश की हालत व विलायत की हालत दिन-दिन खराब होती जाती है। सरकार भविष्य का विचार करेगी तो उसे महसूस होगा कि छोड़ने में ही उसे एक प्रकार से लाभ ह। परंतु अगर बापू हम लोगों के याने अपने देश की जनता के जोर से छूटें तो विशेष शांति की बात है। खैर, जो होगा ठीक ही होवेगा।

.. .. ..

दिल्ली, २१-९-२४

मेरे यहां पहुंचने की सूचना तार तथा पत्र के द्वारा भेज चुका हूं। पूज्य बापूजी से मिला। बातें हुई। बापू ने व्रत (तप) आरंभ किया है। बापू का

आत्मिक बल तथा परमात्मा पर जो श्रद्धा है, उसे देखते विश्वास होता है उपवास पार पड़ जावेंगे। बा भी आज आगई हैं, मेरे पास ही ठहरी हैं। बापू की तपश्चर्या देख मन में बहुत-सी कल्पना आया करती हैं। परंतु अपनी खुद की कमजोरी देखकर लज्जा होती है। बापू के इस मौके से हम लोगों के जीवन के रहन-सहन व आचरण में फर्क हो तो भविष्य का जीवन सुखकर बीतना संभव है। मेरी राय तो है कि तुम अहमदाबाद-आश्रम में जाने का विचार रखना। वहां रहने से जरूर अध्यात्मिक लाभ होना संभव है।

चरखा घर-भर में बराबर चालू रहे। बापू के लिए हृदय से प्रार्थना होती रहे, इसका ख्याल रखना।

.. .. ..

पटना, २३-९-२५

पत्र तुम्हारे दो मिले, पढ़कर संतोष हुआ। तुमने अपने विचार या जो शंका थी, वह पूज्य बापूजी को कह दी, यह जानकर अधिक सुख हुआ। मेरी हाल में पूज्य बापूजी से घरेलू मामले के बारे में बात नहीं हो पाई है। कारण कि वह बहुत कामों में लगे हुए हैं। जब होगी तब तुम्हें मालूम हो जायगा।

.. .. ..

मलकापुर (बिहार), २०-९-२५

तुम्हारे पत्र मिले थे। बदले में पत्र लिखा था, सो मिला होगा। पूज्य बापूजी तुम्हारे बारे में बात करते थे। तुम्हारी बातचीत का उनपर बहुत ही अच्छा असर हुआ, ऐसा दिखाई देता है। तुमसे वे बहुत आशा रखते हैं।

चि० कमला का विवाह बंबई में करने के बारे में पूज्य बापू की इच्छा मालूम हुई। इस बारे में और विचार करना पड़ेगा।

.. .. ..

बंबई, १०-१-२६

चि० कमला के विवाह के बारे में चि० मणिबहन का पत्र मिला।

वर्धा में विवाह करने में सुख मिलता, अगर दोनों ओर से सिद्धान्त के माफ़िक विवाह होने का पूरा सुभीता होता। वह नहीं है। सामनेवालों को वर्धा में इस प्रकार विवाह करने में बहुत बाधाएं होनी संभव हैं। एक बार तो आश्रम का ही निश्चय रखना उचित है। कुछ रोज बाद मेरा साबरमती जाने का विचार है। तब पू० बापूजी से और खुलासा बात करली जावेगी। पू० बापूजी ने पू० काकासाहब आदि को पहले से ही कमला का विवाह आश्रम में करने का विचार लिख दिया है। यह मुझे पूना में मालूम हुआ।

.. .. ..

बंबई, ३०-१-२६

पूज्य बापूजी को ज्वर १०४ डिगरी तक हो गया था और उनका वज़न तो हाल में ९७।। रतल रह गया है। इसलिए वहां जाना पड़ा कि दूसरी जगह बदली जावे या अन्य इंतजाम किया जावे। इसका विचार करने पर डाक्टरों की राय हुई कि अभी दूसरी जगह ले जाने की ज़रूरत नहीं। गर्मी में ले जाया जावे। आश्रम में ही आराम से रह सकें, थोड़ी विश्रांति लेते रहें तो जल्दी वज़न बढ़ जायेगा। उनके एक हाथ में जो दर्द रहता है, वह भी इससे कम हो जायगा। पूज्य बापू ने दवाई और विश्रांति लेना स्वीकार कर लिया है। परमात्मा ने किया तो जल्दी ठीक हो जावेंगे। बाकी आश्रम में सब ठीक हैं।

पूज्य बापू की बीमारी के कारण तथा मित्रों के आग्रह की वजह से फिर से इस प्रश्न पर विचार करना ज़रूरी हो गया था कि विवाह आश्रम में किया जाय या बंबई में। वर्धा में श्री केशवदेवजी ने तो कह दिया था कि अब विवाह आश्रम में ही करना उचित होगा। तो भी पूज्य बापूजी के फिर विचार जानना ज़रूरी था। उन्होंने कहा है कि सब तरह का विचार करते हुए मुझे तो आश्रम में ही विवाह करना ठीक मालूम होता है। तथापि चि० रामेश्वरप्रसाद की इच्छा क्या है, यह देख लो। वह भी यहीं आ गया है। और उसने तो कहा है कि मुझे तो आश्रम में ही विवाह करना सब तरह से पसंद है। उसने आश्रम में विवाह करने के जो कारण बतलाये, उससे पूज्य बापूजी को व मुझे बहुत ही संतोष हुआ। अब विवाह आश्रम में ही हो, यह निश्चय हो गया है।

चि० मणिबहन को कह देना कि बापू की ओर से पत्र न आने से चिंता न करें।

.. .. ..

साबरमती १-११-२६

प्राणेश,

कल बापूजी की जयंती है। लोग कहते हैं कि गये वर्ष जयंती के बाद बीमारी बढ़ी थी। कदाचित् इस वक्त भी बुखार जोर करे। पांच-छः जनों को आ गया है। आशा है, ज्यादा जोर तो न होगा। मीराबहन को यहां आने दें तो ठीक।

जानकी

.. .. ..

वर्धा, ६-११-२६

आशा है, तुम पूज्य बापूजी के उपदेश तथा सत्संग से अधिक उदार तथा ध्येयपूर्वक जीवन बिताने का निश्चय करके यहां आओगी। अब सच बात तो यह है कि तुमसे मुझे मेरे और अपने घर के सुधार व परिवर्तन में पूरी सहायता मिलनी चाहिए। अब थोड़े वर्ष मानसिक सुधारों की बागडोर तुम अपने हाथ में ले सको तो मुझे कितना सुख और संतोष मिले, इसका तुम खुद ही विचार कर सकती हो। तुम चाहो तो पूज्य बापूजी व विनोबाजी की सहायता से अपने जीवन को और घर को ठीक कर सकती हो। मेरी कमजोरी भी दूर करा सकती हो। पर यह बात तभी हो सकती है कि जब तुममें आत्म-विश्वास पैदा हो और तुम आदर्श स्थान का भार अपने ऊपर लो। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

.. .. ..

श्री शांतिनाथजी साधु, जो बंगाली हैं और आबू में अपने यहां भोजन के लिए आते थे, आजकल यहांपर हैं। घर पर ही थे। कल से बगीचे में रहने लगे हैं। दो-तीन मास रहनेवाले हैं। श्री सोनीरामजी, रामेश्वर व पू० बापूजी के पत्र उन्हें दे देना।

.. .. ..

३०-११-२६

पूज्य बापूजी ता० २० को यहां आयेंगे और ता० २१ को चले जायंगे। बाद में मुझे दो रोज के लिए पूना जाना पड़ेगा।

पूज्य बापूजी की इच्छा कमला का विवाह बंबई में करने की है। शायद केशवदेवजी नेवटिया भी बंबई पसंद करें। तो फिर तुम्हारी तथा पूज्य काकाजी वगैरा की क्या इच्छा है, यह लिखना। सो बात करने में सुभीता रहे।

.. .. ..

१-१-२७

कमला को लिखना कि पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य ठीक है। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

.. .. ..

साबरमती, १७-८-२७

प्राणेश,

अब एक जगह रहोगे तब बापूजी को कहकर पट्टे का प्रयोग कराना है।

जानकी

.. .. ..

(इस पत्र का ता० २-५-२८ को जवाब दिया)

प्राणेश,

मगनलालभाई का दुख तो सबको हुआ है। संतोषबहन व राधाबहन का आदर्श देखकर तो आश्चर्य होता है। बद्रीनारायण काकाजी के बारे में तो बापूजी कह देंगे सो करोगे ही, पर आपके बारे में डाक्टरों की इजाजत ले लेनी चाहिए। मुख्य, आप जो जवान-जवान हो उनके बारे में पूछ लेना चाहिए। कारण, बुड्ढे कभी-कभी सहन भी कर जाते हैं। वैसे तो मैं जानती हूं कि कदाचित् आपको अभी कहीं भी विश्रांति लेना मुश्किल है। इस कारण यात्रा से कदाचित् फायदा ही पहुचेगा। जितना समझते हैं, उतना ज्यादा विचार करते हैं। वैसे विचार करना अच्छा तो है ही।

अब कमलनयन को ले जाने का मन था; परंतु उसको मालूम है और वह मन नहीं चलाता हो तो फिर जाने देना ही ठीक है। मैंने तो उसको लिखा

ही नहीं। पर उसको मालूम होगा। मालूम होके इच्छा न करे तो वह जाने। मुख्य आपको शांति व आराम मिले और मिलता दीखे तो फिर कोई विचार करने की जरूरत नहीं है। बापूजी से तो मैंने कहा था कि अगर यहां अथवा कहीं भी आपको उनकी जरूरत दीखे तो कह दें। यह जरूरी नहीं कि यात्रा पर जाना ही चाहिए। बापू जी कहते थे कि जरूरी नहीं है, वरना तो मैं कहता ही। सो अब जाना हो तो काम की फिक्र छोड़ दें। यहां बालकों को तो रसोड़े में मजे से छोड़ देंगे। बापू को गंगा बुला लेंगे। नहीं तो कहीं जाने की जरूरत नहीं है। आप डाक्टर को दिखाकर लिखना।

जानकी

.. .. ..

कोचीन स्टेट (मलाबार), १०-२-२९

हिन्दी-प्रचार का कार्य ठीक चल रहा है। अगर तुम इस सफर में मेरे साथ आतीं तो तुम्हें दूसरी दुनिया देखने का अनुभव होगा। खैर, फिर सही। बरमा में नहीं जऊंगा, पूज्य बापू का इन्कार आ गया है।

.. .. ..

साबरमती, ५-४-२९

पू० मगनलालभाई (गांधी) की लड़की चि० रुक्मिणी का संबंध कल यहां पर चि० बनारसीलाल बजाज से हो गया। यह विवाह इस वर्ष नहीं तो अगले वर्ष होवेगा। कल यह संबंध करके पूज्य बापूजी आंध्र के लिए बंबई रवाना हो गए। वर्धा में गरमी ज्यादा पड़ने लग गई होगी।

छगनलालभाई गांधी से तथा पू० बा से रुपयों-पैसों के मामले में जो गफ़लत हुई, वह दुनियादारी की दृष्टि से कोई बहुत भारी कसूर नहीं समझा जाता। पर वैसी गलती या कसूर पर पूज्य बापूजी अपने हृदय में कितना दुःख अनुभव करते हैं, वह इस बार के 'नवजीवन' में उन्होंने लिखा है। तुम उसे भली प्रकार पढ़ने का प्रयत्न करना। यहां आश्रम में रहनेवालों की कमज़ोरियों से पूज्य बापूजी को बहुत दुःख व कष्ट हुआ करता है। अपने पास इसका कोई उपाय नहीं दिखाई देता।

.. .. ..

श्रीनगर (काश्मीर), ५-७-२९

मेरा वर्धा ता० २० तक पहुंचना होवेगा। यहां का खद्दर-भंडार ता० ४ को खुलनेवाला था, वह राज्य की सुविधा के कारण ता० ११ को खुलने का निश्चय हुआ है। यहां थोड़ा घूम-फिरकर देखने का विचार भी कर लिया है। पू० बापूजी तो बहुत ज़ोर देकर लिख रहे हैं कि मैं यहां ज्यादा दिन रहूं। परंतु बिना काम के मन नहीं लगेगा और तुम सब लोग व बालकों के बिना देखने में विशेष आनंद तथा शांति नहीं मिलती।

.. .. ..

साबरमती-आश्रम, ता० १५-२-३०

पू० बापूजी आजकल खूब उत्साह व जोर में हैं व लड़ाई की पूरी तैयारी कर रखी है। यहां का वातावरण पूरे जोश तथा उत्साह से भरा-पूरा हो रहा है। छोटे-छोटे बच्चों ने भी जेल जाने की इच्छा कर रखी है। तुम इस समय यहां रहतीं तो तुम्हें ठीक फायदा मिलता, व पूज्य बापूजी तुम्हारा नाम भी जेल की फेहरिस्त में, अगर तुम्हारा उत्साह और इच्छा होती तो, लिखा देते।

.. .. ..

नासिक रोड सैंट्रल जेल, २१-६-३०

तुम्हें समय मिलता हो तो जेल के रहन-सहन के संबंध में व नियमों के बारे में पू० बापूजी की 'यरवड़ाना अनुभव', काकासाहब व राजाजी की लिखी हुई किताबें व जिन्हें जेल का ठीक अनुभव हो, उनसे पूरी हालत जान लेने का प्रयत्न करना। ईश्वर की अपने पर पूर्ण दया व पूज्य बापूजी का आशीर्वाद है, जिस कारण ही अपनेको इस प्रकार की बुद्धि होकर सेवा करने का, माने अपनी कमज़ोरी कम करने का, मौक़ा मिला। तुम्हारी बहादुरी और हिम्मत देखकर मन में खुशी होती है।

.. .. ..

नासिक रोड जेल, ७-७-३०

कमल से कहना कि वह ज़रा अधिक सभ्यता व नम्रता का व्यवहार करने का खयाल रखे। अब वह सत्याग्रह-दल में पू० बापूजी की टुकड़ी का स्वयंसेवक है। उसपर ज्यादा ज़िम्मेवारी है। मुंह में से एक-एक बात सत्य

व तोलकर निकलनी चाहिए, जिससे आगे चलकर वह ज़िम्मेदारी के साथ काम कर सके।

.. .. ..

नासिक रोड सैंट्रल जेल, २२-९-३०

रेंटिया बारस गत शुक्रवार को हम लोगों ने भी खूब चरखा कातकर पू० बापूजी के गुणगान करके व ईश्वर से प्रार्थना करके बिताई। तीनों वर्गों में खूब चरखे चले। बी में तो तीन चरखे ६१ घंटे तक रात-दिन चलते रहे। सी वर्ग-वालों ने भी खूब चलाये। हम लोगों ने तो २४ घंटे तक चरखा चलाया। उस रोज मैंने १०॥ घंटे सूत काता। खूब प्रेम व उत्साह होने से ठीक काता गया। (जीवन में पहली बार इतना काता) २५६० तार, यानी ३४१३ वार काते। सूत उतारने आदि का समय अलग लगा। सुबह ३ बजे उठकर प्रार्थना वग़ैरा करके रात में १२ बजे निवृत्त हो गया था। बीच-बीच में दूसरे काम भी किये। पू० बापूजी पर छोटा सा लेख भी लिखना पड़ा।

.. .. ..

नासिक रोड सैंट्रल जेल, ८-१०-३०

तुम्हारा बिना मिती-तारीख का पत्र मिला। पू० बापूजी का पत्र तुम्हारे नाम का पढ़कर सुख मिला। पत्र मेरे पास है। तुम जब आओगी तब तुम्हें दे दिया जायगा। ये सब पत्र संभालकर रखना। अब यरवदा जाने की इच्छा कम हो गई है। यहां मन भी लग गया है। आब-हवा भी अनुकूल पड़ गई है। मित्र लोग भी हैं। अधिकारियों से भी प्रेम व मित्रता का संबंध हो गया है। दूसरे मेरी इच्छा यह है कि पूज्य बापूजी के पास अब या तो प्यारेलाल चला जावे या देवदासभाई चले जावें। मेरी यह इच्छा तुम श्री नारायणदास भाई (गांधी) की मारफत पू० बापूजी को लिखवा देना या अपनी चिट्ठी में इतना उतारकर बापूजी को भेज देना।

तुमने पू० बापूजी को मेरे बारे में पत्र नहीं भेजा, यह बहुत ठीक किया।

.. .. ..

नासिक रोड सैंट्रल जेल,
१४-१०-३०

आज पू० बापूजी का पत्र वापस भेजा है, संभालकर रखना।

(यह पत्र १०-१२-३० को मिला)

श्रीयुत,

आपने 'वकील-बालिस्टरों से बात कर लेती हो' लिखा, सो नई बात नहीं है। निर्भयता व लज्जा में तो 'पास' थी ही। बापूजी के सहवास से काम लेना व उनके विचारों को जान लेने से काम चल रहा है और काम को काम सिखा लेता है।

यहां का काम ठंडा पड़ा है। नेताओं में भी फूट है। बापूजी के सेक्रेटरी कृष्णदासजी कोशिश कर रहे हैं। इनकी फूट अगर मिट जाय तो कुछ काम हो।

जानकी का प्रणाम

.. .. ..

कलकत्ता, २३-१२-३०

काम की कीमत होने से शंका वग़ैरा कम हो गई। निश्चय करना भी आ गया। किसी जगह महात्माजी की बात तो किसी जगह आपकी बातें काम करवा लेती हैं। परंतु घर का काम तो मुझे करना ही नहीं चाहिए।

चिट्ठी पूरी सही अधूरी
जानकीदेवी

.. .. ..

(दिसंबर-अंत या शुरू-जनवरी, ३१)

मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी कि तुम्हारी व बालकों की इज्जत व कदर मेरे कारण न होकर तुम लोगों की पवित्र सेवा के काम के कारण होवे तो उसमें तुम्हारा व बालकों का भी श्रेय था व हमारा श्रेय व गौरव था। यह कार्य अब जल्दी ही परमात्मा की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से देखने को मिल रहा है।

.. .. ..

नासिक रोड सैंट्रल जेल,
८-१-३१

परमात्मा के व पूज्य बापूजी के आशीर्वाद से हम लोगों का अपने जीवन के आदर्श प्राप्त करने में सफलीभूत होना बहुत संभव दिखाई देता है। अगर

हम अपनी कमजोरियों को बराबर पहचानते रहें व उन्हें निकालने का जी-तोड़ प्रयत्न करते रहेंगे तो जीवन पूरी तौर से नहीं, तो कुछ अंश में तो अवश्य सार्थक बना सकेंगे ।

.. .. ..

बंबई, २७-१-३१

आखिर कल एक बार जेल छोड़ना ही पड़ा । आज सुबह यहां आ गया । पू० बापूजी के साथ आज रात को प्रयाग जा रहा हूं । वहां से अगर हो सका तो एक रोज कलकत्ते आने का प्रयत्न करूंगा, या तुम्हें वहां बुलाने की जरूरत समझूंगा तो तुम्हें बुला लूंगा । चि० कमल मेरे साथ है । चि० कमला मेरे साथ पूज्य बापूजी से मिलती है ।

.. .. ..

प्रयाग, १४-२-३१

पू० बापूजी रफल (चादर) देखकर बहुत खुश हुए । उन्होंने कहा, मैं इसे दो वर्ष और चला सकूंगा । तुम्हारी भेजी हुई पूनी उन्होंने आज कातकर देखी । उन्होंने कहा है, रूई तो अच्छी है, परंतु पूनी ठीक नही बनी । लंबी ज्यादा है व पोली भी है । आगे से बहुत अच्छी पूनी बना सको तो बापूजी को भेजने का प्रबंध करेंगे ।

.. .. ..

(८-८-३१ से ४-१०-३१ के बीच)

पूज्य बापूजी को बहुत संभव है लंदन जाना पड़े । श्री वालजीभाई को पू० बापूजी अलमोड़ा भेज रहे हैं । कमल भी वहीं चला जायगा । अलमोड़ा की आबहवा तो बहुत ही उत्तम है । पू० बापूजी ने पूना रखने की भी आज्ञा दे दी थी, परंतु मुझे वहां का वातावरण, व्यवस्था व पढ़ाई पूरी जंची नहीं ।

.. .. ..

भायखला-जेल, ११-३-३२

मुझे तो हमेशा जेल में भी नये मित्रों का परिचय करने का ईश्वर की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से मौक़ा मिल ही जाता है । इससे मुझे बड़ा संतोष मिलता है ।

.. .. ..

यरवदा-मंदिर १२-१-३३,

तुम लोगों की प्रसन्नता के समाचार तो पूज्य बापू से सुन लिया करता करता हूं।

रोटी भूसे की (ब्राउन बड़े) एक रतल वज़न की जो यहां जेल में ताजा बनती है, लेता हूं। पू० बापू की सलाह-मुजब उसका टोस्ट बनाकर दोनों वक्त लेता हूं।

मेरी दिनचर्या सुंदर चलती है। पू० बापूजी से मिलने की तो बंबई-सरकार की परवानगी आ गई है। अभीतक में उनसे सात बार मिल चुका हूं। पत्र-व्यवहार भी यहां-का-यही होता रहता है। अस्पृश्यता-निवारण के कागजात व पत्र-व्यवहार की फाइल मेरे पास आती रहती है। मैं अब इस कार्य से पूर्णतया वाकिफ रहता हूं। मुझे जो उचित मालूम होता है, बापू को लिखकर या मिलने पर कहा करता हूं। प्रायः रोज़ मैं पांच-छः घंटे हरिजनों के काम का विचार, अध्ययन, पढ़ने-लिखने आदि में लगा रहता हूं। इससे मन को खूब सुख व संतोष रहता है।

तुम्हें आनेवाली १६ तारीख को, याने माघ-बदी पंचमी, सोमवार को बराबर ४० वर्ष पूरे होकर ४१वां वर्ष चालू होता है। उस रोज़ मैं भी परमात्मा से प्रार्थना करूंगा कि तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करे व तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम रखते हुए तुम्हारे शरीर व मन में सेवा-कार्य, खासकर बापूजी द्वारा तुम्हें पहले लिखे मुताबिक हरिजन-कार्य करने की सब प्रकार से योग्यता प्रदान करे।

चि० मदालसा के पत्र का हाल पू० बापूजी ने मुझे कहा था।

.. .. ..

वर्धा, ३०-८-३३

पू० बापूजी ने तुमको वहीं रहने को कहा है, सो एक तरह ठीक ही है। अगर तुम उनके कहने से वहां बनी रहीं और खुदा-न-खास्ता प्लेग की शिकार हो गईं तो मुझे तो संतोष इतना रहेगा कि ऐसी हालत में पू० बापूजी का आशीर्वाद मिल जाय और उसके साथ स्वर्ग भी मिल जाय। इससे अब मुझे तुम्हारी तरफ की चिंता कम है।

क्या तुम बापूजी को यहां ला सकती हो या भिजवा सकती हो?

पटना, २९-६-३४

पूना की दुर्घटना से पू० बापूजी तो बचे ही, साथ में चि० ओम् वग़ैरह भी बच गईं। जिसको ईश्वर बचानेवाला है, उसे कौन मार सकता है ! इस प्रकार की घटनाओं से ईश्वर की शक्ति (अस्तित्व) में विश्वास बढ़ता है।

.. .. ..

बंबई, १६-११-३४

पू० बापूजी अगर मेरी चिंता करना छोड़ दें, तो मुझे कम तकलीफ़ हो। वह वल्लभभाई को समाचार लिखते हैं। उनका टेलीफोन आता है तो फिर मुझे वहां जाना पड़ता है। सरदारसाहब को मेरे पास बुलाने की अभी ताक़त नहीं आई है। वह प्रेम तो खूब करते हैं, परंतु जो ज्यादा प्रेम करता है उसे हुकुम करने का भी अधिकार होता है।

.. .. ..

बंबई, २९-१-३५

मुझे पू० बापू ने ठीक प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट)[1] भेजा है; तुम भी इस प्रकार के कामों में मदद करो तो कितना ठीक होवे !

.. .. ..

वर्धा, २८-१०-३५

आज भैयादूज के शुभ अवसर पर चि० राधाकृष्ण का संबंध पू० जाजूजी की लड़की चि० अनसूया से होना निश्चित हुआ है। शाम को ६ बजे पू० बापूजी, बा इत्यादि सब लोगों के सामने सगाई की विधि हो जायगी। पू० मां को इस संबंध से संतोष है।

.. .. ..

वर्धा, ९-१२-३५

इन दिनों पू० बापू का स्वास्थ्य कुछ नरम रहा है। बंबई से डॉ० जीवराज मेहता भी कल आगए। ब्लड-प्रेशर बढ़ गया था। अब तबीयत साधारण सुधर रही है। आराम की ज़रूरत है। इस समय श्री राजकुमारी अमृतकुंवर नर्सिंग (सेवा) कर रही हैं। परन्तु वह ता० १७ तक रह सकेंगी। आगे के नर्सिंग का सवाल उपस्थित हुआ, तब तीन नाम सामने

---

[1] देखिये बापू के पत्र, पृष्ठ १२३।

आये हैं। मेरा, राधाकृष्ण का व तुम्हारा। अभी कुछ निश्चित नहीं हो पाया है। अच्छा हो, यदि तुम भी इस बीच यहां आ सको।

.. .. ..

लखनऊ, ४-४-३६

यहां बापूजी के साथ कांग्रेस से करीब ३।।-४ माइल दूरी पर रहना होता है। अबकी बार की प्रदर्शनी अच्छी व देखने-योग्य है।

.. .. ..

वर्धा, २७-८-३६

आज पू० बापूजी सेगांव से आये हैं। सभा अपने यहां बीच के कमरे में हुई है।

.. .. ..

वर्धा, १७-९-३६

पू० बापूजी का स्वास्थ्य अच्छा है। चिंता की कोई बात नहीं है। तुमको दूध पचने लगा है, यह जानकर खुशी हुई। कल मैं सेगांव गया था। पू० बापू ने तुम्हारे बारे में पूछा था, मैंने उनको दूध के बारे में नहीं कहा। फिर जब आज या कल जाऊंगा तो कहूंगा। तुम्हारी कमज़ोरी तो निकल जावेगी।

.. .. ..

वर्धा, १८-९-३६

पूज्य बापू-संबंधी भविष्यवाणी, जैसी आशा थी, पूरी तरह से झूठ साबित हुई। कल ता० १७ को शाम को सिविल सर्जन को ले जाकर भली प्रकार से तलाश कर लिया था। ब्लडप्रेशर, हार्ट बहुत ठीक था। बापू खूब विनोद करते थे। आज सुबह स्नान करके मैं तो चि० अनसूया के साथ दही-बाजरे की रोटी व फल खाकर गया था। वहां से २ बजे बाद रवाना होकर आया हूं। वहां से ११ बजे बाद डॉ० महोदय को वर्धा से तुम्हें तार देने भेजा था। वह तार तुम्हें मिल ही गया है। बापू को मैंने अकेले को क़रीब ९।।। बजे यह बात कही। उन्होंने मुझसे खूब विनोद किया। औरों से ज्यादा चर्चा नहीं की। अब कल खूब विनोद करेंगे। सरदार भी कल आ जायंगे।

घनश्यामदासजी आज आ जायंगे। दो-तीन दिन थोड़ा-बहुत विनोद रहेगा। अब आगे से भविष्यवाणियों पर ज्यादा विश्वास नहीं रखना।

.. .. ..

बनारस, २३-१०-३६

कल पू० बापूजी भी यहां आयेंगे। शायद लक्ष्मणप्रसादजी तथा सावित्री भी आ जावें। उन्होंने इच्छा प्रकट की है।

.. .. ..

बनारस, २६-१०-३६

विनय के बारे में बापू ने सब स्थिति कही। दवा, इंजेक्शन, कमला की बहादुरी, दान वग़ैरा के हाल मालूम हुए।

.. .. ..

वर्धा, ६-११-३६

यहां आ जाना अच्छा हुआ। कल बापू से मिल लिया। यहां विद्यालय का उत्सव है, सभाएं हैं।

.. .. ..

जुहू, १३-१०-३७

पू० बापूजी आ गए। वह तो टाइफाइड के सबसे बड़े अनुभवी डाक्टर हैं।

.. .. ..

जुहू, १५-१०-३७

तुम्हारे नाम की पू० बापूजी की चिट्ठी आई है, वह भेज रहा हूं।

.. .. ..

विलासपुर, २५-१०-३७

बापूजी और पार्टी कलकत्ते जा रहे हैं।

.. .. ..

वर्धा, १७-११-३७

शाम को सेगांव जाऊंगा। बापूजी के आने के बाद अगर हो सका तो कुछ रोज़ सेगांव रहने का विचार है।

.. .. ..

वर्धा, २०-११-३७

बापू का स्वास्थ्य बहुत कमज़ोर हो गया है। बहुत संभाल रखने की ज़रूरत है।

.. .. ..

वर्धा, २२-११-३७

पूज्य बापूजीका स्वास्थ्य बहुत नरम है। ईश्वर की जैसी मरजी होवेगी वह काम आवेगी। ईश्वर सद्बुद्धि व आत्मविश्वास प्रदान करता रहे। म तुम्हें क्या लिखूं !

.. .. ..

वर्धा, १८-४-३८

मेरा आना ता० २४ या २५ तक बंबई होता दिखता है। बापूजी से भी बातें करनी है।

.. .. ..

जुहू, १९-४-३८

पूज्यश्री,

बापूजी का समय लेने का भी समय आ गया है। मैं रहूं, न रहूं, समान है। खांसी तो कम होना दिखता ही था। प्रणाम !

जानकी

.. .. ..

नई दिल्ली, ३१-१-३९

मैंने पू० बापूजी से भी जाते ही कह दिया था और उनकी भी यही राय रही कि अभी आराम लेकर बाद में काम करना ही ठीक रहेगा। बापूजी ता० २ को वहां आनेवाले ही हैं।

.. .. ..

मोरांसागर

पू० बापूजी का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। तुम्हारी क्या हालत है ?

बापू के पत्र भी पढ़ने योग्य हैं (सर्वोदय के) और अंकों में भी काका-साहब वग़ैरा के मननीय लेख रहते हैं।

.. .. ..

मोरांसागर, ९-३-३९

सात रोज के बाद कल शाम को मुझे पांच तार व पत्र व अखबार वग़ैरा मिले। इन सात दिनों तक मुझे, दुनिया का कहो या यहां से दो कोस दूर तक का भी, कुछ पता नहीं था। पू० बापूजी के उपवास करने की व छोड़ने की व राजकोट के फ़ैसले की खबर कल साथ ही मिली।

.. .. ..

वर्धा, ११-१०-३९

अब १५-१६ तक बंबई जाने का इरादा है। वहां जाकर तय करना है कि इलाज के लिए २-३ माह के लिए कहां पर रहना है—बंबई या पूना। तुम अपने कार्यक्रम से मुझे वाकिफ़ करती रहना। पू० बापू से भी इलाज के बारे में बातें हुई थीं। श्री दीनशा के पास दो-तीन रोज़ जाकर रहना है व सारी बातें तय करनी हैं।

.. .. ..

वर्धा, १५-१०-३९

पू० बापू से दिल्ली में खुलकर बात करने का मौक़ा मिल गया था। वह मेरी स्थिति पूरी तौर से जान गए हैं।

वर्धा में तुम्हारे लिए जितना आदर-प्रेम व श्रद्धा है, वह और कहां मिलनेवाली है! बापू, विनोबा आदि सभी तो यहीं हैं। तुम्हें सीधे विचार करने चाहिए, उल्टे नहीं।

.. .. ..

१०-३-४०

पूज्यश्री,

कल मेरा मन ठीक न होने से पत्र राधाकृष्ण के नाम का दे ही दिया, पर पीछे शांताबाई ने कहा कि बापूजी वहीं हैं और भी सब समाचार जानकर मन शांत है। दूध आनंद से चलता है।

कांग्रेस जाने की बापूजी से ठीक सलाह मिल ही जावेगी। दर्द हलका नहीं पड़े तब तो वहां आराम कैसे मिलेगा? और आपका जैसा उत्साह!

पगली का प्रणाम

.. .. ..

वर्धा, ११-३-४०

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। जयपुर में परिश्रम तो हुआ, परंतु रास्ता बैठ जावेगा, ऐसा मालूम देता है। पू० बापूजी के यहां होने के कारण पहले यहां आना पड़ा।

.. .. ..

वर्धा, ६-११-४०

मुझे यहां स्टेशन पर ही मालूम हुआ कि तुम एक रोज पहले पू० बापूजी के कहने से आपरेशन कराने के लिए बंबई चली गईं। तुम्हारे साथ कोई जवाबदार घर का आदमी नहीं गया, जानकर मुझे बुरा तो मालूम दिया।

पू० बापूजी बहुत करके उपवास अब नहीं करेंगे। आज निश्चय हो जायगा। जवाहरलाल तो ठिकाने, अर्थात् जेल, पहुंच ही गए हैं।

.. .. ..

सेवाग्राम, २४-६-४१

मौक़ा मिलने पर पू० बापू से मैं ही अपने क्रोध आदि आने का व मेरा व्यवहार तुम्हें प्रायः असंतोष देनेवाला होता है, इत्यादि के बारे में कहने की इच्छा है। तुम्हें तो कहने का पूर्ण हक व अधिकार है ही। कोई रास्ता निकल सके तो संतोष ही होगा। ज्यादा क्या लिखूं!

अपने पुत्र-पुत्रियों को

जमनालाल बजाज द्वारा लिखे पत्रों में से

गांधीजी-संबंधी उल्लेख

●

बंबई, २५-१०-२६

चि० कमल,

पू० बापूजी (महात्माजी) यहां दक्षिण अफ्रीका के डेपुटेशन से मिलने गये। इतवार को आये थे। उनको पहुंचाने हम लोग स्टेशन गये थे। वापस आते समय दो मोटरों का आपस में बहुत ज़ोर से टक्कर खाने का डर हो गया था, परंतु ड्राइवर ने मोटर को एकदम घुमाया, जिससे मोटर उलट गई। इसमें हम सात जने थे—श्री केशवदेवजी (कमल के ककिया ससुर) श्रीगोपाल, चि० गंगाबिसन, लालजी, गिरधारी, मैं और ड्राइवर। परमात्मा की दया से और पू० बापूजी के आशीर्वाद से प्रायः सब बच गए। श्री केशवदेवजी के थोड़ी चोट आई और मेरे। अब मेरी छाती में थोड़ा दर्द है। चार-पांच रोज में ठीक हो जाने की आशा है।

.. .. ..

बंबई, ८-८-३१

चि० कमल,

खूब विचार करने के बाद मुझे तो यही लगा कि तुम्हारी अंग्रेजी की संतोषकारक पढ़ाई अलमोड़ा में श्री वालजीभाई के साथ रहकर ठीक होवेगी और तुम्हें भी शांति व सुख मिलेगा। पू० बापूजी ने श्री वालजीभाई को लिखाया है। कब जाने का विचार रहा? तुम्हें वहां जाने के लिए गरम कपड़े वग़ैरा यहां अथवा वहां बनाने पड़ें, वह बना लेना।

.. .. ..

बंबई, १८-१२-३१

चि० कमल,

किराये के बारे में तुम अभी कुछ चर्चा न करना। पू० बापूजी के आने पर उनसे बातचीत करके सब ठीक हो जावेगा।

श्री लालजीभाई से कहना कि लड़ाई के आसार फिर नज़र आने लगे हैं। देखें, पू० बापूजी के आने पर क्या होता है; और उनके आने के पहले क्या हो जाता है!

बंबई, ५-१-३२

चि० कमल,

पू० बापूजी, सरदार वल्लभभाई, श्री राजेन्द्रबाबू तो पकड़े ही गये हैं। वर्किंग कमेटी नाजायज़ क़रार दी जा चुकी है। मैं किसी भी समय पकड़ा जा सकता हूं। वैसे आज डाक से वर्धा जाने का विचार कर रहा हूं। वहांतक जाने दिया जाय या नहीं, यह बात दूसरी है।

.. .. ..

धुलिया-जेल, १९-४-३२

चि० कमल,

आशा है, मेरा भायखला-जेल से लिखा हुआ पत्र तुम्हें मिला होवेगा। मेरा मन व स्वास्थ्य उत्तम है। यहां पूज्य विनोबा के साथ दोनों समय प्रार्थना आदि में संतोष से समय बीतता है। तुम अपना जीवन पवित्रता व नीति के साथ बिताने का ख़याल रखना। जेल में जहांतक हो सके भूख-हड़ताल (हंगर स्ट्राइक) नहीं करना चाहिए, इसका ख़याल रखना। अपना स्वाभिमान तो रखना ही चाहिए।

.. .. ..

२१-९-३२

चि० मदालसा,

पू० बापू के पत्र की नक़ल तुम्हारी माता के नाम की तुमने भेजी, वह पढ़कर सुख मिला। तुम्हारी माता को कह देना, उस मुताबिक पूरी तैयारी करने में लग जावे व वह बापू की परीक्षा में इस जन्म में (देह से) पास हो जावे तो उससे खूब सुख व लाभ मिलेगा। पू० बापू ने २१-९ को मुझे जो पत्र भेजा है। उसकी नक़ल इस प्रकार है :

तुम किसी प्रकार भी परेशान मत होना। तुम्हें तो नाचना ही चाहिए कि तुमने जिसे बल माना है, वह तुम्हारे प्रिय काम के लिए पूर्णाहुति दे, यह तुम्हारे लिए उत्सव ही होना चाहिए।

जानकी मैया के साथ मेरा विनोद चल रहा है। सरदार और महादेव तुम्हें याद करते हैं।

बापू की इस भीष्म-प्रतिज्ञा ने तो हम सबों की अस्पृश्यता-निवारण

की जवाबदारी बहुत ज्यादा बढ़ा दी है। परमात्मा से ही रोज़ मैं तो प्रार्थना करता हूं। तुम सब भी किया करो, जिससे हम सब लोग अपना कर्तव्य व जवाबदारी पूर्णतया समझते रहें व उसे पूर्ण करने के लिए जी-जान से उद्योग करते रहें।

• •　　　　• •　　　　• •

अलमोड़ा, ६-५-३३

चि० कमल,

तुम उपवास के समय पू० बापूजी को जाकर कष्ट मत देना।

पूना, ३०-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारी ता० २८-५-३३ की चिट्ठी व श्री वकीलजी की चिट्ठी कल मिली। प्रार्थना के बाद दोपहर को १२-२५ पर पू० बापूजी ने नारंगी के रस से उपवास तोड़ दिया। वे कमजोर व थके हुए होने पर भी प्रसन्न थे। डाक्टरों ने उन्हें कम-से-कम दो सप्ताह तक पूर्ण विश्रांति लेने को कहा है।

• •　　　　• •　　　　• •

खंडवा-अजमेर के रास्ते, ७-१२-३३

चि० कमला,

चि० उमा तो बापू के साथ खूब अनुभव ले रही है, उसे थोड़ी सर्दी हो गई है, परंतु जल्दी निकल जावेगी। उसे कोई परवा तो है ही नही। बापूजी को बीच-बीच में बहुत हँसाया करती है।

• •　　　　• •　　　　• •

गोंदिया, २३-१-३४

चि० कमल,

तुमने अपने विचार साफ-साफ लिख दिये, यह जानकर बहुत खुशी हुई। मैं ता० २६-१ को वर्धा पहुंचूंगा। वहां से उनकी एक नक़ल पू० बापूजी के पास भेज दूंगा और इस विषय में उन्हें पत्र भी लिखूंगा। तुम भी संक्षेप में अपना इरादा उन्हें लिख भेजना।

बिहार में बहुत हानि हुई। वहां जाकर कुछ सेवा करने की इच्छा तो जरूर होती है, परन्तु हाथ में लिया हुआ काम छोड़कर जाने में संकोच

हो रहा है। पू० बापूजी को तार दिया है। वर्धा जाकर विचार करूंगा। बम्बई से जो-कुछ सहायता वहां भिजवाई जा सके, वह पू० राजेन्द्रबाबू के पास भिजवाने का खयाल तुम भी रखना, समय मिले तब।

.. .. ..

बंबई, १४-११-३४

चि० मदालसा,

तुमने पू० बापूजी की आज्ञानुसार प्रयोग शुरू किया सो ठीक है; यदि पुराने प्रयोग से वज़न बढ़ता था तो उसे ही चालू रखना ठीक था। अब भी यदि इस प्रयोग से वज़न आदि न बढ़े तो पू० बापूजी को बराबर सब बातें कहती रहना व जैसा वे कहें, उसी प्रकार चलना।

.. .. ..

बंबई, २४-१२-३४

प्रिय कमल,

तुम्हारा ता० २१-१२-३४ का लिखा पत्र मिला। सब दृष्टि से विचार करते हुए तुम्हारा कोलंबो जाना ही मुझे ठीक मालूम देता है। वहां जाने से तुम्हारी अंग्रेजी भी काफी सुधर जायगी। तुम जो निश्चय करो, मुझे लिखते रहना। पू० बापू और विनोबा का आशीर्वाद जरूर प्राप्त कर लेना।

.. .. ..

बम्बई, ९-१-३५

चि० कमल,

आज बापूजी का पत्र आया है कि सीलोन में मलेरिया बंद हो जाने के बाद तुम्हें भेजेंगे, सो ठीक है। तुमने अपनी तैयारी तो करना शुरू कर ही दी होवेगी।

चि० ओम् के कान का क्या हाल है? अगर अभी तक बिलकुल ठीक नहीं हुआ हो तो उसे यहां भेज देना ठीक होगा। बापूजी ने भी लिखा है कि मैंने वर्धा तार भेजा है, ओम् को बंबई भेजने के बारे में। मुझे पूरी हालत लिखना।

.. .. ..

बंबई, १६-१-३५

चि० मदालसा,

तुम पांच-छः मील घूम लेती हो तथा कार्यक्रम ठीक चल रहा है लिखा, सो जाना, संतोष हुआ। आहार के बारे में बापू का पत्र आने पर मुझे लिखना।

तुम्हारी माता अगर रोज दिन में दो बार ही बापू के माफक या मेरे माफक कई बार मन में आनंद लेने की आदत अपनेमें लाने का प्रयत्न करें तथा ईश्वर पर अधिक श्रद्धा बढ़ावे तो उसका मन और स्वास्थ्य तो ठीक होवेगा ही, आत्मा भी सुखी और शांत रहेगी।

.. .. ..

कानपुर, ६-९-३५

प्रिय कमल,

तुम्हारे गत पत्र में तुमने सीलोन के बारे में लिखा है। तुम्हें मालूम होगा कि उस समय मैं कान के आपरेशन के कारण अखबार आदि बहुत कम पढ़ता था और सीलोन के हालात से पूर्णतया वाकिफ नहीं था। मेरा ख़याल है कि पू० महात्माजी ने इस बारे में पत्र-व्यवहार किया है। उनका शायद यह मानना है कि सीलोन का ऑर्गनाइजेशन भी बराबर नहीं था और वहां एफीशेंट काम नहीं हो पाता था। मैं समझता हूं, तुम इस विषय में पू० बापूजी से पत्र-व्यवहार करो। वहां से कई लोगों ने बापू को यह भी लिखा था कि बाहरी मदद की ज़रूरत नहीं। ऐसी मेरी समझ है, निश्चित मालूम नहीं।

.. .. ..

बिसर, अलमोड़ा, २४-९-३५

चि० कमल,

आज बापूजी का जन्म-दिन है। दादा धर्माधिकारी का अभी सुन्दर प्रवचन शुरू होनेवाला है।

.. .. ..

वर्धा, १-२-३६

चि० कमल,

मुझे भी यह मास प्रायः चिंता में ही बिताना पड़ा। पहले पू० बापूजी

के स्वास्थ्य की चिंता थी। बाद में तीन-चार विवाहों की व्यवस्था वगैरा की रही।

तुम्हारे संबंध के बारे में तुम मेरी राय तो जानते ही हो कि विवाह करके ही तुम्हें यहां से यूरोप जाना चाहिए। मेरी इस राय में प्रायः सब ही गुरुजनों की राय भी शामिल है, जैसे पू० बापू, काकासाहब, जाजूजी, विनोबा आदि।

.. .. ..

साबरमती-आश्रम, १२-२-३६

चि० कमल,

विवाह-संबंध के बारे में मैं तुमसे विशेष आग्रह नहीं करता, और एक प्रकार से तुमको स्वतंत्रता देने के लिए भी मैं तैयार हो जाता; परंतु मेरे सामने जिन होनहार लड़कियों का ऑफर है, उसको देखते हुए व अन्य गुरुजनों की सलाह पर ख़याल करते हुए मैं तुम्हारे हित की दृष्टि से ही इस बात को सामने रख रहा हूं। सतीश भी तो संबंध करके ही यहां से गया है। बाकी मेरा तो प्रश्न अभी रहने दो। यदि पू० बापू एवं विनोबा को तुम संतोष दिला सकोगे तो मेरा अधिक कुछ कहना नहीं रहेगा।

सारी बातों का विचार करते हुए मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि छुट्टियों में तुम इधर आ सको तो ठीक होगा। कांग्रेस में हाज़िर रह सकोगे। अबकी बार प्रदर्शनी का भी एक नया रूप रहेगा। वातावरण भी नया रहेगा। तुम उस तरफ घूमना चाहते हो तो इधर भी घूम सकते हो। पू० बापू एवं विनोबा से बातें हो सकेंगी। भविष्य का प्रोग्राम निश्चित करने में सहायता मिल सकेगी। मौसम गर्मी का होने की वजह से धूप की कुछ तकलीफ तो रहेगी, परंतु इससे तुम नहीं डरोगे।

.. .. ..

कैंप सावली, २-३-३६

चि० कमलनयन,

मैं यहां गांधी-सेवा-संघ की वार्षिक परिषद् के लिए आया था। पू० बापूजी व सरदारसाहब भी यहीं हैं। पू० बापू व सरदार ७ तारीख को दिल्ली जा रहे हैं। मेरा विचार इस महीने के मध्य से रवाना होकर

बम्बई-ब्यावर होते हुए दिल्ली पहुंचने का है। आगे का कार्यक्रम वहीं तय होगा। बहुत-कुछ जवाहरलालजी व पूज्य बापूजी के कार्यक्रम के आधार पर ही होगा। मुझे कलकत्ता जाना तो पड़ेगा ही।

तुम्हारा पत्र व कटिंग पू० बापू, महादेवभाई, सरदार वग़ैरा ने पढ़ लिया है।

.. .. ..

वर्धा, ९-७-३६

चि० कमल,

बंबई में तुमको पू० बापू की ओर से भेजे हुए इंट्रोडक्टरी लेटर्स (परिचय-पत्र) मिल गए होंगे।

.. .. ..

वर्धा, २४-७-३६

चि० कमल,

आज सुबह मैं, श्री जानकी देवी, राजकुमारी अमृतकौर, महादेवभाई, श्रीमन्, मोहन आदि सेगांव में थे। आज पू० बापू द्वारा मुद्दा झेला गया तथा सगाई पक्की होने की घोषणा की गई है। इस संबंध का एक तार श्री लक्ष्मणप्रसादजी एवं एक तुमको किया है।

आज नागपंचमी का शुभ दिन है, आज तुम्हारा व सावित्री का संबंध बापू ने ज़ाहिर कर दिया है।

.. .. ..

वर्धा, ७-९-३६

चि० कमल,

पू० बापू को बीच में मलेरिया ज्वर ने हैरान किया था। तीन दिन तक १०५ डिगरी ज्वर रहा था। अब बुखार नहीं है। बापू वर्धा-अस्पताल में हैं। डॉ० साहनी उनकी देखभाल करते हैं। सतत सेवा में बा व मीराबहन हैं।

.. .. ..

वर्धा, २४-९-३६

प्रिय कमल,

श्री वकील की भविष्यवाणी बापू के संबंध की १९ अक्तूबर, १०

बजे दिन को हार्टफेल की गलत ठहरी। इसका तो समाधान है, परंतु उसकी भविष्यवाणी से तुम्हारी मा बहुत चिंतित रही। मुझे भी थोड़ी चिंता-व्यथा रखनी पड़ी। बिना कारण तार-खर्च भी हुआ। मुझे तो विश्वास नहीं था। भविष्य में तुम भी ख़याल रखना।

.. .. ..

वर्धा, १७-११-३६

चि० मदालसा,

दिसंबर के आखिरी सप्ताह में यहां फेलोशिप (ब्रादरहुड) के लोग आयंगे—करीब पचास से ज्यादा अंग्रेज। सभी पुरुष रहेंगे। पांच दिन यहां रहेंगे। प्रायः सब व्यवस्था अपनेको ही करनी होगी। तुम्हें या तुम्हारी मां को याद होगा, जब हम लोग साबरमती रहते थे, तब ये लोग वहां आये थे। वहां तो बापूजी ने बंटवारा कर दिया था। भोजन के लिए अपने घर भी आया करते थे। इनका सम्मेलन देखने-योग्य होगा।

.. .. ..

जानकी-कुटीर, जुहू, ३-६-३७

प्रिय कमल,

बापूजी को विवाह का आग्रह करने का उत्साह नहीं होता है। वह तो कलकत्ते जाना वैसे ही पसंद नहीं करते हैं।

.. .. ..

वर्धा, २-१२-३७

प्रिय कमल,

पू० बापूजी का स्वास्थ्य इन दिनों ज्यादा नरम रहता है। ब्लड-प्रेशर सुबह २००-११४ हो जाता है। दोपहर को कभी-कभी १५०-९० भी हो जाता है। इतना हर-हमेश रहे तो बहुत ठीक हो। डाक्टर लोगों को भी थोड़ी चिंता है। इन्हें पूरा आराम मिले, इसका ख़याल तो रखा जाता है। मैं प्रायः सोता तो सेगांव में ही हूं। मुलाक़ात वग़ैरा बंद हैं। यहां आराम नहीं हुआ तो फिर इन्हें समुद्र-तट पर ले जाना पड़ेगा। वे तो जाना नहीं चाहते हैं। तुम चिंता नहीं करना। ईश्वर को इनसे सेवा लेनी होगी तो कोई जोखम होनेवाली नहीं है।

जुहू, १४-१२-३७

चि० कमल,

पू० बापूजी का स्वास्थ्य इन दिनों में काफी कमजोर हो गया था। प्रेशर बहुत बढ़ा हुआ रहने लगा था। डाक्टरों ने उन्हें समुद्र की हवा में रहने की सलाह दी और सात दिन हुए, पू० बापूजी और हम सब लोग यहां जुहू में आये हुए हैं। जाते ही तो पू० बापूजी अपने झोंपड़े ही में ठहरे थे, पर बाद में नर्सिंग के सुभीते के विचार से डॉक्टर ने उन्हें बिड़ला-कॉटेज में रक्खा है। डॉ० जीवराज मेहता, डॉ० गिल्डर व दिनशा मेहता उनकी संभाल लेते हैं। पू० बापूजी को यहां की हवा से काफी लाभ पहुंच रहा है। दिसंबर आखिर तक तो अभी यहां रहने का विचार है। वह तो सेगांव जाने को कहते रहते हैं, पर अभी तो यहीं रहना उनके लिए लाभकर है। यहां का मौसम भी इस वक्त बहुत अच्छा है। मेरा विचार भी, पू० बापूजी यहां हैं तबतक, यहीं रहने का है।

.. .. ..

वर्धा, २४-१-३८

प्रिय कमल,

मुझे इन महीनों में कार्य ज्यादा रहा—बापू के स्वास्थ्य के कारण व प्रांतिक कांग्रेस के चुनाव के कारण भी। अब हरिपुरा तक तो यों चलता रहेगा। बापूजी का स्वास्थ्य पहले से ठीक है। लार्ड लोथियन यहां तीन रोज रह गए। सेगांव में अपनी झोंपड़ी में रहे थे।

.. .. ..

वर्धा, ८-३-३८

चि० मदालसा,

तुम्हारे पत्र मिले। मैं आज ही रांची जा रहा था। परंतु श्री सुभाष बाबू आज नागपुर से फिर वापस यहां बापूजी से मिलने आये और मुझे टेलीफोन से रहने को कहा। इसलिए मैं अब कल रवाना होकर ता० १० को रांची पहुंच जाऊंगा।

पू० बापूजी की इच्छा बालकोबा को जुहू भेजने की हो रही है। क्या

उनके लिए अलग दो आदमी रहें, ऐसी झोंपड़ी बनाना ठीक रहेगा या पक्की इमारत ?

मोरांसागर, २२-२-३९

प्रिय कमल,

मेहमानों की मैं अब क्यों चिंता करूं ! तुब समर्थ हो, मेहमानों व बापूजी को बराबर संभालोगे ही ।

.. .. ..

नासिक, २९-६-४१

चि० मदालसा,

पू० बापूजी से कह देना, यहां मुझे ठीक लाभ मिलना संभव है । उत्साह ठीक मालूम होता है । मैं बंबई से दूसरे ही दिन चला आया, यह भी बापू से कह देना । आशा है, अब जल्दी ही तुम्हारे यहां बरसात आ जावेगी ।

.. .. ..

नासिक रोड, १-७-४१

चि० मदू,

मुझे कई अनुभवी लोग कह रहे हैं कि नासिक में थोड़ी ठंड में भी घुटनों में दर्द का डर है, तो शिमला में तो बरसात भी ज्यादा होती है व ठंड भी । सो तुम बापूजी से बात कह देना । वैसे शांति तो यहां भी है । उनका शिमला भेजने का ही, विचार हो, तब तो मैं यहां से अगले मंगलवार को निकलकर बुधवार को वर्धा पहुंच जाऊंगा । जल्दी में सोमवार को भी पहुंच सकूंगा । अगर उनकी इच्छा हो कि मैं नासिक ज्यादा दिन रह सकता हूं, तो मुझे जल्दी सूचना मिल जाने से मैं यहां एक-दो महीने के लिए कोई छोटा-सा बंगला किराये का ले लूंगा व रसोइया की व्यवस्था कर लूंगा । अभी तो मैं श्रीगोपालजी नेवटिया का मेहमान हो रहा हूं ।

जमनालाल का आशीर्वाद

.. .. ..

शिमला वेस्ट, १९-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा १७-७ का पत्र अभी मिला । वर्णन पढ़कर खुशी हुई ।

वज़न सचमुच में तीन पौंड बढ़ा होगा। पू० बापू को विश्वास होगया होगा।

यहां एक तोफ़ाबाई है। इसको घर के सब इतनी ज्यादा प्रेम व सेवा करते हैं कि देखकर आश्चर्य होता है। तुम्हारी मां व बाप इतना प्रेम व सेवा पू० बापू या विनोबा या अन्य गुरुजनों की या बालकों की कर सकें तो कितना अच्छा हो! यह तोफ़ाबाई कौन है, पू० बापू से पूछ लेना। वह जानते हैं। उनकी गोद में भी बैठने का इसे सौभाग्य मिला है।

•• •• ••

शिमला वेस्ट, २४-७-४१

चि० मदू,

पू० बापूजी से कह देना कि उनका ता० २१-७ का पत्र मिल गया है। पू० बहन राजकुमारी व उनके परिवार के प्रेम-व्यवहार से ठीक लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहा हूं। मैंने अपनेको राजकुमारी बहन के सुपुर्द कर रखा है। जो वह देती है, वही खाता हूं; भूख ज्यादा लगती है तो प्रेम के साथ मीठी लड़ाई लड़ लेता हूं। उनके भाई कर्नल भी मेरे लिए बहन से लड़ते रहते हैं कि मुझे भूखा क्यों मारती है। ठीक लड़ने में आनंद आता है। बहन खान-पान का बापू की लिखावट के मुताबिक पूरा ख़याल रखती है। मैं भी ख़याल तो रखता ही हूं पर थोड़ा; क्योंकि दो जने चिंता क्यों करें! जब एक समझदार नर्स अपने कर्तव्य का ठीक पालन करती हो; तब फिर मरीज (बीमार) को चिंता रखने की क्या जरूरत! उसे तो फिर नर्स व डाक्टर से विनोद की लड़ाई लड़ने में ही आनंद आना चाहिए। याने खाने-पीने की कसर को भुलाना चाहिए। यहां फल व साग तो ताज़े व अच्छे आते ही हैं, इनके बाग में से भी निकलते रहते हैं। बापू को पत्र इसलिए नहीं लिखता कि उन्हें जवाब लिखना पड़े। बहन तो रोज़ लिखती ही है। बापूजी उन्हें लिखते रहते हैं। फिर बापू का काम दुहरा क्यों बढ़ाऊं! तुम कह ही देती होगी।

मुझे तो गवारपाठे का पाक बापू खिलाते हैं। मुझे पेट भरकर रोटी भी नहीं देते। क्या यह इंसाफ है (मिठाई-खटाई की तो बात ही कहां!)

•• •• ••

शिमला वेस्ट, २७/२९-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा ता० २५-७ का पत्र बहन के पत्र में आज मिला। बापू का पत्र भी मिला। उन्हें मैंने जवाब बहन के पत्र में ही लिख भेजा है। तुम बापू से मांगकर पढ़ लेना, जिससे मेरी इच्छा मालूम हो जावेगी।

तुम्हें चेंज से मन को शांति मिलती है, तो जरूर बापूजी से पूछकर बीच-बीच में चेंज कर लिया करो।

तुम्हारी मांजी राजी रहती है, तुम्हारा उसका ठीक जम रहा है, जानकर मुझे सुख मिल रहा है। परमात्मा ने किया तो थोड़ी उदारता और बढ़ जावेगी, जैसी कि आशा है, तो सबोंको संतोष हो जावेगा। उसमें गुण तो बहुत ज्यादा हैं, परंतु हम लोगों को चाहिए उतने समझ में नहीं आये हैं। तुम कोई रास्ता व्यावहारिक ढूंढ़ निकालो, जिससे उसे खूब आनंद, सुख व संतोष मिल सके। मेरे मन में ये विचार तो प्रायः आते रहते हैं व चिंता भी बनी रहती है। परंतु कोई राज-मार्ग अभी तक निकाल नहीं पाया। इसका मुख्य कारण तो मेरे विचार करने की पद्धति व उसके विचार करने की पद्धति में बहुत ज्यादा फरक है। अब यह फरक तो शायद पू० बापू ही निकाल सकेंगे।

उससे ज्यादा उदारता की आशा रखना शायद मेरे लिए उचित भी न हो। हां, एक बात अगर वह कर सके, याने पू० बापू पर हृदय से पूरी श्रद्धाबढ़ा सके तो, मुझे आशा है, उसे खूब लाभ पहुंचेगा। बीच-बीच में उसे बापू से बात करने का मौक़ा मिलता रहेगा तो ठीक रहेगा। तुम भी इस बात का ख़याल रखना। मैंने भी बापू को सूचित तो कर दिया है। बापू पर बोझ न पड़ते हुए उनके अनुभवों से हम लोगों को लाभ अवश्य उठाना चाहिए। बापू से ज्यादा (शुद्ध) प्रेम और कहां से मिलनेवाला है!

.. .. ..

शिमला वेस्ट, ३-९-४१

चि० मदू,

कुटिया कुछ बड़ी व ढंग की गुलाटीजी बना सकें तो कह देखना। आखिर तो बापू की इच्छा होगी, वैसी ही बनेगी।

डॉ० दास को बापूजी ने इजाजत नहीं दी सो उन्होंने सोचकर ही ऐसा किया होगा। डॉ० दास के खाने-पीने, आराम का खयाल रखना, उनके क्रोध का ज्यादा विचार नहीं करना। सरल-हृदय सज्जन पुरुष हैं, मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी मां को बापूजी चिढ़ाते हैं, कहते हैं कि 'बछड़े के पीछे गाय की तरह ही सदा साथ रहना देखो' सो ठीक, परंतु बछड़ा बड़ा होने पर वह भी अपनी मां को भूल जाता है और मां भी, ऐसा कहते हैं। सो तुम्हारा दोनों का यों न होने पावे, इसकी संभाल रखना।

पू० बापूजी से कहना, पत्र उनका ता० ३०-७ का मिल गया है। अभी तो मैं यहांपर हूं ही। आगे बहन की सलाह से कार्यक्रम बनाने की इच्छा होगी तब बना लूंगा। यहां पर भी कैद में हूं ही। यह क़ैद अमीरी याने स्टेट-गैस्ट की तरह की है।

बापू से कहना, अगर देहरादून जाना हुआ और मां आनंदमयी से सुगमता से मिलना हो सका, तो ख़याल रखूंगा।

.. .. ..

शिमला वेस्ट, ५-९-४१

चि० मदू,

तिलक-जयंती पर बापू का खादी-विद्यालय का उद्घाटन-भाषण स्पष्ट (हृदय की आवाज़) मन से बोले, सो थोड़ा तो पत्रों में पढ़ा है। बाकी 'खादी-जगत्' या 'सर्वोदय' में देखने को मिल जावेगा।

पू० राजकुमारी बहन का देहरादून से आये-बाद स्वास्थ्य थोड़ा नरम रहता है। पू० बापू से विनोद करना कि मुझे बीमार समझकर उनकी देख-रेख में भेजा है, परंतु बीमार तो सचमुच में वह हैं। मुझे उन्हें हँसाना पड़ता है। उनके दिल-बहलाव के लिए भी पत्ते, शतरंज व नाना तरह के खेल रात को प्रायः रोज खेलना पड़ता है। वह शायद समझती है मेरे मन-बहलाव के लिए। यह भी ठीक हो सकता है। हां, यह बात ज़रूर है कि उनको हराने में हम बाकी के सबोंको ठीक आनंद आता है। क्योंकि वह बहुत होशियार, तेज़ बुद्धि की व खेलने में ऐक्सपर्ट समझी जाती है।

.. .. ..

शिमला वेस्ट, १४-९-४१

चि० मदू,

वर्धा आने के बाद सीकर जाने का बापूजी की आज्ञा से निश्चय होवेगा ।

चि० प्रभावती के पत्र का जवाब मैंने बापू के पते से भेजा था, वह उसे मिल गया होवेगा ।

डेढ़ सौ रुपये पू० बापूजी को देने के लिए राजकुमारी बहन की भतीजी कु० बेअरिल ने दिये हैं । सो मेरे हस्ते खाते नाम लिखवाकर दूकान से मंगा लेना व बापूजी को दे देना और उनके पास से इन्हें पहुंच भिजवा देना, याद रखकर !

.. .. ..

देहरादून, १९-९-४१

चि० मदू,

परसों ही मैं यहां श्री आनंदमयी माताजी (बंगाली) (कमला नेहरू की गुरु) यहां से पांच मील रायपुर नाम के देहात में रहती हैं, उनसे मिल आया । पू० बापू ने इनसे मिलने के लिए लिखा था । करीब दो घंटे उनके पास रहा, ठीक बातचीत हुई । मुझे उनके पास बैठकर बातचीत करने से संतोष मिला । करीब आधा घंटा एकान्त में भी बातें हुईं । मैंने उनसे कहा "मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्टवत् । आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति ।"—इस प्रकार की मेरी भावना इस जन्म में जिस प्रकार हो सके, वह मार्ग बतावें । उन्होंने प्रेमपूर्वक कुछ बातें बताई हैं । मैं आज फिर उनके पास जा रहा हूं । वहीं दिन व रात रहने का विचार है । वहां स्थान आदि देख आऊंगा । बाद में पूज्य बापूजी की इजाज़त लेकर कुछ समय वहां रहने की इच्छा हो रही है । सात्त्विक वातावरण दिखाई देता है ।

पू० बापू को यह पत्र पढ़ा देना ।

.. .. ..

देहरादून, २१-८-४१

चि० मदू,

मेरा पत्र तो बापू के नाम का पढ़ ही लिया होगा । मुझे यह स्थान व

यहां का वातावरण व पू० मां आनंदमयी का स्वच्छ प्रेम आदि के कारण यहीं ज्यादा समय तक रहने की इच्छा व उत्साह मालूम होता है। आज पू० बापू का तार भी मेरे तार के जवाब में मिल गया, मेरी इच्छा हो वहां-तक ठहरने के बारे में। तार पढ़कर सुख मिला। मुझे बाप तो बापू मिल ही गए थे, मां आनंदमयी मिल गई। अब भी मुझे शांति नहीं मिली तो मेरा ही कोई भारी पाप आड़े आना संभव होगा। मुझे आशा है, ज़रूर शांति मिल जावेगी। मां आनंदमयी से मिलने की सूचना तो पू० बापू ने ही की थी।

बापू को पढ़ा देना, मां को कह देना।

.. .. ..

डाक-बंगला, अलमोड़ा, १०-९-४१

चि० मदू,

मैं, उमा और राजनारायण नैनीताल से ता० ७ को सुबह निकलकर दो रात कौसानी के सरकारी स्टेट-बंगले में रहे। यह स्थान चनौदा गांधी-आश्रम से तीन मील आगे है। बहुत अच्छा स्थान मालूम हुआ। पू० बापूजी भी यहां ९-१० रोज़ रहे थे। उन्हें भी यह स्थान पसंद आया बताते हैं।

पू० बापूजी से मिलने पर खान-पान के बंधन थोड़े ढीले करने की इच्छा है। अन्यथा मुसाफिरी में थोड़ा कष्ट होता है। खर्च भी ज्यादा आता है। मौका लगे तो मेरे पत्र का सारांश पू० बापू से कह देना।

बापू जेल में नहीं भेजेंगे तो नेपाल जा-आने का विचार कर रहा हूं। पैदल भ्रमण का उत्साह व इच्छा बढ़ती जा रही है। रेल-मोटर की मुसाफरी का उत्साह कम होता जा रहा है। कैलास-मानसरोवर भी जाने का मन होता है। देखें, क्या होनेवाला है!

●

अपने मित्रों तथा सहयोगियों को

जमनालाल बजाज द्वारा लिखे पत्रों में से

गांधीजी-संबंधी उल्लेख

●

बीकानेर, ५-१०-२५

श्री हरिभाऊजी,

पूज्य बापूजी के पत्र की नक़ल भेजी, सो भी पढ़ी । पू० बापूजी से बातचीत हुई । उन्होंने आपको सीधा पत्र लिखा ही होगा । 'नवजीवन' का दूसरी तरह से पूरा बंदोबस्त हो जाने से आप राजस्थान जा सकते हैं, ऐसी उनकी राय है । मुझे भी आपका विचार रुचिकर मालूम हुआ है । अतएव 'नवजीवन' किसी योग्य सज्जन को सौंपकर आप राजस्थान में जा सकते हैं । मेरी राय में वह सज्जन हिन्दी के विद्वान् होने चाहिए तथा उनकी शैली सरल होनी चाहिए । वह पूज्य बापूजी के जीवन तथा सिद्धान्तों को पूरी तौर से समझ गए हों या समझने का सतत प्रयत्न करते हों । आप जैसे पू० बापूजी के कार्य के लिए तैयार हो गए हैं, वैसे वह भी थोड़े दिनों में तैयार हो सकें, ऐसे हों ।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय,
साबरमती ।

.. .. ..

बंबई, १०-१-२६

प्रिय हरिभाऊजी,

पू० बापूजी की इच्छा है कि चरखा-संघ के आफिस का काम सब हिन्दी में चले । इसके लिए शंकरलालभाई को किसी आदमी की ज़रूरत है । अगर आप उस आफिस में रहना पसंद करें तो उनको दूसरा आदमी देखने की ज़रूरत न होगी ।

चरखा-संघ के कार्यालय में अगर आप एक वर्ष तक कार्य करें, तो मुझे विश्वास होता है कि बहुत-सी बातों का अनुभव हो जायगा । पू० बापूजी भी एक वर्ष तक आश्रम में रहनेवाले हैं, इसलिए खादी के संबंध में उनके विचार, अनुभव तथा अन्य बातों का अनुभव हो जायगा । हम लोग समय-समय पर वहां आते रहेंगे । अगर आप ठीक समझें तो मुझे व शंकरलाल-भाई को लिखें ।

साबरमती, १५-५-२९

प्रिय हरिभाऊजी,

मेरा यह मानना है कि जनता के पैसे पर अपनी ताकत से बाहर जाकर प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस बारे में पू० बापूजी की कार्य-प्रणाली का हम सर्वथा अनुकरण नही कर सकते है। क्योंकि पू० बापूजी का देश में जो स्थान है, और जिस योग्यता के साथ बापूजी जो कार्य अपने हाथ से करते है, उसमें जितनी चिता रख सकते हैं और उनके ध्यान में कार्य बिगड़ने न पावे, और एक पाई का भी दुरुपयोग न हो, उसका दर्द और खयाल वह रखते है। ये तीनों बातें हम लोगों में नहीं हैं, यह हमें भूलना नहीं चाहिए।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्
अजमेर।

.. .. ..

साबरमती, १८-६-२८

प्रिय हरिभाऊजी,

आजकल बारडोली की लड़ाई खूब ज़ोर से चल रही है। सरकार भी ज़ोर से सामना कर रही है और भविष्य में और ज़ोर से करेगी, ऐसा संभव है। मैं वहां सात-आठ रोज़ घूम आया। वहां का किसान-वर्ग और वहां की जनता की तैयारी तो बड़ी अच्छी मालूम होती है। मुझे तो लगता है कि पू० बापूजी का संदेश सारे भारतवर्ष में और तमाम दुनिया-भर में बारडोली के ज़रिये फैलना संभव है। बारडोली-युद्ध लंबा चला तो हम सबको तैयार रहना होगा। आप खूब बारीकी से बारडोली का अध्ययन करते होंगे।

.. .. ..

वर्धा, ७-१२-२८

प्रिय भाई श्री जवाहरलालजी,

लाहौर और लखनऊ में पुलिस ने जो अत्याचार किये हैं, उनकी खबर पढ़कर और सुनकर दुःख होता है। एक तरफ लाहौर में पुलिस का कार्य और दूसरी तरफ लोगों की उदासीनता देखकर दुःख हुए बिना नहीं रह

सकता। लखनऊ में आपके ऊपर पुलिस की मार पड़ी, लेकिन चोट ज्यादा न आई, यह आपके पूज्य महात्माजी को लिखे पत्र से जानकर कुछ संतोष हुआ। लेकिन पुलिस और सरकार इस तरह अपनी मनमानी कर सके, यह देश के लिए कम लज्जा की बात नहीं है।

पं. जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद।

.. .. ..

बंबई, २४-४-२९

प्रिय हरिभाऊजी,

रानीपरज की प्रजा में खूब जागृति हुई है। खादी-प्रचार व दारू-विरोध का खास कार्य हुआ है। जिस समय वहां की स्त्रियां (देवियां) सैकड़ों की संख्या में शुद्ध सफेद खादी पहने हुए राजनीतिक जागृति व बारडोली-संगठन, चरखे का महत्त्व तथा अन्य सामाजिक सुधार के गीत व भजन अपनी भाषा में व गुजराती भाषा में गाती हैं उस समय किसी भी सहृदय भारतवासी के मन में उनकी इस प्रकार की जागृति देख आनंद का संचार हुए बिना नहीं रहता। ईश्वर ने चाहा तो इस पिछड़ी हुई जाति में, जिसमें पूज्य बापूजी दरिद्रनारायण के दर्शन करते हैं, अवश्य पूज्य बापू की तपश्चर्या के कारण स्थायी तौर पर नवजीवन स्थापित हो जायगा।

.. .. ..

बंबई, १५-८-२९

प्रिय डॉक्टरसाहब

धन्यवाद। मैं चरखा-संघ की बैठक के लिए इस महीने के आखिरी सप्ताह में साबरमती जा रहा हूं। तब इस विषय में मैं महात्माजी से बात-चीत कर लूंगा। उनकी जैसी सलाह होगी और सुझाव होगा, उसके अनुसार डॉ० ज़ाकिर हुसेन को पत्र भी दे दूंगा। मुझे आशा है, आपने भी बापूजी को इस बारे में लिखा ही होगा।

गत ११ तारीख को पू० बापूजी यहां थे, तब डॉ० जीवराज मेहता ने उनके शरीर की जांच की थी। उनकी रिपोर्ट की एक प्रति इस पत्र के साथ आपके देखने के लिए भेज रहा हूं।

श्री महादेवभाई का पत्र आज साबरमती से आया है। वह लिखते हैं कि गत मंगलवार से बापूजी को पेचिश की शिकायत है। बगैर पकाया हुआ खाना शायद इसका कारण है। मैं आशा करता हूं कि आप इस बारे में ज़रूर उन्हें उचित सलाह देंगे।

डॉ० एम० ए० अन्सारी,
दिल्ली।

.. .. ..

वर्धा, २७-१-३०

प्रिय राजाजी,

इस समय बापूजी बहुत-कुछ दक्षिण अफ्रीका के ढंग पर सविनय अवज्ञा-आंदोलन शुरू करने की बात गंभीरता के साथ सोच रहे हैं। २४ ता० को वल्लभभाई बंबई आये थे। उनकी सलाह है कि हम लोग कांग्रेस कार्य-कारिणी की मीटिंग से दो-तीन दिन पहले ही से मिलें।

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य,
सलेम (मदुरा)।

.. .. ..

वर्धा, ३०-१-३०

प्रिय नवाबसाहब,

महात्माजी के साथ जब मैं भोपाल आया था, तब आपसे मिलने और भोपाल-राज्य में खादी का काम शुरू करने की बाबत आपसे बात करने का मौका मुझे मिला था। आप मेरी राय से सहमत हुए थे। अगर आप मेहरबानी करके इस काम की शुरुआत के लिए किसी सरकारी अफसर को हिदायत दे दें, तो मैं आपका आभारी होऊंगा। इस बाबत अगर आप जरूरत समझें तो मैं फरवरी या मार्च में फिर भोपाल आ सकता हूं। आपको यह जानकर खुशी होगी कि कई दूसरे राज्य खादी के उत्पादन के लिए जरूरी कदम उठा रहे हैं।

पत्र का उत्तर सुविधानुसार दीजियेगा।

श्रीमान् नवाबसाहब,
भोपाल।

१९३०

घनश्यामदासजी बिड़ला,
नई दिल्ली ।

बापूजी के पास से अभी लौटा । आपके और मालवीयजी के इस्तीफे से बड़ी प्रसन्नता हुई । यदि आप और मालवीयजी विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की ओर अपना पूरा ध्यान दें तो बापू बहुत खुशी होंगे । नमक के एकाधिकार को दूर करने के लिए भी स्वतंत्र रूप से काम करें ।
(अंग्रेजी तार का अनुवाद)

.. .. ..

शिमला, १५-५-३१

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

आपका १०-५-३१ का पत्र पूज्य श्री बापूजी ने मुझे दिया है। बिजोलिया के बारे में उन्होंने आपको लिखा ही है कि वह वर्तमान हालत में इस मामले के बीच में नहीं पड़ सकते । परिस्थिति ऐसी ही है कि उनके लिए इस संबंध में इस समय कुछ करना ठीक नहीं होगा। मैं बंबई में बीकानेर के महाराजा से मिला था और उनके एक आदमी के साथ उदयपुर उनका पत्र भेजा है । देखा जाय, उस पत्र का क्या असर होता है ।

.. .. ..

वर्धा, २२-५-३१

पूज्य गांधीजी के सिद्धान्तानुसार यह कार्य (अस्पृश्यता-निवारण) अहिंसा-वृत्ति से ही किया जा सकता है । इसलिए न्याय की दृष्टि रखनेवाले लोगों को घबराने का कोई विशेष कारण नहीं होना चाहिए ।

आपके लिख हुए प्रश्नों की चर्चा मैं पूज्य महात्माजी से नहीं कर सका । कारण इस बार उन्हें समय नहीं था। दूसरे, ऐसे प्रश्न कई बार हुए हैं और उनका जवाब उन्होंने लिखकर तथा ज़बानी दिया हुआ है। गत ता० ६-८-३१ के 'नवजीवन' में अहमदाबाद में अस्पृश्यों के लिए एक मंदिर खोलने के अवसर पर भी उन्होंने अपने जो विचार प्रकट किये थे, वे प्रकाशित हुए हैं ।

श्री अच्युतस्वामीजी ।

वर्धा, २४-९-३३

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

पू० बापूजी ने आज मुझसे साबरमती-आश्रम की ज़मीन व इमारतों के बारे में बातचीत की थी। सरकार ने उस ज़मीन व इमारतों का कब्ज़ा नहीं किया तो फिर क्या किया जाय, इसपर अहमदाबाद में कई मित्रों ने कई प्रकार की योजनाएं उनके सामने रखीं। आश्रम की ज़मीन व इमारतों को जब सरकार के हवाले करने का निश्चय किया था तब तो यह विचार था कि जब कभी सरकार से समझौता हो जायगा तब, या स्वराज्य मिलने पर, इस ज़मीन तथा इमारतों का आश्रम के काम के लिए उपयोग किया जाय। परंतु अब बापू का यह विचार हुआ है कि इस ज़मीन व सब इमारतों का स्थायी तौर से हरिजन लोगों की सब प्रकार की उन्नति के काम में उपयोग किया जाय। अब सवाल यह पैदा हो रहा है कि यह सब ज़मीन, इमारतें अहमदाबाद के मित्रों के, जो इस काम में रस लेते हैं, अधीन की जावें या हरिजन-बोर्ड के? मैंने तो यही राय दी कि वह स्टेट हरिजन-बोर्ड (जनरल) के सुपुर्द करना ज्यादा ठीक रहेगा। इस चर्चा के बाद यह विचार हुआ कि श्री अमृतलालजी ठक्कर यहां तारीख २९ को आनेवाले हैं ही। अगर उस समय कुछ रोज़ के लिए आप भी यहां आ जावें तो इसका पूर्णतया संतोषकारक खुलासा हो सकेगा। सो अगर आप यहां इस मास के आखिर या अक्तूबर के प्रथम या दूसरे सप्ताह में आ सकें तो समक्ष में संतोषकारक निश्चय हो जायगा। इससे पूज्य बापू व हम सबोंको पूरा संतोष रहेगा। कानूनी लिखा-पढ़ी भी होना ज़रूरी है। पू० बापू इसका जल्दी ही फैसला कर लेना चाहते हैं। उनकी आज्ञा से ही यह पत्र मैं आपको लिख रहा हूं। आपको यहां आये भी बहुत दिन हो गए हैं।

.. .. ..

इन्दौर, १२-८-३५

श्रीमंत महाराजासाहब,

मैं कल सुबह सीकर के लिए रवाना हो रहा हूं। मेरे मित्र श्री मणिलाल कोठारी १५ ता० तक यहां ठहरेंगे। हमारे यहां के निवास के बीच आपके आतिथ्य और कृपा के लिए मैं और श्री कोठारी दोनों आपके आभारी हैं।

महात्माजी को हिन्दी-प्रचार के लिए भेंट दी जानेवाली थैली के लिए आपने जो उदारतापूर्वक दान दिया, उसके लिए हम दोनों की ओर से आपको अनेकानेक धन्यवाद ! महात्माजी के प्रति आपकी श्रद्धा और हिन्दी-प्रचार के प्रति आपकी असीम सहानुभूति का हमपर बहुत असर पड़ा है ।

श्रीमंत यशवंतराव होल्कर,
इंदौर ।
(अंग्रेजी से अनूदित)

.. .. ..

बंबई, ७-११-३७

प्रिय चिरंजीलाल,

श्री मीराबहन का पत्र आया है । बापूजी का स्वास्थ्य इधर खराब है । वह १०-११ तक वर्धा आवेंगे । उनके लिए मीराबहन मकान में थोड़ी दुरुस्ती कराना चाहती है, वह उनसे मिलकर ज़रूर करवा देना । मीराबहन का पत्र उनके पास ज़रूर भिजवा देना ।

चिरंजीलाल बड़जाते,
वर्धा ।

.. .. ..

कैंप देहली, १-१०-३८

प्रिय सर अकबर,

कांग्रेस-कार्यसमिति में आपके कई सच्चे साथी हैं । गांधीजी कितनी ही बार आपका उल्लेख एक दार्शनिक के रूप में करते हैं । वापस हिन्दुस्तान आते समय स्टीमर में उनकी प्रार्थना-सभाओं में आपके शामिल होने की बात उन्हें हमेशा याद रहती है ।

श्रीमती सरोजिनीदेवी तो आपके परिवार की सदस्या ही हो गई । सरदार को आपके निमंत्रण का पूरा खयाल है ।

सर अकबर हैदरी,
हैदराबाद (दक्षिण) ।
(अंग्रेजी से अनूदित)

.. .. ..

जयपुर स्टेट कैदी, ४-७-३९

प्रिय श्री किशोरलालभाई,

जैसे-जैसे मैं अपनी कमजोरियों का निरीक्षण करता हूं, वैसे-वैसे ही मेरा मन साफ तौर से मुझे कहता है (पहले से कहता आया भी है) कि मैं गांधी-सेवा-संघ जैसी उच्च व पवित्र संस्था के योग्य नही हूं। ज्यादा नहीं लिख सकता; एक बार तो आप मुझे मुक्त कर ही डालें। पूज्य बापूजी मेरा समर्थन करेंगे। वह मेरी स्थिति से वाक़िफ़ भी हैं।

मुझे अपनी कमजोरियों का थोड़ा ज्ञान रहने के कारण मैंने बापू को 'गुरु' नहीं बनाया, न माना, 'बाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद इन्हें बाप मानने से मेरी कमज़ोरियां हट जायें। बीच में ठीक इन दिनों (याने इन दो वर्षों में) तो मुझे काफी हैरान, बेचैन, निरुत्साही होना पड़ा। बापू के लड़कों में हरिलाल भी तो है। वह बेचारा प्रसिद्ध हो गया, मेरे सरीखे छिपे हुए रहे। आपने लिखा—गांधी-सेवा-संघ को छोड़ना याने बापू को छोड़ना है, यह मानने को मेरा मन तैयार नहीं है। बापू के दूसरे चार लड़के भी तो गांधी-सेवा-संघ में नहीं है! फिर मैंने ही क्या इतना पुण्य किया, जिससे रह सकूं? उनकी गति सो मेरी गति! उनमें कई तो उच्च स्थिति में हैं। पहले मैंने अहंकारवश मान लिया था कि बापू को व उनके सिद्धान्तों को मैं थोड़ा समझ सका हूं; परंतु ठीक विचार करने से यह साफ दिखाई दे रहा है कि न समझ पाया था, न समझने की ताकत है। मैंने सत्य-अहिंसा की व्याख्या मेरे विचार के मुताबिक समझ ली थी, परंतु वह मेरी गलती अब साफ दिखाई दे रही है। मेरी लिखने की तो और भी इच्छा होती है, परंतु जेल के अंदर से ज्यादा क्या लिखूं!

श्री किशोरलाल मशरूवाला,
वर्धा।

.. .. ..

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

यदि पूरी कोशिश करके आप यहां एक ऊंचे दर्जे के हिन्दुस्तानी दीवान को भिजवा सकें तो बहुत-सी कठिनाइयों का हल हो सकता है। मैं मेरी ओर से तो पूरी कोशिश करता हूं। पू० बापूजी को भी लिखा है। सर कुंवर

महाराजसिंह यदि यहां आ जावेंगे तो बहुत अच्छा हो। अभीतक दीवान की जगह रिक्त है। आपके खयाल में यह बात रहे, इसलिए लिख रहा हूं।

श्री घनश्यामदास बिड़ला,
दिल्ली।

.. .. ..

बंबई, मई १९४०

प्रिय श्री कैलासनाथजी,

वर्धा से, पू० बापूजी की प्रार्थना करने पर, आपके जयपुर आने के बारे में उन्होंने आपको तार दिया था। आपका जवाब आ गया था। आपने वहां आना मंजूर किया, इससे बापू को व हम सबको खुशी हुई। यों तो मैं ही आपको आने को लिख सकता था और मुझे उम्मीद थी कि आप आना स्वीकार कर लेते, परंतु बापू के जरिये बुलाने में अब आप बापू के प्रतिनिधि होकर जयपुर आवेंगे। बापू ने जो पत्र जयपुर की प्रदर्शनी के बारे में दिया है, उसकी नक़ल आपकी जानकारी के लिए इसके साथ भेज रहा हूं। आप इसका उपयोग अपने भाषण आदि में कर सकते हैं।

डॉ० कैलासनाथ काटजू,
इलाहाबाद।

.. .. ..

प्रिय मौलानासाहब, वर्धा १८-१२-४०

भंडारा (म० प्र०) के विधान-सभा-सदस्य श्री वी० एम० जकातदार कल यहां आये थे। पू० बापू से मिले थे। मिश्रजी के मामले में उनके खिलाफ अनुशासन की कार्रवाई की गई थी, जैसाकि उनके पत्र से स्पष्ट है। वह बापू से सत्याग्रह करने की इजाज़त लेने के लिए आये थे। सत्याग्रही की दूसरी सब प्रकार पात्रताएं उनमें हैं। बापू ने उनसे कह दिया है कि जबतक उनका निष्कासन रद्द नहीं हो जाता, श्री जकातदार को सत्याग्रह करने की इजाज़त देना उनके लिए सम्भव नहीं होगा। बापू की सलाह से श्री जकातदार ने आपके नाम एक पत्र लिखा है, जिसमें उनके (जकातदार) द्वारा हुए अनुशासन-भंग पर श्री जकातदार ने

खेद प्रकट किया है और आपसे निष्कासन-आज्ञा उठा लेने के लिए प्रार्थना की है। इस पत्र की एक नक़ल में साथ मे भेज रहा हूं।

मौलाना अबुलकलाम आज़ाद,
कलकत्ता।

.. .. ..

१-११-४१

प्रिय परमेश्वरी,

पू० बापूजी को भी कल तुम्हारा पत्र पढ़ाया था। उनकी साफ तौर से इच्छा व एक प्रकार से आज्ञा है कि तुम्हें पूरी शक्ति व तन-मन से मेरे साथ गो-सेवा के काम में लग जाना चाहिए। उनकी यह भी समझ है कि मेरे साथ तुम्हारा ठीक जम सकेगा, क्योंकि मेरा प्रेम तो तुम्हारे प्रति है ही। बापूजी भली प्रकार जानते ही हैं। वह यह भी समझते हैं कि तुम्हारे स्वभाव में जो थोड़ा-बहुत जिद्द या अव्यावहारिकता दिखाई देती है, वह भी मेरे साथ काम करने से निकल जावेगी। इतनी सब बातें कल खुलकर उनसे नहीं हुई हैं, परन्तु समय-समय पर तुम्हारे बारे में जो बातें होती रही, उसका सारांश है। वह (बापूजी) तुम्हें इस काम के लिए उपयोगी तो समझते ही हैं। अब तुम अपने बारे में जल्दी निश्चय कर सको तो शुरू से ही कार्य जमाने में सुभीता रहेगा।

श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त,
दिल्ली

.. .. ..

वर्धा, १९४१

प्रिय भाई रामेश्वरजी,

गोसेवक भी यदि गाय के दूध-घी का इस्तेमाल आग्रहपूर्वक न करता हो, तो फिर दूसरे के ऊपर उसका क्या प्रभाव पड़ सकता है!

यद्यपि पूज्य बापूजी की इसमें सैद्धान्तिक दृष्टि है और वह तो इस बात पर बहुत ज़ोर देते हैं; लेकिन मैं तो व्यावहारिक दृष्टि से ही इस बात को आवश्यक मानता हूं।

श्री रामेश्वर पोद्दार,
धूलिया।

वर्धा, १०-१२-४१

भाई जुगलकिशोरजी,

आपने खादी के काम के लिए कांगड़ा की ओर रु० १०,०००) के चर्खे वितरण करने को तथा २५-३० हजार वहां ऊनी और सूती खादी का काम करने के लिए और रु० २०-२५ हज़ार पिलानी में खादी-काम के लिए देने को लिखा है। उस विषय में पंजाब के काम के बारे में डॉ० गोपीचन्दजी का पत्र और पिलानी के काम के बारे में श्री जाजूजी का पत्र इसके साथ भेजता हूं। डॉ० गोपीचन्दजी ने भी अपना पत्र श्री जाजूजी की सलाह से लिखा है। वह पंजाब के लिए चरखा-संघ के प्रतिनिधि (एजेंट) हैं। मैंने इस विषय में पूज्य बापूजी की सलाह ली। उनका कहना था कि काम तो आपकी इच्छा हो वहीं किया जावे; परन्तु किस रीति से किया जावे, यह बात चरखा-संघ पर छोड़नी चाहिए। संघ को अधिक जानकारी है। वह पैसे का ठीक उपयोग अधिक-से-अधिक कर सकेगा। मेरी भी ऐसी ही राय है।

श्री जुगलकिशोर बिड़ला,
नई दिल्ली

बजाज-परिवार के व्यक्तियों द्वारा

गांधीजी-संबंधी संस्मरण

●

मार्गदर्शक की खोज और प्राप्ति

जमनालाल बजाज

जीवन सेवामय, उन्नत, प्रगतिशील, उपयोगी और सादगी-युक्त हो, यह भावना, जबसे मैंने होश संभाला तबसे, अस्पष्ट रूप से मेरे सामने थी। इसीकी पूर्ति के हेतु सामाजिक, व्यापारिक, सरकारी और राजकीय क्षेत्रों में कुछ हस्तक्षेप करना मैंने प्रारम्भ किया। सफलता मेरे साथ थी। पर मुझे सदा यह विचार भी बना रहता था कि जीवन की संपूर्ण सफलता के लिए किसी योग्य मार्गदर्शक का होना जरूरी है। मैंने अपने विविध कार्यों म लगे रहने पर भी इस खोज को चालू रखा। इसी मार्ग-दर्शक की खोज में मुझे गांधीजी मिले और सदैव के लिए मिल गए।

.. .. ..

मार्गदर्शक की खोज में मैंने भारत के अनेक व्यक्तियों से संपर्क स्थापित किया। महामना मालवीयजी, कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सर जे० सी० बोस, लोकमान्य तिलक आदि अनेक नेताओं तथा व्यक्तियों से मैंने कम-अधिक परिचय प्राप्त किया। उनके संपर्क में रहा। उनके जीवन का निरीक्षण किया। मेरी इस खोज में एक बात ने मेरे दिल पर सबसे बड़ा असर कर रखा था। वह थी समर्थ रामदासजी की उक्ति : "बोले तैसा चाले, त्याची वंदावी पाउलें।" अनेक नेताओं से मेरा परिचय होने पर मुझे उनके जीवन में मेरे इस सिद्धान्त की प्राप्ति जिस परिमाण में होनी चाहिए, नहीं हुई। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न गुणों का मुझपर असर पड़ा। सबके प्रति मेरी श्रद्धा और आदर भी बना रहा, पर अपने जीवन के मार्गदर्शक के स्थान पर किसीको आसीन नहीं कर सका।

.. .. ..

जिस समय मार्गदर्शक की मेरी खोज चल रही थी, गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में सेवा-कार्य कर रहे थे। उनके विषय में समाचार-पत्रों में जो आता, उसे मैं गौर से पढ़ता था, और यह स्वाभाविक इच्छा होती थी कि

यदि यह व्यक्ति भारत में आवे तो उससे संपर्क पैदा करने का अवश्य प्रयत्न किया जाय। सन् १९०७ से १९१५ तक इस खोज में रहा। और जब गांधी-जी ने हिन्दुस्तान में आकर अहमदाबाद के कोचरब मोहल्ले में किराये का बंगला लेकर अपना छोटा-सा आश्रम आरंभ किया, तब उनसे परिचय प्राप्त करने के हेतु मैं तीन बार वहां गया। उनके जीवन को मैं बारीकी से देखता। उस समय वह अंगरखा, काठियावाड़ी पगड़ी और धोती पहनते थे। नंगे पैर रहते थे। स्वयं पीसने का काम करते थे। स्वयं पाकशाला में भी समय देते थे स्वयं परोसते थे। उनका उस समय का आहार केला, मूंगफली, जैतून का तेल और नीबू था। उनकी शारीरिक अवस्था को देखते हुए उनके आहार की मात्रा मुझे अधिक मालूम होती थी। आश्रम में प्रातः-सायं प्रार्थना होती थी। सायंकाल की प्रार्थना में मैं सम्मिलित होता था। गांधीजी स्वयं प्रार्थना के समय रामायण, गीता आदि का प्रवचन करते थे। मैंने उनकी अतिथि-सेवा और बीमारों की शुश्रूषा को भी देखा और यह भी देखा कि आश्रम की और साथियों की छोटी-से-छोटी बातों पर उनका कितना ध्यान रहता है। आश्रम के सेवा-कार्य में रत और निमग्न बा को भी मैंने देखा। गांधीजी ने भी मेरे बारे में पूछताछ करना आरंभ किया। धीरे-धीरे संपर्क तथा आकर्षण बढ़ता गया। ज्यों-ज्यों मैं उनके जीवन को समालोचक की सूक्ष्म दृष्टि से देखने लगा, त्यों-त्यों मुझे अनुभव होने लगा कि उनकी उक्तियों और कृतियों में समानता है और मेरा "बोले तैसा चाले" यह आदर्श वहां विद्यमान है। इस प्रकार संबंध तथा आकर्षण बढ़ता गया।

.. .. ..

महात्माजी के कार्य में मैं अपने-आपको विलीन हुआ पाने लगा। वह मेरे जीवन के मार्गदर्शक ही नहीं, पिता-तुल्य हो गए। मैं उनका पांचवां पुत्र बन गया।

.. .. ..

आज २४ वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया, जबसे मैं महात्माजी के संपर्क में हूं। इन वर्षों में मैंने उनके जीवन के समस्त क्षेत्रों का अवलोकन किया। मैं उनके सहवास में घूमा, उनके आश्रम-जीवन में भी रहा, उनके उपवासों में उनके निकट रहा, बीमारियों के समय उनकी शुश्रूषा में भाग

लेता रहा। उनकी अनेक गहन मंत्रणाओं का मैं साक्षी हूं, और उनके सार्वजनिक कार्य का भार मैंने शक्ति-भर उठाया। सारी अवस्थाओं में उनके अनेक गुणों का मुझपर असर होता ही गया। मेरी श्रद्धा बढ़ती गई। मैं अपने-आपको उनमें अधिकाधिक विलीन करता ही गया, और आज तो वह मेरे आदर्श हैं और उनकी आज्ञा मेरा जीवनादर्श है। उनका प्रेम मेरा जीवन है।

महात्माजी में अनेक अलौकिक गुण हैं। इस प्रकार के शब्दों से मैं अपने हृदय के सच्चे भाव प्रकट कर रहा हूं। पर विरोध की आशंका न करते हुए इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि उनमें मनुष्योचित गुणों का बहुत बड़ा समुच्चय है। मानवीय गुणों के तो वह हिमालय हैं। उनकी नियमितता, सार्वजनिक हिसाब रखने की सूक्ष्मता, बीमारों की शुश्रूषा, अतिथियों का सत्कार, विरोधियों के साथ सद्व्यवहार, विनोद-प्रियता, आकर्षण, स्वच्छता, बारीक निगाह और दृढ़ निश्चय आदि गुण मुझे उत्तरोत्तर प्रकट होते हुए दिखाई दिये हैं। महात्माजी में मैंने विरोधी गुण भी देखे हैं। उनकी अविचल दृढ़ता और कठोरता, अगाध प्रेम और मृदुता की बुनियाद पर खड़ी है। उनकी पाई-पाई की कंजूसी महान् उदारता के जल से सिंचित है और उनकी सादगी सौंदर्य से पोषित है।

महात्माजी के प्रति अगर मेरा खाली आदर-भाव ही रहता, तो उनके विषय में मैं कुछ विशेष लिख सकता। पर महात्माजी ने मुझे इस तरह से अपनाया है कि उनके प्रति मेरे मन में पिता और गुरु के समान ही भाव पैदा होता है।

बचपन से ही सार्वजनिक जीवन का प्रेम होने के कारण बहुत-से प्रतिष्ठित सरकारी कर्मचारी तथा देश के प्रख्यात नेताओं से मेरा परिचय हुआ। पूज्य लोकमान्य तिलक महाराज और भारतभूषण मालवीयजी जैसे महान् पुरुषों का परिचय मेरे लिए लाभदायक हुआ। लेकिन महात्माजी ने तो मेरी मनोभूमिका ही बदल दी। मेरे मन में कई बार त्याग के विचार पैदा हुआ करते थे। उन्हें कार्य रूप में लाने का रास्ता बता दिया। उनका निर्मल चारित्र्य, शीतल तेजस्विता, गरीबों की कलक, मनुष्य-मात्र से सत्य व्यवहार, अनुपम प्रेम और धर्म-श्रद्धा देखकर ही मेरा मन उनकी ओर खिंचता गया। मेरे जीवन की त्रुटियां मुझे दिखाई देने लगीं और यह

महत्त्वाकांक्षा बढ़ने लगी कि इस जीवन में किस तरह महात्माजी के सहवास के योग्य बन सकूं।

.. .. ..

मेरी राय में आज भारत में गरीबों के साथ यदि कोई एक-जीव हुआ है तो वह महात्माजी हैं। महात्माजी मानो कारुण्य की मूर्ति हैं। गरीबों के कष्ट दूर करने में अमीरों के साथ भी अन्याय न होने पावे, और भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच द्वेषभाव तनिक भी पैदा न हो, इसकी वह हमेशा चिन्ता रखते हैं। इसीलिए भारतवर्ष के सब धर्म, पंथ और वर्ग के लोग उनको आत्मीयता की दृष्टि से देखते हैं। चातुर्वर्ण्य का तो मानो उनमें सम्मेलन ही हुआ है। भारतवर्ष पर उनका जो असीम प्रेम है, उसके लायक यदि हम भारतवासी बनें तो भारत का उद्धार अवश्य हो जाय।

मेरी समझ में तो महात्माजी का सहवास जिसने किया हो, या उनके तत्त्वों को समझने की कोशिश की हो, वह कभी निरुत्साही नहीं हो सकता। वह हमेशा उत्साहपूर्वक अपना कर्त्तव्य पालन करता रहेगा, क्योंकि देश की स्थिति के सुधरने में—स्वराज्य मिलने में—भले ही थोड़ा विलम्ब हो, परन्तु जो व्यक्ति महात्माजी के बताये मार्ग से कार्य करता रहेगा, मुझे विश्वास है कि वह अपनी निजी उन्नति तो ज़रूर कर लेगा, अर्थात् अपने लिए तो स्वराज्य वह अवश्य पा सकता है।

.. .. ..

मुझे अपनी कमज़ोरियों का थोड़ा ज्ञान रहने के कारण मैंने बापू को 'गुरु' नहीं बनाया, न माना, 'बाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद उन्हें बाप मानने से मेरी कमज़ोरियां हट जावें।

मुझे दुनिया में बापू पिता का व विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं, अगर मैं अपनेको योग्य बना सकूं तो।

.. .. ..

महात्माजी की अनुपम दया से आज मैं कम-से-कम अपनी कमजोरियों को थोड़ा-बहुत तो पहचानने लग गया हूं।

जिस दिन मैं महात्माजी के पुत्र-वात्सल्य के योग्य हो सकूंगा, वही समय मेरे जीवन के लिए धन्य होगा।

'सबकुछ कृष्णार्पण'

जानकीदेवी बजाज

जमनालालजी पर लगी थी गांधी-भक्ति और मुझपर लगी थी पति-भक्ति ; इस तरह अनायास ही गांधी-भक्ति मुझपर आ गई। यों तो गांधीजी के संस्मरण बहुत हैं, जो कमोबेश मेरी पुस्तक 'मेरी जीवन-यात्रा' में आगए हैं, किंतु कुछ विशेष घटनाएं ऐसी हैं, जिन्होंने मेरे जीवन पर भी विशेष असर डाला। ऐसे ही कुछ संस्मरण यहां लिखती हूं।

गहनों और घूंघट का त्याग मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी कमाई मानती हूं। बापूजी हरिजन-कार्य के सिलसिले में नागपुर ज़िले का दौरा कर रहे थे। जमनालालजी भी साथ थे। इस दौरे के बीच बापूजी ने एक भाषण में कहा, "सोना कलि का रूप है। इससे दूसरों में ईर्ष्या पैदा होती है, चोरी का लालच उत्पन्न होता है, खो जाने का डर रहता है, शरीर पर मैल जम जाता है," आदि-आदि। जमनालालजी के दिल में यह बात बैठ गई। लेकिन वह जो कुछ कहते थे, उसकी शुरुआत घर से ही करते थे। इसलिए सबसे पहले मुझ-पर उनकी निगाह जाना स्वाभाविक था। उन्होंने फौरन मुझे एक पत्र लिखा कि बापू का आदेश है, गहने त्याग दो। यह बात वह रूबरू कहते तो शायद मैं उनसे बहस भी कर बैठती। किन्तु उनकी चिट्ठी तो मेरे लिए वेद-वाक्य-जैसी थी। गहनों का मोह था, लेकिन उन्होंने लिखा, वैसा करना भी तो कर्तव्य था। फिर भी ख़याल होता था, लोग क्या कहेंगे। अजीब-सी स्थिति थी। चिट्ठी मेरे सामने थी और मैं एक-एक गहना उतारकर रखती जा रही थी।

मारवाड़ी समाज में स्त्रियों के पैर की चांदी की कड़ी खोली नहीं जाती थी। गरीब-से-गरीब के पैर में कड़ी तो रहती ही थी। वह तो मरने के बाद श्मशान में जाकर ही खोली जाती थी। अतः कड़ी खोलने में बहुत हिचक हो रही थी। लेकिन फिर विचार आया कि जब कोई गहना पहनना ही नहीं तो फिर कड़ी का ही क्या मोह! जी कड़ा करके उस झूठे मोह को भी त्याग

दिया । मेरी सास रोने लगी । ससुरजी बोले, "गांधीजी केव्हे वियां जमन करै, और जमन केव्हे वियां बीनणी करै—ईमें बीनणी को कांई कसूर !"

बस, उस दिन से जो गहना छूटा तो आजतक गहने के प्रति अरुचि बनी हुई है ।

... ...

नागपुर-कांग्रेस के समय जब गांधीजी वर्धा आये, मैंने मोटी साड़ियां मंगाईं । मैं समझती थी कि मोटे कपड़े को ही खादी कहते होंगे । लेकिन महादेवभाई ने देखा तो कहा, "आपने मिल की साड़ी क्यों पहनी है ?" मैं अचंभे में पड़ गई । मैंने कहा, "यह मिल की कहां है ? यह तो मोटी है ।" महादेवभाई ने हँसकर बताया कि खादी की साड़ी तो हाथ-कती और हाथ-बुनी होती है । कांग्रेस से लौटने पर मैंने एक आदमी से कुछ सूत कामठी भिजवाया और खादी बुनवाकर मंगवाई ।

रात को इस साड़ी को पहनकर सोती तो नींद न आती । बेचैनी-सी रहती । ऐसा लगता कि टाट पर सो रही हूं । पर साथ ही सोचती, सीताजी-जैसी राजकुमारी तो वल्कल-वस्त्र पहनकर १४ वर्ष जंगल में रही थीं । यह तो खादी है, कोई चमड़ी थोड़े ही घिसती है इससे । धीरे-धीरे मिल के कपड़े दूर होते गए और खादी इस तरह दिल में समा गई कि बहुत उत्साह से अन्य बहनों को भी खादी पहनने के लिए उकसाने लगी । इससे हमारे यहां बहनों का आना-जाना होने लगा, वे आपस में चर्चा करतीं, "सेठानीजी तो विधवा-जैसे कपड़े पहनने की बात करती हैं । वहां कौन जाय ! गहने मत पहनो, कांग्रेस को पैसा दो और विधवा-जैसे कपड़े पहनो—यह कौन करे, बाबा !" लेकिन मुझपर तो खादी का भूत सवार हो गया था । जब विदेशी कपड़ों की होली की बात सामने आई तो जमनालालजी ने मुझसे कहा, "गांधीजी का कहना है कि विलायती कपड़ा राक्षस के रूप में अपने देश में घुस पड़ा है । इस पाप को हिन्दुस्तान में से निकालना है । अपने घर में भी एक टुकड़ा न रहे ।" बस, फिर तो जहां-जहां विलायती कपड़ा दीख पड़ा, निकाल दिया—मंदिर की पोशाकें, घर के कपड़े, गणगौर के कपड़े, फर्नीचर पर लगे कपड़े, यहांतक कि जमनालालजी के विवाह की पगड़ी, कसूबी बागा आदि, जो शकुन के कपड़े थे, वे भी निकाल दिये गए । वर का छत्र

जलाना मुझे नहीं जंचा, सो मैंने उसे मगनवाड़ी के कुएं में डलवा दिया। यह सब गांधीजी के ही प्रभाव से संभव हुआ।

... ...

चरखा कातने की लगन स्वयं बापूजी के कहने से लगी। बम्बई में नरोत्तम मोरारजी के यहां पहले-पहल बापू के दर्शन हुए। वह चरखा कात रहे थे। एक आदमी को चरखा कातते हुए मैंने पहली बार ही देखा। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने उनसे पूछा, "चरखा कातना क्या अच्छा है?" बापू ने दृढ़ता व सरलता से सिर्फ इतना कहा, "सूत कातना बहुत अच्छा है।" लेकिन यह बात उन्होंने कुछ ऐसे ढंग से कही कि वह मेरे मन में जम गई। वर्धा आकर सासूजी (जमनालालजी की जन्म-माता) से कहा कि मुझे कातना सिखा दो, गांधीजी ने कहा है। मैंने एक चरखा मंगवाया। सात दिन में मैं सूत कातना सीख गई। फिर तो धीरे-धीरे साठ चरखे इकट्ठे कर लिये और कताई का वर्ग ही शुरू कर दिया। आज तो मुझे कताई में प्रार्थना से भी अधिक आनंद आता है। गांधीजी के एक वाक्य ने जो धुन लगा दी थी, वह अबतक बराबर चल रही है।

.. ..

राजस्थानी समाज में घूंघट प्रतिष्ठा, सभ्यता और कुलीनता का चिह्न माना जाता था। घूंघट का संस्कार एक-दो दिन या एक-दो पीढ़ियों का थोड़े ही था। वह एकाएक छूटे कैसे! दूसरे, मैं सुंदर न थी, इसलिए भी चाहती थी कि मुंह ढंका रहे तो ठीक।

लेकिन जब खादी पहनना शुरू किया तो घूंघट में बड़ी कठिनाई होती थी। बातचीत में बापू से पूछा, "और सब अड़चनें तो निभ जायंगी, पर घूंघट काढ़ने पर दीखेगा कैसे?"

बापू बोले, "खोजों की औरतों की तरह आंखों की जगह जाली लगवा लो।" बापू की यह बात विनोदभरी थी। बड़ी हँसी आई। लेकिन कभी-कभी उनके इस विनोद का खयाल करती हूं तो सोचती हूं कि बापूजी ने उस समय केवल मेरी बात का जवाब दिया, घूंघट हटा देने को नहीं कहा। बापूजी, घूंघट के पक्ष में नहीं थे, लेकिन वह जानते थे कि मानसिक रूप से उस समय मैं परदा छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी। लेकिन आगे चलकर जब मेरा

घूंघट छूट गया तो मुझे दूसरी बहनों का घूंघट खुलवाने की धुन लग गई। सन् १९३३ में कलकत्ता में मारवाड़ी महिला सम्मेलन हुआ। मुझे उसकी अध्यक्षा बनाया गया। उस अवसर पर बापूजी ने वर्धा से २५-१०-३३ को बड़ा सुंदर पत्र मुझे लिखा। वह पत्र इस प्रकार था :

"आप बहनों से परदा तुड़वाने कलकत्ता जा रही हैं, इसलिए धन्यवाद! परदा वहम नहीं है, उसमें मुझे पाप की बू आती है। परदा किससे रखें? क्या पुरुष-मात्र विषयासक्त रहते हैं? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बग़ैर परदा नहीं रख सकती है? पवित्रता मानसिक बात है, सभी पुरुषों में सहज होनी चाहिए। यदि इस बुद्धि-प्रधान युग में स्त्री धर्म की रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्र-नारायण की सेवा करनी होगी, शिक्षिण लेना होगा। दरिद्रनारायण की सेवा करने का अर्थ है—खादी-प्रचार, कातना इत्यादि। हरिजन-सेवा का अर्थ है अस्पृश्यता-रूपी कलंक को धोना। ये दो भगवान् के बड़े कार्य हैं और विद्या पाने का कार्य परदा रखने के साथ कभी नहीं चल सकता हैं।

"परदा रखकर सीता रामजी के साथ जंगलों में भटकी होंगी? सीता-से बड़ी पवित्र स्त्री जगत् में कभी हुई है? बहनों से कहो—परदा तोड़ो, धर्म रखो!"

यह पत्र पढ़ने के बाद तो दिल और जोश से भर गया और मैं लोगों में जाकर व्याख्यान भी देने लगी। जमनालालजी की माताजी कहतीं, "पड़दो कर्‌यो तो इश्यो कर्‌यो के कोई नख भी देख नही सके। और छोड्‌यो तो इश्यो छोड्‌यो के मोट्‌यारां की सभा में व्याख्यान छांटे लागी।"

.. ..

११ फरवरी, १९४२ को अचानक जमनालालजी की मृत्यु हो गई। सेवाग्राम में बापूजी को फोन किया गया। वह फौरन आये। आते ही उन्होंन जमनालालजी के सिर पर हाथ रखा। बापूजी को देखते ही मैं बोली, "बापूजी, आप इनके पास होते तो यह नहीं जाते। बस, अब तो आप इन्हें जीवित कर दीजिये। क्या आप इन्हें जिला नहीं सकते?"

और उस समय बापूजी के व्यक्तित्व का जो मैंने दर्शन किया, उसका चित्र अबतक मेरे मानस पर अंकित है। वह गंभीर स्वर में बोले—"जानकी,

तुम्हें अब रोना नहीं है। तुम्हें तो हँसना है और बच्चों को भी हँसाना है। जमनालाल तो ज़िन्दा ही है। जिसका यश अमर हो, उसकी मृत्यु कैसी ! उसकी मृत्यु तो तभी हो सकती है जब तुम उसके रास्ते न चलो। उसने परमार्थ की ज़िन्दगी बिताई। जो काम उसने अपने कंधों पर लिया था, उसे अब तुम संभालो। मैं तुम्हें झूठा धीरज देने नहीं आया, जमनालाल का शरीर मर गया, पर असल जमनालाल तो ज़िंदा ही है; और आगे के लिए उसे ज़िन्दा रखना हमारा काम है।"

बचपन में सती होने की मेरी इच्छा थी। वह जग उठी। मैं बोली, "बापूजी, मैं सती होना चाहती हूं। अनुमति दीजिये !" बापू बोले, "शरीर को जलाने से क्या फायदा ! वह तो तुच्छ है, मिट्टी है। अपने सब दुर्गुणों को जला देना ही सच्चा सतीत्व है। अपने सब दुर्गुणों को चिता में होम दो। फिर बाकी बचेगा, वह शुद्ध कंचन रहेगा। उसको कैसे जलाया जाय ! उसे तो कृष्णार्पण ही किया जा सकता है !"

मुझमें न जाने कहां से बल आ गया, दृढ़ता आ गई। मेरे मुंह से उसी समय निकला, "बस, आज से मैं और मेरा सब-कुछ कृष्णार्पण !"

पूज्य बापू के पुण्य-स्मरण

राधाकृष्ण बजाज

सन् १९२४ की बात है जब पूज्य बापूजी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए दिल्ली में उपवास किये थे। पूज्य काकाजी उनसे मिलने दिल्ली जाते समय संयोग से मुझे भी साथ ले गए। उस समय बापूजी मुहम्मद अली के घर पर ठहरे हुए थे। बाद में सिविल लाइंस के एक बंगले में उन्हें ले जाया गया। मैं भी नित्य आने-जाने लगा। इसी बीच एक घटना घटी। बंगाल के श्रीकृष्णदासभाई बीमार हो गए। वह बापूजी की सेवा में थे। उन्हें टायफायड हो गया। टायफायड के बीमार की विशेष सेवा का प्रबंध हो, इसलिए बापूजी ने अपने पुत्र देवदासभाई गांधी को उनकी सेवा में लगा दिया। इस तरह बापू की सेवा में से दो व्यक्ति कम हो गए। सौभाग्य से उस कमी की पूर्ति का लाभ मुझे मिला और मैं उपवास के अन्त तक बापूजी की निजी सेवा में लग सका। मैं नित्य देखता था कि बापूजी स्वयं बैठ नहीं सकते थे। फिर भी चरखा काते बिना एक भी दिन नहीं रहते थे। चरखा देने और कातने तक पकड़े रहने का काम मेरा था। मैं नित्य देखता था कि चरखा कातने के लिए कहां से इतनी शक्ति आ जाती है! बापूजी के निकट परिचय का यह मेरा पहला ही अवसर था। बंगाल के कृष्णदासभाई की सेवा में अपने पुत्र को लगा देना और इस तरह अपने सेवक की सेवा का पुत्र से भी अधिक खयाल रखना, यह जो मैंने दृश्य वहां देखा, उसे आजतक नहीं भूल सका। मेरे जीवन पर उसका एक असर रह गया।

उसके बाद मैंने कितने ही प्रसंग देखे हैं, जिनमें साथियों की सेवा में उन्होंने सर्वस्व लगाया। कुष्ठरोग से पीड़ित परचुरेशास्त्री की मालिश बापूजी स्वयं अपने हाथों से करते थे। यह दृश्य भी मैंने देखा है। जिस रोगी को स्पर्श करना भी गंदा माना जाय, उसकी बापू स्वयं इस तरह मालिश करें, यह एक दैवी घटना थी।

दिल्ली के बाद बापूजी कलकत्ता आये। वहां सी० आर० दास के घर

ठहरे। मेरे दिल में वहां भोजन करने में संकोच था, वैसे बापूजी की पार्टी के लिए सारा भोजन शाकाहारी ही बनानेवाले थे, लेकिन फिर भी मेरे सनातनी मन को विचित्र-सा लग रहा था। एक मित्र के यहां अन्यत्र भोजन के लिए जाने की इच्छा प्रकट की, पर बापूजी ने इजाज़त नहीं दी। कहा कि श्रीमती .... को बुरा लगेगा। छोटी-छोटी बातों में दूसरे के भले-बुरे का बहुत ही अधिक खयाल रखते हुए उन्हें देखा है और उतना ही सख्त अपने सेवकों के प्रति।

मुझे स्मरण है कि उनके साथ रहनेवालों में पूज्य बा, प्यारेलालजी, अम्तुल बेन, कुसुमबेन और दो-तीन बहनें थीं। वे सब सेवा में लगी रहती थीं। सफाई का बापूजी को इतना ध्यान था कि रस पी लेने के बाद भी अन्त में कहीं ज़रा-सा कुछ रह गया, तो याद रखकर उसका उलहना देते थे। आये हुए मेहमानों की सेवा बराबर हुई या नहीं, इसका भरोसा सेवकों पर नहीं छोड़ते थे, बल्कि एक-एक बारीक चीज़ उनसे पूछते थे, ताकि कहीं भी कोई चूक न रहे। बा की तो कसौटी ही होती। मैंने सुन रखा था कि संतों का व्रत असिधारा होता है, लेकिन आंखों देखा बा का चलना। मेरे मन में उठता है कि बापू बड़े थे या उन्हें सहनेवाली पूज्य बा!

जीवन का सबसे बड़ा पाठ

कमलनयन बजाज

लगभग पच्चीस साल पहले की बात है। बापू गुजरात का दौरा कर रहे थे। एक-एक दिन में कई पड़ाव होते थे, लेकिन कांग्रेस कार्य-समिति के लिए या कांग्रेस के कुछ नेताओं से विचार-विनिमय के लिए बोरसद में वह दो या तीन दिन रुके। पिताजी ने पांच-सात दिन के लिए मुझे उनकी निजी सेवा करने के लिए छोड़ दिया था। मेरी उम्र उस समय पंद्रह या सोलह वर्ष की रही होगी। बापू कितने व्यवस्थित थे और छोटे-से-छोटे काम को भी कितनी जिम्मेदारी से करने-कराने में तत्पर रहते थे, इसका मुझे अच्छा अनुभव हुआ। मैं देखता था कि वह हर चीज का पूरा-पूरा उपयोग कर लेते थे। जब उनके पहनने की धोती घिस जाती थी तो उसकी चादर बना लेते थे। चादर के फटने पर छोटे-छोटे गमछे, और उनके घिसने पर नीबू, पानी, दूध या रस छानने के लिए छोटे-छोटे टुकड़े बना लेते थे। जब वे टुकड़े वहां भी जवाब दे देते थे तो उनसे सिगड़ी-चूल्हा सुलगाने का काम लेते थे या उन टुकड़ों को गला-सड़ाकर उसकी लुगदी बनाई जाती थी और उसके कागज़ बनते थे। कागज़ का भी वह जिस सावधानी से उपयोग करते थे, उस सावधानी से उपयोग करनेवाला दूसरा मैंने नहीं देखा।

बोरसद में कुछ तो व्यस्तता और कुछ मेरी असावधानी के कारण बापू के उन छानने के कपड़ों में से एक टुकड़ा खो गया। बात देखने में छोटी थी, लेकिन मैं जानता था कि बापू को उससे दुःख होगा। उसकी भी मुझे इतनी चिन्ता नहीं थी, क्योंकि मैं स्वभाव का ढीठ और मन का पक्का था। यह भी लगता था कि बापू गुस्सा होंगे तो हो लेंगे। आखिर जानबूझकर तो मैंने ग़लती की नहीं थी। यों मन की तसल्ली होने पर भी एक बात का मुझे बड़ा डर और चिन्ता थी। वह यह कि इतनी व्यस्तता और महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियों के सामने होते हुए भी कहा-सुनी करने में बापू के पंद्रह-बीस मिनट ज़रूर लग जायंगे और उनका उतना भी अमूल्य समय मैं बरबाद नहीं करना

चाहता था। पर करता क्या ! वह दिन तो मैंने चतुराई से निकाल दिया। अगले दिन बापू का मौन था। नेहरूजी आदि कांग्रेस के बड़े नेता या शायद कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य ही बापू से मिलनेवाले थे। मैं चाहता था कि अपनी गलती की चर्चा बापू से उस समय करूं जबकि वह व्यस्त न हों, या बोरसद से चलते समय रास्ते में करूं, जिससे उनके समय का अपव्यय न हो। यही सोचकर मौनवार के दिन और नेताओं के साथ विचार-विनिमय करते समय मैं नया कपड़ा ढंककर उनके खाने-पीने की चीजों को ले गया। आशा थी कि शायद उनकी निगाह से बच जाऊं, लेकिन वैसा होना आसान न था। बापू ने मेरी चतुराई, या कहिये बदमाशी, ताड़ ली और चर्चा में संलग्न होते हुए भी मुस्कराहट के साथ यह जतलाते हुए कि तुम्हारी चालाकी मैं समझ गया, उन्होंने चुपचाप अंगुली के इशारे से डांट पिला दी। मैं वहां से चला आया। बाद में बर्तन वग़ैरा लाने को और किसीको भेज दिया। पर बापू सहज छोड़नेवाले न थे। शाम को प्रार्थना के बाद, मौन पूरा होने पर, उन्होंने मुझे बुलाया और मुझसे हक़ीक़त पूछी। मैंने कह दिया कि कपड़ा मेरी ग़फ़लत से खो गया था, इसलिए मुझे दूसरा लेना पड़ा। उन्हें दुःख हुआ। उस समय किसीको समय दिया होने के कारण उन्होंने मुझसे कहा कि सवेरे प्रार्थना के बाद मेरे साथ घूमने चलना।

अगले दिन सुबह मैं उनके साथ घूमने लगा। और लोग भी उनके साथ थे, पर वह पीछे थे। बापू ने अपने दिल का दर्द मेरे सामने रक्खा। उन्होंने कहा, "ऐसी ग़फ़लत हमसे कैसे हो सकती है ? दरिद्रनारायण की सेवा का हमारा व्रत है। अगर उसका खयाल रक्खें तो ऐसी ग़फ़लत कभी न हो। अपने काम में हमारा ध्यान रहे तभी हमारा चित्त एकाग्र हो सकता है, ज्ञान मिल सकता है और कार्य की सिद्धि हो सकती है; अन्यथा हमारी सेवा और कार्य का कुछ अर्थ ही नहीं रह जाता।"

मैंने टालने के लिए बीच में कहा, "दरिद्रनारायण की सेवा का व्रत तो आपका है। मैं तो आपकी चाकरी में हूं।"

बापू और गंभीर होकर बोले, "जब मैं दरिद्रनारायण की सेवा में लग गया तो उस समय मेरी सेवा करने का अर्थ भी दरिद्रनारायण की सेवा करना ही है। फिर तू तो जमनालालजी-जैसे कुशल व्यापारी का बेटा है !

ऐसी ग़फ़लत तो तुझसे हो ही कैसे सकती है ! इसके आलावा तू तो कातता भी है। उसमें कितना परिश्रम होता है, यह तुझे मालूम है। वह कपड़ा खो गया, यह तो एक ज़रा-सी बात है; पर अगर तू विचारेगा तो तेरी समझ में आ जायगा कि उसमें कितने लोगों का परिश्रम सम्मिलित था। खेती में कपास पैदा करनेवाले किसान से लगाकर चुनने, लोढ़ने, धुनने, कातने, बुनने और धोनेवाले तक कितने लोगों के परिश्रम से वह कपड़ा तैयार हुआ था। उस परिश्रम का आदर करना तो दूर रहा, अपनी लापरवाही से तूने उसका अनादर कर दिया। यह बात कैसे सहन हो सकती है ! इस लापरवाही में हमारे स्वाभिमान और इस प्रकार का परिश्रम करनेवाले के स्वाभिमान को धक्का लगा है। इसका अगर तू विचार करेगा तो तुझे पश्चात्ताप हुए बिना न रहेगा।"

इस प्रकार बीस-पच्चीस मिनट तक वह मुझे समझाते रहे। उनके हृदय में कितनी वेदना थी, साथ ही मेरे लिए कितना प्यार था, यह उनके एक-एक शब्द से प्रकट हो रहा था। मेरे मन पर उसका बड़ा असर पड़ा। जब मैं खयाल करता हूं तो ऐसा लगता है, मानो बापू उस घटना के बारे में मुझे आज भी समझा रहे हों।

: २ :

ऐसा ही एक प्रसंग मुझे और याद आ रहा है। सेवाग्राम में बापू घूमने जा रहे थे। अन्य आश्रमवासियों के साथ-साथ माताजी और मैं भी उनके साथ हो लिये। घूमते समय चर्चा के लिए उन्होंने और किसीको समय दे रखा था। उनसे बातचीत करते हुए जैसे ही वह आ रहे थे कि उन्हें रास्ते में पूनी का एक छोटा-सा टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया। इशारे से उन्होंने उसे उठा लेने को कहा। मेरी इच्छा हुई कि मैं उसे उटा लूं, लेकिन मेरे उसे उठाने के लिए आगे बढ़ने से पहले ही दो लड़कियां उसे लेने को झपटीं और उनमें से एक ने उसे उठा लिया। मेरे मन में आया कि वह टुकड़ा मैं उनसे मांग लूं, क्योंकि शायद बापू बाद में उसके बारे में पूछें। लेकिन छोटी-सी वस्तु होने की वजह से मैंने उसे नहीं मांगा। घूमकर लौटने पर जब बापू च खा कातने के लिए बैठे तब उन्होंने उस पूनी के टुकड़े को याद किया। जिस लड़की ने उसे उठाया था, उसकी खोज हुई। वह आई। बापू ने जब उससे टुकड़ा मांगा

तो उसने कहा कि वह तो उसे कचरे की टोकरी में फेंक आई। इसपर बापू बहुत नाराज़ हुए, बोले, "मैंने उसे उठाने के लिए इसलिए कहा था कि तू उसे कचरे की टोकरी में डाल आवे?" लड़की ने जवाब दिया कि मैं तो उसे कचरा समझकर ही उठाकर लाई थी और समझती थी कि वह कचरा ग़लत जगह पर पड़ा रहने से ही आपने उसे उठाने के लिए कहा था। इसलिए उसे संभालकर मैं कचरे के स्थान पर डाल आई। बापू ने पूछा, "यदि वहां पैसा पड़ा होता तो क्या तू उठाकर उसे भी कचरे में डाल आती?" उसने उत्तर दिया, "नहीं।" बापू बोले, "वह भी पैसा ही था। असली धन क्या है, तुम्हें आश्रम में रहकर यह पहचानना आना चाहिए। जिसने उस पूनी के टुकड़े को पूरा काते बिना छोड़ा, उसने तो धन को फेंका ही। मैंने तुमसे उठाने को कहा, तब भी तुम उस धन को नहीं पहचान सकीं? अब जाओ, उसको लेकर आओ।" लज्जित स्वर से लड़की बोली, "बापू, मेरी ग़लती हुई कि मैं आपकी बात को पूरी नहीं समझ सकी। अब मैं उस टुकड़े को स्वयं ही कात लूगी, आप उसके लिए न ठहरें।" लेकिन बापू माननेवाले नहीं थे। वह तो उस टुकड़े को स्वयं कातने को व्यग्र थे। अतः उन्होंने आग्रहपूर्वक उसे लाने को कहा और ऊपर से उलहना दिया कि वह कैसे विश्वास करें कि आगे और कोई गफ़लत न होगी। उन्होंने कहा कि परिश्रम से धन बनता है और धन बनने पर उसका सदुपयोग करना हमारा कर्त्तव्य है। लड़की बेचारी शरमा गई और जाकर कचरे में से पूनी के उस टुकड़े को ढूंढ़ लाई। उसपर कुछ मिट्टी और घास के टुकड़े लिपटे हुए थे। फूलकर वह कुछ फैल-सी भी गई थी। उसके बावजूद बापू ने उसको पूरी तौर से कातने के काम में लिया। उससे जो धागा कता, वह रंग में काला और दूसरे सारे सूत में फर्क डालने वाला था। इसकी परवा न करते हुए बापू बोले कि बुनने के बाद जब कपड़ा धुलेगा, तब यह मिट्टी भी उसमें से दूर हो जायगी।

: ३ :

कलकत्ता की बात है। कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य के रूप में जेल से छूटने के बाद बापू सोदपुर-आश्रम में ठहरे हुए थे। जवाहरलालजी उनसे मिलने आनेवाले थे। उन्हें आज़ाद हिन्द-फ़ौज के विषय में बापू से महत्त्वपूर्ण चर्चा करनी थी। उनके आने का समय हो चुका था। जान-पहचानवालों

में से एक परिवार के लोग बापू से मिलने आये हुए थे। उनमें से एक लड़के के साथ, जो उसी समय मैट्रिक या कालेज की कोई परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास करके आया था, बातचीत और सवाल-जवाब करते हुए बापू को मालूम हुआ कि वे लोग शाम तक आश्रम में ठहरेंगे। इसपर बापू ने अपनी डाक में से ऐसे पत्र, जिनके बारे में सूचना-मात्र देनी थी, उस लड़के को दे दिये और सूचना भिजवाने को उससे कह दिया। नेहरूजी इस बीच आचुके थे। लड़का वह डाक लेकर बाहर चला गया। नेहरूजी के साथ बातचीत समाप्त होने के बाद वह लड़का आया और उसने दो-एक लिखे हुए पत्र बापू को दिये। बापू ने पूछा कि क्या इतना ही लिखा है ? बाक़ी का क्या हुआ ? उसने जवाब दिया कि और सब पत्र कलकत्ता के ही थे। उनको उसने टेलीफोन से सूचना दे दी है। केवल बाहर की चिट्ठियों के ही उत्तर दिये हैं। बापू ने कहा, "मैंने तो तुमसे टेलीफोन करने को नहीं कहा था।" उसने जवाब दिया कि जब सूचना ही देनी थी, तो मैंने सोचा कि टेलीफोन से उन्हें खबर भी जल्दी हो जायगी और काम भी जल्दी हो जायगा। बापू ने उसे मीठे ढंग से उलहना देते हुए कहा कि टेलीफोन करने में जिस व्यक्ति को उत्तर भेजना था, वह मिले या न मिले, यह जोखिम रहती है। दूसरे, अगर किसी और ने संदेशा लिया तो उसके पहुंचने में गफलत हो सकती है। शाम तक तुम यहां ठहरने ही वाले थे। तुम्हारे पास समय की तो कमी थी नहीं। इसके अलावा यदि पोस्टकार्ड लिखते तो तीन पैसे में ही काम हो जाता। टेलीफोन में तो ज्यादा पैसे लगे होंगे। ये चिट्ठियां भी जो तुम लिखकर लाये हो, वे पोस्ट-कार्ड पर ही होनी चाहिए थीं। लेकिन उसमें तो मेरी ग़लती है कि मैं तुमसे पोस्टकार्ड पर लिखने को कहना चूक गया था। पर मज़मून इतना छोटा था और बात इतनी साधारण थी कि यदि तुम स्वयं यह सोचते तो पोस्टकार्ड पर लिख सकते थे। आगे उसे एक-एक पाई का हिसाब किस तरह रखना चाहिए और फिजूलखर्ची बिल्कुल न हो, इसका ध्यान किस सीमा तक रखना चाहिए, इसके बारे में अच्छी तरह से समझाने लगे।

: ४ :

एक बार एक ग्रामीण कार्यकर्ता अपने इलाके में हरिजन-कार्य के संबंध में बापू की राय लेने आये। जहांतक मुझे याद आता है, वह भाई आंध्र के

थे। उन्हें कोई बीमारी थी। बापू ने उनकी बीमारी के संबंध में उनसे काफी पूछ-ताछ की। बापू ने पूछा कि आप बहुत अधिक नमक तो नहीं खाते ? उन्होंने उत्तर दिया कि बहुत ही कम नमक खाता हूं। बापू ने उनसे कहा कि नमक तुम्हें माफ़िक नहीं आता, और अच्छा हो यदि तुम नमक बिल्कुल ही छोड़ दो।

बातचीत खतम होने पर बापू ने उन भाई से आश्रम में ही खाना खाने को कहा और उन्हें खाने का समय बता दिया। खाने के समय बापू ने उन भाई को अपने पास बैठने को कहा। परोसी हुई थाली उनके सामने रखी गई—स्वयं बापू ने कुछ चीजें उन्हें परोसीं। मंत्र बोलने के पहले बापू ने उन भाई से कहा कि थाली में से नमक निकाल दो। कार्यकर्ता ने समय खोये बिना बापू से कहा कि क्या फर्क पड़ता है, विश्वास रखिये, मैं नमक नहीं खाऊंगा। बापू ने कहा कि इसीलिए तो कह रहा हूं कि इसे निकाल दो, ताकि यह बेकार न जाय। एक आश्रमवासी भाई तश्तरी ले आये और नमक उसमें निकाल दिया गया।

भोजन के बाद बापू ने मुझसे कहा कि मैं अपनी बैलगाड़ी में उन भाई को शहर छोड़ आऊं। रास्ते में वह भाई बहुत शर्मिन्दगी महसूस करते हुए बोले, "कैसी अजीब बात है, एक ग्रामीण होकर भी मैं यह नहीं महसूस कर सका कि यदि नमक थाली में से नहीं निकालूंगा तो वह बेकार जायगा। ज़िन्दगी में इससे बड़ा पाठ सीखने को मुझे नहीं मिला।"

"मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है"

श्रीमन्नारायण

मुझे ऑल इंडिया रेडियो की हिन्दुस्तानी सलाहकार समिति की बैठक के सिलसिले में ९ जनवरी, १९४८ को नई दिल्ली रहना पड़ा। शाम को बिड़ला-हाउस गया और वहां प्रार्थना-सभा में सम्मिलित हुआ। उस दिन बड़ी संख्या में आये हुए बहावलपुर के हिन्दू और सिख शरणार्थी प्रार्थना-सभा में थे। जैसे ही गांधीजी प्रार्थना-मंडप की ओर बढ़े, ये शरणार्थी बड़े जोर से चिल्लाये "बहावलपुर के हिन्दुओं को बचाओ! बहावलपुर में मुसलमानों की क्रूरताओं को बंद करो!" सारा वातावरण तनावपूर्ण था। वहां कुछ शरणार्थी बौराये हुए-से थे और कुछ शायद दिमाग़ी संतुलन खो बैठे थे। वे अपने कुटुम्बी जनों और सांसारिक वस्तुओं को खो चुके थे और सान्त्वना व सहायता के लिए गांधीजी की प्रार्थना-सभा में आये थे।

प्रार्थना के बाद मैं बापूजी के कमरे में गया और उनके चरण स्पर्श किये। मुझे वर्धा की संस्थाओं से सम्बन्धित कई समस्याओं के बारे में बातचीत करनी थी। परन्तु गांधीजी बड़े चिंतित व थके-से जान पड़े। इसलिए मैं कमरे में थोड़ी देर चुपचाप बैठ गया और फिर उनकी अनुमति लेकर बाहर चला गया। "मैं कल फिर यहां इसी समय आ जाऊंगा, बापूजी!" मैंने कहा। "हां, हम कल शाम को कुछ विषयों पर चर्चा करेंगे।" बापूजी ने धीरे-धीरे से उत्तर दिया।

१० जनवरी की प्रार्थना सभा में उपस्थिति बहुत कम थी। कुछ शरणार्थियों ने शुरू में हुल्लड़ मचाया और गांधीजी को उन्हें फटकार-कर शान्त करके बैठाना पड़ा। उन्होंने कहा, "अपने क्रोध को शांत करिये और धैर्य रखिये; केवल क्रोध से कुछ होगा नहीं।"

गांधीजी ने कण्ट्रोल हटाने की समस्या पर प्रकाश डालते हुए कहा, "कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि नियंत्रण हटाने से जनता को कोई लाभ नहीं और जो ख़बरें मेरे पास आती हैं, वे ग़लत हैं। मैं कोई फ़रिश्ता नहीं हूं।

आपको कोई बात इसलिए नहीं माननी चाहिए, क्योंकि मैं उसे कहता हूं। आपको अपनी बुद्धि व विवेक से काम लेना चाहिए। यदि मेरे-जैसे हजारों महात्मा भी आपको कोई बात कहें, जो आपको उचित न लगती हो तो उसे तत्काल अस्वीकार कर देना चाहिए। इस तरह व्यवहार करने से ही आप अपनी स्वतन्त्रता को बनाये रख सकते हैं और उसके योग्य भी बनेंगे।"

प्रार्थना के बाद मैं बापूजी के साथ उनके कमरे में गया। उन्होंने कुछ आवश्यक काग़ज़ात देखे और फिर मुझसे कहा कि मैं उनके साथ कमरे में घूमूं, क्योंकि बाहर काफी सर्दी पड़ रही थी। मैंने उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की। वह सचमुच काफी कमज़ोर हो गए थे। काम के अधिक बोझ से और देश-विभाजन के कारण उत्पन्न हुई असीमित चिन्ताओं से उनके चेहरे पर विशेष रूप से कालापन उभर आया था। बाद में हमने वर्धा की संस्थाओं से सम्बन्धित कई समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। महिलाश्रम के बारे में गांधीजी ने कहा, "रचनात्मक कार्य के लिए शासन से अनुदान स्वीकार करने के मैं विरुद्ध हूं, और न हमें वर्ष-प्रतिवर्ष जनता से रक़म मांगनी चाहिए। आश्रम को बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए और अपने आपको आत्म-निर्भर बनाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।" हिन्दुस्तानी-प्रचार के भविष्य के बारे में भाव-विभोर होकर बापू ने कहा, "जहांतक मेरा सम्बन्ध है, हिन्दुस्तानी समस्या के प्रति मेरी नीति में भारत-विभाजन के कारण कोई परिवर्तन नहीं आया है। मेरे मन में भावी भारत का चित्र अब भी वही है, जो पहले था। मैं नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में हिन्दुस्तानी सीखने का पक्षपाती हूं। भारत का चाहे राज-नैतिक और भौगोलिक दृष्टि से विभाजन हो गया हो, परन्तु सांस्कृतिक रूप से कोई विभाजन हो गया है, इसे मैं स्वीकार करने को तैयार नही हूं।"

हम सब जानते है कि गांधीजी ने कांग्रेस कार्यसमिति में कहा था कि विभाजन को स्वीकार न किया जाय। इससे देश और विदेश में बिगड़ी हुई हालत बदतर हो जाने का अंदेशा था। जब कांग्रेस ने उनकी राय नहीं मानी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के जून-अधिवेशन में देश-विभाजन स्वीकार कर लिया गया, तब गांधीजी दिन-रात परेशान रहने लगे। मुझे उनके साथ भंगी-कालोनी में कुछ दिन ठहरने का सुअवसर मिला था।

जबसे देश के टुकड़े हुए थे तबसे उनमें जो परिवर्तन हुआ था, वह हम सबने देखा। परन्तु सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह हुई कि विभाजन से लगे गहरे धक्के के बाद उनकी विनोद की प्रवृत्ति लुप्त हो गई।

"क्या आपका पाकिस्तान जाने का इरादा है ?" मैंने पूछा। "हां, यदि मैं इस स्थिति में होऊं तो मैं इसी समय पाकिस्तान जाना चाहूंगा। मैं कराची कैसे जा सकता हूं, जबकि दिल्ली मेरे सामने जल रही है ! मैं पाकिस्तान के मुसलमानों को क्या कहूंगा जबकि मैं दिल्ली में हिन्दू और सिखों को शान्त नहीं कर सकता।" बापू का प्रत्येक शब्द दुःख व दर्द से भरा हुआ था। उनका गला रुंध गया।

मैंने कहा, "बापूजी, मैं यह जानता हूं कि आप भारत-विभाजन के सख्त विरोधी हैं, किन्तु फिर भी आपने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को यह राय दी कि वह कांग्रेस कार्यसमिति के निर्णय को स्वीकार करे। आपकी इस बात को आपके कुछ निकटतम साथियों ने गलत समझा है। यदि आपने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को इसके विपरीत राय दी होती तो शायद आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता ! भारत-विभाजन के बाद क्या आपके विचारों में परिवर्तन आगया है ?"

"ज़रा भी नही।" गांधीजी ने तुरंत उत्तर दिया, "'मैं अपने विचारों में कैसे परिवर्तन ला सकता हूं, जबकि मैं स्वयं अपनी आंखों के सामने प्रतिदिन भारत-विभाजन के बुरे परिणाम, जिनके बारे में मैंने पहले सोचा था, साफ़ देख रहा हूं ! परन्तु मुझे खेद है कि कांग्रेस के प्रति मेरे रुख को गलत समझा गया है। इस भ्रांति को दूर करने के लिए मैं अपने विचार तुम्हारे सामने रखता हूं।" और तब गांधीजी धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ आवाज में बोलने लगे :

"मैंने हमेशा कांग्रेस कार्यसमिति को राष्ट्रीय मंत्रिमंडल (केबीनेट) माना है। प्रत्येक स्वतन्त्र और उत्तरदायी देश के मंत्रिमंडल को आवश्यक अधिकार होते हैं और होने चाहिए, ताकि वह विदेशों के साथ संधि-वार्ता करे; अन्यथा यदि मंत्रिमंडल को हर आवश्यक समस्या पर संसद् का परामर्श लेना पड़े तो सारा राजनैतिक काम चलना असम्भव होगा। वर्तमान परिस्थितियों के अंतर्गत कार्यसमिति ने भारत-विभाजन स्वीकार कर लिया

है । इस संधि-वार्ता में ब्रिटिश सरकार, मुस्लिम लीग और कांग्रेस, तीनों ने भाग लिया । जब कांग्रेस कार्यसमिति की ब्रिटिश सरकार और मुस्लिम लीग से वार्ता नाजुक दौर में चल रही थी और स्थिति में दिन-ब-दिन परिवर्तन हो रहा था, ऐसी अवस्था में वह संसद् के समानान्तर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से परामर्श नहीं ले सकती थी । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी-रूपी संसद् के सामने अपने मंत्रिमंडल या कार्यसमिति के इस निर्णय की पुष्टि करने के सिवाय और कोई विकल्प न था । यह कार्यसमिति के विरुद्ध अविश्वास-प्रस्ताव पास करके उसके सदस्यों को कह सकती थी कि त्यागपत्र दे दो; परन्तु एक ज़िम्मेदार देश की हैसियत से भारत केवल अपने मंत्रिमंडल के निर्णय की पुष्टि कर सकता था । यह एक स्पष्ट संवैधानिक व्यवस्था है । अगर भारत इस अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का पालन न करता तो संसार उसका उपहास करता । इसलिए मैंने अनिच्छा व बड़े दुःख से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को कार्य-समिति के भारत-विभाजन के निर्णय को पुष्ट करने के लिए राय दी थी । मै कांग्रेस के टुकड़े नही होने दे सकता था और भारत को संसार के सामने उपहासास्पद नहीं बना सकता था ।"

जब गांधीजी ने ये शब्द कहे तब वह बहुत गम्भीर थे । मेरे विचार में तो इससे बढ़कर सच्चा लोकतन्त्रवादी होने का ज्वलंत उदाहरण इतिहास नहीं दिखा सकता है, न दिखायेगा । गांधीजी विभाजन के विचार के कट्टर विरोधी थे । परन्तु कांग्रेस-संस्था के, जिसके वह जन्मदाता थे, निर्णय के सामने, चाहे वह ग़लत था, वह नतमस्तक हो गए ।

"तुम नहीं जानते, श्रीमन्, मेरी आत्मा को कितना गहरा कष्ट पहुंच रहा है ।" बापू ने मेरी तरफ देखते हुए कहा, "मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है ।"

गांधीजी थोड़ी देर चुप रहे, फिर धीमी आवाज़ में बोले, "साम्प्रदायिक घृणा और हिसा से आज दिल्ली जल रही है । मालूम पड़ता है कि हिन्दू और सिखों ने संतुलन खो दिया है । मेरी अपील का उनपर कोई असर नहीं पड़ता है । एक समय था जब मेरी आवाज का जनता पर जादू-सा असर था । मालूम पड़ता है, आज वह सारी शक्ति खो गई है ।"

और इसके बाद वह कुछ नहीं बोले। हम लगभग तीस मिनट तक कमरे में घूमते रहे। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि मैं उनका इतना क़ीमती समय लूंगा। परन्तु उस दिन गांधीजी ने अपने अन्तर का दुःख इस प्रकार प्रकट किया, जोकि मेरे लिए बिलकुल नया था। ठीक ७ बजे पं० नेहरू कमरे में प्रविष्ट हुए। यह उनका प्रतिदिन का कार्यक्रम था। मैंने जल्दी-से बापू से जाने की अनुमति ली और साथ के कमरे में चला गया।

जैसे ही मैं उस अंधेरी रात को बिड़ला-हाउस से गया, बापू के ये शब्द मेरे कानों में गूंजने लगे "तुम नहीं जानते, श्रीमन्, मेरी आत्मा को कितना कष्ट पहुंच रहा है।......मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है।"

मैं लगभग १५ वर्षों से गांधीजी के घनिष्ठ सम्पर्क में रहा था, परन्तु मैंने बापू को इस प्रकार की अन्तर्वेदना से व्यथित कभी नहीं देखा था। मैं यह स्वप्न में भी सोच नहीं सकता था कि अन्तर्वेदना के ये दिन, मेरी बापू से आखिरी मुलाकात के बीस दिन बाद ही, अचानक समाप्त हो जायंगे।

निस्संदेह गांधीजी का जीवन महान् था और वह मरकर और भी महान् होगए। यह संसार अगले हज़ारों वर्षों तक उन्हें याद करता रहेगा।

'अद्भुतं रोमहर्षणम्'

उमा अग्रवाल

सन् १९३३ की बात है। अस्पृश्यता-निवारण और हरिजनों के लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए बापूजी ने लगभग सारे देश का दौरा किया था। वर्धा से ही यह दौरा शुरू हुआ। क़रीब दस महीने लगातार यह दौरा चला। इस दौरान बापूजी सैकड़ों मील रेलगाड़ी में चले, मोटरों में सफर किया, स्टीमर और नावों से नदियां पार कीं। उत्कल प्रदेश की तो तमाम यात्रा पैदल ही की। सौभाग्य से इस दौरे में बापूजी ने मुझे भी अपने साथ रहने और घूमने का मौक़ा दिया था। श्री ठक्कर बापा हमारी टोली के व्यवस्थापक थे। मीराबेन बापूजी की व्यक्तिगत परिचर्या की प्रधान थीं। और श्री चंद्रशंकर शुक्ल प्रधान मंत्री। इस तरह बापूजी के साथ दौरे में दस-बारह तो हम स्थायी सदस्य थे। बाकी हर प्रान्त, हर शहर और हर गांव में वहां के स्थानीय कार्यकर्ता और भक्तगण साथ हो लेते थे। प्रत्येक स्थायी सदस्य को एक-एक मुख्य जिम्मेदारी सौंप दी गई थी। टोली में मैं सबसे छोटी थी। मेरे लायक रोजाना के कुछ कार्य मुझे भी सौंप दिये गए थे। इतने सब लोग थे, फिर भी मेरी हर तरह की हरकतों और दिनचर्या पर स्वयं बापूजी की पूरी नज़र रहती थी। मेरा दिन-भर का कार्यक्रम वह रात में बैठकर सुन लेते थे। उनकी नज़र बहुत पैनी थी। कान भी बहुत तेज़ थे। उनकी आंखों और कानों के मारे नाक में दम था। हमेशा डर बना रहता था, कोई ग़लती न पकड़ ली जाय।

छोटी-छोटी बातों में सफ़ाई की ओर उनका ध्यान सबसे पहले जाता था। सफाई और सादगी दोनों का मेल चित्त को प्रसन्न करता है। रूमाल की तह भी वह देख लेते थे कि करीने से की गई या नहीं। यात्रा का सामान रोज खुलता था और रोज ब धा जाता था। सामान सुन्दर और व्यवस्थित ढंग से बंधना चाहिए, तरतीब से जंचाकर रखें तो थोड़ी जगह में ज्यादा चीजें रखी जा सकती हैं, इस सबका पाठ ज़रूरत पड़ने पर, बापूजी स्वयं देते थे।

कहीं ग़लती से कुछ सामान छूट गया या कोई चीज रास्ते में टूट गई या कुछ अदद बढ़ गए, तो वह उनकी नज़र से चूकता नहीं था। उसी समय संबंधित व्यक्ति को बुलाकर खुलासा पूछते और भविष्य में ऐसी ग़लती न हो, इसकी ताक़ीद कर देते थे। लापरवाही उनके लिए असह्य थी। छोटी-सी पेंसिल भी यदि कहीं रह गई और उसकी जगह नई पेंसिल उनके सामने रख दी गई तो सारी कैफ़ियत देनी पड़ती थी कि उस पुरानी पेंसिल के टुकड़े का क्या हुआ, कहीं भूल गए तो कैसे भूले, कहीं गिर पड़ी तो कैसे गिरी, किसीको दी थी तो वापस क्यों नहीं ली, आदि। हर क्षण घड़ी की सुई की तरह व्यस्त रहने पर भी इतनी जांच-पड़ताल का समय बापूजी को कैसे मिल जाता था, इसकी हैरानी अब भी होती है।

बापूजी बकरी का दूध और बकरी के दूध का ही मावा लेते थे। दूध औटाकर उसका मावा बनाना और सोते समय गाय का घी उनके तलवों पर मलना, ये दो काम मुख्य रूप से मेरे जिम्मे थे। कितने दूध में कितना मावा बैठा, कितना वक्त लगा, आज ज्यादा देर क्यों लगी, दूध ज्यादा था या आंच कम थी, दूध नीचे कैसे लग गया, उस ओर पूरा ध्यान नहीं था क्या—आदि सवालों का जवाब देने के लिए हमेशा तैयार रहना पड़ता था। शैतान भी मैं पूरी थी। अपनी इस शैतानी से बापूजी को कभी-कभी तंग भी कर देती थी। बापूजी को शैतान बच्चे पसन्द भी बहुत थे। इसलिए उन्होंने मुझे शैतानी करने से कभी रोका नहीं। तलवों में घी की मालिश करते-करते अक्सर मैं उनके तलवों में गुदगुदी कर देती थी। बापूजी अपने पैर खींच लेते। मेरे आश्वासन देने पर कि अब गुदगुदी नहीं करूंगी, वह फिर से पैर फैला देते थे। बापूजी को भी गुदगुदी होती है, यह देखकर उस समय मुझे बड़ी खुशी होती थी।

बापूजी के बूढ़े हाथों में ताक़त भी बहुत थी। प्रणाम करने पर बापूजी हमेशा पीठ पर भारी धौल के संग आशीर्वाद देते थे। जितनी मज़बूत पीठ होती, उतनी ही जोर की धौल पड़ती थी। एक बार जोर की धौल खाकर मेरी मोटी-ताजी पीठ भी बिलबिला गई। लेकिन अपनी कमज़ोरी जाहिर कैसे होने देती! मैंने पूछा, "बापूजी, आपके हाथ में चोट तो नहीं लगी?"

हँसकर बापू ने मेरी पीठ पर एक और धौल जमा दी। लेकिन इस बार वह हलकी थी।

अचरज की बात तो यह है कि मुझ-सी शैतान और अलमस्त लड़की से भी वह कितने ही काम करवा लेते थे। मै भी अपनी योग्यता और समझ के अनुसार सब काम खुशी-खुशी करती। पत्र पढ़कर सुनाना, किन्हीं पत्रों का जवाब लिखना, अख़बार की खबरें बताना, कभी-कभी सभाओं में उनका भाषण लिखना, कभी जनता से झोली फैलाकर हरिजन-फंड का चंदा इकट्ठा करना, आदि-आदि।

यात्रा में मेरी पढ़ाई का ध्यान भी उन्हें रहता था। बापूजी की इच्छानुसार साथ के लोगों में से कोई अंग्रेजी पढ़ाता, कोई संस्कृत। भगवद्-गीता के श्लोक कंठस्थ कर लेने पर बापूजी मोटर या ट्रेन में कभी भी सुन लेते थे और यदि कोई ग़लती होती तो उसे सुधार देते थे। अपने पास ही सुलाते और प्रार्थना के लिए खुद ही रोज सुबह चार बजे उठाते। दुनिया-भर की व्यस्तता के बीच भी कितनी ममता और सहजता से यह सब करते थे वह!

बापूजी बच्चे से लेकर बड़े तक सभीके हास्य-विनोद में समान रूप से आनन्द लेते थे। मीराबेन तन-मन से बापूजी की सेवा में ही व्यस्त रहती थीं। इधर-उधर कहीं ध्यान नहीं रहता था उनका। महीनों से हम रात-दिन साथ थे, लेकिन एक दिन उनकी आंखों ने भी कुछ देखा, यद्यपि वह चीज़ शुरू से ही मेरे साथ थी। आश्चर्य के मारे उनसे नही रहा गया और मुझे एक दिन पकड़कर वह बापू जी के पास ले गईं। दरअसल मेरी ग़रीब नाक पर एक छोटा-सा तिल उन्हें दिखाई दे गया था। बोलीं, "बापूजी, देखिये तो! ओम् की नाक के सिरे पर तिल है।" उस समय बापूजी का मौन था और वह 'हरिजन' के लिए एक लेख लिखने में व्यस्त थे। दूर से नज़र ऊपर की, तिल को ध्यान से देखकर मुस्करा दिये और फिर से लिखने में लग गए। माथे पर ज़रा भी शिकन नहीं पड़ी कि इस तरह लिखते समय बीच में उन्हें तंग क्यों किया गया।

बच्चों के संग वह उन्हींकी उमर के साथी बन जाते थे। पैदल घूमते वक्त लड़के-लड़कियों का बारी-बारी से सहारा लेकर चलते थे। हम

उनकी 'लकड़ी' थे। सब बड़ी उत्सुकता से अपनी बारी की बाट देखते थ, बल्कि ताक लगाये रहते थे कि कब पहला खिसके तो हम जा धमकें। कभी किसी व्यक्ति से गंभीर चर्चा या निजी बातचीत होती थी, तो हम बेचारी 'लड़कियों' को दूर ही रह जाना पड़ता था। ईश्वर ही जानता है, हम ऐसी मुलाक़ातों को दिल में कितना कोसते थे।

बापूजी से क़दम-से-क़दम मिलाना कोई आसान बात नहीं थी। कई बार बापू से हम बच्चों की शर्त लग जाती थी कि कौन आगे जाता है। बाक़ायदा एक-दो-तीन बोला जाता और बापूजी हमारे कन्धों का सहारा छोड़कर दौड़ पड़ते।

एक बार वर्धा में मेरे कान में दर्द हुआ। पिताजी उस समय जेल में थे। मां को चिंता हुई कि कान नाजुक चीज़ है, कहीं हमेशा के लिए कोई खराबी न हो जाय। बापूजी उन दिनों दिल्ली किसी महत्त्वपूर्ण कार्य से गये हुए थे। उन्हें वहां इसका पता चला। फौरन मां के पास तार आया कि उमा को कान के विशेषज्ञ को दिखाने बंबई ले जाओ। अजीब-सी बात मालूम देती है! इतने बड़े आदमी के पास ये छोटी बातें कैसे पहुंचती थीं और क्यों! लेकिन इसे मुझ-जैसे भुक्तभोगी ही समझ सकते हैं। वर्धा से कोई भी व्यक्ति दिल्ली पहुंचता, बापूजी उससे वर्धा के सारे समाचार पूछते, एक-एक का नाम लेकर उसकी कुशल-क्षम पूछते। यदि कोई छोटी-सी भी बात, खासकर किसीकी तकलीफ़ की, बतानी रह जाती तो उस बेचारे की इस लापरवाही पर पूरी खबर ले ली जाती।

मैं तो आज अब भी बापूजी का हँसकर धौल लगाना, उनकी वह मंत्र-मुग्ध कर देनेवाली मुस्कान, उनका कान पकड़कर चपत लगाना, गुदगुदी करने पर पैर खींच लेना—इन सबकी याद करती हूं, तो बस 'अद्‌भुतं रोमहर्षणम्' की ही अनुभूति होती है।

बापू की महानता

रामकृष्ण बजाज

यह हम लोगों का बड़ा सौभाग्य रहा कि पिताजी—स्वर्गीय पूज्य जमनालालजी बजाज—की वजह से हम पूज्य बापूजी के इतने निकट रह सके। पूज्य पिताजी ने अपने त्याग और तप की वजह से बापूजी के पांचवें पुत्र का स्थान प्राप्त किया था। उनके आग्रह के वश होकर बापूजी वर्धा रहने चले आये। इसी कारण हमको भी बापूजी के इतने पास रहने का और अपने जीवन को बनाने में उनके मार्गदर्शन का लाभ मिलता रहा। अब जब भी मैं पीछे फिरकर देखता हूं, उन दिनों की याद करता हूं, तो मुझे खुद, जैसा कि जगत्-प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था, विश्वास नहीं होता कि बापू-सरीखे व्यक्ति सचमुच इस संसार में पैदा हुए थे और हमारे बीच एक साधारण मानव के रूप में रहे थे। उनकी एक-एक बात सोचता हूं तो चकित रह जाता हूं। जब उनके पास हम रहते थे तो ऐसा कभी नहीं लगता था कि वह कोई बहुत बड़े व्यक्ति हैं, जिनसे हम डरें या दूर रहें। बच्चे जैसे अपने पिता या दादा के पास बेधड़क चले जाते हैं, उस तरह से हम उनके पास चले जाते और उसी तरह प्रेम भी पाते। इतना काम रहते हुए भी कभी हमने उनको जल्दी करते नहीं देखा। उन्होंने अपने व्यवहार से यह महसूस नहीं होने दिया कि वह महत्त्व का काम कर रहे हैं और इसलिए वह हमें समय नहीं दे सकते। वह साधारण मनुष्य की भांति ही लगते। जब भी सोचता हूं कि इसी साधारण मनुष्य ने इतने थोड़े समय में इतना सब काम किया, तब हमें, जो उनके पास रहे हैं, इस पृथ्वी पर पैदा होकर इतना काम करने का विश्वास नहीं होता। जानेवाली पीढ़ी के लिए तो यह और भी कठिन होगा।

सन् १९३५ की बात है। उन दिनों बापूजी वर्धा में मगनवाड़ी बगीचे में रहते थे। मेरी उस समय उम्र कोई बारह वर्ष की होगी। पिताजी ने कुछ दिनों के लिए मुझे मगनवाड़ी में रहने के लिए भेज दिया था, ताकि मुझे

उनके पास रहने का अवसर मिले और उनकी देखरेख और निगरानी में रहकर मेरा विकास हो। एक दिन मैं बापूजी की बैठक में गया। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, "राम, मैंने, तुम्हारे लिए कई महीनों से दो विदेशी टिकटें रख छोड़ी हैं।" मालूम नहीं, उन्हें कैसे पता चल गया कि मुझे विदेशी टिकटें इकट्ठा करने का शौक है। दस महीने से उन्होंने वे टिकटें मेरे लिए याद करके रखी हुई थीं। कागजों के झुंड में से उन्होंने एक लिफ़ाफ़ा निकालकर मुझे दिया। कितनी आश्चर्य और खुशी की बात थी वह मेरे लिए ! हर छोटे-बड़े व्यक्ति का वह कितना खयाल रखते थे ! बच्चों को खुश करने में स्वयं उन्हें प्रसन्नता होती थी। उनके पास जो भी रहता, उसे इस प्रेम और सहृदयता का अपने स्वयं के जीवन में अनुभव होता था।

.. .. ..

मगनवाड़ी में शहतूत, फालसे, बेर आदि के बहुत पेड़ थे। मैं तो बच्चा ही था, लेकिन मुझसे भी कोई-न-कोई काम तो कराना है, इसलिए बापूजी ने मुझसे कहा कि पेड़ों पर चढ़कर सारे फल तोड़कर इकट्ठा कर। और आश्रम के परिवार के बच्चों को इकट्ठा करके उनमें बांट दो। बापूजी इस बात का बराबर ध्यान रखते थे कि छोटी-छोटी चीज़ों में बच्चों को मज़ा भी आवे और साथ-ही-साथ उनको शिक्षण भी मिलता रहे। इा छोटे-छोटे अनुभवों से बच्चों को भावी जीवन की दिशा और अपने विचार-निर्माण में सहायता मिलती है।

१९४० में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू हुआ। तब मैं कुल सत्रह साल का था। जब काकाजी को गिरफ्तार कया गया तो मुझे भी उत्साह हुआ कि जेल जाना चाहिए। पूज्य बापूजी, पिताजी तथा अन्य लोगों की वजह से वातावरण में इतना उत्साह और जोश था कि मन में यह लगता रहता कि अवसर पाकर हमको भी जेल जाना चाहिए और देश के लिए कुछ करना चाहिए। यदि जल्दी ही कुछ नहीं कर सके और इस बीच देश को आज़ादी मिल गई तो फिर जीवन-भर पछताना पड़ेगा कि देश की आज़ादी की लड़ाई में हम कुछ भी हिस्सा नहीं बंटा सके।

जब पिताजी को गिरफ्तार करके पुलिस जेल ले जा रही थी, उनसे

बिदा लेते समय मैंने उनसे इजाज़त लेनी चाही कि पीछे से मैं भी सत्याग्रह कर सकता हूं न ? ज्यादा समय नहीं था। उन्होंने तुरन्त कहा कि यदि बापूजी तुम्हें अनुमति दें तो मेरी तरफ से इजाज़त है । कुछ ही रोज बाद मैट्रिक की परीक्षा देकर मैं जेल जाने की अनुमति लेने बापूजी के पास पहुंचा । लेकिन अठारह बरस से कम होने की वजह से उन्होंने पहले मुझे इजाज़त नहीं दी । मैंने आग्रह किया और कुछ ज़िद भी और कहा चाहे उन्हें विशेष रूप से क्यों न देनी पड़े, मुझे तो अनुमति देनी ही होगी । मेरा इतना उत्साह देखकर वह उसे भंग नहीं करना चाहते थे । इसलिए दो दिन तक मुझे बराबर सेवाग्राम में बुलाया और यह जानने के लिए कि मैं जेल का जीवन खुशी से बरदाश्त कर सकूंगा या नहीं, मुझसे हर तरह के सवाल पूछकर मेरी परीक्षा लेते रहे। उन्होंने कहा, "एक बार जेल जाने से काम नहीं चलेगा । जबतक आन्दोलन चलता रहे, बराबर जेल जाना होगा ।" मैंने कहा, "मुझे मंजूर है, लेकिन आप समय का कुछ अन्दाज़ तो देंगे ?" उन्होंने कहा, "समय का अन्दाज़ तो कौन दे सकता है, लेकिन पांच वर्ष की तैयारी होनी चाहिए ।" मैंने कहा, "पांच वर्ष बराबर जेल जाना होगा तो मैं तैयार हूं ।" यदि व्यक्तिगत सत्याग्रह और १९४२ आंदोलन का समय जोड़ें तो बापूजी का अन्दाज़ बिलकुल सही निकला। ये दोनों आन्दोलन मिलाकर क़रीब-क़रीब पांच वर्ष ही चले ।

जब बापूजी ने मुझे इजाज़त दे दी तो फिर उसकी पूरी ज़िम्मेदारी भी उन्होंने अपने ऊपर ही ले ली ।

वर्धा के डिप्टी कमिश्नर को खुद ही चिट्ठी लिखी कि मैं अमुक जगह पर युद्ध-विरोधी नारा लगाकर सरकार का कानून भंग करूंगा । सत्याग्रह की पहली रात उन्होंने मुझे सेवाग्राम में ही बुलवा लिया था और कह दिया था कि पूज्य माताजी के साथ मैं सेवाग्राम में ही रहूं। रात को देर हो गई थी, वह काफी थक भी गए थे, फिर भी उन्होंने मुझे बुलाया और अपने हाथ का लिखा एक वक्तव्य[1] मुझे पढ़ने के लिए दिया। यह वक्तव्य उन्होंने

---

[1] यह वक्तव्य इस प्रकार था :

महाशय,

मेरा मामला कुछ निराला है । मैं एक भूतपूर्व विद्यार्थी हूं । आज

खुद ही मेरे लिए तयार किया था। मैं जब गिरफ्तार होकर जल जाऊं और अदालत में मेरी पेशी हो, तब वहां वक्तव्य देने के लिए यह उन्होंने बनाया था।

जबकि विद्यार्थी-जगत् में अराजकता फैल रही है, मैं यह बात कह देना जरूरी समझता हूं। मेरी उम्र अठारह साल से कम है, लेकिन मुझे विद्यार्थी-जगत् और बाहरी संसार का इतना अनुभव जरूर है कि मैं हर बात में अनुशासन की आवश्यकता महसूस कर सकूं। इसलिए मैंने जो कदम उठाया है, उसमें मैंने अपने माता-पिता और दूसरे बुजुर्गों की आशिष प्राप्त की है। अपने माता-पिता की देखभाल में मैंने जीवन की हर एक छोटी-मोटी तफ़सील में अहिंसा की व्यावहारिक शिक्षा पाई है। मैंने हाल ही में मैट्रिक की परीक्षा दी है। मैंने स्कूल जाना देर से शुरू किया। मेरे माता-पिता ने १९२० के असहयोग-आन्दोलन के दिनों में ही, जबकि मैं पैदा भी नहीं हुआ था, हम लोगों की बाकायदा स्कूल की पढ़ाई बन्द कर दी। मेरे माता-पिता ने हम सभीको स्वतंत्रता के वायुमण्डल में पाला, इसीलिए जब मैंने स्कूल जाकर मामूली शिक्षा लेनी चाही तो मुझे इजाजत दे दी गई। लेकिन जब मौजूदा आन्दोलन शुरू हुआ तो मेरा दिल चंचल हो उठा। मैं सोचने लगा कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के प्रयत्न में मुझे जो प्रत्यक्ष अनुभव होगा, वह मामूली स्कूल की पढ़ाई से कहीं क़ीमती होगा, क्योंकि हरेक स्कूल का लड़का जानता है कि यह शिक्षा जनता की भलाई के लिए नहीं शुरू की गई है, वरन् हमारे राज्यकर्त्ताओं के फायदे के लिए की गई है। यह जानते भी अगर हम स्कूल की शिक्षा लेते हैं तो उसका यही कारण है कि आज कई वर्षों से वही अकेली प्रचलित रही है, और उसकी बदौलत हमारी यह दुर्दशा हुई है। मैं इस आन्दोलन के राजनैतिक महत्त्व की अपेक्षा नैतिक महत्त्व से अधिक आकर्षित हुआ हूं। मैं जानता हूं कि अगर हिन्दुस्तान संसार के सामने पूर्ण अहिंसा का उदाहरण पेश कर सके तो वह मानवीय प्रगति में अपूर्व सहायता पहुंचायेगा। यह दिव्य आदर्श मेरे तरुण चित्त को मुग्ध करता है और ऐसे उच्च और उज्ज्वल आदर्श की प्राप्ति के लिए मैं किसी भी क्लेश या कष्ट को अत्यधिक नहीं मानूंगा।

मेरे पढ़ चुकन पर उन्होंने उस वक्तव्य का अर्थ मुझे समझाया और कहा, "कोई बात न समझे हो तो मुझसे पूछ लो ।" बाद में यह भी कहा कि यदि उसमें से किसी बात से मैं असहमत होऊं तो मैं उनसे कह दूं, वह उतना हिस्सा बदल देंगे । मैं तो यह सुनकर गद्गद हो गया । एक सत्रह बरस के बच्चे से बापूजी बराबरी का नाता रखकर पूछ रहे थे । मैं उनसे भला क्या असहमत हो सकता था ! लेकिन उनके इस तरह के व्यवहार से दिल उत्साह से भर गया और अधिक ज़िम्मेदारी महसूस होने लगी । जितने भी दिन जेल में बिताने थे, उनको खुशी से बिताने का संबल मिल गया ।

.. .. ..

मैंने एक बार जेल से माताजी को चिट्ठी लिखी कि यदि पूज्य बापूजी मेरे नाम चिट्ठी लिखें तो मुझे वह मिल जाया करेंगी, ऐसी इजाज़त मैंने जेल के अधिकारियों से ले ली है । यह जानकर बापूजी ने तुरन्त २३-३-४० को सेवाग्राम से मुझे चिट्ठी लिखी ।

.. .. ..

इस चिट्ठी के नीचे हमेशा की तरह 'बापू के आशीर्वाद' लिखा था, लेकिन साथ ही 'मो० क० गांधी' भी लिखा था । मतलब यह कि जेल के अधिकारी कहीं ग़फ़लत में उनका पत्र मुझे न दे दें । उनका लिखा हुआ यह पत्र है, ऐसा जानकर वे देना चाहें तो दें, अन्यथा नहीं । हर छोटी-बड़ी बात में एक सच्चे सत्याग्रही के नाते बर्ताव करने का बापूजी प्रति-क्षण कितना ध्यान रखते थे, उसकी यह एक छोटी-सी मिसाल है ।

.. .. ..

जो चिट्ठियां उनके पास जाती थीं, उनके पीछे का खाली भाग वह चिट्ठी का जवाब लिखने के काम में लाते थे । किसी भी तरह की फिजूल-खर्ची उनको पसन्द न थी । इन पर्चियों को वह एक बहुत साधारण-से तख्ते के फोल्डर में रखते थे । यह फोल्डर कुछ गंदा हो गया तो उन्होंने एक सहयोगी से साफ़ करने के लिए कहा । उसने सफाई की तो सही, लेकिन बापूजी के मन-लायक नहीं हुई । किसी भी तरह की गंदगी या अव्यवस्था उन्हें सहन नहीं होती थी । उन्होंने उस भाई को बुलाकर एक शिक्षक की

भांति बहुत समय देकर विस्तार के साथ समझाया कि किस तरह से पहले अलग करके साबुन से धोया जाय और उसे तख्ते पर लगाकर बराबर वज़न के नीचे दबा दिया जाय, जिससे कपड़ा गीला होने पर भी तख्ता मुड़े नहीं, आदि ।

आगाखां-महल से छूटने के बाद १९४५ में बापूजी बंगाल, असम और दक्षिण भारत के दौरे पर गये थे । मैंने जेल से छूटने पर याद दिलाया कि अभी पांच वर्ष पूरे होने में कुछ महीने बाकी हैं, इसलिए आपको अधिकार है कि आप जो काम चाहें, मुझसे ले सकते हैं । उन्होंने दौरे में साथ चलने के लिए मुझसे कहा । मेरी खुशी का ठिकाना न रहा । इस दौरे में बापू के दल में काफी लोग थे । यात्रा लगातार चलती रही । कार्यक्रम हमेशा व्यस्त रहता, लेकिन बापूजी को सदा ख़याल रहता कि उनकी या उनके साथियों की वजह से मेज़बानों को कोई तकलीफ़ न हो । बापूजी तो इतना ध्यान रखते, लेकिन हम सब लोगों को इसकी इतनी परवा थोड़े ही होती ! कोई-न-कोई बात हो ही जाती, जिसको लेकर बापू को हम सब लोगों को बड़े धीरज से समझाना पड़ता । कभी-कभी तो हमें यह लगता कि कहीं बापूजी को हमें लेकर कोई कष्ट न हो । और कोई होता तो समझा-समझाकर हैरान हो जाता । लेकिन बापू तो यह भी बड़ी सहजता के साथ करते । हम लोगों को लगता कि उन सब छोटी-छोटी बातों में बापू का इतना समय नहीं जाना चाहिए । जहां हम जाते, लोग उनके दर्शन करने के लिए एक-एक मिनट आतुर रहते । ऐसी स्थिति में हमारा बापू का इतना समय लेना कहांतक उचित था ! लेकिन बापू को इसकी परवा न थी । उनका दृष्टिकोण तो यही रहा होगा कि उन्हें नये-नये स्वयं-सेवक तैयार करने हैं और इसलिए हमपर दिया गया उनका समय बर्बाद नहीं हो रहा था ।

इन दौरों में, और सब कामों के साथ-साथ, हर स्टेशन पर प्रार्थना होती । कनुभाई के साथ हम भी प्रार्थना की व्यवस्था में भाग लेते । मैं रामधुन आदि भी गाने लगा । यात्रा में जो भी काम होता, सामान उठाकर इधर-से-उधर ले जाने आदि का भी, वह सब जहांतक हो सके, हम लोग खुद ही करते । बापूजी को भी यह अच्छा लगता । एक दिन उन्होंने मेरी

प्रार्थना-सभा में मेरा नाम लेकर कह दिया, "यह तो मेरा 'हमाल' है।" और कोई मुझे हमाल या कुली कह देता तो मुझे कितना बुरा लगता; लेकिन बापू के इस वाक्य को सुनकर खुशी से छाती फूल गई।

इस दौरे के दरमियान हम लोग खादी-प्रतिष्ठान (सोदपुर) में ठहरे हुए थे। बापूजी कात रहे थे और खांसाहब[1] उनके पास ही बैठे थे। मेरे कुछ कलकत्ते के कुटुंबी और दोस्त बापूजी के दर्शन करने चले आये। मैं उन्हें बापू से मिलाने ले गया। उन सबने बापू को झुककर प्रणाम किया, मुझे बुलाकर समझाया कि जब उनके मित्र लोग बैठे हों तब केवल उन्हें ही प्रणाम करना उचित नहीं था, सबको प्रणाम करना चाहिए था। आगे से मुझे इसका ख़याल रखना चाहिए; खांसाहब या और भी बुजुर्ग बैठे हों तो उनके प्रति किसी तरह अनादर व्यक्त नहीं होना चाहिए। एक घर के बुजुर्ग के समान इन छोटी-बड़ी सब बातों पर बापू का ध्यान रहता था। उनके साथ के लोगों और बच्चों से किसी तरह की ग़लती न हो, इसका वह ख़याल रखते थे।

हमें तो यही आश्चर्य होता था कि इतनी सब बातों की तरफ वह एक साथ कैसे ध्यान रख लेते थे!

... ...

दक्षिण के दौरे में जो मुख्य घटनाएं वहां घटी थीं, उनमें मदुरा का जगत्-प्रसिद्ध मन्दिर उनके द्वारा हरिजनों के लिए खोला जाना भी एक थी। वह प्रसंग बड़ा ही अद्भुत और उत्साहवर्धक था। बापू को भी उस मंदिर को हरिजनों के लिए खोल देने से बड़ी प्रसन्नता हुई थी, क्योंकि वह जगह सनातनी विचारों का गढ़ थी।

लेकिन इससे भी ज्यादा खुशी बापू को पलनी के मंदिर में जाकर हुई। पलनी का मंदिर बहुत ऊंची टेकड़ी पर बना हुआ है, क़रीब सात-आठ सौ सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जाना होता है। बापू को कुर्सी की डांडी पर बिठाकर ऊपर ले जाया गया। हम लोग उनके साथ-साथ पैदल जा रहे थे। उन्हें कुर्सी पर ले जाया जाना बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन

---

[1] अब्दुलगफ़्फार खां

इतना ऊंचा चढ़ना उनके लिए संभव नही था, इसलिए उन्होंने कुर्सी पर ले जाया जाना मंजूर कर लिया ।

रास्ते में उन्होंने खुद ही बताया कि वे पलनी क्यों आना चाहते थे । मदुरा में तो लोग उनको आग्रह करके ले गए, लेकिन पलनी वह खुद की ही इच्छा से जा रहे थे । मदुरा के मंदिर का नाम प्रतीक-रूप में धनवानों से जुड़ा हुआ है, पलनी का मंदिर गरीबों का प्रतीक माना जाता है । इस-लिए उन्होंने कहा कि जब वह मदुरा में गये तो पलनी-मंदिर में भी जाना ही चाहिए । पलनी के मंदिर की एक और विशेषता है । वह यह कि पुराने जमाने से ही मंदिर के इर्द-गिर्द जो गाना-बजाना, भजन-पूजन होता है, वह हमेशा मुसलमान लोग ही करते आये हैं । वहां के पुजारियों को या अन्य लोगों को इसमें किसी तरह की आपत्ति नहीं थी । बापूजी के लिए यह एक विशेष आकर्षण की बात थी ।

इस तमाम यात्रा में जहां कहीं बापू जाते, हर जगह स्टेशनों पर, सड़कों पर, मीटिंगों में, हजारों-लाखों की तादाद में लोग जमा होते । एक जगह तो कोई बीस-पच्चीस हजार लोग एक नदी में तीन-चार फ़ुट गहरे पानी में कई घंटों तक रहे । बापू की गाड़ी वहां से गुजरनेवाली थी । सिर्फ उनकी झलक मिल जाय, इसी भावना से ये लोग खड़े थे । इसी वजह से वहां दो-चार मिनट के लिए गाड़ी को विशेष रूप से रोका गया । बापू रेल के दरवाजे पर खड़े हो गए । उनको एक नजर देखने-मात्र से लोगों को बड़ा सुख-समाधान मिला ।

ग़रीबों तथा हरिजनों के प्रति बापू की कितनी भावना थी, इसका भी काफी अनुभव इस यात्रा के दौरान में मुझे हुआ । किसी भी जगह बापू हरिजनों के लिए पैसा इकट्ठा करने से नहीं चूकते थे । ग़रीब-से-ग़रीब लोग भी उन्हें अपने हाथों से पैसे-दो पैसे भी दे सकें, इसकी कोशिश में रहते थे । इसकी वजह से बड़ी भीड़ हो जाती । बापू को तकलीफ भी बहुत होती, लेकिन वह हर आदमी से, जो भी वह देना चाहे, बड़ी खुशी से लेने के लिए हमेशा तत्पर रहते । ग़रीब एक पैसा भी दे, तब भी उसके पीछे की भावना वह समझते और उसकी क़द्र करते । ग़रीबों के द्वारा ग़रीबों की मदद हो, इसे वह अच्छा समझते । इसलिए उनके सामने बड़ी रक़म

देनेवाले और इस तरह से दो-दो, चार-चार पैसे देनेवालों में कोई अन्तर नहीं था । एक तरफ तो वह उन ग़रीबों को खुशी देते, जो उनको अपनी गाढ़ी कमाई का कुछ हिस्सा दे पाते; दूसरी तरफ उन ग़रीब हरिजन भाइयों को खुशी देते, जिनके लिए उन पैसों का उपयोग किया जाता । जो पैसे मिलते, उन्हें इकट्ठा कर उसका पूरा हिसाब रखना मेरे और कनुभाई के जिम्मे था । उसमें से कुछ रकम अन्य कार्य के लिए दी जाती, उसका जमा-ख़र्च भी उसी समय करना ज़रूरी होता । वह सब काम हम बड़े उत्साह से करते और उसमें हमें बहुत आनन्द आता था ।

... ...

आखिरी बार मैं उनसे भंगी-कॉलोनी, दिल्ली में उनके देहावसान के कुछ ही महीने पहले मिला था । उस समय मैं विद्यार्थियों को संगठित करने में लगा था और उनका मार्ग-दर्शन चाहता था । हम लोग उस समय 'नेशनल यूनियन ऑफ़ स्टूडेण्ट्स' बनाना चाहते थे और इस बारे में हमारी जो योजना थी, वह हमने उनको बताई । उनको योजना पसन्द आई और उन्होंने कहा कि इसमें हमें किसीसे बहुत मदद की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि लोगों को विद्यार्थियों का राजनैतिक दृष्टि से उपयोग करने में अधिक दिलचस्पी है । फिर भी हमें अपने काम को बराबर करते रहना चाहिए । उन्होंने आगे कहा, "एक चीज़ हमेशा ध्यान में रहे कि तुमको किसीकी मदद मिले या न मिले, इसकी परवा नहीं करना; उसके लिए अपना दर्जा नीचा मत करो या अपना सिद्धान्त मत छोड़ो ।"

स्मृति-पटल का एक बिन्दु

विमला बजाज

जब मैं संस्मरण लिखने बैठी तो ध्रुवतारे की भांति मानस-पटल पर अंकित चौदह वर्ष पहले की बापू से भेंट की स्मृति उभर आई। विवाह के उपरान्त हम उनके आशीर्वाद लेने गये थे। उस रोज़ उनका मौन था। हम उन्हें प्रणाम कर एक ओर बैठ गए। चरखे की संगीत-ध्वनि शांतिमय वातावरण में समाई हुई थी। एक व्यक्ति उन्हें डाक पढ़कर सुना रहा था। बीच-बीच में कोई कुछ आकर कह जाता था, किन्तु सूत का तारतम्य टूटता न था। कांपते हाथों में मन की दृढ़ता छिपी थी।

इस कर्मयोगी की जीवन-साधना की तस्वीर आंखों के सामने से गुजर गई। दुबली-पतली देह में कितना आत्मबल होगा, जिसके सामने एक शक्तिशाली सरकार परास्त हो गई! मुग्ध मन से मैं सब सोचती रही। ध्यानमग्न बापू चरखा चलाते जा रहे थे और मैं उनके ध्यान में मग्न थी। सहसा उन्होंने मुझसे जाने को कहा और मैं अपनी विचार-श्रृंखला तोड़ते हुए उठ खड़ी हुई। उन्हें प्रणाम कर हम वहां से चल दिये। बापू से बातचीत न हो सकी, लेकिन इस मुलाक़ात की अमिट छाप दिल पर पड़ चुकी थी। मौन में भाषा से अधिक शक्ति छिपी है, यह मुझे अनुभव हो रहा था। बापू मुझसे कितना कुछ कह चुके थे, यह मैं ही जानती थी। मुझे विश्वास था कि आगे भी कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। यह मैं कैसे सोच सकती थी कि यह मेरी पहली और आखिरी मुलाक़ात है! लेकिन शीघ्र ही वह अप्रत्याशित घटना घटी, जिसकी स्वप्न में भी आशा न थी। सारा भारतवर्ष सहम उठा, दुनिया शोक से ओतप्रोत हो गई। इनके लिए बापू पिता से भी बढ़कर थे, ये फूट-फूटकर रो पड़े। मैं भी आंसू न रोक सकी। मन में दुःख-क्षोभ की लहरें उठने लगीं। काश, मैं बापू से कुछ और मिल सकती! किन्तु मिलने का समय निकल चुका था। मैं मन मसोसकर रह गई।

आज बापू को गुज़रे चौदह वर्ष हो गए, लेकिन उस मुलाकात की अमिट छाप मेरे हृदय पर अभी भी है। एक सामान्य भेंट भी जीवन में विशेषता ग्रहण कर लेती है, जबकि वह एक केवल एक हो। एक में अनेक की भावना से उस एक मौन मुलाक़ात को ही मैंने अनेक मुलाकातों का सार मान लिया है। मानवीय गुणों से परिपूर्ण उस विशेष मानव का स्मरण करते हुए अपनी यह छोटी-सी संस्मरण-रूपी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

●

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट से प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

८. **बापू-स्मरण**—संपादक : रामकृष्ण बजाज (प्रेस में)
जमनालालजी की डायरी में से बापू-सम्बन्धी अंश और बजाज-परिवार के सदस्यों द्वारा लिखे बापूजी के संस्मरण (इसे एक प्रकार से 'बापू के पत्र' का दूसरा भाग समझना चाहिए ।)

जमनालालजी-सम्बन्धी अन्य पुस्तकें

१. **पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद**—संपादक : काका कालेलकर
जमनालालजी व गांधीजी का पत्र-व्यवहार । जमनालालजी की डायरी तथा पत्रों से गांधीजी-सम्बन्धी अंश तथा जमनालालजी-सम्बन्धी महात्माजी के संपर्क की अन्य सामग्री ।
(प्रस्तावना : जवाहरलाल नेहरू)
जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट प्रकाशन । (अप्राप्य)

२. **पांचमा पुत्रने बापूना आशीर्वाद** (गुजराती-संस्करण) ३.००
संपादक : काका कालेलकर; प्रस्तावना : जवाहरलाल नेहरू
(नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित)
'बापू के पत्र' का अंग्रेजी-संस्करण : जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट-प्रकाशन

३. **To a Gandhian Capitalist**

४. **श्रेयार्थी जमनालालजी**—ले० : हरिभाऊ उपाध्याय (प्रेस में)
श्री जमनालालजी बजाज की विस्तृत जीवनी
प्रस्तावना—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

५. **श्रेयार्थी जमनालालजी**—(संक्षिप्त संस्करण) (अप्राप्य)
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

६. **जमनालालजी**—ले० : घनश्यामदास बिड़ला (प्रेस में)
(जमनालालजी का चरित्र-चित्रण : सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

७. **जमनालाल बजाज**—ले० : स्व० रामनरेश त्रिपाठी (अप्राप्य)
(जमनालालजी की जीवनी : हिन्दी-मन्दिर, इलाहाबाद का प्रकाशन)

८. **जीवन-जौहरी**—ऋषभदास रांका (अप्राप्य)
(जमनालाल के जीवन-प्रसंग : भारत जैन महामंडल, वर्धा का प्रकाशन)

९. **कृतार्थ जीवन**—लेखक : दा० न० शिखरे २.००
जमनालालजी का मराठी जीवन-चरित
(जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा का प्रकाशन)

१०. **मेरी जीवन-यात्रा**—जानकीदेवी बजाज २.००
जानकीदेवी बजाज की आत्म-कथा
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन) प्रस्तावना : विनोबा

११. **माझी जीवन-यात्रा**—अनु० : बा० भ० बोरकर ३.००
जानकीदेवी बजाज की जीवन-यात्रा का मराठी-अनुवाद;
(पॉपुलर बुक डिपो, बंबई का प्रकाशन)

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट के आगामी प्रकाशन

१. **पत्र-व्यवहार** (पांचवां भाग)
(जमनालालजी का अपने परिवार के सदस्यों से)

२. **पत्र-व्यवहार** (छठा भाग)
(जमनालालजी का देशी रियासतों के अधिकारियों से)

३. **पत्र-व्यवहार** (सातवां भाग)
(जमनालालजी का सामाजिक कार्यकर्ताओं व व्यापारियों से)

४. **जमनालालजी के पत्र**
जमनालालजी का विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों के साथ
का चुना हुआ पत्र-व्यवहार ।

५. **जमनालाल की डायरियां**
जमनालालजी की डायरियां राजनैतिक व ऐतिहासिक महत्त्व की हैं। तीन या चार भागों में इन डायरियों को प्रकाशित करने की योजना है।